الجزء ٢١

اُتْلُ مَآ اُوْحِىَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ

नमाज़	और क़ाइम करें	किताब से	आप (स) की तरफ़	वहि की गई	जो	आप (स) पढ़ें

اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ

सब से बड़ी बात	और अलबत्ता अल्लाह की याद	और बुराई	बेहयाई	से	रोकती है	नमाज़	बेशक

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ

अहले किताब	और तुम न झगड़ो	45	जो तुम करते हो	जानता है	और अल्लाह

اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا

और तुम कहो	उन (में) से	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया	सिवाए	वह बेहतर	मगर उस तरीक़े से जो

اٰمَنَّا بِالَّذِىْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ

एक	और तुम्हारा माबूद	और हमारा माबूद	तुम्हारी तरफ़	और नाज़िल किया गया	हमारी तरफ़	नाज़िल किया गया	हम ईमान लाए उस पर जो

وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ

पस जिन लोगों को	किताब	हम ने नाज़िल की तुम्हारी तरफ़	और उसी तरह	46	फ़रमांबरदार (जमा)	उस के	और हम

اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ

उस पर	बाज़ ईमान लाते हैं	और इन अहले मक्का से	उस पर	वह ईमान लाते हैं	किताब	हम ने दी उन्हें

وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ

इस से क़ब्ल	आप (स) पढ़ते थे	और न	47	काफ़िर (जमा)	मगर (सिर्फ़)	हमारी आयतों का	और वह नहीं इन्कार करते

مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٤٨﴾

48	हक़ नाशनास	आलबत्ता शक करते	उस (सूरत) में	अपने दाएं हाथ से	और न उसे लिखते थे	कोई किताब

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِىْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ

और नहीं इन्कार करते	इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	सीनों में	वाज़ेह आयतें	बल्कि वह

بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٩﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ

आप (स) फ़रमा दें	उस के रब से	निशानियां	उस पर	नाज़िल की गई	क्यों न	और वह बोले	49	ज़ालिम (जमा)	मगर	हमारी आयतों का

اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا

कि हम ने नाज़िल की	क्या उन के लिए काफ़ी नहीं	50	साफ़ साफ़	डराने वाला	और इस के सिवा नहीं कि मैं	अल्लाह के पास	निशानियां	इस के सिवा नहीं

عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ

उन लोगों के लिए	और नसीहत	अलबत्ता रहमत है	उस में	बेशक	उन पर	पढ़ी जाती है	किताब	आप (स) पर

ع ٥/١ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	जो	वह जानता है	गवाह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	आप (स) फ़रमा दें कि काफ़ी है अल्लाह	51	वह ईमान लाते हैं

وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	वह घाटा पाने वाले	वही हैं	अल्लाह के	और वह मुन्किर हुए	बातिल पर	ईमान लाए	और जो लोग	और ज़मीन में

आप (स) पढ़ें जो आप (स) की तरफ़ किताब वहि की गई है, और नमाज़ क़ाइम करें, बेशक नमाज़ रोकती है बेहयाई और बुराई से, और अलबत्ता अल्लाह की याद सब से बड़ी बात है, और अल्लाह जानता है जो तम करते हो। (45)

और तुम अहले किताब से न झगड़ो मगर उस तरीक़े से जो बेहतर हो, सिवाए उन में से जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, और तुम कहो हम उस पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ नाज़िल किया गया और जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया गया, और हमारा माबूद और तुम्हारा माबूद एक है, और हम उस के फ़रमांबरदार हैं। (46)

और उसी तरह हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की, पस जिन लोगों को हम ने किताब दी है वह ईमान लाते हैं उस पर, और अहले मक्का में से बाज़ उस पर ईमान लाते हैं, और हमारी आयतों से इन्कार सिर्फ़ काफ़िर करते हैं। (47)

और आप (स) इस (नुज़ूले क़ुरआन) से क़ब्ल कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने दाएं हाथ से उसे लिखते थे। उस सूरत में अलबत्ता हक़ नाशनास शक करते। (48)

बल्कि यह वाज़ेह आयतें उन के सीनों में महफ़ूज़ हैं जिन्हें इल्म दिया गया, और हमारी आयतों का इन्कार सिर्फ़ ज़ालिम करते हैं। (49)

और वह बोले उस पर उस के रब की तरफ़ से निशानियां (मोजिज़ात) क्यों न नाज़िल की गईं, आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि निशानियां (मोजिज़ात) अल्लाह के पास हैं और इस के सिवा नहीं कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (50)

क्या उन लोगों के लिए काफ़ी नहीं कि हम ने आप (स) पर किताब नाज़िल की जो उन पर पढ़ी जाती है, बेशक उस में उन लोगों के लिए रहमत और नसीहत है जो ईमान लाते हैं। (51)

आप (स) फ़रमा दें अल्लाह काफ़ी है मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह, वह जानता है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और जो लोग बातिल पर ईमान लाए और वह अल्लाह के मुन्किर हुए वही लोग हैं घाटा पाने वाले। (52)

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْ لَآ اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ

अज़ाब	तो आ चुका होता उन पर	मुक़र्रर	मीआ़द	और अगर न	अज़ाब की	और वह आप (स) से जल्दी करते हैं

وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ

अज़ाब की	आप (स) से जल्दी करते हैं	53	उन्हें ख़बर न होगी	और वह	अचानक	और ज़रूर उन पर आएगा

وَاِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ يَوْمَ يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ

अज़ाब	उन्हें ढांप लेगा	(जिस) दिन	54	काफ़िरों को	अलबत्ता घेरे हुए	जहन्नम	और बेशक

مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾

55	तुम करते थे	जो	चखो तुम	और वह कहेगा	उन के पाऊँ	और नीचे से	उन के ऊपर से

يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾

56	पस तुम इबादत करो	पस मेरी ही	वसीअ़	मेरी ज़मीन	बेशक	जो ईमान लाए	ऐ मेरे बन्दो

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और जो लोग ईमान लाए	57	तुम लौटाए जाओगे	फिर हमारी तरफ़	मौत	चखना	हर शख़्स

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ

जारी हैं	बाला ख़ाने	जन्नत	से-के	हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾

58	काम करने वाले	(क्या ही) अच्छा अजर है	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उस के नीचे से

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ

नहीं उठाते	जानवर जो	और बहुत से	59	वह भरोसा करते हैं	और वह अपने रब पर	जिन लोगों ने सब्र किया

رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٠﴾ وَلَئِنْ

और अलबत्ता अगर	60	जानने वाला	सुनने वाला	और वह	और तुम्हें भी	उन्हें रोज़ी देता है	अल्लाह	अपनी रोज़ी

سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

और चाँद	सूरज	और काम में लगाया	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	किस ने बनाया	तुम पूछो उन से

لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

जिस के लिए वह चाहता है	रोज़ी	फ़राख़ करता है	अल्लाह	61	वह उलटे फिरे जाते हैं	फिर कहां	अल्लाह	वह ज़रूर कहेंगे

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٦٢﴾ وَلَئِنْ

और अलबत्ता अगर	62	जानने वाला	हर चीज़ का	बेशक अल्लाह	उस के लिए	और तंग कर देता है	अपने बन्दों में से

سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ

बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा कर दिया	पानी	आस्मान से	उतारा	किस ने	तुम उन से पूछो

مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٦٣﴾ ع ٦ ١٢ ٢

63	वह अ़क़्ल से काम नहीं लेते	उन में अक्सर लोग	लेकिन	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	आप (स) कह दें	अल्लाह	अलबत्ता वह कहेंगे	उस का मरना

और वह आप (स) से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं, और अगर मीआ़द न होती मुक़र्रर, तो उन पर अ़ज़ाब आ चुका होता, और वह उन पर ज़रूर अचानक आएगा और उन्हें ख़बर (भी) न होगी। (53)

और वह आप (स) से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं, और बेशक जहन्नम काफ़िरों को घेरे हुए है। (54)

जिस दिन उन्हें ढांप लेगा अ़ज़ाब, उन के ऊपर से और उन के पाऊँ के नीचे से, और (अल्लाह तआ़ला) कहेगा (उस का मज़ा) चखो जो तुम करते थे। (55)

ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! बेशक मेरी ज़मीन वसीअ़ है, पस तुम मेरी ही इबादत करो। (56)

हर शख़्स को मौत (का मज़ा) चखना है, फिर तुम हमारी तरफ़ लौटाए जाओगे। (57)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए, हम ज़रूर उन्हें जगह देंगे जन्नत के बाला ख़ानों में, उस के नीचे नहरें जारी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे, क्या ही अच्छा अजर है काम करने वालों का। (58)

जिन लोगों ने सब्र किया, और वह अपने रब पर भरोसा करते हैं। (59)

और बहुत से जानवर हैं (जो) नहीं उठाए (फिरते) अपनी रोज़ी, अल्लाह उन्हें रोज़ी देता है और तुम्हें भी, और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (60)

और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछो किस ने ज़मीन और आस्मानों को बनाया? और सूरज और चाँद को काम में लगाया? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह", फिर वह कहां उलटे फिरे जाते हैं? (61)

अल्लाह अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहे रोज़ी फ़राख़ करता है और (जिस के लिए चाहे) उस के लिए तंग कर देता है, बेशक अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (62)

और अलबत्ता अगर तुम उन से पूछो: किस ने आस्मान से पानी उतारा? फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा कर दिया, वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह", आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, लेकिन उन में अक्सर लोग अ़क़्ल से काम नहीं लेते। (63)

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ؕ وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ

आख़िरत का घर	और बेशक	और कूद	सिवाए खेल	दुनिया की ज़िन्दगी	यह	और नहीं

وقف لازم

لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٤﴾ فَاِذَا رَكِبُوْا فِى الْفُلْكِ

कश्ती में	वह सवार होते हैं	फिर जब	64	वह जानते होते	काश	ज़िन्दगी	अलबत्ता वही

دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ

नागहां (फ़ौरन) वह	ख़ुश्की की तरफ़	वह उन्हें नजात देता है	फिर जब	उस के लिए एतिक़ाद	ख़ालिस रख कर	अल्लाह को पुकारते हैं

يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٥﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۚ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۗ فَسَوْفَ

पस अ़नक़रीब वह	और ताकि वह फ़ाइदा उठाएं	हम ने उन्हें दिया	वह जो	ताकि नाशुक्री करें	65	शिर्क करने लगते हैं

يَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ النَّاسُ

लोग	जबकि उचक लिए जाते हैं	हरम (सरज़मीने मक्का) को अम्न की जगह	कि हम ने बनाया	क्या उन्हों ने नहीं देखा	66	जान लेंगे वह

مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	नाशुक्री करते हैं	और अल्लाह की नेमत की	ईमान लाते हैं	क्या पस बातिल पर	उस के इर्द गिर्द	से

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ

या झुटलाया उस ने	झूट	अल्लाह पर	बान्धा	उस से जिस ने	बड़ा ज़ालिम	और कौन

بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِىْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٦٨﴾

68	काफ़िरों के लिए	ठिकाना	जहन्नम में	क्या नहीं	वह आया उस के पास	जब	हक़ को

ع ٦ ٣

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٦٩﴾

69	अलबत्ता साथ है नेकोकारों के	और बेशक अल्लाह	अपने रास्ते (जमा)	हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे	हमारी (राह) में	और जिन लोगों ने कोशिश की

آيَاتُهَا ٦٠ ❀ سُوْرَةُ الرُّوْمِ (٣٠) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकुआत 6 — (30) सूरतुर रोम — आयात 60

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿٢﴾ فِىْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ

बाद	और वह	क़रीब की ज़मीन	में	2	रोमी	मग़लूब हो गए	1	अलिफ़ लाम मीम

غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ﴿٣﴾ فِىْ بِضْعِ سِنِيْنَ ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ

अल्लाह ही के लिए हुक्म	चन्द साल (जमा)	में	3	अ़नक़रीब वह ग़ालिब होंगे	अपने मग़लूब होने

مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٤﴾

4	अहले ईमान	ख़ुश होंगे	और उस दिन	और बाद	पहले

بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٥﴾

5	निहायत मेहरबान	ग़ालिब	और वह	जिस को चाहता है	वह मदद देता है	अल्लाह की मदद से

और यह दुनिया की ज़िन्दगी खेल कूद के सिवा कुछ नहीं, और बेशक आख़िरत का घर ही (असल) ज़िन्दगी है, काश वह जानते होते। (64)

फिर जब वह कश्ती में सवार होते हैं तो वह अल्लाह को पुकारते हैं ख़ालिस उसी पर एतिक़ाद रखते हुए, फिर जब वह उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ नजात देता (बचा लाता) है तो वह फ़ौरन शिर्क करने लगते हैं। (65)

ताकि उस की नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें दिया है, और ताकि वह फ़ाइदा उठाएं, पस अ़नक़रीब वह जान लेंगे। (66)

क्या उन्हों ने नहीं देखा कि हम ने सरज़मीने मक्का को अम्न की जगह बनाया, जब कि उस के इर्द गिर्द से लोग उचक लिए जाते हैं, पस क्या वह बातिल पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत की नाशुक्री करते हैं। (67)

और उस से बड़ा ज़ालिम कौन है? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, या जब हक़ उस के पास आया उस ने उसे झुटलाया, क्या जहन्नम में काफ़िरों के लिए ठिकाना नहीं? (68)

और जिन लोगों ने हमारी राह में कोशिश की, हम ज़रूर उन्हें हिदायत देंगे अपने रास्तों की, और बेशक अल्लाह नेकोकारों के साथ है। (69)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम। (1)

रोमी क़रीब की सरज़मीन में मग़लूब हो गए। (2)

और वह अपने मग़लूब होने के बाद अ़नक़रीब चन्द सालों में ग़ालिब होंगे। (3)

पहले भी और पीछे भी अल्लाह ही का हुक्म है, और उस दिन अहले ईमान अल्लाह की मदद से ख़ुश होंगे। (4)

वह जिस को चाहता है मदद देता है, और वह ग़ालिब निहायत मेहरबान है। (5)

وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

अक्सर लोग	और लेकिन	अपना वादा	ख़िलाफ़ नहीं करता अल्लाह	अल्लाह का वादा है

لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٦﴾ يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۖ وَهُمْ عَنِ

से	और वह	दुनिया की ज़िन्दगी	से	ज़ाहिर को	वह जानते हैं	6	नहीं जानते

الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٧﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ

पैदा किया अल्लाह	नहीं	अपने जी (दिल) में	वह ग़ौर करते	क्या नहीं	7	ग़ाफ़िल हैं	वह	आख़िरत

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

और एक मुक़र्रर मीआ़द	दुरुस्त तदबीर के साथ	मगर	उन दोनो के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों

وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ﴿٨﴾ اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا

उन्हों ने सैर की	क्या नहीं	8	मुन्किर हैं	अपना रब	मुलाक़ात से	लोगों से	अक्सर	और बेशक

فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ

उन से पहले	वह लोग जो	अन्जाम	कैसा हुआ	जो वह देखते	ज़मीन में

كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ

ज़ियादा	और उन्हों ने उस को आबाद किया	ज़मीन	और उन्हों ने बोया जोता	ताक़त (में)	इन से	बहुत ज़ियादा	वह थे

مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ

कि उन पर ज़ुल्म करता	अल्लाह	पस न था	रोशन दलाइल के साथ	उन के रसूल	और उन के पास आए	इन्हों ने उसे आबाद किया	उस से जो

وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٩﴾ ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ

जिन लोगों ने	अन्जाम	हुआ	फिर	9	ज़ुल्म करते	अपनी जानें	वह थे	और लेकिन

اَسَآءُوا السُّوْٓاٰى اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿١٠﴾ ع ١٠ ٢

10	उस से मज़ाक़ करते	और थे वह	अल्लाह की आयतों को	कि उन्हों ने झुटलाया	बुरा	बुरे काम किए

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ وَيَوْمَ

और जिस दिन	11	तुम लौटाए जाओगे	फिर उस की तरफ़	फिर वह उसे दोबारा (पैदा) करेगा	ख़ल्क़त	अल्लाह पहली बार पैदा करता है

تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿١٢﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ

उन के लिए	और न होंगे	12	मुजरिम (जमा)	नाउम्मीद रह जाएँगे	बरपा होगी क़ियामत

مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ﴿١٣﴾

13	मुन्किर	अपने शरीकों के	और वह हो जाएंगे	कोई सिफ़ारशी	उन के शरीकों में से

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

पस जो लोग ईमान लाए	14	मुतफ़र्रिक़ हो जाएंगे	उस दिन	क़ाइम होगी क़ियामत	और जिस दिन

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِىْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ﴿١٥﴾

15	खुशहाल (आओ भगत) किए जाएंगे	बाग़ में	सो वह	नेक	और उन्हों ने अ़मल किए

(यह) अल्लाह का वादा है, अल्लाह अपने वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता, और लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (6)

वह दुनिया की ज़िन्दगी के (सिर्फ़) ज़ाहिर को जानते हैं, और वह आख़िरत से ग़ाफ़िल हैं। (7)

क्या वह अपने दिल में ग़ौर नहीं करते? अल्लाह ने नहीं पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को, और जो कुछ उन दोनो के दरमियान है मगर दुरुस्त तदबीर के साथ, और एक मुक़र्ररा मीआ़द के लिए, और बेशक लोगों में से अक्सर अपने रब की मुलाक़ात के मुनिकर हैं। (8)

क्या उन्हों ने ज़मीन (दुनिया) में सैर नहीं की? वह देखते कि कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह क़ुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और उन्हों ने ज़मीन को बोया जोता, और उस को आबाद किया उस से ज़ियादा (जिस क़द्र) इन्हों ने आबाद किया है, और उन के पास उन के रसूल रोशन दलाइल के साथ आए, पस अल्लाह (ऐसा) न था कि वह उन पर ज़ुल्म करता और लेकिन वह अपनी जानों पर ज़ुल्म करते थे। (9)

फिर जिन लोगों ने बुरे काम किए उन का अन्जाम बुरा हुआ कि उन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुटलाया और वह उन का मज़ाक़ उड़ाते थे। (10)

अल्लाह पहली बार ख़ल्क़त को पैदा करता है फिर वह उसे दोबारा पैदा करेगा, फिर तुम उसी की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11)

और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी मुजरिम नाउम्मीद हो कर रह जाएंगे। (12)

और उन के शरीकों में से कोई उन के सिफ़ारशी न होंगे, और वह अपने शरीकों के मुनकिर हो जाएंगे। (13)

और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी उस दिन (लोग) मुतफ़र्रिक़ (तित्तर बित्तर) हो जाएंगे। (14)

पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए सो वह बाग़े (जन्नत) में आओ भगत किए जाएंगे। (15)

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ

आख़िरत	और मुलाक़ात को	हमारी आयतों को	और झुटलाया	कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने

فَاُولٰٓئِكَ فِى الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ﴿١٦﴾ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ

जब	अल्लाह	पस पाकीज़गी (बयान करो)	16	हाज़िर (गिरिफ़्तार) किए जाएंगे	अ़ज़ाब में	पस यही लोग

تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ ﴿١٧﴾ وَلَهُ الْحَمْدُ فِى السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	तमाम तारीफ़ें	और उस के लिए	17	तुम सुबह करो (सुबह के वक़्त)	और जब	तुम शाम करो (शाम के वक़्त)

وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ﴿١٨﴾ يُخْرِجُ الْحَىَّ

ज़िन्दा	वह निकालता है	18	तुम ज़ुहर करते हो (ज़ुहर के वक़्त)	और जब	और बाद ज़वाल (तीसरे पहर)	और ज़मीन

مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ وَيُحْىِ الْاَرْضَ بَعْدَ

बाद	ज़मीन	और वह ज़िन्दा करता है	ज़िन्दा से	मुर्दा	और निकालता है वह	मुर्दा से

ع ٢ ٩ ٥ مَوْتِهَا ۭ وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١٩﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ

से	उस ने पैदा किया तुम्हें	कि	और उस की निशानियों से	19	तुम निकाले जाओगे	और उसी तरह	उस का मरना

تُرَابٍ ثُمَّ اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ

उस ने पैदा किया	कि	और उस की निशानियों से	20	फैले हुए	आदमी	नागहां तुम	फिर	मिट्टी

لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ

और उस ने किया	उन की तरफ़ (पास)	ताकि तुम सुकून हासिल करो	जोड़े	तुम्हारी जिन्स से	तुम्हारे लिए

بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

21	वह ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	और मेहरबानी	मुहब्बत	तुम्हारे दरमियान

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ

तुम्हारी ज़बानें	और मुख़्तलिफ़ होना	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	उस ने पैदा किया	और उस की निशानियों से

وَاَلْوَانِكُمْ ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ﴿٢٢﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ

और उस की निशानियों से	22	आ़लिमों (दानिशमन्दों) के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	और तुम्हारे रंग

مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ

बेशक	उस के फ़ज़्ल से	और तुम्हारा तलाश करना	और दिन	रात में	तुम्हारा सोना

فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ

बिजली	वह दिखाता है तुम्हें	और उस की निशानियों से	23	वह सुनते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में

خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْىِ بِهِ الْاَرْضَ

ज़मीन	फिर ज़िन्दा करता है उस से	पानी	आस्मान से	और वह नाज़िल करता है	और उम्मीद के लिए	ख़ौफ़

بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٢٤﴾

24	अ़क़्ल से काम लेते हैं	उन लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	इस में	बेशक	उस के मरने के बाद

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और झुटलाया हमारी आयतों को, और मुलाक़ात को आख़िरत की, पस यही लोग अ़ज़ाब में गिरफ़्तार किए जाएंगे। (16)

पस तुम अल्लाह की पाकीज़गी बयान करो शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त। (17)

और उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें आस्मानों में और ज़मीन में, और तीसरे पहर और ज़ुहर के वक़्त। (18)

वह मुर्दा से ज़िन्दा को निकालता है, और ज़िन्दा से मुर्दा को निकालता है, और वह ज़िन्दा करता है ज़मीन को उस के मरने के बाद, और उसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (19)

और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हें पैदा किया मिट्टी से, फिर नागहां तुम आदमी (जा बजा) फैले हुए। (20)

और उस की निशानियों में से है कि उस ने तुम्हारे लिए पैदा किए तुम्हारी जिन्स से जोड़े (बीवियां) ताकि तुम उन के पास सुकून हासिल करो, और उस ने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रहमत (पैदा) की, बेशक उस में अलबत्ता उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (21)

और उस की निशानियों में से हैं आस्मानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे रंगों का मुख़्तलिफ़ होना, बेशक उस में दानिशमन्दों के लिए निशानियां हैं। (22)

और उस की निशानियों में से है तुम्हारा सोना रात में और दिन (के वक़्त), और तुम्हारा तलाश करना उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी), बेशक उस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (23)

और उस की निशानियों में से है कि वह तुम्हें बिजली दिखाता है ख़ौफ़ और उम्मीद के लिए, और वह नाज़िल करता है आस्मान से पानी, फिर उस से ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है, बेशक उस में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अ़क़्ल से काम लेते हैं। (24)

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ بِاَمْرِهٖ ؕ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ

जब वह तुम्हें बुलाएगा	फिर	उस के हुक्म से	और ज़मीन	आस्मान	क़ाइम हैं	कि	और उस की निशानियों से

دَعْوَةً ۖ مِّنَ الْاَرْضِ ۖ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ﴿۲۵﴾ وَلَهٗ مَنْ

जो	और उस के लिए	25	निकल आओगे	यकबारगी तुम	ज़मीन से	एक निदा

فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَهُوَ الَّذِىْ يَبْدَؤُا

पहली बार पैदा करता है	और वही है जो	26	फ़रमांबरदार	सब उसी के लिए	और ज़मीन में	आस्मानों में

الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ؕ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى

बुलन्द तर	शान	और उसी के लिए	उस पर	बहुत आसान	और वह (यह)	फिर उस को दोबारा पैदा करेगा	ख़ल्क़त

فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۷﴾ ع ضَرَبَ لَكُمْ ع ۳ ۸ ۶

तुम्हारे लिए	उस ने बयान की	27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में

مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ؕ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ

तुम्हारे दाएं हाथ (ग़ुलाम)	जो मालिक हुए	से	क्या तुम्हारे लिए	तुम्हारी जानें (हाल)	से	एक मिसाल

مِّنْ شُرَكَآءَ فِىْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ

(क्या) तुम उन से डरते हो	बराबर	उस में	सो (ताकि) तुम	जो हम ने तुम्हें रिज़्क़ दिया	में	कोई शरीक

كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿۲۸﴾

28	अक़्ल वालों के लिए	निशानियां	हम खोल कर बयान करते हैं	उसी तरह	अपनी जानें (अपनों से)	जैसे तुम डरते हो

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِىْ

तो कौन हिदायत देगा	इल्म के बग़ैर (बेजाने)	अपनी ख़्वाहिशात	जिन लोगों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	पैरवी की	बल्कि

مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ

अपना चेहरा	पस सीधा रखो तुम	29	मददगार	कोई	उन के लिए	और नहीं	गुमराह करे अल्लाह	जिसे

لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِىْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ

उस पर	लोगों को पैदा किया उस ने	जो (जिस)	फ़ित्रत अल्लाह की	यक रुख़ हो कर	दीन के लिए

لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ

और लेकिन	दीन सीधा	यह	अल्लाह की ख़ल्क़ में	तबदीली नहीं

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۳۰﴾ مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا

और क़ाइम रखो तुम	और तुम डरो उस से	उस की तरफ़	रुजूअ़ करने वाले	30	वह जानते नहीं	अक्सर लोग

الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۳۱﴾ مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا

टुकड़े टुकड़े कर लिया	जिन्हों ने	(उन में) से	31	शिर्क करने वाले	से	और न हो तुम	नमाज़

دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ﴿۳۲﴾

32	ख़ुश हैं	उन के पास	उस पर	सब गिरोह	फ़िर्क़े फ़िर्क़े	और हो गए	अपना दीन

और उस की निशानियों में से है कि उस के हुक्म से ज़मीन और आस्मान क़ाइम हैं। फिर जब वह एक निदा दे कर तुम्हें ज़मीन से बुलाएगा तो तुम यकबारगी निकल आओगे। (25)

और उस के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में है, सब उसी के फ़रमांबरदार हैं। (26)

और वही है जो पहली बार ख़ल्क़त को पैदा करता है, फिर उस को दोबारा पैदा करेगा, और यह उस पर बहुत आसान है, और उसी की है बुलन्द तर शान आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (27)

उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारे हाल से एक मिसाल बयान की, क्या तुम्हारे लिए है (उन में) से जिन के तुम मालिक हो (तुम्हारे ग़ुलामों में से) उस रिज़्क़ में कोई शरीक? जो हम ने तुम्हें दिया ताकि तुम सब आपस में बराबर हो जाओ, क्या तुम उन से उस तरह डरते हो जैसे अपनों से डरते हो, उसी तरह हम अ़क़्ल वालों के लिए खोल कर निशानियां बयान करते हैं। (28)

बल्कि पैरवी की ज़ालिमों ने बेजाने अपनी ख़्वाहिशात की, तो जिसे अल्लाह गुमराह करे (उसे) कौन हिदायत देगा? और नहीं हैं उन के लिए कोई मददगार। (29)

पस तुम (अल्लाह) के दीन के लिए (सब से कट कर) यक रुख़ हो कर अपना चेहरा सीधा रखो, अल्लाह की उस फ़ित्रत पर जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया, उस की ख़ल्क़ (बनाई हुई फ़ित्रत) में कोई तबदीली नहीं, यह सीधा दीन है, और लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (30)

सब उस की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले (रहो) और तुम उसी से डरो, और तुम क़ाइम रखो नमाज़, और तुम शिर्क करने वालों में से न हो। (31)

उन में से जिन्हों ने अपना दीन टुकड़े टुकड़े कर लिया, फ़िर्क़े फ़िर्क़े हो गए। सब के सब गिरोह उस पर ख़ुश हैं जो उन के पास है। (32)

وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَآ

फिर जब	उस की तरफ़	रुजूअ़ करते हैं	अपने रब को	वह पुकारते हैं	कोई तक्लीफ़	पहुँचती है लोगों को	और जब

اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ لِيَكْفُرُوْا

कि नाशुक्री करें	33	शरीक करने लगते हैं	अपने रब के साथ	उन में से	एक गिरोह	नागहां	रहमत	अपनी तरफ़ से	वह उन को चखा देता है

بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ۭ فَتَمَتَّعُوْا ۪ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا

कोई सनद	उन पर	क्या हम ने नाज़िल की	34	तुम जान लोगे	फिर अ़नक़रीब	सो फ़ाइदा उठा लो तुम	उस की जो हम ने दिया

فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً

रहमत	लोग	हम चखाएं	और जब	35	शरीक करते हैं	उस के साथ	हैं	वह जो	कि वह बतलाती है

فَرِحُوْا بِهَا ۭ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	मायूस हो जाते हैं	नागहां वह	उन के हाथ	आगे भेजा	उस के सबब जो	कोई बुराई	पहुँचे उन्हें	और अगर	तो वह खुश हों उस से

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّ

बेशक	और तंग करता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़्क़	कुशादा करता है	कि अल्लाह	क्या उन्हों ने नहीं देखा

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ

उस का हक़	क़राबत दार	पस दो तुम	37	उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं	अलबत्ता निशानियां	इस में

وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ

वह चाहते हैं	उन लोगों के लिए जो	बेहतर	यह	और मुसाफ़िर	और मिसकीन

وَجْهَ اللّٰهِ ۡ وَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۟

ताकि बढ़े	सूद	से	तुम दो	और जो	38	फ़लाह पाने वाले	वह	और वही लोग	अल्लाह की रज़ा

فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ

ज़कात	से	और जो तुम दो	अल्लाह के हां	तो नहीं बढ़ता	लोग (जमा)	माल (जमा)	में

تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ

अल्लाह है जिस ने	39	चन्द दर चन्द करने वाले	वह	तो वही लोग	अल्लाह की रज़ा	चाहते हुए

خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ

से	क्या	वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा	फिर	फिर वह तुम्हें मौत देता है	फिर उस ने तुम्हें रिज़्क़ दिया	पैदा किया तुम्हें

شُرَكَاۗىِٕكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

उस से जो	और बरतर	वह पाक है	कुछ भी	इन (कामों) में से	करे	जो	तुम्हारे शरीक (जमा)

ع ١٣ يُشْرِكُوْنَ ﴿٤٠﴾ ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ

कमाया	उस से जो	और दर्या (तरी)	खुश्की में	फ़साद	ज़ाहिर हो गया	40	वह शरीक ठहराते हैं

اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤١﴾

41	बाज़ आ जाएं वह	शायद वह	उन्हों ने किया (आमाल)	बाज़	ताकि वह उन्हें (मज़ा) चखाए	लोगों के हाथ

और जब लोगों को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो अपने रब को पुकारते हैं उस की तरफ़ रुजूअ़ करते हुए, फिर जब वह उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत (का मज़ा) चखा देता है तो नागहां एक गिरोह (के लोग) उन में से अपने रब के साथ शरीक करने लगते हैं। (33) कि वह उसकी नाशुक्री करें जो हम ने उन्हें दिया, सो तुम (चन्द रोज़) फ़ाइदा उठा लो, फिर अ़नक़रीब (तुम उसका अन्जाम) जान लोगे। (34) क्या हम ने उन पर कोई सनद नाज़िल की? कि वह बतलाती है जो उस के साथ यह शरीक करते हैं। (35) और जब हम चखाएं लोगों को (रहमत का मज़ा) तो उस से खुश हों, और अगर उन्हें उस के सबब कोई बुराई पुहँचे जो उन के हाथों ने आगे भेजा (उन के आमाल से) तो वह नागहां मायूस हो जाते हैं। (36) क्या उन्हों ने नहीं देखा कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा करता है (और जिस के लिए चाहता है) तंग करता है, बेशक जो लोग ईमान रखते हैं उन के लिए इस में निशानियां हैं। (37) पस तुम क़राबतदारों को उस का हक़ दो और मोहताज और मुसाफ़िर को, यह उन के लिए बेहतर है जो अल्लाह की रज़ा चाहते हैं, और वही लोग फ़लाह (दो जहानों की कामयाबी) पाने वाले हैं। (38) और जो तुम सूद दो कि लोगों के माल बढ़ें (इज़ाफ़ा हो) तो (यह) अल्लाह के हां नहीं बढ़ता और जो तुम अल्लाह की रज़ा चाहते हुए ज़कात देते हो तो यही लोग हैं (अपना माल और अजर) चन्द दर चन्द करने वाले। (39) अल्लाह ही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रिज़्क़ दिया, फिर वह तुम्हें मौत देता है फिर वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा, क्या तुम्हारे शरीकों में से (कोई है) जो उन कामों मे से कुछ भी करे? वह पाक है और बरतर उस से जो वह शरीक ठहराते हैं। (40) फ़साद खुश्की और तरी में ज़ाहिर हो गया (फैल गया) उस से जो कमाया लोगों के हाथों ने (उन के आमाल के सबब) ताकि वह उन के बाज़ आमाल का मज़ा उन्हें चखाए, शायद वह बाज़ आ जाएं। (41)

قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

उन का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	फिर तुम देखो	ज़मीन	में	तुम चलो फिरो	आप (स) फ़रमा दें

مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ ﴿٤٢﴾ فَاَقِمْ وَجْهَكَ

अपना चेहरा	पस सीधा रखो	42	शिर्क करने वाले	उन के अक्सर	थे	पहले (थे)

لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِىَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	अल्लाह से	उस के लिए (जिस को)	टलना नहीं	वह दिन	आ जाए	कि	इस से क़ब्ल	दीने रास्त के लिए (तरफ़)

يَّصَّدَّعُوْنَ ﴿٤٣﴾ مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا

अच्छे अ़मल	और जिस ने किए	उस का कुफ़्र	तो उसी पर	जिस ने कुफ़्र किया	43	जुदा जुदा हो जाएंगे

فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ ﴿٤٤﴾ لِيَجْزِىَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए	उन लोगों को जो ईमान लाए	ताकि जज़ा दे वह	44	सामान कर रहे हैं	तो वह अपने लिए

مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ

और उस की निशानियों से	45	काफ़िर (जमा)	पसंद नहीं करता	बेशक वह	अपना फ़ज़्ल	से

اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيٰحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِىَ

और ताकि चलें	से (का) अपनी रहमत	और ताकि वह तुम्हें चखाए	खुशखबरी देने वाली	हवाएं	कि वह भेजता है

الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٤٦﴾

46	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस का फ़ज़्ल	से	और ताकि तुम तलाश करो	उस के हुक्म से	कश्तियां

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ

पस वह उन के पास आए	उन की क़ौमें	तरफ़	बहुत से रसूल	आप (स) से पहले	और तहक़ीक़ हम ने भेजे

بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا

हक़ (ज़िम्मे)	और है	वह जिन्हों ने जुर्म किया (मुजरिम)	से	फिर हम ने इन्तिक़ाम लिया	खुली निशानियों के साथ

عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ

हवाएं	जो भेजता है	अल्लाह	47	मोमिनीन	मदद	हम पर (हमारा)

فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِى السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ

और वह उसे कर देता है	वह चाहता है	जैसे	आस्मान में	फिर वह (बादल) फैलाता है	बादल	तो वह उभारती हैं

كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ

वह उसे पहुँचा देता है	फिर जब	उस के दरमियान से	निकलती है	बारिश की बूंद	फिर तू देखे	टुकड़े टुकड़े

مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَاِنْ كَانُوْا

थे	और अगरचे	48	खुशियां मनाने लगते हैं	अचानक वह	अपने बन्दों	से	जिसे वह चाहता है

مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ﴿٤٩﴾

49	अलबत्ता मायूस (जमा)	पहले (ही) से	उन पर	कि वह नाज़िल हो	उस से क़ब्ल

आप (स) फ़रमा दें तुम ज़मीन में चलो फिरो, फिर तुम देखो उन का अन्जाम कैसा हुआ जो पहले थे, उन के अक्सर शिर्क करने वाले थे। **(42)**

पस अपना चेहरा दीने रास्त की तरफ़ सीधा रखो इस से क़ब्ल कि वह दिन आ जाए जिस को टलना नहीं अल्लाह (की तरफ़) से, उस दिन (सब) जुदा जुदा हो जाएंगे। **(43)**

जिस ने कुफ़्र किया तो उस पर पड़ेगा उस के कुफ़्र (का वबाल), और जिस ने अच्छे अ़मल किए तो वह अपने लिए सामान कर रहे हैं। **(44)**

ताकि (अल्लाह) अपने फ़ज़्ल से उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, बेशक अल्लाह काफ़िरों को पसंद नहीं करता। **(45)**

और उस की निशानियों में से है कि वह भेजता है हवाएं खुशख़बरी देने वाली, और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत का मज़ा चखाए, और ताकि कश्तियां उस के हुक्म से चलें, और ताकि तुम तलाश करो उस का फ़ज़्ल (रिज़्क़) और ताकि तुम शुक्र करो। **(46)**

और तहक़ीक़ हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे उन की क़ौमों की तरफ़, पस वह उन के पास खुली निशानियों के साथ आए, फिर हम ने मुजरिमों से इन्तिक़ाम लिया और हमारे ज़िम्मे है मोमिनों की मदद करना। **(47)**

अल्लाह (ही है) जो हवाएं भेजता है, तो वह बादल उभारती हैं, फिर वह फैलाता है बादल, आस्मान में जैसे वह चाहता है और वह उस (बादल) को टुकड़े टुकड़े कर देता है, फिर तू देखे कि उस के दरमियान से मीनह निकलता है, फिर वह अपने बन्दों में से जिसे चाहे वह पहुँचा देता है, तो वह अचानक खुशियां मनाने लगते हैं। **(48)**

अगरचे उस से क़ब्ल कि (बारिश) उन पर नाज़िल हो वह पहले ही से मायूस हो रहे थे। **(49)**

فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ

उस के मरने के बाद	ज़मीन	वह कैसे ज़िन्दा करता है	अल्लाह की रहमत	आसार	तरफ़	पस देख तो

اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ وَلَئِنْ

और अगर	50	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	मुर्दे	अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला	वही	बेशक

اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ﴿٥١﴾ فَاِنَّكَ

पस बेशक आप (स)	51	नाशुक्री करने वाले	उस के बाद	ज़रूर हो जाएं	ज़र्द शुदा	फिर वह उसे देखें	हवा	हम भेजें

لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٢﴾

52	पीठ दे कर	जब वह फिर जाएं	आवाज़	बहरों	सुना सकते	और नहीं	मुर्दों	नहीं सुना सकते

وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ

जो ईमान लाता है	मगर	आप नहीं सुना सकते	उस की गुमराही से	अन्धा	हिदायत देने वाले	और आप (स) नहीं

بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿٥٣﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضَعْفٍ

कमज़ोरी	से (में)	वह जिस ने तुम्हें पैदा किया	अल्लाह	53	फ़रमांबरदार (जमा)	पस वह	हमारी आयतों पर

ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ

कुव्वत	बाद	फिर उस ने कर दिया	कुव्वत	कमज़ोरी	बाद	उस ने बनाया-दी	फिर

ضَعْفًا وَّشَيْبَةً ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿٥٤﴾

54	क़ुदरत वाला	इल्म वाला	और वह	जो वह चाहता है	वह पैदा करता है	और बुढ़ापा	कमज़ोरी

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ

एक घड़ी से ज़ियादा	वह नहीं रहे	मुज्रिम (जमा)	क़सम खाएंगे	क़ियामत	क़ाइम होगी	और जिस दिन

كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ﴿٥٥﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

इल्म दिया गया	वह लोग जिन्हें	और कहा-कहेंगे	55	औन्धे जाते	वह थे	उसी तरह

وَالْاِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ۡ فَهٰذَا

पस यह है	जी उठने का दिन	तक	में (मुताबिक़) नविश्ताए इलाही	यक़ीनन तुम रहे हो	और ईमान

يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٥٦﴾ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ

नफ़ा न देगी	पस उस दिन	56	न जानते थे	तुम	और लेकिन	जी उठने का दिन

الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا

और तहक़ीक़ हम ने बयान कीं	57	राज़ी करना चाहा जाएगा	और न वह	उन की माज़िरत	जिन्हों ने ज़ुल्म किया	वह लोग जो

لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ

तुम लाओ उन के पास कोई निशानी	और अगर	मिसालें	हर क़िस्म	इस क़ुरआन	में	लोगों के लिए

لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	झूट बनाते हो	मगर (सिर्फ़)	तुम नहीं हो	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तो ज़रूर कहेंगे

पस तू आसार (निशानियों) की तरफ़ देख अल्लाह की रहमत के, वह कैसे ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है! बेशक वही मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (50)

और अगर हम हवा भेजें, फिर वह उसे ज़र्द शुदा देखें तो वह ज़रूर हो जाएं उस के बाद नाशुक्री करने वाले। (51)

पस बेशक आप (स) न मुर्दों को सुना सकते हैं और न बहरों को आवाज़ सुना सकते हैं, जब वह पीठ दे कर फिर जाएं। (52)

आप (स) नहीं अँधे को उस की गुमराही से हिदायत देने वाले, नहीं सुना सकते मगर (सिर्फ़ उसे) जो हमारी आयतों पर ईमान लाता है, पस वही फ़रमांबरदार हैं। (53)

अल्लाह ही है वह जिस ने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद कुव्वत, फिर कुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया, वह जो चाहता है पैदा करता है, और वह इल्म वाला क़ुदरत वाला है। (54)

और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी क़सम खाएंगे मुज्रिम कि वह एक घड़ी से ज़ियादा नहीं रहे, इसी तरह वह औन्धे जाते थे। (55)

और वह कहेंगे जिन्हें इल्म और ईमान दिया गयाः यक़ीनन तुम किताबे ईलाही के मुताबिक़ जी उठने के दिन तक रहे हो, पस यह है जी उठने का दिन, लेकिन तुम न जानते थे। (56)

पस उस दिन नफ़ा न देगी उन लोगों को उन की माज़िरत (उज़्र ख़्वाही) जिन्हों ने ज़ुल्म किया, और न उन से (अल्लाह को) राज़ी करना चाहा जाएगा। (57)

और तहक़ीक़ हम ने बयान कीं लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म की मिसालें, और अगर तुम उन के पास कोई निशानी लाओ तो काफ़िर ज़रूर कहेंगे, तुम सिर्फ़ झूट बनाते हो। (58)

ع ١٣
٥
٨

قرأ حفص بضم الضاد وفتحها في الثلاثة لكن الضم مختارة ١٢

इसी तरह अल्लाह उन के दिलों पर मुहर लगा देता है जो समझ नहीं रखते। (59)
आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है और जो लोग यक़ीन नहीं रखते वह किसी तौर आप को सुबुक (बरदाशत न करने वाला-ओछा) न कर दें। (60)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
अलिफ़-लाम-मीम। (1)
यह आयतें हैं पुर हिक्मत किताब की। (2)
हिदायत और रहमत हैं नेकोकारों के लिए। (3)
जो लोग नमाज़ क़ाइम करते हैं, और ज़कात अदा करते हैं, और वह आख़िरत पर यक़ीन रखते हैं। (4)
यही लोग अपने रब (की तरफ़) से हिदायत पर हैं और यही लोग फ़लाह (दो जहान की कामयाबी) पाने वाले हैं। (5)
और लोगों में से कोई ऐसा (बद नसीब भी) है जो ख़रीदता है बेहूदा बातें ताकि वह बेसमझे अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे, और वह उसे हँसी मज़ाक़ ठहराते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब है। (6)
और जब उस पर हमारी आयतें पढ़ी (सुनाई) जाती हैं तो तकब्बुर करते हुए मुँह मोड़ लेता है गोया उस ने उसे सुना ही नहीं, गोया उस के कानों में गिरानी (बहरापन) है, पस उसे दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दो। (7)
बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए नेमतों के बाग़ात हैं। (8)
उन में वह हमेशा रहेंगे, अल्लाह का वादा सच्चा है, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (9)
उस ने सुतून के बग़ैर आस्मानों को पैदा किया, तुम उन्हें देखते हो, और उस ने डाले ज़मीन में पहाड़ कि तुम्हारे साथ झुक न जाए, और उस ने उस में हर क़िस्म के जानवर फैलाए, और हम ने उतारा आस्मान से पानी, फिर हम ने उस में उगाए हर क़िस्म के उम्दा जोड़े। (10)

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	समझ नहीं रखते	जो लोग	दिल (जमा)	पर	अल्लाह मुहर लगा देता है	उसी तरह

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ﴿٦٠﴾ ع ٦/٩

60	यक़ीन नहीं रखते	जो लोग	और वह हरगिज़ हलका न पाएं आप को	सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	पस आप सब्र करें

آيَاتُهَا ٣٤ ❀ سُوْرَةُ لُقْمٰنَ (٣١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकुआत 4 — (31) सूरह लुक़मान — आयात 34

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣﴾

3	नेकोकारों के लिए	और रहमत	हिदायत	2	पुर हिक्मत किताब	आयतें	यह	1	अलिफ़ लाम मीम

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ

आख़िरत पर	और वह	ज़कात	और अदा करते हैं	नमाज़	क़ाइम करते हैं	जो लोग

هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥﴾

5	फ़लाह पाने वाले	वह	और यही लोग	अपने रब से	हिदायत	पर	यही लोग	4	वह यक़ीन रखते हैं

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का रास्ता	से	ताकि वह गुमराह करे	खेल की (बेहूदा) बातें	ख़रीदता है	जो	लोग	और से

بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۭ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٦﴾

6	ज़िल्लत वाला अ़ज़ाब	उन के लिए	यही लोग	हँसी मज़ाक़	और वह उसे ठहराते हैं	बे समझे

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ

गोया	उस ने उसे सुना नहीं	गोया	तकब्बुर करते हुए	वह मुँह मोड़ लेता है	हमारी आयतें	पढ़ी जाती हैं उस पर	और जब

فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	बेशक जो लोग	7	दर्दनाक	अ़ज़ाब की	पस उसे ख़ुशख़बरी दो	गिरानी	उस के कानों में

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ﴿٨﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۭ

सच्चा	अल्लाह का वादा	उस में	हमेशा रहेंगे	8	नेमतों के बाग़ात	उन के लिए	अच्छे

وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٩﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى

और उस ने डाले	तुम उन्हें देखते हो	बग़ैर सुतून	आस्मान (जमा)	उस ने पैदा किया	9	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह

فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۭ

जानवर	हर क़िस्म	उस में	और फैलाए	झुक (न) जाए तुम्हारे साथ	कि	पहाड़ (जमा)	ज़मीन में

وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ﴿١٠﴾

10	उम्दा	जोड़े	हर क़िस्म	उस में	फिर हम ने उगाए	पानी	आस्मान से	और हम ने उतारा

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ

बल्कि	उस के सिवा	वह जो	पैदा किया	क्या	पस तुम मुझे दिखाओ	ख़ल्क़त (बनाया हुआ) अल्लाह का	यह

الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿١١﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ ع ١٠

तुम शुक्र करो	कि	हिक्मत	लुक़मान	और अलबत्ता हम ने दी	11	खुली गुमराही	में	ज़ालिम (जमा)

لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ

बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	और जिस ने नाशुक्री की	अपने लिए	वह शुक्र करता है	तो इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	शुक्र करता है	और जो	अल्लाह का

حَمِيْدٌ ﴿١٢﴾ وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ ١٢ وقف النبي ﷺ

अल्लाह के साथ	तू न शरीक ठहरा	ऐ मेरे बेटे	उसे नसीहत कर रहा था	और वह	अपने बेटे को	लुक़मान	कहा	और जब	12	तारीफ़ों के साथ

اِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ﴿١٣﴾ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ

उसे पेट में रखा	उस के माँ बाप के बारे में	इन्सान	और हम ने ताकीद कर दी	13	अलबत्ता ज़ुल्मे अ़ज़ीम	बेशक शिर्क

اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ

और अपने माँ बाप का	कि तू मेरा शुक्र कर	दो साल में	और उस का दूध छुड़ाना	पर कमज़ोरी	कमज़ोरी	उस की माँ

اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿١٤﴾ وَاِنْ جٰهَدٰكَ عَلٰٓى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ النصف

तुझे	जिस का नहीं	मेरा	कि तू शरीक ठहराए	पर (की)	वह तेरे साथ कोशिश करें	और अगर	14	लौट कर आना	मेरी तरफ़

بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۪ وَّاتَّبِعْ

और तू पैरवी कर	अच्छे तरीक़े से	दुनिया में	और उन के साथ बसर कर	तू उन दोनों का कहा न मान	कोई इल्म	उस का

سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا

जो कुछ	सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा	तुम्हें लौट कर आना है	मेरी तरफ़	फिर	मेरी तरफ़	रुजूअ़ करे	जो	रास्ता

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ يٰبُنَيَّ اِنَّهَآ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ

राई	से (के)	वज़न (बराबर) दाना	अगर हो	बेशक वह	ऐ मेरे बेटे	15	तुम करते थे

فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ يَاْتِ بِهَا

ले आएगा उसे	ज़मीन में	या	आस्मानों में	या	सख़्त पत्थर	में	फिर वह हो

اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿١٦﴾ يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ

और हुक्म दे	क़ाइम कर नमाज़	ऐ मेरे बेटे	16	ख़बरदार	बारीक बीन	बेशक अल्लाह	अल्लाह

بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ اَصَابَكَ ؕ

जो तुझ पर पहुँचे	पर	और सब्र कर	बुरी बात	से	और रोक तू	अच्छे काम

اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿١٧﴾ وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ

लोगों से	अपना रुख़्सार	और तू टेढ़ा न कर	17	बड़ी हिम्मत के काम	से	बेशक यह

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿١٨﴾

18	खुद पसंद	इतराने वाले	हर किसी	पसंद नहीं करता	बेशक अल्लाह	इतराता	ज़मीन में	और न चल तू

यह अल्लाह का बनाया हुआ है, पस तुम मुझे दिखाओ क्या पैदा किया उन्हों ने जो उस के सिवा हैं, बल्कि ज़ालिम खुली गुमराही में हैं। (11)
और अलबत्ता हम ने दी लुक़मान को हिक्मत, (और फ़रमाया) कि तुम अल्लाह का शुक्र करो, और जो शुक्र करता है तो वह सिर्फ़ अपने (ही भले के) लिए करता है, और जिस ने नाशुक्री की तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, तारीफ़ों के साथ है। (12)
और (याद करो) जब लुक़मान ने अपने बेटे को कहा और वह उसे नसीहत कर रहा था, ऐ मेरे बेटे! तू अल्लाह के साथ शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क एक ज़ुल्मे अ़ज़ीम है। (13)
और हम ने इन्सान को ताकीद की उस के माँ बाप के बारे में (हुस्ने सुलूक की) उस की माँ ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी (झेलते हुए) उसे पेट में रखा, और दो साल में उस का दूध छुड़ाया, कि मेरा शुक्र कर और अपने माँ बाप का, मेरी तरफ़ (ही) लौट कर आना है। (14)
और अगर वह दोनों तेरे साथ कोशिश करें कि तू मेरा शरीक ठहराए, जिस का तुझे कोई इल्म (सनद) नहीं तो उन का कहा न मान, और दुनिया (के मामलात) में उन के साथ अच्छे तरीक़े से बसर कर, और उस के रास्ते की पैरवी कर जो रुजूअ़ करे मेरी तरफ़, फिर तुम्हें मेरी तरफ़ ही लौट कर आना है, सो मैं तुम्हें आगाह करूँगा जो कुछ तुम करते थे। (15)
ऐ मेरे बेटे! अगर (कोई चीज़) एक राई के दाने के बराबर (भी) हो, फिर वह किसी सख़्त पत्थर (चटान) में (पोशीदा) हो, या आस्मानों में, या ज़मीन में (पोशीदा) हो, अल्लाह उसे ले आएगा (हाज़िर कर देगा), बेशक अल्लाह बारीक बीन, बाख़बर है। (16)
ऐ मेरे बेटे! नमाज़ क़ाइम कर, और अच्छे कामों का हुक्म दे, और तू बुरी बातों से रोक और तुझ पर जो (उफ़्ताद) पहुँचे उस पर सब्र कर, बेशक यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (17)
और तू लोगों से (बात करते हुए) अपना रुख़्सार न टेढ़ा कर, और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, बेशक अल्लाह पसंद नहीं करता किसी इतराने वाले, खुद पसंद को। (18)

وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ صَوْتِكَ ؕ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ

आवाज़ें	सब से नापसंदीदा	बेशक	अपनी आवाज़ को	और पस्त कर	अपनी रफ़्तार में	और मियाना रवी कर

لَصَوْتُ الْحَمِيْرِ ﴿١٩﴾ اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا ع ٢ ٨ ١١

और जो कुछ	आस्मानों में	जो कुछ	तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया	कि अल्लाह	क्या तुम ने नहीं देखा	19	गधा	आवाज़

فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ وَمِنَ النَّاسِ

लोग	और बाज़	और पोशीदा	ज़ाहिर	अपनी नेमतें	तुम पर (तुम्हें)	और भरपूर दें	ज़मीन में

مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾

20	और बग़ैर किताबे रोशन	और बग़ैर हिदायत	इल्म	बग़ैर	अल्लाह (के बारे में)	झगड़ता है	जो

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا

जो हम ने पाया	बल्कि हम पैरवी करेंगे	वह कहते हैं	नाज़िल किया अल्लाह	जो	तुम पैरवी करो	उन से	कहा जाए	और जब

عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾

21	दोज़ख़	अ़ज़ाब	तरफ़	उन को बुलाता	शैतान	हो	क्या अगर	अपने बाप दादा	उस पर

وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

तो बेशक उस ने थामा	नेकोकार	और वह	अल्लाह की तरफ़	अपना चेहरा	झुका दे	और जो

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ؕ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾ وَمَنْ كَفَرَ

और जो कुफ़्र करे	22	तमाम काम (जमा)	इन्तिहा	और अल्लाह की तरफ़	हल्क़ा मज़बूत

فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ؕ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	वह करते थे	फिर हम उन्हें ज़रूर जतलाएंगे वह जो	उन का लौटना	हमारी तरफ़	उस का कुफ़्र	तो आप (स) को ग़मगीन न कर दे

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾ نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى

तरफ़	फिर हम उन्हें खींच लाएंगे	थोड़ा	हम उन्हें फ़ाइदा देंगे	23	सीनों (दिलों) के भेद	जानने वाला

عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

और ज़मीन	आस्मानों (को)	किस ने पैदा किया	तुम उन से पूछो	और अगर	24	सख़्त	अ़ज़ाब

لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾ لِلّٰهِ مَا

अल्लाह के लिए जो कुछ	25	जानते नहीं	बल्कि उन के अक्सर	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	फ़रमा दें	तो वह यक़ीनन कहेंगे "अल्लाह"

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾ وَلَوْ اَنَّمَا

यह हो कि जो	और अगर	26	तारीफ़ों के क़ाबिल	बेनियाज़	वह	बेशक अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों में

فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ

उस के बाद	उस की सियाही	और समन्दर	क़लमें	दरख़्त	से-कोई	ज़मीन	में

سَبْعَةُ اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿٢٧﴾

27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	अल्लाह की बातें	तो भी ख़तम न हों	समन्दर (जमा)	सात

और अपनी रफ़्तार में मियाना रवी (इख़्तियार) कर, और अपनी आवाज़ को पस्त रख, बेशक आवाज़ों में सब से नापसंदीदा आवाज़ गधे की है। (19)

क्या तुम ने नहीं देखा कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया है जो कुछ आस्मानों में और जो कुछ ज़मीन में है, और उस ने तुम्हें अपनी ज़ाहिर और पोशीदा नेमतें भरपूर दीं, और लोगों में बाज़ (ऐसे हैं) जो अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं बग़ैर इल्म, बग़ैर हिदायत और बग़ैर रोशन किताब के। (20)

और जब उन से कहा जाए, जो अल्लाह ने नाज़िल किया है तुम उस की पैरवी करो तो वह कहते हैं बल्कि हम उस की पैरवी करेंगे जिस पर हम ने अपने बाप दादा को पाया है, क्या (उस सूरत में भी कि) अगर शैतान उन को दोज़ख़ के अ़ज़ाब की तरफ़ बुलाता हो? (21)

और जो झुका दे चेहरा (सरे तसलीम ख़म कर दे) अल्लाह की तरफ़, और वह नेकोकार हो, तो बेशक उस ने मज़बूत हल्क़ा (दस्त आवेज़) थाम लिया, और अल्लाह की तरफ़ (ही) तमाम कामों की इन्तिहा है। (22)

और जो कुफ़्र करे तो उस का कुफ़्र आप (स) को ग़मगीन न कर दे, उन्हें हमारी तरफ़ (ही) लौटना है, फिर हम उन्हें ज़रूर जतलाएंगे जो वह करते थे, बेशक अल्लाह दिलों के भेद जानने वाला है। (23)

हम उन्हें थोड़ा (चन्द रोज़ा) फ़ाइदा देंगे, फिर उन्हें खींच लाएंगे सख़्त अ़ज़ाब की तरफ़। (24)

और अगर तुम उन से पूछो: किस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया? तो वह यक़ीनन कहेंगे "अल्लाह"। आप (स) फ़रमा दें तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, बल्कि उन के अक्सर नहीं जानते। (25)

अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, बेशक अल्लाह बेनियाज़, तारीफ़ों के क़ाबिल। (26)

और अगर यह हो कि ज़मीन में जो भी दरख़्त हैं क़लम बन जाएं और समन्दर उस की सियाही (बन जाएं) और उस के बाद सात समन्दर (और हों) तो भी अल्लाह की बातें ख़तम न हों, बेशक अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27)

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٢٨﴾

28	देखने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	जैसे एक शख़्स	मगर	और नहीं तुम्हारा जी उठाना	नहीं तुम सब का पैदा करना

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ

रात में	दिन	और दाख़िल करता है	दिन में	रात	दाख़िल करता है	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा

وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۙ كُلٌّ يَّجْرِىْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى وَّاَنَّ اللّٰهَ

और यह कि अल्लाह	मुक़र्ररा	मुद्दत	तरफ़	चलता रहेगा	हर एक	और चाँद	सूरज	और उस ने मुसख़्ख़र किया

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ

वह परस्तिश करते हैं	जो-जिस	और यह कि	वही बरहक़	इस लिए कि अल्लाह	यह	29	ख़बरदार	उस से जो कुछ तुम करते हो

ع ٣ ١١ ١٢

مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِىُّ الْكَبِيْرُ ﴿٣٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ

कि	क्या तू ने नहीं देखा	30	बड़ाई वाला	बुलन्द मरतबा	वही	और यह कि अल्लाह	बातिल	उस के सिवा

الْفُلْكَ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ؕ اِنَّ

बेशक	उस की निशानियां	ताकि वह तुम्हें दिखा दे	अल्लाह की नेमतों के साथ	दर्या में	चलती है	कश्ती

فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣١﴾ وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ

साइबानों की तरह	मौज	उन पर छा जाती है	और जब	31	बड़े शुक्र गुज़ार	बड़े सब्र वाले	वास्ते हर	अलबत्ता निशानियां	उस में

دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى الْبَرِّ

ख़ुश्की की तरफ़	उस ने उन्हें बचा लिया	फिर जब	उस के लिए दीन (इबादत)	ख़ालिस कर के	वह अल्लाह को पुकारते हैं

فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٢﴾

32	नाशुक्रा	अ़हद शिकन	हर	सिवाए	हमारी आयतों का	और इन्कार नहीं करता	मियाना रो	तो उन में कोई

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِىْ وَالِدٌ

कोई बाप	न काम आएगा	वह दिन	और ख़ौफ़ करो	अपना परवरदिगार	तुम डरो	लोगो	ऐ

عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

अल्लाह का वादा	बेशक	कुछ	से (के) बाप	काम आएगा	वह	और न कोई बेटा	अपने बेटे	से-के

حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ

अल्लाह से	और तुम्हें हरगिज़ धोका न दे	दुनिया की ज़िन्दगी	सो तुम्हें हरगिज़ धोके में न डाले	सच्चा

الْغَرُوْرُ ﴿٣٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ۚ

बारिश	और वह नाज़िल करता है	क़ियामत का इल्म	उस के पास	बेशक अल्लाह	33	धोका देने वाला

وَيَعْلَمُ مَا فِى الْاَرْحَامِ ؕ وَمَا تَدْرِىْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ؕ

कल	वह करेगा	क्या	कोई शख़्स	जानता	और नहीं	(हामिला के) रहम में	जो	और वह जानता है

ع ٤ ١٣

وَمَا تَدْرِىْ نَفْسٌۢ بِاَىِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿٣٤﴾

34	ख़बरदार	इल्म वाला	बेशक अल्लाह	वह मरेगा	ज़मीन	किस	कोई शख़्स	और नहीं जानता

नहीं है तुम सब का पैदा करना और नहीं है तुम्हारा जी उठाना मगर जैसे एक शख़्स (का पैदा करना), बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (28)

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह दाख़िल करता है रात को दिन में, और दिन को दाख़िल करता है रात में, और उस ने सूरज और चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक चलता रहेगा मुद्दते मुक़र्ररा (रोज़े क़ियामत) तक। और यह कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से ख़बरदार है। (29)

यह इस लिए है कि अल्लाह ही बरहक़ है और यह कि वह उस के सिवा जिस की परस्तिश करते हैं सब बातिल हैं, और यह कि अल्लाह ही बुलन्द मरतबा, बड़ाई वाला है। (30)

क्या तू ने नहीं देखा कि अल्लाह की नेमतों के साथ कश्ती दर्या में चलती है ताकि वह तुम्हें उस की निशानियां दिखा दे, बेशक उस में हर बड़े सब्र करने वाले, शुक्र गुज़ार के लिए निशानियां हैं। (31)

और जब मौज उन पर साइबानों की तरह छा जाती है तो वह अल्लाह को पुकारते हैं ख़ालिस कर के उसी के लिए इबादत, फिर जब उस ने उन्हें ख़ुश्की की तरफ़ बचा लिया तो उन में कोई मियाना रो रहता है। और हमारी आयतों का इन्कार नहीं करता सिवाए हर अ़हद शिकन नाशुक्रे के। (32)

ऐ लोगो! तुम अपने परवरदिगार से डरो, और उस दिन का ख़ौफ़ करो (जिस दिन) न काम आएगा कोई बाप अपने बेटे के, और न कोई बेटा अपने बाप के कुछ काम आएगा, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, सो तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ धोके में न डाल दे, और धोका देने वाला (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज़ धोका न दे। (33)

बेशक अल्लाह ही के पास है क़ियामत का इल्म, वही बारिश नाज़िल करता है, और वह जानता है जो हामिला के रहम में है, और नहीं जानता कोई शख़्स के वह कल क्या करेगा, और कोई शख़्स नहीं जानता कि वह किस ज़मीन में मरेगा, बेशक अल्लाह इल्म वाला, ख़बरदार है। (34)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अलिफ़-लाम-मीम। (1)

इस में कोई शक नहीं कि इस किताब (क़ुरआन) का नाज़िल करना तमाम जहानों के परवरदिगार की तरफ़ से है। (2)

क्या वह कहते हैं कि यह उस ने घड़ लिया है? (नहीं) बल्कि यह तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से हक़ है ताकि तुम उस क़ौम को डराओ जिस के पास कोई डराने वाला नहीं आया तुम से पहले, ताकि वह हिदायत पा लें। (3)

अल्लाह (ही है) जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को और जो उन के दरमियान है छः (6) दिन में, फिर उस ने अ़र्श पर क़रार किया, तुम्हारे लिए उस के सिवा नहीं कोई मददगार, और न सिफ़ारिश करने वाला, सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (4)

वह हर काम की तदबीर करता है आस्मान से ज़मीन तक, फिर (वह काम) उस की तरफ़ रुजूअ़ करेगा एक दिन में, जिस की मिक़्दार एक हज़ार साल है उस (हिसाब) से जो तुम शुमार करते हो। (5)

वह पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला, ग़ालिब, मेहरबान। (6)

वह जिस ने हर शै बहुत ख़ूब बनाई जो उस ने पैदा की और इन्सान की पैदाइश की इब्तिदा मिट्टी से की। (7)

फिर उस की नस्ल को बेक़द्र पानी के ख़ुलासे से बनाया। (8)

फिर उस ने उस के आज़ा को ठीक किया, और उस में फूंकी अपनी (तरफ़ से) अपनी रूह, और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए, तुम बहुत कम हो जो शुक्र करते हो। (9)

और उन्हों ने कहा: क्या जब हम ज़मीन में गुम हो जाएंगे तो क्या नई पैदाइश में (आएंगे)? बल्कि वह अपने रब की मुलाक़ात से मुन्किर हैं। (10)

آيَاتُهَا ٣٠ ❀ سُوْرَةُ السَّجْدَةِ (٣٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 | (32) सूरतुस सजदा | आयात 30

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

الٓمّٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢﴾

2	परवरदिगार तमाम जहानों का	से	इस में	कोई शक नहीं	किताब	नाज़िल करना	1	अलिफ़ लाम मीम

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا

उस क़ौम को	ताकि तुम डराओ	तुम्हारा रब	से	हक़	यह	बल्कि	यह उस ने घड़ लिया है	वह कहते हैं	क्या

مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ ﴿٣﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	3	हिदायत पालें	ताकि वह	तुम से पहले	से	डराने वाला	कोई	उन के पास नहीं आया

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ

दिन	छः (6)	में	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों को	पैदा किया	वह जिस ने

ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ

और न सिफ़ारिश करने वाला	मददगार	से- कोई	उस के सिवा	तुम्हारे लिए नहीं	अ़र्श पर	उस ने क़रार किया	फिर

اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٤﴾ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ اِلَى الْاَرْضِ ثُمَّ

फिर	ज़मीन तक	आस्मान	से	तमाम काम	वह तदबीर करता है	4	सो क्या तुम ग़ौर नहीं करते

يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٥﴾

5	तुम शुमार करते हो	उस से जो	एक हज़ार साल	उस की मिक़्दार	है	एक दिन में	उस की तरफ़	(उस का रिपोर्ट) चढ़ता है

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦﴾ الَّذِيْٓ اَحْسَنَ

बहुत ख़ूब बनाई	वह जिस ने	6	मेहरबान	ग़ालिब	और ज़ाहिर	जानने वाला पोशीदा	वह

كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ﴿٧﴾ ثُمَّ جَعَلَ

बनाया	फिर	7	मिट्टी	से	इन्सान	पैदाइश	और इब्तिदा की	जो उस ने पैदा की	हर शै

نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٨﴾ ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ

से	उस में	और फूंकी	फिर उस (के आज़ा) को ठीक किया	8	हक़ीर (बेक़द्र) पानी	से	ख़ुलासे से	उस की नस्ल

رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا

जो	बहुत कम	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	तुम्हारे लिए	और बनाए	अपनी रूह

تَشْكُرُوْنَ ﴿٩﴾ وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا لَفِيْ

तो - में	क्या हम	ज़मीन में	हम गुम हो जाएंगे	क्या जब	और उन्हों ने कहा	9	तुम शुक्र करते हो

خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ بَلْ هُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ﴿١٠﴾

10	मुन्किर (जमा)	अपना रब	मुलाक़ात से	वह	बल्कि	नई पैदाइश

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِىْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ

तुम अपने रब की तरफ़	फिर	तुम पर	वह जो कि मुक़र्रर किया गया है	मौत का फ़रिश्ता	तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करता है	फ़रमा दें

ع ١١/١٤ تُرْجَعُوْنَ ﴿١١﴾ وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ

अपने रब के सामने	अपने सर	झुकाए होंगे	मुजरिम (जमा)	जब	तुम देखो	और अगर	11	लौटाए जाओगे

رَبَّنَاۤ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ﴿١٢﴾

12	यक़ीन करने वाले	बेशक हम	अच्छे अमल	हम करेंगे	पस हमें लौटा दे	और हम ने सुन लिया	हम ने देख लिया	ऐ हमारे रब

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّىْ

मेरी तरफ़ से	बात	साबित हो चुकी है	और लेकिन	उस की हिदायत	हर शख़्स	हम ज़रूर देते	हम चाहते	और अगर

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣﴾ فَذُوْقُوْا بِمَا

वह जो	पस चखो तुम	13	इकटठे	और इन्सान	जिन्नों	से	अलबत्ता मैं ज़रूर भर दूँगा जहन्नम

نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا

उस का बदला जो	हमेशा का अ़ज़ाब	और चखो तुम	बेशक हम ने तुम्हें भुला दिया	इस	अपने दिन	मुलाक़ात	तुम ने भुला दिया था

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا

वह	याद दिलाई जाती हैं	जब	वह जो	हमारी आयतों पर	ईमान लाते हैं	इस के सिवा नहीं	14	तुम करते थे

السجدة ٩ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿١٥﴾ تَتَجَافٰى

अलग रहते हैं	15	तकब्बुर नहीं करते	और वह	अपना रब	तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान करते हैं	गिर पड़ते हैं सिज्दे में

جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۫ وَّمِمَّا

और उस से जो	और उम्मीद	डर	अपना रब	वह पुकारते हैं	ख़्वाबगाहों (बिस्तरों)	से	उन के पहलू

رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿١٦﴾ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّاۤ اُخْفِىَ لَهُمْ مِّنْ

से	उन के लिए	छुपा रखा गया	जो	कोई शख़्स	सो नहीं जानता	16	वह ख़र्च करते हैं	हम ने उन्हें दिया

قُرَّةِ اَعْيُنٍ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٧﴾ اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ

हो	उस के मानिन्द जो	मोमिन	हो	तो क्या जो	17	जो वह करते थे	उस का	जज़ा	आँखों की ठंडक

وقف غفران فَاسِقًا ۭ لَا يَسْتَوٗنَ ﴿١٨﴾ اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ

तो उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	रहे	18	वह बराबर नहीं होते	फ़ासिक़ (नाफ़रमान)

جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۡ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا

नाफ़रमानी की	वह जिन्हों ने	और रहे	19	वह करते थे	उस के (सिले में) जो	मेहमानी	बाग़ात रहने के

فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ كُلَّمَاۤ اَرَادُوْۤا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَاۤ اُعِيْدُوْا فِيْهَا

उस में	लौटा दिए जाएंगे	उस से	कि वह निकलें	वह इरादा करेंगे	जब भी	जहन्नम	तो उन का ठिकाना

وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٠﴾

20	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जो	दोज़ख़ का अ़ज़ाब	तुम चखो	उन्हें	और कहा जाएगा

आप (स) फ़रमा दें, मौत का फ़रिश्ता तुम्हारी रूह क़ब्ज़ करता है, जो तुम पर मुक़र्रर किया गया है, फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (11)
और अगर तुम देखो जब मुजरिम अपने रब के सामने अपने सर झुकाए होंगे (और कह रहे होंगे) ए हमारे रब! (अब) हम ने देख लिया और सुन लिया, पस हमें लौटा दे कि हम अच्छे अ़मल करेंगे, बेशक हम यक़ीन करने वाले हैं। (12)
और अगर हम चाहते तो ज़रूर हर शख़्स को उस की हिदायत दे देते लेकिन (यह) बात साबित हो चुकी है मेरी तरफ़ से कि मैं अलबत्ता जहन्नम को ज़रूर भर दूँगा, इकटठे जिन्नों और इन्सानों से। (13)
पस तुम उस का (मज़ा) चखो जो तुम ने भुला दिया था अपने इस दिन की मुलाक़ात (हाज़िरी) को, हम ने (भी) तुम्हें भुला दिया, और चखो हमेशा का अ़ज़ाब उस के बदले जो तुम करते थे। (14)
इस के सिवा नहीं कि हमारी आयतों पर वह लोग ईमान लाते हैं कि जब वह उन्हें याद दिलाई जाती हैं तो सिज्दे में गिर पड़ते हैं अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं और वह तकब्बुर नहीं करते। (15)
उन के पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं, और वह अपने रब को पुकारते हैं डर और उम्मीद से और जो हम ने उन्हें दिया है उस में से वह ख़र्च करते हैं। (16)
सो कोई शख़्स नहीं जानता जो छुपा रखा गया है उन के लिए आँखों की ठंडक से, उस की जज़ा है जो वह करते थे। (17)
तो क्या जो मोमिन हो वह उस के बराबर है जो नाफ़रमान हो? (फ़रमा दें) वह बराबर नहीं होते। (18)
रहे वह लोग जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए तो उन के लिए रहने के बाग़ात हैं, उस के बदले में जो वह करते थे। (19)
और रहे वह जिन्हों ने नाफ़रमानी की तो उन का ठिकाना जहन्नम है, वह जब भी उस से निकलने का इरादा करेंगे वह उस में लौटा दिए (ढकेल दिए) जाएंगे, और उन्हें कहा जाएगा दोज़ख़ का अ़ज़ाब चखो, वह जिस को तुम झुटलाते थे। (20)

وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ

अज़ाब	सिवाए (पहले)	नज़्दीक	अज़ाब	कुछ	और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे

الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ

उसे नसीहत की गई	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	21	लौट आएं	शायद वह	बड़ा

بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾ ع ٢ ١١ ١٥

22	इन्तिक़ाम लेने वाले	मुजरिम (जमा)	से	बेशक हम	उस से	उस ने मुँह फेर लिया	फिर	उस के रब की आयात से

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ

शक में	तो तुम न रहो	किताब (तौरेत)	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दी

مِّن لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

23	बनी इस्राईल के लिए	हिदायत	और हम ने बनाया उसे	उस का मिलना	से-मुतअ़ल्लिक़

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ

उन्हों ने सब्र किया	जब	हमारे हुक्म से	वह रहनुमाई करते	इमाम (पेश्वा)	उन से	और हम ने बनाया

وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ

उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा	वह	तुम्हारा रब	बेशक	24	यक़ीन करते	हमारी आयतों पर	और वह थे

يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾ أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ

उन के लिए	क्या हिदायत न हुई	25	इख़्तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में	क़ियामत के दिन

كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسَاكِنِهِمْ ۚ

उन के घर (जमा)	में	वह चलते हैं	उम्मतें	से	उन से क़ब्ल	हम ने कितनी हलाक कीं

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ

कि हम चलाते हैं	क्या उन्हों ने नहीं देखा	26	तो क्या वह सुनते नहीं	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक

الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ

उस से	खाते हैं	फिर हम निकालते हैं उस से खेती	ख़ुश्क	ज़मीन	तरफ़	पानी

أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٧﴾ وَيَقُولُونَ مَتَىٰ الثلثة

कब	और वह कहते हैं	27	देखते नहीं वह	तो क्या	और वह ख़ुद	उन के मवेशी

هَٰذَا الْفَتْحُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾ قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنفَعُ

नफ़ा न देगा	फ़तह (फ़ैसले) के दिन	फ़रमा दें	28	सच्चे	तुम हो	अगर	फ़तह (फ़ैसला)	यह

الَّذِينَ كَفَرُوا إِيمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾ فَأَعْرِضْ

पस मुँह फेर लो	29	मोहलत दिए जाएंगे	वह	और न	उन का ईमान	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عَنْهُمْ وَانتَظِرْ إِنَّهُم مُّنتَظِرُونَ ﴿٣٠﴾ ع ٣ ٨ ١٦

	30	मुन्तज़िर हैं	बेशक वह	और तुम इन्तिज़ार करो	उन से

और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे कुछ अ़ज़ाब नज़्दीक (दुनिया) का, (आख़िरत के) बड़े अ़ज़ाब से पहले, शायद वह लौट आएं। (21)

और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है? जिसे उस के रब की आयात से नसीहत की गई, फिर उस ने उन से मुँह फेर लिया, बेशक हम मुज्रीमों से इन्तिक़ाम (बदला) लेने वाले हैं। (22)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को तौरेत अ़ता की तो तुम उस के मिलने के बारे में शक में न रहो, और हम ने उसे बना दिया हिदायत बनी इस्राईल के लिए। (23)

और हम ने उन में से पेश्वा बनाए, वह हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे, जब उन्हों ने सब्र किया और वह हमारी आयतों पर यक़ीन करते थे। (24)

बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन उन के दरमियान फ़ैसला करेगा जिस (बात) में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (25)

क्या उन के लिए (यह हक़ीक़त) मोजिबे हिदायत न हुई कि हम ने उन से क़ब्ल कितनी (ही) उम्मतें हलाक कीं, वह उन के रहने की जगहों में चलते (फिरते) हैं, बेशक उस में निशानियां हैं तो क्या वह सुनते नहीं? (26)

क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि हम ख़ुश्क ज़मीन की तरफ़ पानी चलाते (रवां करते) हैं, फिर उस से हम खेती निकालते हैं, उस से उन के मवेशी खाते हैं, और वह ख़ुद भी, तो क्या वह देखते नहीं? (27)

और वह कहते हैं यह फ़ैसला कब होगा अगर तुम सच्चे हो। (28)

आप (स) फ़रमा दें, फ़ैसले के दिन काफ़िरों को उन का ईमान (लाना) नफ़ा न देगा, और न वह मोहलत दिए जाएंगे। (29)

पस तुम उन से मुँह फेर लो और तुम इन्तिज़ार करो, बेशक वह भी मुन्तज़िर हैं। (30)

آيَاتُهَا ٧٣ ❀ (٣٣) سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9 | (33) सुरतुल अहज़ाब लशकर | आयात 73

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا النَّبِىُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ

और मुनाफ़िक़ों	काफ़िरों	और कहा न मानें	अल्लाह से डरते रहें	ऐ नबी (स)

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿١﴾ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ

आप के रब (की तरफ़) से	आप की तरफ़	जो वहि किया जाता है	और पैरवी करें आप	1	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह

اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ﴿٢﴾ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ

और काफ़ी है अल्लाह	अल्लाह पर	और भरोसा रखें आप (स)	2	ख़बरदार	तुम करते हो	उस से जो	है	बेशक अल्लाह

وَكِيْلًا ﴿٣﴾ مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِىْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ

और नहीं बनाया	उस के सीने में	दो दिल	किसी आदमी के लिए	नहीं बनाए अल्लाह ने	3	कार साज़

اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔىْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ

तुम्हारे मुँह बोले बेटे	और नहीं बनाया	तुम्हारी माएं	उन से- उन्हें	तुम माँ कह बैठते हो	वह जिन्हें	तुम्हारी बीवियां

اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ

और वह	हक़	फ़रमाता है	और अल्लाह	अपने मुँह (जमा)	तुम्हारा कहना	यह तुम	तुम्हारे बेटे

يَهْدِى السَّبِيْلَ ﴿٤﴾ اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ

अल्लाह के नज़्दीक	ज़ियादा इंसाफ़	यह	उनके बापों की तरफ़	उन्हें पुकारो	4	रास्ता	हिदायत देता है

فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْۤا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ؕ

और तुम्हारे रफ़ीक़	दीन में (दीनी)	तो वह तुम्हारे भाई	उन के बापों को	तुम न जानते हो	फिर अगर

وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَاۤ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ

अपने दिल	जो इरादे से	और लेकिन	उस से	उस में जो तुम से भूल चूक हो चुकी	कोई गुनाह	तुम पर	और नहीं

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥﴾ اَلنَّبِىُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ

से	मोमिनों के	ज़ियादा (हक़दार)	नबी (स)	5	मेह्रबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है

اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى

नज़्दीक तर	उन में से बाज़	और क़राबतदार	उन की माएं	और उस की बीवियां	उन की जानें

بِبَعْضٍ فِىْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّاۤ اَنْ

मगर यह कि	और मुहाजिरों	मोमिनों	से	अल्लाह की किताब	में	बाज़ (दूसरों) से

تَفْعَلُوْۤا اِلٰۤى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿٦﴾

6	लिखा हुआ	किताब में	यह	है	हुस्ने सुलूक	अपने दोस्त (जमा)	तरफ़ (साथ)	तुम करो

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

ऐ नबी (स)! अल्लाह से डरते रहें, और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का कहा न मानें, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है। (1) और पैरवी करें जो वहि किया जाता है आप (स) को आप (स) के रब की तरफ़ से, बेशक अल्लाह उस से बा ख़बर है जो तुम करते हो। (2) और आप (स) अल्लाह पर भरोसा रखें, अल्लाह काफ़ी है कार साज़। (3) अल्लाह ने नहीं बनाए किसी आदमी के लिए उस के सीने में दो दिल, और तुम्हारी उन बीवियों को जिन्हें तुम माँ कह बैठते हो नहीं बनाया तुम्हारी माएं, और तुम्हारे मुँह बोले (ले पालकों को) (सच मुच) तुम्हारे बेटे नहीं बनाया, यह (सिर्फ़) तुम्हारे मुँह से कहने (की बात है) और अल्लाह हक़ फ़रमाता है, और वह रास्ते की हिदायत देता है। (4) उन्हें उन ही के बापों की तरफ़ (मन्सूब कर के) पुकारो, यह अल्लाह के नज़्दीक ज़ियादा (क़रीने) इंसाफ़ है, फिर अगर तुम उन के बापों को न जानते हो तो वह तुम्हारे दीनी भाई हैं, और वह तुम्हारे रफ़ीक़ हैं, और तुम पर नहीं उस में कोई गुनाह जो तुम से भूल चूक हो चुकी, लेकिन (हां) जो अपने दिल के इरादे से करो, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेह्रबान है। (5) नबी (स) मोमिनों के लिए उन के अपने नफ़्स से ज़ियादा हक़दार हैं और आप (नबी स) की बीवीयां उन (मोमिनों) की माँएं हैं, और क़राबतदार अल्लाह की किताब में बाज़ (आम) मुसलमानों और मुहाजिरों की बनिस्बत एक दूसरे से ज़ियादा नज़्दीक (फ़ाइक़) हैं मगर यह कि तुम करो अपने दोस्तों के साथ हुस्ने सुलूक, यह (अल्लाह की) किताब में लिखा हुआ है। (6)

وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ

और इब्राहीम (अ)	और नूह (अ) से	और तुम से	उन का अ़हद	नबियों	से	हम ने लिया	और जब

وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ﴿۷﴾

7	पुख़्ता	अ़हद	उन से	और हम ने लिया	और मरयम के बेटे ईसा (अ)	और मूसा (अ)

لِّيَسْـَٔلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ۚ وَاَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿۸﴾ ع ۸ / ۱۷

8	दर्दनाक	अ़ज़ाब	काफ़िरों के लिए	और उस ने तैयार किया	उन की सच्चाई	से	सच्चे	ताकि वह सवाल करे

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ

लशकर (जमा)	जब तुम पर (चढ़) आए	अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	याद करो	ईमान वालो	ऐ

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ

तुम करते हो	उसे जो	अल्लाह	और है	तुम ने उन्हें न देखा	और लशकर	आँधी	उन पर	हम ने भेजी

بَصِيْرًا ﴿۹﴾ ۚ اِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ اَسْفَلَ مِنْكُمْ وَاِذْ

और जब	तुम्हारे	और नीचे से	तुम्हारे ऊपर	से	वह तुम पर आए	जब	9	देखने वाला

زَاغَتِ الْاَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ

अल्लाह के बारे में	और तुम गुमान करते थे	गले	दिल (जमा)	और पहुँच गए	कज हुईं (चुन्धिया गईं) आँखें

الظُّنُوْنَا ﴿۱۰﴾ ؕ هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا ﴿۱۱﴾

11	शदीद	हिलाया जाना	और वह हिलाए गए	मोमिन (जमा)	आज़माए गए	यहां	10	बहुत से गुमान

وَاِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا

जो हम से वादा किया	रोग	दिलों में	और वह जिन के	मुनाफ़िक़ (जमा)	कहने लगे	और जब

اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗۤ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۱۲﴾ وَاِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يٰۤاَهْلَ يَثْرِبَ

ऐ यसरिब (मदीने) वालो	उन में से	एक गिरोह	कहा	और जब	12	धोका देना	मगर (सिर्फ़)	अल्लाह और उस का रसूल

لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ۚ وَيَسْتَاْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ

नबी से	उन में से	एक गिरोह	और इजाज़त मांगता था	लिहाज़ा तुम लौट चलो	तुम्हारे लिए	कोई जगह नहीं

يَقُوْلُوْنَ اِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ۛؕ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ۚۛ اِنْ يُّرِيْدُوْنَ اِلَّا ع ۱۰ / عند المتقدمین ۱۲

मगर (सिर्फ़)	वह नहीं चाहते	ग़ैर महफ़ूज़	हालांकि वह नहीं	ग़ैर महफ़ूज़	हमारे घर	बेशक	वह कहते थे

فِرَارًا ﴿۱۳﴾ وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ اَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ

फ़साद	उन से चाहा जाए	फिर	उस (मदीने) के अतराफ़	से	उन पर	दाख़िल हो जाएं	और अगर	13	फ़िरार

لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَاۤ اِلَّا يَسِيْرًا ﴿۱۴﴾ وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ

अल्लाह	हालांकि वह अ़हद कर चुके थे	14	थोड़ी सी	मगर (सिर्फ़)	उस में	और न देर लगाएंगे	तो वह ज़रूर उसे देंगे

مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْاَدْبَارَ ؕ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْـُٔوْلًا ﴿۱۵﴾

15	पूछा जाने वाला	अल्लाह का अ़हद	और है	पीठ	फेरेंगे	न	इस से पहले

और (याद करो) जब हम ने लिया नबियों से उन का अ़हद, और तुम से (भी लिया) और वह नूह (अ) से और इब्राहीम (अ) से और मूसा (अ) और मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) से, और हम ने उन से पुख़्ता अ़हद लिया। (7)

ताकि वह (उन) सच्चों से उन की सच्चाई (के बारे में) सवाल करे, और उस ने काफ़िरों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार किया है। (8)

ऐ ईमान वालो! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत (उस का एहसान) याद करो जब तुम पर बहुत से लशकर चढ़ आए तो हम ने उन पर आन्धी भेजी और (ऐसे) लशकर जिन्हें तुम ने न देखा, और अल्लाह उसे देखने वाला है जो तुम करते हो। (9)

जब वह तुम पर (चढ़) आए तुम्हारे ऊपर (की तरफ़) से और तुम्हारे नीचे (की तरफ़) से, और जब आँखें चुन्धिया गईं, और दिल गलों में (कलेजे मुँह को) आने लगे और तुम अल्लाह के बारे में (तरह तरह के) गुमान कर रहे थे। (10)

यहां (इस मौक़े पर) मोमिन आज़माए गए और वह शदीद हिलाए (झिन्झोड़े) गए। (11)

और जब कहने लगे मुनाफ़िक़ और वह जिन के दिलों में रोग है: हम से अल्लाह और उस के रसूल (स) ने जो वादा किया वह सिर्फ़ धोका था। (12)

और जब एक गिरोह ने कहा उन में से, ऐ मदीने वालों! तुम्हारे लिए कोई जगह (ठिकाना) नहीं, लिहाज़ा तुम लौट चलो, और उन में से एक गिरोह इजाज़त मांगता था नबी (स) से, वह कहते थे कि हमारे घर बेशक ग़ैर महफ़ूज़ हैं, हालांकि वह ग़ैर महफ़ूज़ नहीं हैं, वह तो सिर्फ़ फ़िरार चाहते हैं। (13)

और अगर (दुश्मन) उन पर मदीने के अतराफ़ से दाख़िल हो जाएं (आ घुसें) फिर उन से फ़साद चाहा जाए (कहा जाए) तो वह उसे ज़रूर देंगे (मन्ज़ूर कर लेंगे) और घरों में सिर्फ़ थोड़ी सी देर लगाएंगे। (14)

हालांकि वह इस से पहले अल्लाह से अ़हद कर चुके थे कि वह पीठ न फेरेंगे, और अल्लाह से किया हुआ अ़हद पूछा जाने वाला है। (15)

قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ اِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ اَوِ الْقَتْلِ وَاِذًا

और उस सूरत में	क़त्ल	या	मौत से	तुम भागे	अगर	फ़िरार	तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा	फ़रमा दें

لَّا تُمَتَّعُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٦﴾ قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ

अगर	अल्लाह से	वह जो तुम्हें बचाए	कौन जो	फ़रमा दें	16	थोड़ा	मगर (सिर्फ़)	न फ़ाइदा दिए जाओगे

اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	अपने लिए	और वह न पाएंगे	मेहरबानी	चाहे तुम से	या	बुराई	वह चाहे तुम से

وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿١٧﴾ قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ

और कहने वाले	तुम में से	रोकने वाले	अल्लाह	खूब जानता है	17	और न मददगार	कोई दोस्त

لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٨﴾ اَشِحَّةً

बुख़्ल करते हुए	18	बहुत कम	मगर	लड़ाई	और नहीं आते	हमारी तरफ़	आजाओ	अपने भाइयों से

عَلَيْكُمْ ۚ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ

घूम रही हैं	तुम्हारी तरफ़	वह देखने लगते हैं	तुम देखोगे उन्हें	ख़ौफ़	फिर जब आए	तुम्हारे मुतअ़ल्लिक़

اَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ

ख़ौफ़	चला जाए	फिर जब	मौत से	उस पर	ग़शी आती है	उस शख़्स की तरह	उन की आँखें

سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا

नहीं ईमान लाए	यह लोग	माल पर	बख़ीली (लालच) करते हुए	तेज़	ज़बानों से	तुम्हें ताने देने लगे

فَاَحْبَطَ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿١٩﴾ يَحْسَبُوْنَ

वह गुमान करते हैं	19	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	उन के अ़मल	तो अकारत कर दिए अल्लाह ने

الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ

कि काश वह	वह तमन्ना करें	लशकर	और अगर आएं	नहीं गए हैं	लशकर (जमा)

بَادُوْنَ فِى الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ

तुम्हारे दरमियान	हों	और अगर	तुम्हारी ख़बरें	से	पूछते रहते	देहातियों में	बाहर निकले हुए होते

ع ٢ ١٢ ١٨ مَّا قٰتَلُوْٓا اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢٠﴾ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

अच्छा बेहतरीन	मिसाल (नमूना)	अल्लाह का रसूल (स)	में	तुम्हारे लिए	अलबत्ता है यक़ीनन	20	बहुत कम	मगर	जंग न करें

لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَمَّا

और जब	21	कस्रत से	और अल्लाह को याद करता है	और रोज़े आख़िरत	अल्लाह	उम्मीद रखता है	उस के लिए जो

رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

और उस का रसूल (स)	अल्लाह	जो हम को वादा दिया	यह है	वह कहने लगे	लशकरों को	मोमिनों ने देखा

وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۫ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ﴿٢٢﴾

22	और फ़रमांबरदारी	ईमान	मगर	उन का ज़ियादा किया	और न	और उस का रसूल	अल्लाह	और सच कहा था

आप (स) फ़रमा दें: फ़िरार तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देगा अगर तुम मौत या क़त्ल से भागे, और उस सूरत में तुम सिर्फ़ थोड़ा (चन्द दिन) फ़ाइदा दिए जाओगे। (16)

आप (स) फ़रमा दें: वह कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता? अगर वह तुम से बुराई (करना) चाहे या तुम पर मेहरबानी करना चाहे और वह अपने लिए अल्लाह के सिवा कोई दोस्त न पाएंगे और न मददगार। (17)

अल्लाह खूब जानता है तुम में से (दूसरों को जिहाद से) रोकने वालों को, और अपने भाइयों से यह कहने वालों को कि हमारी तरफ़ आजाओ, और वह लड़ाई में नहीं आते मगर बहुत कम। (18)

तुम्हारा साथ देने में बख़ीली करते हैं, फिर जब ख़ौफ़ आए तो तुम उन्हें देखोगे कि वह तुम्हारी तरफ़ (यूँ) देखने लगते हैं (जैसे) उन की आँखें घूम रही हैं उस शख़्स की तरह जिस पर मौत की ग़शी (तारी) हो, फिर जब ख़ौफ़ चला जाए तो तुम्हें ताने देने लगें तेज़ ज़बानों से, माल पर बख़ीली करते हुए, यह लोग ईमान नहीं लाए, तो अल्लाह ने अकारत कर दिए उन के अ़मल, और अल्लाह पर यह आसान है। (19)

वह गुमान करते हैं कि (काफ़िरों के) लशकर (अभी) नहीं गए हैं, और अगर लशकर (दोबारा) आएं तो वह तमन्ना करें कि काश वह देहात में बाहर निकले होते (सेहरा नशीन होते) तुम्हारी ख़बरें पूछते रहते और अगर तुम्हारे दरमियान हों तो जंग न करें मगर बहुत कम। (20)

यक़ीनन तुम्हारे लिए है अल्लाह के रसूल (स) में एक बेहतरीन नमूना, (हर) उस शख़्स के लिए जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर उम्मीद रखता है, और अल्लाह को बकस्रत याद करता है। (21)

और जब मोमिनों ने लशकरों को देखा तो वह कहने लगे: यह है जिस का हमें अल्लाह और उस के रसूल ने वादा दिया था, और अल्लाह और उस के रसूल (स) ने सच कहा था, और (उस सूरते हाल ने) उन में ज़ियादा न किया मगर ईमान और फ़रमांबरदारी (का जज़्बा)। (22)

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ

सो उन में से	उस पर	उन्हों ने अ़हद किया अल्लाह से	जो	उन्हों ने सच कर दिखाया	ऐसे आदमी	मोमिन (जमा)	से (में)

مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ۝٢٣ لِّيَجْزِيَ

ताकि जज़ा दे	23	कुछ भी तबदीली	और उन्हों ने तबदीली नहीं की	इन्तिज़ार में है	जो	और उन में से	नज़र अपनी	पूरा कर चुका	जो

اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ

या	अगर वह चाहे	मुनाफ़िक़ों	और वह अ़ज़ाब दे	उन की सच्चाई की	सच्चे लोग	अल्लाह

يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٢٤ وَرَدَّ اللّٰهُ

और लौटा दिया अल्लाह ने	24	मेहरबान	बख़्शने वाला	है	बेशक अल्लाह	वह उन की तौबा क़ुबूल कर ले

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ۭ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ۭ

जंग	मोमिनीन	और काफ़ी है अल्लाह	कोई भलाई	उन्हों ने न पाई	उन के गुस्से में भरे हुऐ	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ۝٢٥ وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

अहले किताब	से	जिन्हों ने उन की मदद की	उन लागों को	और उतार दिया	25	ग़ालिब	तवाना	अल्लाह	और है

مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا

एक गिरोह	रुअ़ब	उन के दिल	में	और डाल दिया	उन के क़िल्ए	से

تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ۝٢٦ وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ

और उन के घर (जमा)	उन की ज़मीन	और तुम्हें वारिस बना दिया	26	एक गिरोह	और तुम क़ैद करते हो	तुम क़त्ल करते हो

وَاَمْوَالَهُمْ وَاَرْضًا لَّمْ تَطَئُوْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ۝٢٧ ع ٣ ١٩

27	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	अल्लाह	और है	तुम ने वहां क़दम नहीं रखा	और वह ज़मीन	और उन के माल (जमा)

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	चाहती हो	तुम हो	अगर	अपनी बीवियों से	फ़रमा दें	ऐ नबी (स)

وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ۝٢٨

28	अच्छी	रुख़सत करना	और तुम्हें रुख़सत कर दूँ	मैं तुम्हें कुछ देदूँ	तो आओ	और उस की ज़ीनत

وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ

और आख़िरत का घर	और उस का रसूल	चाहती हो अल्लाह	तुम	और अगर

فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝٢٩

29	अजरे अ़ज़ीम	तुम में से	नेकी करने वालियों के लिए	तैयार किया है	पस बेशक अल्लाह

يٰنِسَاۗءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ

बढ़ाया जाएगा	खुली	बेहूदगी के साथ	तुम में से	लाए (मुर्तकिब हो)	जो कोई	ऐ नबी की बीवियो

لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ۭ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَي اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝٣٠

30	आसान	अल्लाह पर	यह	और है	दो चन्द	अ़ज़ाब	उस के लिए

मोमिनों में कुछ ऐसे आदमी हैं कि उन्हों ने अल्लाह से जो अ़हद किया था वह सच कर दिखाया, सो उन में से (कुछ हैं) जो अपनी नज़र पूरी कर चुके, और उन में (कुछ हैं) जो इन्तिज़ार में हैं, और उन्हों ने कुछ भी तबदीली नहीं की। (23)

(यह इस लिए हुआ) कि अल्लाह जज़ा दे सच्चे लोगों को उन की सच्चाई की, और अगर वह चाहे तो मुनाफ़िक़ों को अ़ज़ाब दे या वह उन की तौबा क़ुबूल कर ले, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (24)

और अल्लाह ने काफ़िरों को लौटा दिया उन के (अपने) गुस्से में भरे हुए, उन्हों ने कोई भलाई न पाई, और जंग (के मामले में) मोमिनों के लिए अल्लाह काफ़ी है, और अल्लाह है तवाना और ग़ालिब। (25)

और अहले किताब में से जिन्हों ने उन की मदद की थी, उस ने उन्हें उन के क़िलों से उतार दिया, और उन के दिलों में रुअ़ब डाल दिया, एक गिरोह को तुम क़त्ल करते हो और एक गिरोह को क़ैद करते हो। (26)

और तुम्हें वारिस बना दिया उन की ज़मीन का, और उन के घरों का, और उन के मालों का, और उस ज़मीन का जहां तुम ने क़दम नहीं रखा था, और अल्लाह है हर शै पर क़ुदरत रखने वाला। (27)

ऐ नबी (स)! आप (स) अपनी बीवियों से फ़रमा दें, अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उस की ज़ीनत चाहती हो तो आओ, मैं तुम्हें कुछ देदूँ और रुख़सत कर दूँ अच्छी तरह रुख़सत। (28)

और अगर तुम अल्लाह और उस का रसूल (स) और आख़िरत का घर चाहती हो तो बेशक अल्लाह ने तुम में से नेकी करने वालियों के लिए अजरे अ़ज़ीम तैयार कर रखा है। (29)

ऐ नबी (स) की बीवियो! जो कोई तुम में से खुली बेहूदगी की मुर्तकिब हो तो उस के लिए अ़ज़ाब दो चन्द बढ़ा दिया जाएगा, और यह अल्लाह पर आसान है। (30)

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا

नेक	और अ़मल करे	अल्लाह और उस के रसूल (स) की	तुम में से	इताअ़त करे	और जो

نُّؤْتِهَآ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

31	इ़ज़्ज़त का रिज़्क़	उस के लिए	और हम ने तैयार किया	दोहरा	उस का अजर	हम देंगे उस को

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ

तो मुलाइमत न करो	तुम परहेज़गारी करो	अगर	औरतों में से	किसी एक की तरह	तुम नहीं हो	ऐ नबी (स) की बीवियो!

بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ﴿٣٢﴾

32	अच्छी (माकूल)	बात	और बात करो तुम	रोग (खोट)	उस के दिल में	वह जो	कि लालच करे	गुफ़्तगू में

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى

अगला	(ज़माना-ए) जाहिलियत	बनाव सिंगार	और बनाव सिंगार का इज़्हार करती न फिरो	अपने घरों में	और क़रार पकड़ो

وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

अल्लाह और उस का रसूल	और इताअ़त करो	ज़कात	और देती रहो	नमाज़	और क़ाइम करो

اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ اَهْلَ الْبَيْتِ

ऐ अहले बैत	आलूदगी	तुम से	कि दूर फ़रमा दे	अल्लाह चाहता है	इस के सिवा नहीं

وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ﴿٣٣﴾ وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ

तुम्हारे घर (जमा)	में	जो पढ़ा जाता है	और तुम याद रखो	33	ख़ूब पाक	और तुम्हें पाक और साफ़ रखे

مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ﴿٣٤﴾

34	बाख़बर	बारीक बीन	है	बेशक अल्लाह	और हिक्मत	अल्लाह की आयतें	से

ع ٧ / ١

اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

और मोमिन औरतें	और मोमिन मर्द	और मुसलमान औरतें	मुसलमान मर्द	बेशक

وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ

और सब्र करने वाले मर्द	और रास्तगो औरतें	और रास्तगो मर्द	और फ़रमांबरदार औरतें	और फ़रमांबरदार मर्द

وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ

और सदक़ा करने वाले मर्द	और आजिज़ी करने वाली औरतें	और आजिज़ी करने वाले मर्द	और सब्र करने वाली औरतें

وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ

और हिफ़ाज़त करने वाले मर्द	और रोज़ा रखने वाली औरतें	और रोज़ा रखने वाले मर्द	और सदक़ा करने वाली औरतें

فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا

बकसरत	अल्लाह	और याद करने वाले	और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें	अपनी शर्मगाहें

وَّالذّٰكِرٰتِ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٣٥﴾

35	और अजरे अ़ज़ीम	बख़्शिश	उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया	और याद करने वाली औरतें

और तुम में से जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करे और नेक अ़मल करे हम उसे उस का दोहरा अजर देंगे और हम ने उस के लिए इ़ज़्ज़त का रिज़्क़ तैयार किया है। (31)
ऐ नबी (स) की बीवियो! औरतों में से तुम किसी एक की तरह (आम) नहीं हो, अगर तुम परहेज़गारी इख़्तियार करो तो गुफ़्तगू में मुलाइमत न करो कि जिस के दिल में खोट है वह लालच (ख़याले फ़ासिद) करे और तुम बात करो माकूल बात। (32)
और अपने घरों में क़रार पकड़ो, और अगले ज़माना-ए-जाहिलियत के बनाव सिंगार का इज़्हार करती न फिरो, और नमाज़ क़ाइम करो, और ज़कात देती रहो, और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करो, बेशक अल्लाह चाहता है कि वह तुम से आलूदगी दूर फ़रमा दे ऐ अहले बैत! और तुम्हें ख़ूब (हर तरह से) पाक और साफ़ रखे। (33)
और तुम याद रखो जो तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतें और हिक्मत (दानाई की बातें) पढ़ी जाती हैं, बेशक अल्लाह बारीक बीन, बाख़बर है। (34)
बेशक मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें, और मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, और फ़रमांबरदार मर्द और फ़रमांबरदार औरतें, और रास्तगो मर्द और रास्तगो औरतें, और सब्र करने वाले मर्द और सब्र करने वाली औरतें, और आजिज़ी करने वाले मर्द और आजिज़ी करने वाली औरतें, और सदक़ा (ख़ैरात) करने वाले मर्द और सदक़ा (ख़ैरात) करने वाली औरतें, और रोज़ा रखने वाले मर्द और रोज़ा रखने वाली औ़रतें, और हिफ़ाज़त करने वाले मर्द अपनी शर्मगाहों की, और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, और अल्लाह को बकसरत याद करने वाले मर्द और (अल्लाह को) याद करने वाली औरतें, अल्लाह ने उन (सब) के लिए तैयार की है बख़्शिश और अजरे अ़ज़ीम। (35)

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا

किसी काम का	अल्लाह और उस का रसूल	फ़ैसला कर दें	जब	और न किसी मोमिन औरत के लिए	किसी मोमिन मर्द के लिए	और नहीं है

اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

अल्लाह और उस का रसूल	नाफ़रमानी करेगा	और जो	उन के काम में	कोई इख़्तियार	उन के लिए	कि (बाक़ी) हो

فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ﴿٣٦﴾ وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ

उस पर	अल्लाह ने इन्आम किया	उस शख़्स को	और (याद करो) जब आप (स) फ़रमाते थे	36	सरीह	गुमराही	तो अलबत्ता वह गुमराही में जा पड़ा

وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ

अपने दिल में	और आप (स) छुपाते थे	और डर अल्लाह से	अपनी बीवी	अपने पास	रोके रख	उस पर	और आप (स) ने इन्आम किया

مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ ؕ فَلَمَّا

फिर जब	तुम उस से डरो	कि	ज़ियादा हक़दार	और अल्लाह	लोग	और आप (स) डरते थे	उस को ज़ाहिर करने वाला	जो अल्लाह

قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ

मोमिनों	पर	न रहे	ताकि	हम ने उसे तुम्हारे निकाह में दे दिया	अपनी हाजत	उस से	ज़ैद	पूरी कर ली

حَرَجٌ فِيْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِيَآئِهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ؕ وَكَانَ

और है	अपनी हाजत	उन से	पूरी कर चुकें	जब वह	अपने ले पालक	बीवियों में	कोई तंगी

اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿٣٧﴾ مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ؕ

उस के लिए	मुक़र्रर किया अल्लाह ने	उस में जो	कोई हरज	नबी पर	नहीं है	37	हो कर रहने वाला	अल्लाह का हुक्म

سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ؕ وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرَا ۙ﴿٣٨﴾

38	अन्दाज़े से	मुक़र्रर किया हुआ	अल्लाह का हुक्म	और है	पहले	गुज़रे	वह जो	में	अल्लाह का दस्तूर

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ اَحَدًا اِلَّا اللّٰهَ ؕ

अल्लाह के सिवा	किसी से	वह नहीं डरते	और उस से डरते हैं	अल्लाह के पैग़ामात	पहुँचाते हैं	वह जो

وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ﴿٣٩﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَآ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ

तुम्हारे मर्दों में से	किसी के	बाप	मुहम्मद (स)	नहीं हैं	39	हिसाब लेने वाला	अल्लाह	और काफ़ी है

وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

हर शै का	अल्लाह	और है	नबियों	और मुहर	अल्लाह के रसूल	और लेकिन

عَلِيْمًا ﴿٤٠﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۙ﴿٤١﴾ ع ٥ ٦ ٢

41	बकस्रत	याद	अल्लाह	याद करो तुम	ईमान वालो	ऐ	40	जानने वाला

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٤٢﴾ هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ

और उस के फ़रिश्ते	तुम पर	भेजता है	वही जो	42	और शाम	सुबह	और पाकीज़गी बयान करो उस की

لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ؕ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ﴿٤٣﴾

43	मेहरबान	मोमिनों पर	और है	नूर की तरफ़	अन्धेरों	से	ताकि वह तुम्हें निकाले

और (गुन्जाइश) नहीं है किसी मोमिन मर्द और न किसी मोमिन औरत के लिए कि जब फ़ैसला कर दें अल्लाह और उस के रसूल (स) किसी मामले का, कि उन के लिए उस मामले में कोई इख़्तियार बाक़ी हो, और जो नाफ़रमानी करेगा, अल्लाह और उस के रसूल (स) की तो अलबत्ता वह सरीह गुमराही में जा पड़ा। (36)
और याद करो जब आप (स) उस शख़्स [ज़ैद ؓ बिन हारिसा] को फ़रमाते थे जिस पर अल्लाह ने इन्आम किया और आप (स) ने भी उस पर इन्आम किया कि अपनी बीवी [ज़ैनब ؓ] को अपने पास रोके रख और अल्लाह से डर, और आप (स) छुपाते थे अपने दिल में वह (बात) जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और आप (स) लोगों (के तअ़न) से डरते थे और अल्लाह ज़ियादा हक़दार है कि तुम उस से डरो, फिर जब ज़ैद ने उस [ज़ैनब] से अपनी हाजत पूरी कर ली तो हम ने उसे आप (स) के निकाह में दे दिया, ताकि मोमिनों पर कोई तंगी न रहे अपने ले पालकों की बीवियों (से निकाह करने में) जब वह उन से अपनी हाजत पूरी कर लें (तलाक़ दे दें) और अल्लाह का हुक्म (पूरा हो कर) रहने वाला है। (37)
नबी पर उस काम में कोई हरज (तंगी) नहीं है जो अल्लाह ने उस के लिए मुक़र्रर किया, अल्लाह का (यही) दस्तूर (रहा है) उन में जो पहले गुज़रे हैं और अल्लाह का हुक्म (सहीह) अन्दाज़े से मुक़र्रर किया हुआ है। (38)
वह जो अल्लाह के पैग़ामात पहुँचाते हैं और वह उस से डरते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते, और अल्लाह काफ़ी है हिसाब लेने वाला। (39)
मुहम्मद (स) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, लेकिन वह अल्लाह के रसूल और (सब) नबियों पर मुहर (आख़री नबी) हैं और अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (40)
ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह को याद करो बकस्रत। (41)
और सुबह और शाम उस की पाकीज़गी बयान करो। (42)
वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते (भी) ताकि वह तुम्हें अँधेरों से नूर की तरफ़ निकाल लाए, और अल्लाह मोमिनों पर मेहरबान है। (43)

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ وَّاَعَدَّ لَهُمْ اَجْرًا كَرِيْمًا ﴿٤٤﴾

44	बड़ा अच्छा	अजर	उन के लिए	और तैयार किया उस ने	सलाम	वह मिलेंगे उस को	जिस दिन	उन की दुआ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿٤٥﴾ وَّدَاعِيًا

और बुलाने वाला	45	और डर सुनाने वाला	और खुश ख़बरी देने वाला	गवाही देने वाला	बेशक हम ने आप (स) को भेजा	ऐ नबी (स)

اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ﴿٤٦﴾ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ

उन के लिए	यह कि	मोमिनों (जमा)	और खुशख़बरी दें	46	रोशन	और चिराग़	उस के हुक्म से	अल्लाह की तरफ़

مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ﴿٤٧﴾ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ

उन का ईज़ा देना	और परवा न करें	और मुनाफ़िक़ (जमा)	काफ़िर (जमा)	और कहा न मानें	47	बड़ा	फ़ज़्ल	अल्लाह (की तरफ़) से

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا

जब	ईमान वालो	ऐ	48	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी	अल्लाह पर	और भरोसा करें

نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ

तुम उन्हें हाथ लगाओ	कि	पहले	तुम उन्हें तलाक़ दो	फिर	मोमिन औरतों	तुम निकाह करो

فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ

पस तुम उन्हें कुछ मताअ़ दो	कि पूरी कराओ तुम उस से	कोई इद्दत	उन पर	तो नहीं तुम्हारे लिए

وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا

हम ने हलाल कीं	ऐ नबी (स)!	49	अच्छी तरह	रुख़सत	और उन्हें रुख़सत कर दो

لَكَ اَزْوَاجَكَ الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ

तुम्हारा दायां हाथ	मालिक हुआ	और जो	उन का मेहर	तुम ने दे दिया	वह जो कि	तुम्हारी बीवियां	तुम्हारे लिए

مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ عَمّٰتِكَ

और तुम्हारी फुफियों की बेटियां	और तुम्हारे चचाओं की बेटियां	तुम्हारे	अल्लाह ने हाथ लगा दीं	उन से जो

وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ هَاجَرْنَ مَعَكَ ۫ وَامْرَاَةً

और औरत	तुम्हारे साथ	उन्हों ने हिजरत की	वह जिन्हों ने	और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां	और तुम्हारे मामूओं की बेटियां

مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ

कि	चाहे नबी (स)	अगर	नबी (स) के लिए	अपने आप को	वह बख़्शदे (नज़्र कर दे)	अगर	मोमिना

يَّسْتَنْكِحَهَا ۚ خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ عَلِمْنَا

अलबत्ता हमें मालूम है	मोमिनों	अ़लावा	तुम्हारे लिए	ख़ास	उसे निकाह में लेले

مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ

मालिक हुए उन के दाहिने हाथ (कनीज़ें)	और जो	उन की औरतें	में	उन पर	जो हम ने फ़र्ज़ किया

لِكَيْلَا يَكُوْنَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٠﴾

50	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	कोई तंगी	तुम पर	ताकि न रहे

उन का इस्तिक़्बाल जिस दिन वह उस को मिलेंगे "सलाम" से होगा, और उस ने उन के लिए बड़ा अच्छा अजर तैयार किया है। (44)

ऐ नबी (स)! बेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला और खुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला। (45)

और उस के हुक्म से अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला, और रोशन चिराग़। (46)

और आप (स) मोमिनों को यह खुशख़बरी दें कि उन के लिए अल्लाह की तरफ़ से बड़ा फ़ज़्ल है। (47)

और आप (स) कहा न मानें काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों का, और आप (स) उन के ईज़ा देने का ख़याल न करें और अल्लाह पर भरोसा करें। और काफ़ी है अल्लाह कारसाज़। (48)

ऐ ईमान वालो! जब तुम मोमिन औ़रतों से निकाह करो, फिर तुम उन्हें उस से पहले तलाक़ दे दो कि तुम उन्हें हाथ लगाओ तो उन पर तुम्हारा (कोई हक़) नहीं कि उन की इद्दत पूरी कराओ, पस उन्हें कुछ सामान दे दो और रुख़सत कर दो अच्छी तरह रुख़सत। (49)

ऐ नबी (स)! हम ने तुम्हारे लिए हलाल कीं तुम्हारी वह बीवियां जिन को तुम ने उन का मेहर दे दिया, और तुम्हारी कनीज़ें उन में से जो अल्लाह ने (ग़नीमत में से) तुम्हारे हाथ लगा दीं और तुम्हारे चचाओं की बेटियां, और तुम्हारी फुफियों की बेटियां, और तुम्हारे मामूओं की बेटियां, और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां, वह जिन्हों ने तुम्हारे साथ हिज्रत की, और वह मोमिन औ़रत जो अपने आप को नबी (स) की नज़्र कर दे, अगर नबी (स) उसे निकाह में लेना चाहे, यह आ़म मोमिनों के अ़लावा ख़ास तुम्हारे लिए है, अलबत्ता हमें मालूम है जो हम ने उन की औ़रतों और कनीज़ों (के बारे) में उन पर फ़र्ज़ किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे, और अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (50)

تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْٓ اِلَيْكَ مَنْ تَشَآءُ ۭ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ

दूर रखें	जिस को आप (स) चाहें	उन में से	और पास रखें	अपने पास	जिसे आप (स) चाहें	और जिस को	आप (स) तलब करें

مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۭ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ تَقَرَّ اَعْيُنُهُنَّ

उन में से जो	दूर कर दिया था आप ने	तो कोई तंगी नहीं	आप (स) पर	यह ज़ियादा क़रीब है	कि ठंडी रहें	उन की आँखें

وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ اٰتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا

और वह आज़ुर्दा न हों	और वह राज़ी रहें	उस पर जो आप (स) ने उन्हें दीं	वह सब की सब	और अल्लाह	जानता है	जो

فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا (٥١) لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ

तुम्हारे दिलों में	और है	अल्लाह	जानने वाला	बुर्दबार	51	हलाल नहीं	आप के लिए	औरतें

مِنْۢ بَعْدُ وَلَآ اَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ

उस के बाद	और न	यह कि बदल लें	उन से	से (और)	औरतें	अगरचे	आप (स) को अच्छा लगे

حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ

उन का हुस्न	सिवाए	जिस का मालिक हो तुम्हारा हाथ (कनीज़ें)	और है	अल्लाह	पर	हर शै

رَّقِيْبًا (٥٢) يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ ع ٦ ١٢ ٣

निगहबान	52	ऐ	ईमान वालो	तुम दाख़िल न हो	घर (जमा)	नबी (स)

اِلَّآ اَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ اِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ اِنٰىهُ وَلٰكِنْ اِذَا

सिवाए यह कि	इजाज़त दी जाए	तुम्हारे लिए	तरफ़ (लिए)	खाना	न राह तको	उस का पकना	और लेकिन	जब

دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَاِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَاْنِسِيْنَ

तुम्हें बुलाया जाए	तो तुम दाख़िल हो	फिर जब	तुम खालो	तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो	और न जी लगा कर बैठे रहो

لِحَدِيْثٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۡ

बातों के लिए	बेशक	यह तुम्हारी बात	ईज़ा देती है	नबी (स)	पस वह शर्माते हैं	तुम से

وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ مِنَ الْحَقِّ ۭ وَاِذَا سَاَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا

और अल्लाह	नहीं शर्माता	हक़ (बात) से	और जब	तुम उन से मांगो	कोई शै

فَسْـَٔـلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ۭ ذٰلِكُمْ اَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ۭ

तो उन से मांगो	पर्दे के पीछे से	तुम्हारी यह बात	ज़ियादा पाकीज़गी	तुम्हारे दिलों के लिए	और उन के दिल

وَمَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَآ اَنْ تَنْكِحُوْٓا اَزْوَاجَهٗ

और (जाइज़) नहीं	तुम्हारे लिए	कि तुम ईज़ा दो	अल्लाह का रसूल (स)	और न	यह कि तुम निकाह करो	उस की बीवियाँ

مِنْۢ بَعْدِهٖٓ اَبَدًا ۭ اِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا (٥٣)

उन के बाद	कभी	बेशक	तुम्हारी यह बात	है	अल्लाह के नज़्दीक	बड़ा	53

اِنْ تُبْدُوْا شَيْـــًٔا اَوْ تُخْفُوْهُ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا (٥٤)

अगर तुम ज़ाहिर करो	कोई बात	या उसे छुपाओ	तो बेशक अल्लाह	है	हर शै	जानने वाला	54

आप (स) जिस को चाहें दूर रखें उन में से, और जिसे चाहें अपने पास रखें, और उन में से जिस को आप (स) ने दूर कर दिया था आप (फिर) तलब करें तो कोई तंगी (हरज) नहीं आप (स) पर, यह ज़ियादा क़रीब है कि (उस से) उन की आँखें ठंडी रहें और वह आज़ुर्दा न हों, और वह सब की सब उस पर राज़ी रहें जो आप उन्हें दें, और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है, और अल्लाह जानने वाला बुर्दबार है। **(51)**

हलाल नहीं आप (स) के लिए इस के बाद (और) औरतें, और न यह कि आप (स) उन से और औरतें बदल लें अगरचे आप (स) को अच्छा लगे उन का हुस्न, सिवाए आप (स) की कनीज़े, और अल्लाह हर शै पर निगहबान है। **(52)**

ऐ ईमान वालो! तुम नबी (स) के घरों में दाख़िल न हो, सिवाए इस के कि तुम्हें इजाज़त दी जाए खाने के लिए, उस के पकने की राह न तको, लेकिन जब तुम्हें बुलाया जाए तो तुम दाख़िल हो, फिर जब तुम खाना खालो तो तुम मुन्तशिर हो जाया करो, और बातों के लिए जी लगा कर न बैठे रहो। बेशक तुम्हारी यह बात नबी (स) को ईज़ा देती है, पस वह तुम से शर्माते हैं, और अल्लाह हक़ बात (फ़रमाने) से नहीं शर्माता, और जब तुम उन (नबी (स) की बीवियों) से कोई शै मांगो तो उन से पर्दे के पीछे से मांगो, यह बात तुम्हारे और उन के दिलों के लिए ज़ियादा पाकीज़गी का ज़रीआ है, और तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल (स) को ईज़ा दो, और न यह (जाइज़ है) कि उन के बाद कभी भी उन की बीवियों से तुम निकाह करो, बेशक तुम्हारी यह बात अल्लाह के नज़्दीक बड़ा (गुनाह) है। **(53)**

अगर तुम कोई बात ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ तो बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। **(54)**

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْۤ اٰبَآئِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآئِهِنَّ وَلَاۤ اِخْوَانِهِنَّ

और न अपने भाई	अपने बेटों	और न	अपने बाप	में	औरतों पर	गुनाह नहीं

وَلَاۤ اَبْنَآءِ اِخْوَانِهِنَّ وَلَاۤ اَبْنَآءِ اَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا

और न	अपनी औरतें	और न	अपनी बहनों के बेटे	और न	अपने भाइयों के बेटे	और न

مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى

पर	है	बेशक अल्लाह	अल्लाह	और डरती रहो	जिस के मालिक हुए उन के हाथ (कनीज़ें)

كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٥٥﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا

ऐ	नबी (स) पर	दरूद भेजते हैं	और उस के फ़रिश्ते	बेशक अल्लाह	55	गवाह (मौजूद)	हर शै

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿٥٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

जो लोग	बेशक	56	खूब सलाम	और सलाम भेजो	उस पर	दरूद भेजो	ईमान वालो

يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَاَعَدَّ

और तैयार किया उस ने	और आख़िरत	दुनिया में	उन पर लानत की अल्लाह ने	अल्लाह और उस का रसूल (स)	ईज़ा देते हैं

لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٥٧﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ

और मोमिन औरतें	मोमिन मर्द (जमा)	ईज़ा देते हैं	और जो लोग	57	रुस्वा करने वाला अज़ाब	उन के लिए

بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٨﴾ ع

58	सरीह	और गुनाह	बुहतान	अलबत्ता उन्हों ने उठाया	कि उन्हों ने कमाया (किया)	बग़ैर

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ

डाल लिया करें	मोमिनो	और औरतों को	और बेटियों को	अपनी बीवियों को	फ़रमा दें	ऐ नबी (स)

عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ؕ

तो उन्हें न सताया जाए	उन की पहचान हो जाए	कि	क़रीब तर	यह	अपनी चादरें	से	अपने ऊपर

وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٩﴾ لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ

मुनाफ़िक़ (जमा)	बाज़ न आए	अगर	59	मेह्रबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह है

وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ

मदीना	में	और झूटी अफ़्वाहें उड़ाने वाले	रोग	उन के दिलों में	और वह जो

لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَاۤ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٠﴾ مَّلْعُوْنِيْنَ ۛ

फिटकारे हुए	60	चन्द दिन	सिवाए	इस (शहर) में	तुम्हारे हमसाया न रहेंगे वह	फिर	उन के	हम ज़रूर तुम्हें पीछे लगा देंगे

اَيْنَمَا ثُقِفُوْۤا اُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿٦١﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ

उन लोगों में जो	अल्लाह का दस्तूर	61	बुरी तरह मारा जाना	और मारे जाएंगे	पकड़े जाएंगे	वह पाए जाएंगे	जहां कहीं

خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٦٢﴾

62	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में	और तुम हरगिज़ न पाओगे	इन से पहले	गुज़रे

ग़ौरतों पर गुनाह नहीं (पर्दा न करने में) अपने बाप, और न अपने बेटों, और न अपने भाइयों, और न अपने भाइयों के बेटों, और न अपनी बहनों के बेटों, और न अपनी औरतों से, और न अपनी कनीज़ों से, (ऐ औरतो) तुम अल्लाह से डरती रहो, बेशक अल्लाह हर शै पर गवाह (मौजूद) है। (55) बेशक अल्लाह और उस के फ़रिश्ते नबी (स) पर दरूद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो! तुम भी उस पर दरूद भेजो और खूब सलाम भेजो। (56) बेशक जो लोग अल्लाह को और उस के रसूल (स) को ईज़ा देते हैं अल्लाह ने उन पर दुनिया और आख़िरत में लानत की (अपनी रहमत से महरूम कर दिया) और उनके लिए रुस्वा करने वाला अज़ाब तैयार किया। (57) और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ईज़ा देते हैं, बग़ैर उस के कि उन्हों ने कुछ किया हो तो अलबत्ता उन्हों ने उठाया (अपने सर लिया) बुहतान और सरीह गुनाह। (58) ऐ नबी (स)! आप (स) अपनी बीवियों और अपनी बेटियों को, और मोमिनों की औरतों को फ़रमा दें कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें डाल लिया करें (घूंघट निकाल लिया करें) यह (उस से) क़रीब तर है कि उन की पहचान हो जाए, तो उन्हें न सताया जाए, और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेह्रबान है। (59) अगर बाज़ न आए मुनाफ़िक़ और वह लोग जिन के दिलों में रोग है, और मदीने में झूटी अफ़्वाहें उड़ाने वाले, तो हम ज़रूर तुम्हें उन के पीछे लगा देंगे, फिर वह इस शहर (मदीना) में चन्द दिन के सिवा तुम्हारे हमसाया (पास) न रहेंगे। (60) फिटकारे हुए, वह जहाँ कहीं पाए जाएंगे पकड़े जाएंगे, और बुरी तरह मारे जाएंगे। (61) अल्लाह का (यही) दस्तूर रहा है, उन लोगों में जो गुज़रे हैं इस से पहले, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (62)

ع ٦/٧

معانقة ١٢ عند المتأخرين ١٢

الربع

يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۭ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۭ وَمَا

और क्या	अल्लाह के पास	उस का इल्म	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें	क़ियामत	से (मुतअ़ल्लिक़)	लोग	आप से सवाल करते हैं

يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ

काफ़िरों पर	लानत की	बेशक अल्लाह	63	क़रीब	हो	क़ियामत	शायद	तुम्हें ख़बर

وَاَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا

और न	कोई दोस्त	वह न पाएंगे	हमेशा	उस में	हमाशा रहेंगे	64	भड़कती हुई आग	उन के लिए	और तैयार किया उस ने

نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾ يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا

हम ने इताअ़त की होती	ऐ काश हम	वह कहेंगे	आग में	उन के चेहरे	उलट पुलट किए जाएंगे	जिस दिन	65	कोई मददगार

اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾ وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا

और अपने बड़ों	अपने सरदार	हम ने इताअ़त की	बेशक हम	ऐ हमारे रब	और वह कहेंगे	66	और इताअ़त की होती रसूल	अल्लाह

فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾ رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ

और लानत कर उन पर	अ़ज़ाब	दुगना	दे उन्हें	ऐ हमारे रब	67	रास्ता	तो उन्हों ने भटकाया हमें

لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا ع ٨ ١٠ ٥

उन्हों ने सताया	उन लोगों की तरह	तुम न होना	ईमान वालो	ऐ	68	बड़ी	लानत

مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۭ وَكَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾

69	बाआबरू	अल्लाह के नज़्दीक	और वह थे	उन्हों ने कहा	उस से जो	अल्लाह	तो बरी कर दिया उस को	मूसा (अ)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾ يُّصْلِحْ

वह संवार देगा	70	सीधी	बात	और कहो	अल्लाह से डरो	ईमान वालो	ऐ

لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ۭ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

और उस का रसूल	अल्लाह की इताअ़त की	और जो-जिस	तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाह	और बख़्श देगा	तुम्हारे अ़मल (जमा)	तुम्हारे लिए

فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾ اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ

आस्मान (जमा)	पर	अमानत	हम ने पेश किया	बेशक हम	71	बड़ी मुराद	तो वह मुराद को पहुँचा

وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا

उस से	और वह डर गए	कि वह उसे उठाएं	तो उन्हों ने इन्कार किया	और पहाड़	और ज़मीन

وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ۭ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾ لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ

ताकि अल्लाह अ़ज़ाब दे	72	बड़ा नादान	ज़ालिम	था	बेशक वह	इन्सान ने	और उसे उठा लिया

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ

और तौबा क़ुबूल करे	और मुश्रिक औरतों	और मुश्रिक मर्दों	और मुनाफ़िक़ औरतों	मुनाफ़िक़ मर्दों

اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾ ع ٥ ٩ ٦

73	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	पर-की	अल्लाह

आप (स) से लोग क़ियामत के बारे में सवाल करते हैं। आप (स) फ़रमा दें इस के सिवा नहीं कि उस का इल्म अल्लाह के पास है, और तुम्हें क्या ख़बर! शायद क़ियामत क़रीब (ही) हो। (63)

बेशक अल्लाह ने काफ़िरों पर लानत की, और उन के लिए (जहन्नम की) भड़कती हुई आग तैयार की है। (64)

वह उस में हमेशा हमेशा रहेंगे, वह न कोई दोस्त पाएंगे, और न मददगार। (65)

जिस दिन उन के चेहरे आग में उलट पुलट किए जाएंगे, वह कहेंगे ऐ काश! हम ने इताअ़त की होती अल्लाह की, और इताअ़त की होती रसूल (स) की। (66)

और वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! बेशक हम ने इताअ़त की अपने सरदारों की और अपने बड़ों की, तो उन्हों ने हमें रास्ते से भटकाया। (67)

ऐ हमारे रब! उन्हें दुगना अ़ज़ाब दे और उन पर बड़ी लानत कर। (68)

ऐ ईमान वालो! उन लोगों की तरह न होना जिन्हों ने मूसा (अ) को (इल्ज़ाम लगा कर) सताया तो बरी कर दिया उस को अल्लाह ने उस से जो उन्हों ने कहा (इल्ज़ाम लगाया), और वह (मूसा अ) अल्लाह के नज़्दीक बाआबरू थे। (69)

ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सीधी बात कहो। (70)

वह तुम्हारे लिए तुम्हारे अ़मल संवार देगा, और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा, और जिस ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त की तो वह बड़ी मुराद को पहुँचा। (71)

बेशक हम ने अपनी अमानत (ज़िम्मेदारी को) पेश किया आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर, तो उन्हों ने उस के उठाने से इन्कार किया, और वह उस से डर गए, और इन्सान ने उसे उठा लिया, बेशक वह ज़ालिम, बड़ा नादान था। (72)

ताकि अल्लाह अ़ज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को, और अल्लाह तौबा क़ुबूल करे मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (73)

آیَاتُهَا ٥٤ ❀ (٣٤) سُوْرَةُ سَبَاٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकूआत 6	(34) सूरतुस सबा	आयात 54

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَلَهُ

और उसी के लिए	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	वह जिस के लिए	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

الْحَمْدُ فِی الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿١﴾ یَعْلَمُ مَا یَلِجُ

जो दाख़िल होता है	वह जानता है	1	ख़बर रखने वाला	हिक्मत वाला	और वह	आख़िरत में	हर तारीफ़

فِی الْاَرْضِ وَمَا یَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا یَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا یَعْرُجُ

चढ़ता है	और जो	आस्मान से	नाज़िल होता है	और जो	उस से	निकलता है	और जो	ज़मनि में

فِیْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِیْمُ الْغَفُوْرُ ﴿٢﴾ وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِیْنَا

हम पर नहीं आएगी	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा (कहते हैं)	2	बख़्शने वाला	मेहरबान	और वह	उस में

السَّاعَةُ ؕ قُلْ بَلٰی وَرَبِّیْ لَتَاْتِیَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَیْبِ ۚ لَا یَعْزُبُ عَنْهُ

उस से	पोशीदा नहीं	ग़ैब	जानने वाला	अलबत्ता तुम पर ज़रूर आएगी	क़सम मेरे रब की	हाँ	फ़रमा दें	क़ियामत

مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِی السَّمٰوٰتِ وَلَا فِی الْاَرْضِ وَلَاۤ اَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ

उस से	छोटा	और न	ज़मीन में	और न	आस्मानों में	एक ज़र्रे के बराबर

وَلَاۤ اَكْبَرُ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ﴿٣﴾ لِّیَجْزِیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

और उन्हों ने अ़मल किए	उन लोगों को जो ईमान लाए	ताकि जज़ा दे	3	रोशन किताब	में	मगर	बड़ा	और न

الصّٰلِحٰتِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِیْمٌ ﴿٤﴾ وَالَّذِیْنَ

और वह लोग जो	4	और इ़ज़्ज़त की रोज़ी	बख़्शिश	उन के लिए	यही लोग	नेक

سَعَوْ فِیْۤ اٰیٰتِنَا مُعٰجِزِیْنَ اُولٰٓىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِیْمٌ ﴿٥﴾

5	सख़्त दर्दनाक	से	अ़ज़ाब	उन के लिए	यही लोग	हराने के लिए	हमारी आयतों में	उन्हों ने कोशिश की

وَیَرَی الَّذِیْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ

तुम्हारे रब की तरफ़ से	तुम्हारी तरफ़	नाज़िल किया गया	वह जो कि	इ़ल्म	दिया गया	वह लोग जिन्हें	और वह देखते हैं

هُوَ الْحَقَّ ۙ وَیَهْدِیْۤ اِلٰی صِرَاطِ الْعَزِیْزِ الْحَمِیْدِ ﴿٦﴾

6	सज़ावारे तारीफ़	ग़ालिब	रास्ता	तरफ़	और वह रहनुमाई करता है	वह हक़

وَقَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰی رَجُلٍ یُّنَبِّئُكُمْ

वह ख़बर देता है तुम्हें	ऐसा आदमी	पर	हम बतलाएं तुम्हें	क्या	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा (कहते हैं)

اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِیْ خَلْقٍ جَدِیْدٍ ﴿٧﴾ ۚ

7	ज़िन्दगी नई	अलबत्ता में	बेशक तुम	पूरी तरह रेज़ा रेज़ा	तुम रेज़ा रेज़ा हो जाओगे	जब

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो कुछ ज़मीन में है, और उसी के लिए हर तारीफ़ है आख़िरत में, और वह हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला। (1)

वह जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होता है (मसलन पानी) और जो उस से निकलता है, और जो आस्मान से नाज़िल होता है, और जो उस में चढ़ता है, और वह मेहरबान है बख़्शने वाला। (2)

और कहते हैं काफ़िर कि हम पर क़ियामत नहीं आएगी, आप (स) फ़रमा दें हाँ! मेरे रब की क़सम! अलबत्ता वह तुम पर ज़रूर आएगी, और वह ग़ैब का जानने वाला है। उस से एक ज़र्रे के बराबर भी पोशीदा नहीं आस्मानों में और न ज़मीन में, और न छोटा उस से और न बड़ा मगर (सब कुछ) रोशन किताब में है। (3)

ताकि वह उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और इ़ज़्ज़त की रोज़ी है। (4)

और जिन लोगों ने हमारी आयतों में कोशिश की हराने के लिए, उन ही लोगों के लिए सख़्त दर्दनाक अ़ज़ाब है। (5)

और जिन्हें इ़ल्म दिया गया वह देखते (जानते) हैं कि जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल किया गया है वह हक़ है, और (अल्लाह) ग़ालिब, सज़ावारे तारीफ़ के रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है। (6)

और काफ़िर कहते हैं क्या हम तुम्हें बताएं ऐसा आदमी जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम पूरी तरह रेज़ा रेज़ा हो जाओगे, तो बेशक तुम नई ज़िन्दगी में (आओगे)। (7)

उस ने अल्लाह पर झूट बान्धा है या उसे जुनून (है), (नहीं) बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, वह अ़ज़ाब और दूर की (शदीद) गुमराही में हैं। (8)
क्या उन्हों ने नहीं देखा? उस की तरफ़ जो उन के आगे और जो उन के पीछे है, यानी आस्मान और ज़मीन, अगर हम चाहें तो हम उन्हें ज़मीन में धंसा दें या उन पर आस्मान का टुकड़ा गिरा दें, बेशक उस में निशानी है हर रुजूअ़ करने वाले बन्दे के लिए। (9)
और तहक़ीक़ हम ने दाऊद (अ) को अपनी तरफ़ से फ़ज़्ल अ़ता किया। ऐ पहाड़ो! उस के साथ तस्बीह करो और परिन्दो (तुम भी)। और हम ने उस के लिए लोहे को नर्म कर दिया। (10)
कि चौड़े ज़िरहें बनाओ, और कड़ियों को जोड़ने में अन्दाज़ा रखो, और अच्छे अ़मल करो, तुम जो कुछ करते हो बेशक मैं उस को देख रहा हूँ। (11)
और सुलेमान (अ) के लिए हवा (को मुसख़्ख़र) किया और उस की सुबह की मन्ज़िल एक माह (की राह होती) और शाम की मन्ज़िल एक माह (की राह) और हम ने उस के लिए तांबे का चश्मा बहाया, और जिन्नात में से (बाज़) उसके सामने काम करते थे उस के रब के हुक्म से। और उन में से जो हमारे हुक्म से कजी करेगा हम उसे दोज़ख़ के अ़ज़ाब का मज़ा चखाएंगे। (12)
वह (जिन्नात) बनाते उस के लिए जो वह (सुलेमान अ) चाहते, क़िलए, और तस्वीरें, और हौज़ जैसे लगन, एक जगह जमी हुई देगें, ऐ ख़ानदाने दाऊद (अ)! तुम शुक्र बजा ला कर अ़मल करो, और मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार थोड़े हैं। (13)
फिर जब हम ने उस की मौत का हुक्म जारी किया, उन्हें (जिन्नों को) उस की मौत का पता न दिया मगर घुन की तरह कीड़े (दीमक) ने, वह उस का अ़सा खाता था, फिर जब वह गिर पड़ा तो जिन्नों पर हक़ीक़त खुली कि अगर वह ग़ैब जानते होते तो वह न रहते ज़िल्लत के अ़ज़ाब में। (14)

اَفۡتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا اَمۡ بِهٖ جِنَّةٌ ۜ بَلِ الَّذِيۡنَ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ

ईमान नहीं रखते	वह लोग जो	बल्कि	जुनून	उसे	या	झूट	अल्लाह पर	उस ने बान्धा

بِالۡاٰخِرَةِ فِی الۡعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الۡبَعِيۡدِ ﴿٨﴾ اَفَلَمۡ يَرَوۡا اِلٰی مَا

जो	तरफ़	क्या उन्हों ने नहीं देखा?	8	दूर	और गुमराही	अ़ज़ाब में	आख़िरत पर

بَيۡنَ اَيۡدِيۡهِمۡ وَمَا خَلۡفَهُمۡ مِّنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ ؕ اِنۡ نَّشَاۡ

अगर हम चाहें	और ज़मीन	आस्मान से	उन के पीछे	और जो	उन के आगे

نَخۡسِفۡ بِهِمُ الۡاَرۡضَ اَوۡ نُسۡقِطۡ عَلَيۡهِمۡ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ؕ اِنَّ

बेशक	आस्मान से	टुकड़ा	उन पर	या गिरा दें	ज़मीन	उन्हें धंसा दें हम

فِیۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبۡدٍ مُّنِيۡبٍ ﴿٩﴾ وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضۡلًا ؕ

फ़ज़्ल	अपनी तरफ़ से	दाऊद (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दिया	9	रुजूअ़ करने वाला	बन्दा	लिए-हर	अलबत्ता निशानी	इस में

يٰجِبَالُ اَوِّبِیۡ مَعَهٗ وَالطَّيۡرَ ۚ وَاَلَـنَّا لَهُ الۡحَدِيۡدَ ﴿١٠﴾ اَنِ اعۡمَلۡ

बनाओ	कि	10	लोहा	उस के लिए	और हम ने नर्म कर दिया	और परिन्दे	उस के साथ	तस्बीह करो	ऐ पहाड़ो

سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرۡ فِی السَّرۡدِ وَاعۡمَلُوۡا صَالِحًا ؕ اِنِّیۡ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ

तुम जो कुछ करते हो उस को	बेशक	अच्छे	और अ़मल करो	(कड़ियों के) जोड़ने में	और अन्दाज़ा रखो	कुशादह ज़िरहें

بَصِيۡرٌ ﴿١١﴾ وَلِسُلَيۡمٰنَ الرِّيۡحَ غُدُوُّهَا شَهۡرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهۡرٌ ۚ

एक माह	और शाम की मन्ज़िल	एक माह	उस की सुबह की मन्ज़िल	हवा	और सुलेमान (अ) के लिए	11	देख रहा हूँ

وَاَسَلۡنَا لَهٗ عَيۡنَ الۡقِطۡرِ ؕ وَمِنَ الۡجِنِّ مَنۡ يَّعۡمَلُ بَيۡنَ يَدَيۡهِ بِاِذۡنِ

इज़्न (हुक्म) से	उस के सामने	वह काम करते	जिन्न	और से	तांबे का चश्मा	और हम ने बहाया उस के लिए

رَبِّهٖ ؕ وَمَنۡ يَّزِغۡ مِنۡهُمۡ عَنۡ اَمۡرِنَا نُذِقۡهُ مِنۡ عَذَابِ السَّعِيۡرِ ﴿١٢﴾

12	आग (दोज़ख़)	अ़ज़ाब	से-का	हम उस को चखाएंगे	हमारे हुक्म से	उन में से	कजी करेगा	और जो	उस के रब के

يَعۡمَلُوۡنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنۡ مَّحَارِيۡبَ وَتَمَاثِيۡلَ وَجِفَانٍ كَالۡجَوَابِ

हौज़ जैसे	और लगन	और तस्वीरें	बड़ी इमारतें (क़िलए)	से	जो वह चाहते	उस के लिए	वह बनाते

وَقُدُوۡرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ اِعۡمَلُوۡۤا اٰلَ دَاوٗدَ شُكۡرًا ؕ وَقَلِيۡلٌ مِّنۡ عِبَادِیَ

मेरे बन्दे	से	और थोड़े	शुक्र बजा ला कर	ऐ ख़ानदाने दाऊद	तुम अ़मल करो	एक जगह जमी हुई	और देगें

الشَّكُوۡرُ ﴿١٣﴾ فَلَمَّا قَضَيۡنَا عَلَيۡهِ الۡمَوۡتَ مَا دَلَّهُمۡ عَلٰی مَوۡتِهٖۤ

उस की मौत का	उन्हें पता न दिया	मौत	उस पर	हुक्म जारी किया	फिर जब हम ने	13	शुक्र गुज़ार

اِلَّا دَآبَّةُ الۡاَرۡضِ تَاۡكُلُ مِنۡسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الۡجِنُّ

जिन्न	हक़ीक़त खुली	वह गिर पड़ा	फिर जब	उस का अ़सा	वह खाता था	घुन का कीड़ा	मगर

اَنۡ لَّوۡ كَانُوۡا يَعۡلَمُوۡنَ الۡغَيۡبَ مَا لَبِثُوۡا فِی الۡعَذَابِ الۡمُهِيۡنِ ﴿١٤﴾

14	ज़िल्लत	अ़ज़ाब	में	वह न रहते	ग़ैब	वह जानते होते	अगर

لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ۬

और बाएं	दाएं से	दो बाग़	एक निशानी	उन की आबादी	में	(क़ौम) सबा के लिए	अलबत्ता थी

كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ

और रब	पाकीज़ा	शहर	उस का	और शुक्र अदा करो	अपने रब का रिज़्क़	से	तुम खाओ

غَفُوْرٌ ﴿۱۵﴾ فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ

और हम ने उन्हें बदल दिए	सैलाब बन्द से (रुका हुआ)	उन पर	तो हम ने भेजा	फिर उन्हों ने मुँह मोड़ लिया	15	बख़्शने वाला

بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ

बेरियां	और कुछ	और झाड़	बदमज़ा	मेवा	वाले	दो बाग़	उन के दो बाग़ों के बदले

قَلِيْلٍ ﴿۱۶﴾ ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ اِلَّا الْكَفُوْرَ ﴿۱۷﴾

17	नाशुक्रा	मगर-सिर्फ़	हम सज़ा देते	और नहीं	उन्हों ने नाशुक्री की	उस के सबब जो	हम ने उन को सज़ा दी	यह	16	थोड़ी

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً

एक दूसरे से मुत्तसिल	बस्तियां	उस में	हम ने बरकत दी	वह जिन्हें	बस्तियां	और दरमियान	उन के दरमियान	और हम ने (आबाद) कर दिए

وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ؕ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ﴿۱۸﴾

18	अम्न से (बेख़ौफ़ ओ ख़तर)	और दिन (जमा)	रातों	उन में	तुम चलो (फिरो)	उन में आमद ओ रफ़्त	और हम ने मुक़र्रर कर दिया

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ

तो हम ने बना दिया उन्हें	अपनी जानों पर	और उन्हों ने ज़ुल्म किया	हमारे सफ़रों के दरमियान	दूरी पैदा कर दे	ऐ हमारे रब	वह कहने लगे

اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

निशानियां	उस में	बेशक	पूरी तरह परागन्दा	और हम ने उन्हें परागन्दा कर दिया	अफ़्साने

لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿۱۹﴾ وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ اِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ

पस उन्हों ने उस की पैरवी की	अपना गुमान	इब्लीस	उन पर	सच कर दिखाया	और अलबत्ता	19	शुक्र गुज़ार	हर सब्र करने वाले

اِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۲۰﴾ وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ

कोई ग़ल्बा	उन पर	उसे (इब्लीस को)	और न था	20	मोमिनीन	से-का	एक गिरोह	सिवाए

اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ

शक में	उस से	वह	उस से जो	आख़िरत पर	जो ईमान रखता है	ताकि हम मालूम कर लें	मगर

ع ۲ ۱۲ ۸ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ﴿۲۱﴾ قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ

गुमान करते हो	उन को जिन्हें	पुकारो	फ़रमा दें	21	निगहबान	हर शै	पर	और तेरा रब

مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا

और न	आस्मानों में	एक ज़र्रे के बराबर	वह मालिक नहीं हैं	अल्लाह के सिवा

فِي الْاَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ ﴿۲۲﴾

22	कोई मददगार	उन में से	और नहीं उस (अल्लाह) का	उन (आस्मान और ज़मीन) में कोई साझा	उन का	और नहीं	ज़मीन में

अलबत्ता क़ौमे सबा के लिए उन की आबादी में निशानी थी, दो बाग़ दाएं और बाएं, (हम ने कह दिया कि) तुम अपने परवरदिगार के रिज़्क़ से खाओ और उस का शुक्र अदा करो, शहर है पाकीज़ा और परवरदिगार है बख़्शने वाला। (15)
फिर उन्हों ने मुँह मोड़ लिया तो हम ने उन पर (बन्द तोड़ कर) ज़ोर का सैलाब भेजा और उन दो बाग़ों के बदले (दूसरे) दो बाग़ दिए बदमज़ा मेवा वाले और कुछ झाड़, और थोड़ी सी बेरियाँ। (16)
यह हम ने उन्हें सज़ा दी इस लिए कि उन्हों ने नाशुक्री की और हम सिर्फ़ नाशुक्रे को सज़ा देते हैं। (17)
और हम ने आबाद कर दी उन के दरमियान और (शाम) की उन बस्तियों के दरमियान जिन्हें हम ने बरकत दी है, एक दूसरे से लगी बस्तियां, और हम ने उन में सफ़र के पड़ाव मुक़र्रर कर दीं, तुम उन में चलो फिरो, रात और दिन बेख़ौफ़ ओ ख़तर। (18)
वह कहने लगे ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे सफ़रों के दरमियान दूरी पैदा कर दे, और उन्हों ने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया तो हम ने उन्हें बना दिया अफ़्साने, और हम ने उन्हें पूरी पूरी तरह परागन्दा कर दिया, बेशक उस में हर बड़े सब्र करने वाले शुक्र गुज़ार के लिए नशिानियां हैं। (19)
और अलबत्ता इब्लीस ने उन पर अपना गुमान सच कर दिखाया, पस उन्हों ने उस की पैरवी की सिवाए एक गिरोह मोमिनों के। (20)
और इब्लीस को उन पर कोई ग़ल्बा न था मगर (हम चाहते थे कि) मालूम कर लें जो आख़िरत पर ईमान रखता है उस से (जुदा कर के) जो उस (के बारे में) शक में है, और तेरा रब हर शै पर निगहबान है। (21)
आप (स) फ़रमा दें, उन्हें पुकारो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा (माबूद) गुमान करते हो, वह (तो) एक ज़र्रा बराबर चीज़ के भी मालिक नहीं (इख़्तियार नहीं रखते) आस्मानों में और न ज़मीन में और न उन (आस्मान और ज़मीन) में उन का कोई साझा है और न उन में से कोई (अल्लाह का) मददगार है। (22)

وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهٗٓ اِلَّا لِمَنْ اَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰٓى اِذَا فُزِّعَ

दूर कर दी जाती है	जब	यहां तक	उस को	जिसे वह इजाज़त दे	सिवाए	उस के पास	शफ़ाअ़त	और नफ़ा नहीं देती

عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ

बुलन्द मरतबा	और वह	हक़	वह कहते हैं	तुम्हारे रब ने	फ़रमाया	क्या	कहते हैं	उन के दिलों से

الْكَبِيْرُ ﴿٢٣﴾ قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ

फ़रमा दें अल्लाह	और ज़मीन	आस्मानों से	तुम को रिज़्क़ देता है	कौन	फ़रमा दें	23	बुज़ुर्ग क़द्र

وَاِنَّآ اَوْ اِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى اَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٤﴾ قُلْ لَّا تُسْـَٔلُوْنَ

तुम से न पूछा जाएगा	फ़रमादें	24	खुली	गुमराही में	या	अलबत्ता हिदायत पर	तुम ही	या	और बेशक हम

عَمَّآ اَجْرَمْنَا وَلَا نُسْـَٔلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ

फिर	हमारा रब	हम सब को	वह जमा करेगा	फ़रमा दें आप (स)	25	जो तुम करते हो	उसकी बाबत	और न हम से पूछा जाएगा	जो हम ने गुनाह किया	उसकी बाबत

يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ؕ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٦﴾ قُلْ اَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ اَلْحَقْتُمْ

तुम ने साथ मिला दिया है	वह जिन्हें	मुझे दिखाओ	फ़रमा दें	26	जानने वाला	फ़ैसला करने वाला	और वह	ठीक ठीक	हमारे दरमियान	फ़ैसला करेगा

بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ؕ بَلْ هُوَ اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٧﴾ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ

आप (स) को हम ने भेजा	और नहीं	27	हिक्मत वाला	ग़ालिब	वह अल्लाह	बल्कि	हरगिज़ नहीं	शरीक	उस के साथ

اِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	नहीं जानते	अक्सर लोग	और लेकिन	और डर सुनाने वाला	ख़ुशख़बरी देने वाला	मगर तमाम लोगों (नुए-इन्सानी) के लिए

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٩﴾ قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ

एक दिन	वादा	तुम्हारे लिए	फ़रमा दें	29	सच्चे	तुम हो	अगर	यह वादा (क़ियामत)	कब	और वह कहते हैं

لَّا تَسْتَاْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ع ٣ ٩ النصف

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहते हैं	30	तुम आगे बढ़ सकते हो	और न	एक घड़ी	उस से	न तुम पीछे हट सकते हो

لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى

और काश तुम देखो	इस से पहले	उस पर जो	और न	इस क़ुरआन पर	हम हरगिज़ ईमान न लाएंगे

اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖۚ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ

दूसरे	तरफ़	उन में से एक	लौटाएगा (रद करेगा)	अपने रब के सामने	खड़े किए जाएंगे	ज़ालिम (जमा)	जब

اِۨلْقَوْلَ ۚ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ

अगर न तुम होते	तकब्बुर करते थे (बड़े लोग)	उन लोगों को जो	जो कमज़ोर किए गए	कहेंगे	बात

لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾ قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا اَنَحْنُ

क्या हम	उन से जो कमज़ोर किए गए	जो लोग तकब्बुर करते थे (बड़े लोग)	कहेंगे	31	ईमान लाने वाले	ज़रूर हम होते

صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ اِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾

32	मुज्रिम (जमा)	तुम थे	बल्कि	जब आ गई तुम्हारे पास	उस के बाद	हिदायत	से	हम ने रोका तुम्हें

और शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) नफ़ा नहीं देती उस के पास सिवाए उस के जिसे वह इजाज़त देदे, यहां तक कि जब उन के दिलों से (घबराहट) दूर कर दी जाती है तो कहते हैं क्या कहा है तुम्हारे रब ने, वह (सिफ़ारिशी) कहते हैं कि हक़ (फ़रमाया है), और वह बुलन्द मरतबा बुज़ुर्ग क़द्र है। (23)

आप (स) फ़रमा दें कौन तुम्हें रोज़ी देता है आस्मानों से और ज़मीन से, फ़रमा दें "अल्लाह"। बेशक हम या तुम (दोनों में से एक) अलबत्ता हिदायत पर है या खुली गुमराही में है। (24)

आप (स) फ़रमा दें (अगर हम मुज्रिम हैं तो) तुम से उस गुनाह की बाबत न पूछा जाएगा जो हम ने किया और न हम से उस बाबत पूछा जाएगा जो तुम करते हो। (25)

फ़रमा दें हम सब को जमा करेगा हमारा रब, फिर हमारे दरमियान ठीक ठीक फ़ैसला करेगा, और वह फ़ैसला करने वाला, जानने वाला है। (26)

आप (स) फ़रमा दें मुझे दिखाओ जिन्हें तुम ने साथ मिलाया है उस के साथ शरीक (ठहरा कर), हरगिज़ नहीं बल्कि अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (27)

और हम ने आप (स) को भेजा है तमाम नुए-इन्सानी के लिए ख़ुशख़बरी देने वाला, और डर सुनाने वाला, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (28)

और वह कहते हैं यह वादाए क़ियामत कब (आएगा) अगर तुम सच्चे हो। (29)

आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए वादे का एक दिन (तय) है, उस से न तुम एक घड़ी पीछे हट सकते हो, और न तुम आगे बढ़ सकते हो। (30)

और काफ़िर कहते हैं: हम हरगिज़ इस क़ुरआन पर ईमान न लाएंगे, और न उन (किताबों) पर जो इस से पहले थीं, और काश! तुम देखो, जब यह ज़ालिम अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे, रद करेगा उन में से एक दूसरे की बात, कमज़ोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे अगर तुम न होते तो हम ज़रूर ईमान लाने वाले होते। (31)

और बड़े लोग कमज़ोर लोगों से कहेंगे, क्या हम ने तुम्हें हिदायत से रोका? जब कि वह तुम्हारे पास आई (नहीं), बल्कि तुम (ख़ुद) मुज्रिम थे। (32)

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ

रात और दिन	चाल	बल्कि	उन लोगों से जो तकब्बुर करते थे (बड़े)	कमज़ोर किए गए	वह लोग जो	और कहेंगे

اِذْ تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ اَنْدَادًا ؕ وَاَسَرُّوا

और वह छुपाएंगे	शरीक (जमा)	उस के लिए	और हम ठहराएं	अल्लाह का	कि हम इन्कार करें	जब तुम हुक्म देते थे हमें

النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ؕ وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ

गर्दनों में	तौक़	और हम डालेंगे	अ़ज़ाब	जब वह देखेंगे	शर्मिन्दगी

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ

किसी बस्ती में	और हम ने नहीं भेजा	33	वह करते थे	जो	मगर	वह सज़ा न दिए जाएंगे	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

34	मुन्किर हैं	उस के	तुम जो दे कर भेजे गए हो	बेशक हम	उस के ख़ुशहाल लोग	कहा	मगर	कोई डराने वाला

وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ۙ وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾

35	अ़ज़ाब दिए जाने वाले	हम	और नहीं	और औलाद में	माल में	ज़ियादा	हम	और उन्हों ने कहा

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

अक्सर लोग	और लेकिन	और तंग कर देता है	जिस के लिए वह चाहता है	रिज़्क़	वसीअ़ फ़रमाता है	मेरा रब	बेशक	फ़रमा दें

ع ١٠ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ

तुम्हें नज़्दीक करदे	वह जो कि	तुम्हारी औलाद	और न	तुम्हारे माल	और नहीं	36	नहीं जानते

عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ۡ فَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	यही लोग	और उस ने अच्छे अ़मल किए	ईमान लाया	जो	मगर	दर्जा	हमारे नज़्दीक

جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	अम्न से होंगे	बालाख़ानों में	और वह	उस के बदले जो उन्हों ने किया	दुगनी	जज़ा

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ

अ़ज़ाब में	यही लोग	आजिज़ करने (हराने) वाले	हमारी आयतों में	कोशिश करते हैं	और जो लोग

مُحْضَرُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

जिस के लिए वह चाहता है	रिज़्क़	वसीअ़ फ़रमाता है	मेरा रब	बेशक	फ़रमा दें	38	हाज़िर किए जाएंगे

مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ

तो वह	कोई शै	तुम ख़र्च करोगे	और जो	उस के लिए	और तंग कर देता है	अपने बन्दों में से

يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا

सब	वह जमा करेगा उन को	और जिस दिन	39	रिज़्क़ देने वाला	बेहतरीन	और वह	उस का इवज़ देगा

ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٤٠﴾

40	परस्तिश करते थे	तुम्हारी ही	क्या यह लोग	फ़रिश्तों को	फिर फ़रमाएगा

और कहेंगे कमज़ोर लोग बड़ों को: (नहीं) बल्कि (हमें रोक रखा था तुम्हारी) दिन रात की चालों ने, जब तुम हमें हुक्म देते थे कि हम अल्लाह का इन्कार करें और हम उस के लिए शरीक ठहराएं, और जब वह अ़ज़ाब देखेंगे तो शर्मिन्दगी छुपाएंगे, और हम तौक़ डालेंगे काफ़िरों की गर्दनों में, और वह (उसी की) सज़ा पाएंगे जो वह करते थे। (33)

और हम ने नहीं भेजा किसी बस्ती में कोई डराने वाला मगर उस के ख़ुशहाल लोगों ने कहा: जो (हिदायत) दे कर तुम भेजे गए हो, हम उस के मुन्किर हैं। (34)

और उन्हों ने कहा कि हम माल और औलाद में ज़ियादा (बढ़ कर) हैं, और हम अ़ज़ाब दिए जाने वाले नहीं (हमें अ़ज़ाब न होगा)। (35)

आप (स) फ़रमा दें बेशक मेरा रब जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) वह तंग कर देता है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। (36)

और नहीं तुम्हारे माल और औलाद (ऐसे कि) जो तुम्हें दर्जा में हमारे नज़्दीक कर दें, मगर जो ईमान लाया और उस ने अच्छे अ़मल किए तो उन ही लोगों के लिए दुगनी जज़ा है उस के बदले जो उन्हों ने किया, और वह बालाख़ानों में अम्न से होंगे। (37)

और जो लोग हमारी आयतों को हराने की कोशिश करते हैं, यही लोग अ़ज़ाब में हाज़िर किए जाएंगे। (38)

आप (स) फ़रमा दें मेरा रब अपने बन्दों में से जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ वसीअ़ फ़रमाता है (और जिस के लिए चाहे) तंग कर देता है, और कोई शै तुम ख़र्च करोगे तो वह तुम को उस का इवज़ देगा, और वह बेहतरीन रिज़्क़ देने वाला है। (39)

और जिस दिन वह जमा करेगा, उन सब को, फिर फ़रिश्तों से फ़रमाएगा, क्या यह लोग तुम्हारी ही परस्तिश करते थे? (40)

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ

वह परस्तिश करते थे	बल्कि	उन के सिवाए (न कि वह)	हमारा कारसाज़	तू	तू पाक है	वह कहेंगे

الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾ فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ

तुम में से बाज़ (एक)	इख़्तियार नहीं रखता	सो आज	41	एतिक़ाद रखते थे	उन पर	इन में से अक्सर	जिन्न (जमा)

لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ۭ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ

आग (जहन्नम) का अज़ाब	तुम चखो	जिन्हों ने ज़ुल्म किया	उन लोगों को	और हम कहेंगे	और न नुक़्सान का	नफ़ा का	बाज़ (दूसरे) के लिए

الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا

हमारी आयात	उन पर	पढ़ी जाती हैं	और जब	42	तुम झुटलाते थे	उस को	तुम थे	वह जिस

بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا

उस से जिस	कि रोके तुम्हें	वह चाहता है	एक आदमी	मगर सिर्फ़	नहीं है यह	वह कहते हैं	वाज़ेह

كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ۭ وَقَالَ

और कहा	झूट घड़ा हुआ	मगर	नहीं यह	और वह कहते हैं	तुम्हारे बाप दादा	परस्तिश करते थे

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٣﴾

43	जादू खुला	मगर	यह नहीं	जब वह आया उन के पास	हक़ के बारे में	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ

आप (स) से पहले	उन की तरफ़	भेजा हम ने	और न	कि उन्हें पढ़ें	किताबें	दीं हम ने उन्हें	और न

مِنْ نَّذِيْرٍ ﴿٤٤﴾ وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ

दसवां हिस्सा	और यह न पहुँचे	इन से पहले	उन्हों ने जो	और झुटलाया	44	कोई डराने वाला

مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۣ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٤٥﴾ قُلْ

फ़रमा दें	45	मेरा अज़ाब	हुआ	तो कैसा	मेरे रसूलों को	सो उन्हों ने झुटलाया	जो हम ने उन्हें दिया

ع ٥ ١١

اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى

और अकेले अकेले	दो, दो	तुम खड़े हो जाओ अल्लाह के वास्ते	कि	एक बात की	मैं सिर्फ़ नसीहत करता हूँ तुम्हें

ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۣ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ

तुम्हें	डराने वाले	मगर-सिर्फ़	वह	नहीं	कोई जुनून	क्या तुम्हारे साथी को	फिर तुम ग़ौर करो

بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ﴿٤٦﴾ قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ

कोई अजर	जो मैं ने मांगा हो तुम से	फ़रमा दें	46	सख़्त अज़ाब	आगे (आने से पहले)

فَهُوَ لَكُمْ ۭ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَي اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ

हर शै	पर-की	और वह	अल्लाह के ज़िम्मे	मगर-सिर्फ़	मेरा अजर	नहीं	तुम्हारा है	तो वह

شَهِيْدٌ ﴿٤٧﴾ قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿٤٨﴾

48	सब ग़ैबों का जानने वाला	हक़ को	डालता (ऊपर से उतारता है)	मेरा रब	बेशक	फ़रमा दें	47	इत्तिलाअ़ रखने वाला

वह कहेंगे, तू पाक है, तू हमारा कारसाज़ है न कि वह, बल्कि वह जिन्नों की परस्तिश करते थे, उन में से अक्सर उन पर एतिक़ाद रखते थे। (41)

सो आज तुम में से कोई एक दूसरे के न नफ़ा का इख़्तियार रखता है और न नुक़्सान का, और हम उन लोगों को कहेंगे जिन्हों ने ज़ुल्म (शिर्क) किया: तुम जहन्नम के अ़ज़ाब (का मज़ा) चखो जिस को तुम झुटलाते थे। (42)

और जब उन पर पढ़ी जाती हैं हमारी वाज़ेह आयात तो वह कहते हैं: यह तो सिर्फ़ (तुम जैसा) आदमी है, चाहता है कि तुम्हें उन से रोके जिन की परस्तिश तुम्हारे बाप दादा करते थे, और वह कहते हैं यह (क़ुरआन) नहीं है मगर घड़ा हुआ झूट, और काफ़िरों ने हक़ के बारे में कहा जब वह उन के पास आया कि यह नहीं मगर खुला जादू। (43)

और हम ने उन्हें (मुश्रिकीने अरब को) किताबें नहीं दीं कि वह उन्हें पढ़ते हों और न आप (स) से पहले उन की तरफ़ कोई डराने वाला भेजा। (44)

और जो उन से पहले थे उन्हों ने झुटलाया, और यह (मुश्रिकीने अरब) उस के दसवें हिस्से को (भी) न पहुँचे जो हम ने उन्हें दिया था, सो उन्हों ने मेरे रसूलों को झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब। (45)

फ़रमा दें: मैं तुम्हें सिर्फ़ नसीहत करता हूँ एक बात की कि तुम अल्लाह के वास्ते खड़े हो जाओ दो, दो और अकेले अकेले, फिर तुम ग़ौर करो कि तुम्हारे साथी को क्या जुनून है, वह (स) तो सिर्फ़ सख़्त अ़ज़ाब आने से पहले तुम्हें डराने वाले हैं। (46)

आप (स) फ़रमा दें: मैं ने तुम से जो मांगा हो कोई अजर तो वह तुम्हारा है, मेरा अजर तो सिर्फ़ अल्लाह के ज़िम्मे है, और वह हर शै की इत्तिलाअ़ रखने वाला (गवाह) है। (47)

आप (स) फ़रमा दें, बेशक मेरा रब ऊपर से हक़ उतारता है, और सब ग़ैब की बातों का जानने वाला है। (48)

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ ﴿٤٩﴾ قُلْ اِنْ

अगर	फ़रमा दें	49	और न लौटाएगा	बातिल	और न पैदा करेगा	हक़ आ गया	फ़रमा दें

ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ

वह वहि करता है	तो उस की बदौलत	मैं हिदायत पर हूँ	और अगर	अपनी जान पर (अपने नुक़्सान को)	मैं बहका हूँ	तो इस के सिवा नहीं	मैं बहका हूँ

اِلَيَّ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ ﴿٥٠﴾ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ

और न बच सकेंगे	वह घबराएंगे	जब	ऐ काश तुम देखो	50	क़रीब	सुनने वाला	बेशक वह	मेरा रब	मेरी तरफ़

وَّاُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٥١﴾ لا وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ

पकड़ना (हाथ आना)	उन के लिए	और कहां	उस पर	हम ईमान लाए	और वह कहेंगे	51	क़रीब जगह (पास)	से	और पकड़ लिए जाएंगे

مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٢﴾ ج وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ

और वह फेंकते हैं	इस से क़ब्ल	उस से	और तहक़ीक़ उन्हों ने कुफ़्र किया	52	दूर (दारुलजज़ा)	जगह	से

بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾ وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ

जो वह चाहते थे	और दरमियान	उन के दरमियान	और आड़ कर दी गई	53	दूर जगह	से	बिन देखे

ع ٦ ٩ ١٢ كَمَا فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ﴿٥٤﴾ ع

54	तरद्दुद में डालने वाले	शक	में	वह थे	बेशक वह	इस से क़ब्ल	उन के हम जिन्सों के साथ	किया गया	जैसे

آيَاتُهَا ٤٥ ❀ سُوْرَةُ فَاطِرٍ (٣٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकूआत 5	(35) सूरह फ़ातिर पैदा करने वाला	आयात 45

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا

पैग़म्बर	फ़रिश्ते	बनाने वाला	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	जो वह चाहे	पैदाइश में	ज़ियादा कर देता है	और चार चार	और तीन तीन	दो दो	परों वाले

عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١﴾ مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ

तो बन्द करने वाला नहीं	रहमत से	लोगों के लिए	खोल दे अल्लाह	जो	1	कुदरत रखने वाला	हर शै	पर

لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾

2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	उस के बाद	उस का	तो कोई भेजने वाला नहीं	और जो वह बन्द कर दे	उस का

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۭ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	कोई पैदा करने वाला	क्या	अपने ऊपर	अल्लाह की नेमत	तुम याद करो	ऐ लोगो

يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٣﴾

3	उलटे फिरे जाते हो तुम	तो कहां	उस के सिवा	कोई माबूद	नहीं	और ज़मीन	आस्मान से	वह तुम्हें रिज़्क़ देता है

आप (स) फ़रमा दें: हक़ आ गया और न (कोई नई चीज़) दिखाएगा बातिल और न लौटाएगा (कोई पुरानी चीज़)। (49)

आप (स) फ़रमा दें अगर मैं बहका हूँ तो इस के सिवा नहीं कि अपने नुक़्सान को बहका हूँ, और अगर मैं हिदायत पर हूँ तो उस की बदौलत हूँ कि मेरा रब मेरी तरफ़ वहि करता है, बेशक वह सुनने वाला, क़रीब है। (50)

ऐ काश! तुम देखो, जब वह घबराएंगे तो (भाग कर) न बच सकेंगे, और पास ही से पकड़ लिए जाएंगे। (51)

और कहेंगे कि हम उस (नबी स) पर ईमान ले आए और कहां (मुमकिन) है उन के लिए दूर जगह (दारुलजज़ा) से (ईमान का) हाथ आना। (52)

और तहक़ीक़ उन्हों ने इस से क़ब्ल उस से कुफ़्र किया, और वह फेंकते हैं बिन देखे दूर जगह से (अटकल पच्चू बातें करते हैं)। (53)

जो वह चाहते थे, उस के और उन के दरमियान आड़ डाल दी गई, जैसे उन के हम जिन्सों के साथ इस से क़ब्ल किया गया, बेशक वह तरद्दुद में डालने वाले शक में थे। (54)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो आस्मानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है, फ़रिश्तों को पैग़ाम बर बनाने वाला, परों वाले दो दो, और तीन तीन, और चार चार, पैदाइश में जो चाहे वह ज़ियादा कर देता है, बेशक अल्लाह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (1)

अल्लाह लोगों के लिए जो रहमत खोल दे तो (कोई) उस का बन्द करने वाला नहीं, और जो वह बन्द कर दे तो उस के बाद कोई उस का भेजने वाला नहीं, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (2)

ऐ लोगो! तुम याद करो अपने ऊपर अल्लाह की नेमत, क्या अल्लाह के सिवा कोई पैदा करने वाला है? वह तुम्हें आस्मान से रिज़्क़ देता है और ज़मीन से, उस के सिवा कोई माबूद नहीं तो कहां तुम उलटे फिरे जाते हो? (3)

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

लौटना	और अल्लाह की तरफ़	तुम से पहले	रसूल (जमा)	तो तहक़ीक़ झुटलाए गए	वह तुझे झुटलाएं	और अगर

الْاُمُوْرُ ﴿٤﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ

पस हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे	सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	ऐ लोगो	4	तमाम काम

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿٥﴾ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ

दुश्मन	तुम्हारे लिए	बेशक शैतान	5	धोके बाज़	अल्लाह से	और तुम्हें धोके में न डाल दे	दुनिया की ज़िन्दगी

فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ؕ اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿٦﴾

6	जहन्नम वाले	से	ताकि वह हों	अपने गिरोह को	वह तो बुलाता है	दुश्मन	पस उसे समझो

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ

उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	और जो लोग ईमान लाए	सख़्त अ़ज़ाब	उन के लिए	जिन लोगों ने कुफ़्र किया

ع ١ ١٣ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿٧﴾ اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ؕ

अच्छा	फिर उस ने देखा उसे	उस का बुरा अ़मल	उस के लिए	आरास्ता किया गया	सो क्या जिस	7	बड़ा	और अजर	बख़्शिश

فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۫ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ

तुम्हारी जान	पस न जाती रहे	जिस को वह चाहता है	और हिदायत देता है	जिस को वह चाहता है	गुमराह ठहराता है	पस बेशक अल्लाह

عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ﴿٨﴾ وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ

भेजा	वह जिस ने	और अल्लाह	8	वह करते हैं	उसे जो	जानने वाला	बेशक अल्लाह	हस्रत कर के	उन पर

الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا بِهِ الْاَرْضَ

ज़मीन	उस से	फिर हम ने ज़िन्दा किया	मुर्दा शहर	तरफ़	फिर हम उसे ले गए	बादल	फिर वह उठाती हैं	हवाएं

بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ﴿٩﴾ مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ

तो अल्लाह के लिए इज़्ज़त	इज़्ज़त	चाहता है	जो कोई	9	जी उठना	इसी तरह	उस के मरने के बाद

جَمِيْعًا ؕ اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُهٗ ؕ

वह उस को बुलन्द करता है	अच्छा	और अ़मल	पाकीज़ा कलाम	चढ़ता है	उस की तरफ़	तमाम तर

وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ؕ وَمَكْرُ اُولٰٓئِكَ

उन लोगों	और तदबीर	अ़ज़ाब सख़्त	उन के लिए	बुरी	तदबीरें करते हैं	और जो लोग

هُوَ يَبُوْرُ ﴿١٠﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ

फिर उस ने तुम्हें बनाया	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	उस ने पैदा किया तुम्हें	और अल्लाह	10	वह अकारत जाएगी

اَزْوَاجًا ؕ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ وَمَا يُعَمَّرُ

उम्र पाता	और नहीं	उस के इल्म में है	मगर	और न वह जनती है	कोई औ़रत	हामिला होती है	और न	जोड़े जोड़े

مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿١١﴾

11	आसान	अल्लाह पर	यह	बेशक	किताब में	मगर	उस की उम्र से	और न कमी की जाती है	कोई बड़ी उम्र वाला

और अगर वह तुझे झुटलाएं तो तहक़ीक़ झुटलाए गए हैं तुम से पहले भी रसूल, और तमाम कामों की बाज़गश्त (लौटना) अल्लाह की तरफ़ है। (4)

ऐ लोगो! बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस दुनिया की ज़िन्दगी हरगिज़ तुम्हें धोके में न डाल दे, और धोके बाज़ (शैतान) तुम्हें अल्लाह से हरगिज़ धोके में न डाल दे। (5)

बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है पस तुम उसे दुश्मन (ही) समझो, वह तो अपने गिरोह को बुलाता है ताकि वह जहन्नम वालों से हों। (6)

जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन लोगों के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (7)

सो क्या जिस के लिए उस का बुरा अ़मल आरास्ता क्या गया, फिर उस ने उस को अच्छा देखा (समझा) (क्या वह नेकोकारों जैसा हो सकता है) पस बेशक जिस को अल्लाह चाहता है गुमराह ठहराता है और जिस को चाहता है हिदायत देता है, पस तुम्हारी जान न जाती रहे उन पर हस्रत कर के, बेशक जो वह करते हैं अल्लाह उसे जानता है। (8)

और अल्लाह (ही है) जिस ने भेजा हवाओं को, फिर वह बादलों को उठाती हैं, फिर हम उस (बादल) को मुर्दा शहर की तरफ़ ले गए, फिर हम ने उस से ज़मीन को उस के मरने (बंजर हो जाने) के बाद ज़िन्दा किया, इसी तरह (मुर्दों को रोज़े हश्र) जी उठना है। (9)

जो कोई इज़्ज़त चाहता है तो तमाम तर इज़्ज़त अल्लाह के लिए है। उस की तरफ़ चढ़ता है पाकीज़ा कलाम, और अच्छे अ़मल उस को बुलन्द करता है, और जो लोग बुरी तदबीरें करते हैं, उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है, और उन लोगों की तदबीर अकारत जाएगी। (10)

और अल्लाह (ही) ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर तुम्हें जोड़े जोड़े बनाया, और न कोई औ़रत हामिला होती है, और न वह जनती है, मगर उस के इल्म में है, और कोई बड़ी उम्र वाला उम्र नहीं पाता, और न किसी की उम्र से कमी की जाती है मगर (यह सब) किताब में लिखा हुआ है। यह बेशक अल्लाह पर आसान है। (11)

وَمَا يَسْتَوِى الْبَحْرٰنِ ۖ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ

आसान उस का पीना	शीरीं प्यास बुझाने वाला	यह	दोनों दर्या	और बराबर नहीं

وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ؕ وَمِنْ كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ

और तुम निकालते हो	ताज़ा	गोश्त	तुम खाते हो	और हर एक से	शोर तल्ख़	और यह

حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا

ताकि तुम तलाश करो	चीरती हैं पानी को	उस में	कश्तियां	और तू देखता है	जिस को पहनते हो तुम	ज़ेवर

مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۱۲﴾ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ

और दाख़िल करता है दिन को	दिन में	वह दाख़िल करता है रात	12	तुम शुक्र करो	और ताकि तुम	उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी)

فِى الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَّجْرِىْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ

मुक़र्ररा	एक वक़्त	हर एक चलता है	और चाँद	सूरज	और उस ने मुसख़्ख़र किया	रात में

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

उस के सिवा	तुम पुकारते हो	और जिन को	उस के लिए बादशाहत	तुम्हारा परवरदिगार	यही है अल्लाह

مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ﴿۱۳﴾ اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ۚ وَلَوْ

और अगर	तुम्हारी पुकार (दुआ)	वह नहीं सुनेंगे	तुम उन को पुकारो	अगर	13	खजूर की घुटली का छिलका	वह मालिक नहीं

سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ؕ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ

तुम्हारे शिर्क करने का	वह इन्कार करेंगे	और रोज़े क़ियामत	तुम्हारी	वह हाजत पूरी न कर सकेंगे	वह सुन लें

ع ٢ ٧ ١٤ الثلثة

وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ﴿۱۴﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ

मोहताज	तुम	ऐ लोगो!	14	ख़बर देने वाला	मानिंद	और तुझ को ख़बर न देगा

اِلَى اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ﴿۱۵﴾ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ

तुम्हें ले जाए	अगर वह चाहे	15	सज़ावारे हम्द	बेनियाज़	वह	और अल्लाह	अल्लाह के

وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿۱۶﴾ ۚ وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ﴿۱۷﴾

17	दुशवार	अल्लाह पर	यह	और नहीं	16	नई ख़ल्क़त	और ले आए वह

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ وَاِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا

तरफ़ (लिए) अपना बोझ	कोई बोझ से लदा हुआ	बुलाए	और अगर	बोझ दूसरे का	कोई उठाने वाला	और नहीं उठाएगा

لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَىْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ؕ اِنَّمَا تُنْذِرُ

आप (स) डराते हैं	इस के सिवा नहीं (सिर्फ़)	क़राबतदार	अगरचे हों	कुछ	उस से	न उठाएगा वह

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ

नमाज़	और क़ाइम रखते हैं	बिन देखे	अपना रब	डरते हैं	वह लोग जो

وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ؕ وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ﴿۱۸﴾

18	लौट कर जाना	और अल्लाह की तरफ़	ख़ुद अपने लिए	वह पाक साफ़ होता है	तो सिर्फ़	पाक होता है	और जो

और दोनों दर्या बराबर नहीं, यह (एक) शीरीं है प्यास बुझाने वाला, उस का पीना भी आसान, और यह (दूसरा) शोर तल्ख़ है, और हर एक से तुम ताज़ा गोश्त खाते हो, और (उन में से) तुम ज़ेवर (मोती) निकालते हो जिस को तुम पहनते हो, और तू उस में कश्तियां देखता है कि पानी को चीरती (हुई चलती हैं) ताकि तुम उस के फ़ज़्ल से रोज़ी तलाश करो, और ताकि तुम शुक्र करो। (12)
और रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और उस ने सूरज चाँद को मुसख़्ख़र किया, हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक चलता है, यही तुम्हारा परवरदिगार है, उसी के लिए बादशाहत, और जिन को तुम उस के सिवा पुकारते हो, वह खजूर की घुटली के छिलके (के भी) मालिक नहीं। (13)
और तुम उनको पुकारो तो वह नहीं सुनेंगे तुम्हारी पुकार, और अगर वह सुन भी लें तो तुम्हारी हाजत पूरी न कर सकेंगे, और वह रोज़े क़ियामत तुम्हारे शिर्क करने का इन्कार करेंगे, और तुझ को ख़बर देने वाले (अल्लाह) की मानिंद कोई ख़बर न देगा। (14)
ऐ लोगो! तुम अल्लाह के मोहताज हो, और अल्लाह ही बेनियाज़ सज़ावारे हम्द ओ सना है। (15)
अगर वह चाहे तो (सब को) ले जाए (नाबूद कर दे) और नई ख़ल्क़त ले आए। (16)
और यह नहीं है अल्लाह पर (कुछ) दुशवार। (17)
और कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा, और अगर कोई बोझ से लदा हुआ (गुनाहगार किसी को) अपना बोझ (उठाने) के लिए बुलाए तो वह उस से कुछ न उठाएगा, अगरचे उस का क़राबतदार हो, आप (स) तो सिर्फ़ उनको डरा सकते हैं जो अपने रब से डरते हैं बिन देखे, और नमाज़ क़ाइम रखते हैं, और जो पाक होता है वह सिर्फ़ अपने लिए पाक साफ़ होता है, और अल्लाह की तरफ़ ही लौट कर जाना है। (18)

وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ﴿١٩﴾ وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ﴿٢٠﴾

20	ओर न रोश्नी	और न अन्धेरे	19	और आँखों वाला	अन्धा	और बराबर नहीं

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ﴿٢١﴾ وَمَا يَسْتَوِي الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ

मुर्दे	और न	ज़िन्दे	और नहीं बराबर	21	और न झुलसती हवा	और न साया

اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ وَمَآ اَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ

जो	सुनाने वाले	और तुम नहीं	जिस को वह चाहता है	सुना देता है	बेशक अल्लाह

فِى الْقُبُوْرِ ﴿٢٢﴾ اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ﴿٢٣﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	हम ने आप (स) को भेजा	बेशक हम	23	डराने वाले	मगर-सिर्फ़	तुम नहीं	22	क़ब्रों में

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ﴿٢٤﴾

24	डराने वाला	उस में	मगर गुज़रा	कोई उम्मत	और नहीं	और डर सुनाने वाला	ख़ुशख़बरी देने वाला

وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ جَآءَتْهُمْ

आए उन के पास	इन से अगले	वह लोग जो	तो तहक़ीक़ झुटलाया	वह तुम्हें झुटलाएं	और अगर

رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ

फिर	25	रोशन	और किताबों के साथ	और सहीफ़ों के साथ	रोशन दलाइल के साथ	उन के रसूल

ع ٣ ١٢ ١٥ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿٢٦﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	26	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	फिर कैसा	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया	मैं ने पकड़ा

اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا

मुख़्तलिफ़	फल (जमा)	उस से	फिर हम ने निकाले	पानी	आस्मान से	उतारा

اَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ

मुख़्तलिफ़	और सुर्ख़	क़त्आत सफ़ेद	और पहाड़ों से-में	उन के रंग

اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ﴿٢٧﴾ وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ

और जानवर (जमा)	और लोगों से-में	27	सियाह	गहरे रंग	उन के रंग

وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ

अल्लाह	डरते हैं	इस के सिवा नहीं	उसी तरह	उन के रंग	मुख़्तलिफ़	और चौपाए

مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ﴿٢٨﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	बेशक	28	बख़्शने वाला	ग़ालिब	बेशक अल्लाह	इल्म वाले	उस के बन्दे	से

يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا

उस से जो	और वह ख़र्च करते हैं	नमाज़	और क़ाइम रखते हैं	अल्लाह की किताब	जो पढ़ते हैं

رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ﴿٢٩﴾

29	हरगिज़ घाटा नहीं	ऐसी तिजारत	वह उम्मीद रखते हैं	और खुले तौर पर	पोशीदा	हम ने उन्हें दिया

और बराबर नहीं अन्धा और आँखों वाला। (19)
और न अन्धेरे और न नूर (रोश्नी), (बराबर हैं)। (20)
और न साया और न झुलसती हवा। (21)
और बराबर नहीं ज़िन्दे (आ़लिम) और न मुर्दे (जाहिल), बेशक अल्लाह जिस को चाहता है सुना देता है, और तुम (उनको) सुनाने वाले नहीं जो क़बरों में हैं। (22)
बल्कि तुम सिर्फ़ डराने वाले हो। (23)
बेशक हम ने आप (स) को हक़ के साथ भेजा, ख़ुशख़बरी देने वाला और डर सुनाने वाला, और कोई उम्मत नहीं जिस में कोई डराने वाला न गुज़रा हो। (24)
और अगर वह तुम्हें झुटलाएं तो तहक़ीक़ उन के अगले लोगों ने भी झुटलाया, उन के पास उन के रसूल आए रोशन दलाइल (निशानात) और सहीफ़ों और रोशन किताबों के साथ। (25)
फिर जिन लोगों ने कुफ़्र किया मैं ने उन्हें पकड़ा, फिर कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब? (26)
क्या तू ने नहीं देखा? बेशक अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर हम ने उस से फल निकाले, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, और पहाड़ों में क़त्आत (घाटियां) हैं सफ़ेद और सुर्ख़, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, और (कुछ) गहरे सियाह रंग के। (27)
और उसी तरह लोगों में, और जानवरों और चौपायों में, उन के रंग मुख़्तलिफ़ हैं, इस के सिवा नहीं कि अल्लाह से उस के इल्म वाले बन्दे (ही) डरते हैं, बेशक अल्लाह ग़ालिब, बख़्शने वाला है। (28)
बेशक जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ क़ाइम रखते हैं और जो हम ने उन्हें दिया उस में से ख़र्च करते हैं पोशीदा और ज़ाहिर, वह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं (जिस में) हरगिज़ घाटा नहीं। (29)

لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	बेशक वह	अपने फ़ज़्ल से	और वह उन्हें ज़ियादा दे	उन के अजर	ताकि वह पूरे पूरे दे दे

شَكُوْرٌ ﴿٣٠﴾ وَالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا

तस्दीक़ करने वाली	हक़	वह	किताब से	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि भेजी है	और वह जो	30	क़द्रदान

لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿٣١﴾ ثُمَّ اَوْرَثْنَا

हम ने वारिस बनाया	फिर	31	देखने वाला	अलबत्ता बाख़बर	अपने बन्दों से	बेशक अल्लाह	उन के पास	उस की जो

الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ

अपनी जान पर	ज़ुल्म करने वाला	पस उन से (कोई)	अपने बन्दे	से-को	हम ने चुना	वह जिन्हें	किताब

وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ

यह	हुक्म से अल्लाह के	नेकियों में	सबक़त ले जाने वाला	और उन से (कोई)	बीच का रास्ता चलने वाला	और उन से (कोई)

هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ﴿٣٢﴾ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ

वह ज़ेवर पहनाए जाएंगे	वह उन में दाख़िल होंगे	बाग़ात हमेशगी के	32	फ़ज़्ल बड़ा	वह (यही)

فِيْهَا مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ ﴿٣٣﴾

33	रेशम	उस में	और उन का लिबास	और मोती	सोना	से	कंगन (जमा)	से-का	उन में

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ؕ اِنَّ رَبَّنَا

हमारा रब	बेशक	ग़म	हम से	दूर कर दिया	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और वह कहेंगे

لَغَفُوْرٌ شَكُوْرُ ۙ﴿٣٤﴾ الَّذِيْٓ اَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ

अपना फ़ज़्ल	से	हमेशा रहने का घर	हमें उतारा	वह जिस	34	क़द्र दान	अलबत्ता बख़्शने वाला

لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ ﴿٣٥﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا

कुफ़्र किया	और वह जिन लोगों ने	35	थकावट	उस में	और न हमें छुएगी	कोई तक्लीफ़	उस में	न हमें छुएगी

لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ

और न हल्का किया जाएगा	कि वह मर जाएं	उन पर	न क़ज़ा आएगी	जहन्नम की आग	उन के लिए

عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ﴿٣٦﴾ وَهُمْ

और वह	36	हर नाशुक्रे	हम सज़ा देते हैं	इसी तरह	उस का अज़ाब	से-कुछ	उन से

يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ۚ رَبَّنَآ اَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ

बर अक्स	नेक	हम अमल करें	हमें निकाल ले	ऐ हमारे परवरदिगार	उस (दोज़ख़) में	चिल्लाएंगे

الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ؕ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ

जो-जिस	उस में	कि नसीहत पकड़ लेता वह	क्या हम ने तुम्हें उम्र न दी थी	हम करते थे	उस के जो

ع ١١ ١٦ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ؕ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ﴿٣٧﴾

37	कोई मददगार	ज़ालिमों के लिए	पस नहीं	सो चखो तुम	डराने वाला	और आया तुम्हारे पास	नसीहत पकड़ता

ताकि अल्लाह उन्हें उन के अजर (ओ सवाब) पूरे पूरे दे, और उन्हें (और) ज़ियादा दे अपने फ़ज़्ल से, बेशक वह बख़्शने वाला, क़द्रदान है। (30)

और वह जो हम ने तुम्हारी तरफ़ किताब भेजी है, वह हक़ है, उस की तस्दीक़ करने वाली जो उन के पास है, बेशक अल्लाह अपने बन्दों से बाख़बर है, देखने वाला। (31)

फिर हम ने अपने चुने हुए बन्दों को किताब का वारिस बनाया, पस उन में से कोई अपनी जान पर ज़ुल्म करने वाला है, और उन में से कोई बीच की रास है, और उन में से कोई अल्लाह के हुक्म से नेकियों में सबक़त ले जाने वाला है, यही है बड़ा फ़ज़्ल। (32)

हमेशगी के बाग़ात हैं जिन में वह दाख़िल होंगे, वह उन में कंगनों के ज़ेवर पहनाए जाएंगे, सोने और मोती के, और उन में उन का लिबास रेशम का होगा। (33)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम से ग़म दूर कर दिया, बेशक हमारा रब बख़्शने वाला, क़द्रदान है। (34)

वह जिस ने हमें हमेशा रहने के घर में उतारा अपने फ़ज़्ल से, न इस में हमें कोई तक्लीफ़ छुएगी, और न हमें इस में कोई थकावट छुएगी। (35)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए जहन्नम की आग है, न उन पर क़ज़ा आएगी कि वह मर जाएं, और न उन से हल्का किया जाएगा दोज़ख़ का कुछ अज़ाब, इसी तरह हर नाशुक्रे को अज़ाब देते हैं। (36)

और वह दोज़ख़ के अन्दर चिल्लाएंगे, ऐ हमारे परवरदिगार! हमें (यहां से) निकाल ले कि हम नेक अमल करें, उस के बरअक्स जो हम करते थे, क्या हम ने तुम्हें (इतनी) उम्र न दी थी कि नसीहत पकड़ लेता उस में जिसे नसीहत पकड़नी होती, और तुम्हारे पास डराने वाला (भी) आया, सो तुम (अब इन्कार का मज़ा) चखो, ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (37)

بेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानने वाला है, बेशक वह उन के सीनों के भेदों से बाख़बर है। (38)

वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में जांनशीन बनाया, सो जिस ने कुफ़्र किया तो उसी पर है उस के कुफ़्र (का वबाल) और काफ़िरों को उन के रब के नज़्दीक उन का कुफ़्र सिवाए ग़ज़ब के कुछ नहीं बढ़ाता, और काफ़िरों को नहीं बढ़ाता उन का कुफ़्र सिवाए ख़सारे के। (39)

आप (स) फ़रमा दें क्या तुम ने अपने शरीकों को देखा जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो, तुम मुझे दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन से क्या पेदा किया है? या आस्मानों (के बनाने में) उन का क्या साझा है? या हम ने उन्हें कोई किताब दी है कि वह उस की सनद पर हों (सनद रखते हों), बल्कि ज़ालिम एक दूसरे से वादे नहीं करते सिवाए धोके के। (40)

बेशक अल्लाह ने थाम रखा है आस्मानों को और ज़मीन को कि वह टल (न) जाएं, और अगर वह टल जाएं तो उन्हें उस के बाद कोई भी नहीं थामेगा, बेशक वह (अल्लाह) हिल्म वाला, बख़्शने वाला है। (41)

और उन्हों (मुश्रिकीने मक्कह) ने अल्लाह की बड़ी सख़्त क़स्में खाईं कि अगर उन के पास कोई डराने वाला आए तो वह ज़रूर ज़ियादा हिदायत पाने वाले होंगे (दुनिया की) हर एक उम्मत से (बढ़ कर), फिर जब उन के पास एक नज़ीर आया तो उन में बिदकने के सिवा (और कुछ) ज़ियादा न हुआ। (42)

दुनिया में अपने आप को बड़ा समझने के सबब और बुरी चाल (के सबब), और बुरी चाल (का वबाल) सिर्फ़ उस के करने वाले पर पड़ता है, तो क्या वह सिर्फ़ पहलों के दस्तूर का इंतिज़ार कर रहे हैं! सो तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे, और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तग़य्युर न पाओगे। (43)

إِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ

बेशक अल्लाह	जानने वाला	आस्मानों की पोशीदा बातें	और ज़मीन	बेशक वह	बाख़बर

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٣٨﴾ هُوَ الَّذِىْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِى الْاَرْضِ ؕ فَمَنْ كَفَرَ

सीनों (दिलों) के भेदों से	38	वही	जिस ने	तुम्हें बनाया	जांनशीन	ज़मीन में	सो जिस ने कुफ़्र किया

فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ؕ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا

तो उसी पर	उस का कुफ़्र	और नहीं बढ़ाता	काफ़िर (जमा)	उन का कुफ़्र	नज़्दीक	उन का रब	सिवाए

مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

नाराज़ी (ग़ज़ब)	और नहीं बढ़ाता	काफ़िर (जमा)	उन का कुफ़्र	सिवाए	ख़सारा	39	फ़रमा दें	किया तुम ने देखा

شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اَرُوْنِىْ مَاذَا خَلَقُوْا

अपने शरीक	वह जिन्हें	तुम पुकारते हो	अल्लाह के सिवा	तुम मुझे दिखाओ	क्या	उन्हों ने पैदा किया

مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِى السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا

से	ज़मीन	या	उन के लिए	साझा	आस्मानों में	या	हम ने दी उन्हें	कोई किताब

فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ

पस (कि) वह	दलील (सनद) पर	उस से-की	बल्कि	नहीं	वादे करते	ज़ालिम (जमा)	उन के बाज़ (एक)

بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

बाज़ (दूसरे) से	सिवाए	धोका	40	बेशक अल्लाह	थाम रखा है	आस्मान (जमा)	और ज़मीन

اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَئِنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ

कि	टल जाएं वह	और अगर वह	टल जाएं	न	थामेगा उन्हें	कोई भी	उस के बाद

اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤١﴾ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ

बेशक वह	है	हिल्म वाला	बख़्शने वाला	41	और उन्हों ने क़सम खाई	अल्लाह की	अपनी सख़्त क़स्में

لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ

अगर	उन के पास आए	कोई डराने वाला	अलबत्ता वह ज़रूर होंगे	ज़ियादा हिदायत पाने वाले	हर एक से	उम्मत (जमा)

فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ﴿٤٢﴾ اِسْتِكْبَارًا

फिर जब	उन के पास आया	एक नज़ीर	न उन (में) ज़ियादा हुआ	मगर-सिवाए	बिदकना	42	अपने को बड़ा समझने के सबब

فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ؕ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا

ज़मीन (दुनिया) में	और चाल	बुरी	और नहीं उठता (उलटा पड़ता)	चाल	बुरी	सिर्फ़

بِاَهْلِهٖ ؕ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ

उस के करने वाले पर	तो क्या	वह इन्तिज़ार कर रहे हैं	मगर सिर्फ़	दस्तूर	पहले	सो तुम हरगिज़ न पाओगे

لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾

अल्लाह के दस्तूर में	कोई तबदीली	और तुम हरगिज़ न पाओगे	अल्लाह के दस्तूर में	कोई तग़य्युर	43

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

आक़िबत (अन्जाम)	हुआ	कैसा	सो वह देखते	ज़मीन (दुनिया) में	क्या वह चले फिरे नहीं

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَمَا

और नहीं	कुव्वत में	उन से	बहुत ज़ियादा	और वह थे	उन से पहले	उन लोगों का जो

كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَیْءٍ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ ؕ

ज़मीन में	और न	आस्मानों में	कोई शै	कि उसे आजिज़ कर दे	अल्लाह	है

اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ﴿٤٤﴾ وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ

लोग	अल्लाह पकड़ करे	और अगर	44	बड़ी कुदरत वाला	इल्म वाला	है	बेशक वह

بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ

और लेकिन	कोई चलने फिरने वाला	उस की पुश्त	पर	वह न छोड़े	उन के आमाल के सबब

يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ

उन की अजल	आ जाएगी	फिर जब	एक मुद्दते मुअय्यन	तक	वह उन्हें ढील देता है

ع ٥ / ٨ / ١٧ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا ﴿٤٥﴾ ع

	45	देखने वाला	अपने बन्दों को	है	तो बेशक अल्लाह	

آيَاتُهَا ٨٣ ❀ سُوْرَةُ يٰسٓ (٣٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकुआत 5 (36) सूरह या सीन आयात 83

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰسٓ ﴿١﴾ وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣﴾ عَلٰى صِرَاطٍ

रास्ता	पर	3	रसूलों में से	बेशक आप (स)	2	बाहिक्मत	क़सम है कुरआन	1	या सीन

مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤﴾ تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٥﴾ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ

नहीं डराए गए	वह क़ौम	ताकि आप (स) डराएं	5	मेहरबान	ग़ालिब	नाज़िल किया	4	सीधा

اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ ﴿٦﴾ لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ

पस वह	उन में से अक्सर	पर	बात	तहक़ीक़ साबित हो गई	6	ग़ाफ़िल (जमा)	पस वह	उन के बाप (दादा)

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّا جَعَلْنَا فِىْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِىَ اِلَى

तक	फिर वह	तौक़	उन की गरदनें	में	बेशक हम ने किए (डाले)	7	ईमान न लाएंगे

الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ ﴿٨﴾ وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ

उन के आगे	से	और हम ने कर दी	8	सर ऊँचा किए (सर उलल रहे हैं)	तो वह	ठोड़ियाँ

سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٩﴾

9	देखते नहीं	पस वह	फिर हम ने उन्हें ढाँप दिया	एक दीवार	और उन के पीछे	एक दीवार

क्या वह दुनिया में चले फिरे नहीं कि वह देखते कि उन से पहले लोगों का अन्जाम कैसा हुआ! और वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा थे, और अल्लाह (ऐसा) नहीं कि कोई शै आस्मानों में उस को आजिज़ कर दे और न ज़मीन में (कोई शै उसे हरा सकती है), बेशक वह इल्म वाला, कुदरत वाला है। (44) और अगर अल्लाह लोगों को उन के आमाल के सबब पकड़े तो वह न छोड़े कोई चलने फिरने वाला उस की पुश्त (रुए ज़मीन) पर, लेकिन वह उन्हें एक मुद्दते मुअय्यन तक ढील देता है, फिर जब आ जाएगी उन की अजल तो बेशक अल्लाह अपने बन्दों को देखने वाला है (उन के आमाल का बदला ज़रूर मिलेगा)। (45)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

या सीन। (1) क़सम है बाहिक्मत कुरआन की। (2) बेशक आप (स) रसूलों में से हैं। (3) सीधे रास्ते पर हैं। (4) नाज़िल किया हुआ ग़ालिब, मेहरबान का। (5) ताकि आप (स) उस क़ौम को डराएं जिस के बाप दादा नहीं डराए गए, पस वह ग़ाफ़िल हैं। (6) तहक़ीक़ उन में से अक्सर पर (अल्लाह की) बात साबित हो चुकी है, पस वह ईमान न लाएंगे। (7) बेशक हम ने उन की गर्दनों में डाले हैं तौक़, फिर वह ठोड़ी तक (अड़ गए हैं) तो उन के सर उलल रहे हैं। (8) और हम ने कर दी उन के आगे एक दीवार और उन के पीछे एक दीवार, फिर हम ने उन्हें ढाँप दिया, पस वह देखते नहीं। (9)

وَسَوَآءٌ عَلَيۡهِمۡ ءَاَنذَرۡتَهُمۡ اَمۡ لَمۡ تُنذِرۡهُمۡ لَا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿١٠﴾

10	वह ईमान न लाएंगे	तुम उन्हें न डराओ	या	ख़ाह तुम उन्हें डराओ	उन पर-उन के लिए	और बराबर

اِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكۡرَ وَخَشِىَ الرَّحۡمٰنَ بِالۡغَيۡبِ ۚ

बिन देखे	रहमान (अल्लाह)	और डरे	किताबे नसीहत	पैरवी करे	जो	तुम डराते हो	इस के सिवा नहीं

فَبَشِّرۡهُ بِمَغۡفِرَةٍ وَّاَجۡرٍ كَرِيۡمٍ ﴿١١﴾ اِنَّا نَحۡنُ نُحۡىِ الۡمَوۡتٰى

मुर्दे	ज़िन्दा करते हैं	बेशक हम	11	अच्छा	और अजर	बख़्शिश की	पस उसे ख़ुशख़बरी दें

وَنَكۡتُبُ مَا قَدَّمُوۡا وَاٰثَارَهُمۡ ؕ وَكُلَّ شَىۡءٍ اَحۡصَيۡنٰهُ فِىۡۤ

में	हम ने उसे शुमार कर रखा है	और हर शै	और उन के असर (निशानात)	जो उन्हों ने आगे भेजा (अमल)	और हम लिखते हैं

وقف غفران

اِمَامٍ مُّبِيۡنٍ ﴿١٢﴾ وَاضۡرِبۡ لَهُمۡ مَّثَلًا اَصۡحٰبَ الۡقَرۡيَةِ ۘ اِذۡ ع ١٢ ١٨

وقف لازم

जब	बस्ती वाले	मिसाल (क़िस्सा)	उन के लिए	और बयान करें आप (स)	12	किताबे रोशन

جَآءَهَا الۡمُرۡسَلُوۡنَ ﴿١٣﴾ اِذۡ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَيۡهِمُ اثۡنَيۡنِ فَكَذَّبُوۡهُمَا

तो उन्हों ने झुटलाया उन्हें	दो (2)	उन की तरफ़	हम ने भेजे	जब	13	रसूल (जमा)	उन के पास आए

فَعَزَّزۡنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوۡۤا اِنَّاۤ اِلَيۡكُمۡ مُّرۡسَلُوۡنَ ﴿١٤﴾ قَالُوۡا

वह बोले	14	भेजे गए	तुम्हारी तरफ़	बेशक हम	पस उन्हों ने कहा	तीसरे से	फिर हम ने तक़वियत दी

مَاۤ اَنۡتُمۡ اِلَّا بَشَرٌ مِّثۡلُنَا ۙ وَمَاۤ اَنۡزَلَ الرَّحۡمٰنُ مِنۡ شَىۡءٍ ۙ

कुछ	रहमान (अल्लाह)	उतारा	और नहीं	हम जैसे	आदमी	मगर-महज़	तुम नहीं हो

اِنۡ اَنۡتُمۡ اِلَّا تَكۡذِبُوۡنَ ﴿١٥﴾ قَالُوۡا رَبُّنَا يَعۡلَمُ اِنَّاۤ اِلَيۡكُمۡ

तुम्हारी तरफ़	बेशक हम	जानता है	हमारा परवरदिगार	उन्हों ने कहा	15	झूट बोलते हो	मगर-महज़	तुम	नहीं

لَمُرۡسَلُوۡنَ ﴿١٦﴾ وَمَا عَلَيۡنَاۤ اِلَّا الۡبَلٰغُ الۡمُبِيۡنُ ﴿١٧﴾ قَالُوۡا

वह कहने लगे	17	साफ़ साफ़	पहुँचा देना	मगर	हम पर	और नहीं	16	अलबत्ता भेजे गए

اِنَّا تَطَيَّرۡنَا بِكُمۡ ۚ لَئِنۡ لَّمۡ تَنۡتَهُوۡا لَنَرۡجُمَنَّكُمۡ وَلَيَمَسَّنَّكُمۡ

और ज़रूर पहुँचेगा तुम्हें	ज़रूर हम संगसार कर देंगे तुम्हें	तुम बाज़ न आए	अगर	तुम्हें	हम ने मनहूस पाया

مِّنَّا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿١٨﴾ قَالُوۡا طَآئِرُكُمۡ مَّعَكُمۡ ؕ اَئِنۡ

क्या	तुम्हारे साथ	तुम्हारी नहूसत	उन्हों ने कहा	18	दर्दनाक	अज़ाब	हम से

ذُكِّرۡتُمۡ ؕ بَلۡ اَنۡتُمۡ قَوۡمٌ مُّسۡرِفُوۡنَ ﴿١٩﴾ وَجَآءَ مِنۡ اَقۡصَا

परला सिरा	से	और आया	19	हद से बढ़ने वाले	लोग	तुम	बल्कि	तुम समझाए गए

الۡمَدِيۡنَةِ رَجُلٌ يَّسۡعٰى قَالَ يٰقَوۡمِ اتَّبِعُوا الۡمُرۡسَلِيۡنَ ۙ ﴿٢٠﴾

20	रसूलों की	तुम पैरवी करो	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	दौड़ता हुआ	एक आदमी	शहर

اتَّبِعُوۡا مَنۡ لَّا يَسۡـَٔـلُكُمۡ اَجۡرًا وَّهُمۡ مُّهۡتَدُوۡنَ ﴿٢١﴾

21	हिदायत याफ़्ता	और वह	कोई अजर	तुम से नहीं मांगते	जो	तुम पैरवी करो

और बराबर है उन के लिए ख़ाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ, वह ईमान न लाएंगे। (10)
इस के सिवा नहीं कि तुम (उस को) डराते हो जो किताबे नसीहत की पैरवी करे। और बिन देखे अल्लाह से डरे, पस आप (स) उसे बख़्शिश और अच्छे अजर की ख़ुशख़बरी दें। (11)
बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करते हैं, और हम लिखते हैं उन के अमल जो उन्हों ने आगे भेजे और जो उन्हों ने पीछे (आसार) छोड़े। और हर शै को हम ने किताबे रोशन में शुमार कर रखा है। (12)
और आप (स) उन के लिए बस्ती वालों का क़िस्सा बयान करें, जब उन के पास रसूल आए। (13)
जब हम ने उन की तरफ़ दो (रसूल) भेजे तो उन्हों ने उन्हें झुटलाया, फिर हम ने तीसरे से तक़वियत दी, पस उन्हों ने कहाः बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। (14)
वह बोलेः तुम महज़ हम जैसे आदमी हो, और नहीं उतारा रहमान (अल्लाह) ने कुछ भी, तुम महज़ झूट बोलते हो। (15)
उन्हों ने कहाः हमारा परवरदिगार जानता है, बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं। (16)
और हम पर (हमारे ज़िम्मे) नहीं मगर (सिर्फ़) साफ़ साफ़ पहुँचा देना। (17)
वह कहने लगेः हम ने बेशक मनहूस पाया तुम्हें, अगर तुम बाज़ न आए तो हम तुम्हें ज़रूर संगसार कर देंगे और तुम्हें हम से दर्दनाक अज़ाब ज़रूर पहुँचेगा। (18)
उन्हों ने कहाः तुम्हारी नहूसत तुम्हारे साथ है क्या तुम (इस को नहूसत समझते हो) कि तुम समझाए गए हो, बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो। (19)
और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया, उस ने कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम रसूलों की पैरवी करो। (20)
तुम उन की पैरवी करो जो तुम से कोई अजर नहीं मांगते और वह हिदायत याफ़्ता हैं। (21)

وَمَا لِيَ لَآ اَعۡبُدُ الَّذِيۡ فَطَرَنِيۡ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿٢٢﴾

22	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	पैदा किया मुझे	वह जिस ने	मैं न इबादत करूँ	मुझे	और क्या हुआ

ءَاَتَّخِذُ مِنۡ دُوۡنِهٖۤ اٰلِهَةً اِنۡ يُّرِدۡنِ الرَّحۡمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغۡنِ عَنِّيۡ

न काम आए मेरे	कोई नुक़्सान	रहमान-अल्लाह	वह चाहे	अगर	ऐसे माबूद	उस के सिवा	क्या मैं बना लूँ

شَفَاعَتُهُمۡ شَيۡـًٔا وَّلَا يُنۡقِذُوۡنِ ﴿٢٣﴾ اِنِّيۡۤ اِذًا لَّفِيۡ ضَلٰلٍ مُّبِيۡنٍ ﴿٢٤﴾ اِنِّيۡۤ

बेशक मैं	24	खुली	अलबत्ता गुमराही में	उस वक़्त	बेशक मैं	23	और न छुड़ा सकें वह मुझे	कुछ भी	उन की सिफ़ारिश

اٰمَنۡتُ بِرَبِّكُمۡ فَاسۡمَعُوۡنِ ﴿٢٥﴾ قِيۡلَ ادۡخُلِ الۡجَنَّةَ ؕ قَالَ يٰلَيۡتَ قَوۡمِيۡ

मेरी क़ौम	ऐ काश	उस ने कहा	जन्नत	तू दाख़िल हो जा	इरशाद हुआ	25	पस तुम मेरी सुनो	तुम्हारे रब पर	मैं ईमान लाया

يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٢٦﴾ بِمَا غَفَرَ لِيۡ رَبِّيۡ وَجَعَلَنِيۡ مِنَ الۡمُكۡرَمِيۡنَ ﴿٢٧﴾

27	नवाज़े हुए लोग	से	और उस ने किया मुझे	मेरा रब	वह बात जिस की वजह से उस ने बख़्श दिया मुझे	26	वह जानती

وَمَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلٰى قَوۡمِهٖ مِنۡۢ بَعۡدِهٖ مِنۡ جُنۡدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنۡزِلِيۡنَ ﴿٢٨﴾

28	उतारने वाले	और न थे हम	आस्मान	से	कोई लश्कर	उस के बाद	उस की क़ौम	पर	और नहीं उतारा हम ने

اِنۡ كَانَتۡ اِلَّا صَيۡحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمۡ خٰمِدُوۡنَ ﴿٢٩﴾ يٰحَسۡرَةً

हाए हस्रत	29	बुझ कर रह गए	वह	पस अचानक	एक	चिंघाड़	मगर	न थी

عَلَى الۡعِبَادِ ۚ مَا يَاۡتِيۡهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ﴿٣٠﴾ اَلَمۡ يَرَوۡا

क्या उन्हों ने नहीं देखा	30	हँसी उड़ाते	उस से	वह थे	मगर	कोई रसूल	नहीं आया उन के पास	बन्दों पर

كَمۡ اَهۡلَكۡنَا قَبۡلَهُمۡ مِّنَ الۡقُرُوۡنِ اَنَّهُمۡ اِلَيۡهِمۡ لَا يَرۡجِعُوۡنَ ﴿٣١﴾ وَاِنۡ

और नहीं	31	लौट कर नहीं आएंगे वह	उन की तरफ़	कि वह	नसलों से	उन से क़ब्ल	हलाक कीं हम ने	कितनी

كُلٌّ لَّمَّا جَمِيۡعٌ لَّدَيۡنَا مُحۡضَرُوۡنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الۡاَرۡضُ الۡمَيۡتَةُ ۚ اَحۡيَيۡنٰهَا

मुर्दा	ज़मीन	उन के लिए	एक निशानी	32	हाज़िर किए जाएंगे	हमारे रूबरू	सब के सब	मगर	सब

وَاَخۡرَجۡنَا مِنۡهَا حَبًّا فَمِنۡهُ يَاۡكُلُوۡنَ ﴿٣٣﴾ وَجَعَلۡنَا فِيۡهَا جَنّٰتٍ

बाग़ात	उस में	और बनाए हम ने	33	वह खाते हैं	पस उस से	अनाज	उस से	और निकाला हम ने	हम ने ज़िन्दा किया उसे

مِّنۡ نَّخِيۡلٍ وَّاَعۡنَابٍ وَّفَجَّرۡنَا فِيۡهَا مِنَ الۡعُيُوۡنِ ﴿٣٤﴾ لِيَاۡكُلُوۡا

ताकि वह खाएं	34	चश्मे	से	उस में	और जारी किए हम ने	और अंगूर	खजूर	से- के

مِنۡ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتۡهُ اَيۡدِيۡهِمۡ ؕ اَفَلَا يَشۡكُرُوۡنَ ﴿٣٥﴾ سُبۡحٰنَ الَّذِيۡ خَلَقَ

पैदा किए	वह ज़ात जिस ने	पाक	35	तो क्या वह शुक्र न करेंगे	उन के हाथों	बनाया उसे	और नहीं	उस के फलों से

الۡاَزۡوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنۡۢبِتُ الۡاَرۡضُ وَمِنۡ اَنۡفُسِهِمۡ وَمِمَّا لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٣٦﴾

36	वह नहीं जानते	और उस से जो	और उन की जानों से	ज़मीन	उगाती है	उस से जो	हर चीज़	जोड़े

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيۡلُ ۖ نَسۡلَخُ مِنۡهُ النَّهَارَ فَاِذَا هُمۡ مُّظۡلِمُوۡنَ ﴿٣٧﴾

37	अन्धेरे में रह जाते हैं	वह	तो अचानक	दिन	उस से	हम खींचते हैं	रात	उन के लिए	और एक निशानी

और मुझे क्या हुआ (मेरे पास क्या उज़्र है) कि मैं उस की इबादत न करूँ जिस ने मुझे पैदा किया, और तुम उसी की तरफ़ लौट कर जाओगे। (22)
क्या मैं उस के सिवा ऐसे माबूद बनालूँ? अगर अल्लाह मुझे नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो उन की सिफ़ारिश मेरे काम न आए कुछ भी, और न वह मुझे छुड़ा सकें। (23)
बेशक मैं उस वक़्त खुली गुमराही में हूँगा। (24)
बेशक मैं तुम्हारे परवरदिगार पर ईमान लाया, पस तुम मेरी सुनो। (25)
(उस शहीद को) इरशाद हुआ कि तू जन्नत में दाख़िल हो जा, उस ने कहा: ऐ काश! मेरी क़ौम जानती। (26)
वह बात जिस की वजह से मुझे बख़्श दिया मेरे रब ने और उस ने मुझे (अपने) नवाज़े हुए लोगों में से किया। (27)
और हम ने उस के बाद उस की क़ौम पर कोई लशकर नहीं उतारा आस्मान से, और न हम उतारने वाले थे (भेजने की हाजत थी)। (28)
(उन की सज़ा) न थी मगर एक चिंघाड़, पस वह अचानक बुझ कर रह गए। (29)
हाए हस्रत बन्दों पर! कि उन के पास कोई रसूल नहीं आया मगर वह उस की हँसी उड़ाते थे। (30)
क्या उन्हों ने नहीं देखा? हम ने उन से क़ब्ल कितनी नसलें हलाक कीं कि वह उन की तरफ़ लौट कर नहीं आएंगे। (31)
और कोई एसा (नहीं) मगर सब के सब हमारे रूबरू हाज़िर किए जाएंगे। (32)
और मुर्दा ज़मीन उन के लिए एक निशानी है, हम ने उसे ज़िन्दा किया और हम ने उस से अनाज निकाला, पस वह उस से खाते हैं। (33)
और हम ने उस में बाग़ात बनाए (लगाए) खजूर और अंगूर के, और हम ने उस में चश्मे जारी किए। (34)
ताकि वह उस के फलों से खाएं और उसे नहीं बनाया उन के हाथों ने, तो क्या वह शुक्र न करेंगे? (35)
पाक है वह ज़ात जिस ने हर चीज़ के जोड़े पैदा किए उस (क़बील) से जो ज़मीन उगाती है (नबातात) और ख़ुद उनकी जानों (इन्सानों में से) और उन में से जिन्हें वह (ख़ुद भी) नहीं जानते। (36)
और उन के लिए रात एक निशानी है, हम दिन को उस से खींचते (निकालते) हैं तो वह अचानक अन्धेरे में रह जाते हैं। (37)

وَالشَّمْسُ تَجْرِىْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَالْقَمَرَ

और चाँद	38	जानने वाला (दाना)	ग़ालिब	निज़ाम	यह	अपने	ठिकाने (मुक़र्ररा रास्ते)	चलता रहता है	और सूरज

قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ ﴿٣٩﴾ لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِىْ

लाइक़ (मजाल)	सूरज	न	39	पुरानी	खजूर की शाख़ की तरह	हो जाता है	यहाँ तक कि	मनज़िलें	हम ने मुक़र्रर कीं उस को

لَهَآ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ؕ وَكُلٌّ فِىْ فَلَكٍ

दाइरे में	और सब	दिन	पहले आ सके	रात	और न	चाँद	जा पकड़े वह	कि	उस के लिए

يَّسْبَحُوْنَ ﴿٤٠﴾ وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿٤١﴾

41	भरी हुई	कश्ती में	उन की औलाद	हम ने सवार किया	कि हम	उन के लिए	और एक निशानी	40	तैरते (गर्दिश करते) हैं

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ﴿٤٢﴾ وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ

तो न फ़र्याद रस	हम ग़र्क़ कर दें उन्हें	हम चाहें	और अगर	42	वह सवार होते हैं	जो-जिस	उस (कश्ती) जैसी	उन के लिए	और हम ने पैदा किया

لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ﴿٤٣﴾ اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا

और जब	44	एक वक़्ते मुअ़य्यन तक	और फ़ाइदा देना	हमारी तरफ़ से	रहमत	मगर	43	छुड़ाए जाएं	और न वह	उन के लिए

قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَمَا

और नहीं	45	तुम पर रहम किया जाए	शायद तुम	तुम्हारे पीछे	और जो	तुम्हारे सामने	जो	तुम डरो	उन से	कहा जाए

تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ﴿٤٦﴾ وَاِذَا

और जब	46	रूगर्दानी करते	उस से	वह हैं	मगर	उन का रब	निशानियों में से	कोई निशानी	उन के पास

قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا

उन लोगों से जो ईमान लाए (मोमिन)	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	कहते हैं	तुम्हें दिया अल्लाह ने	उस से जो	ख़र्च करो तुम	उन से	कहा जाए

اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٧﴾

47	खुली	गुमराही	में	मगर-सिर्फ़	तुम	नहीं	उसे खाने को देता	अगर अल्लाह चाहता	(उस को) जिसे	क्या हम खिलाएं

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٤٨﴾ مَا يَنْظُرُوْنَ

वह इन्तिज़ार नहीं कर रहे हैं	48	सच्चे	तुम हो	अगर	यह वादा	कब	और वह कहते हैं

اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ

फिर न कर सकेंगे	49	बाहम झगड़ रहे होंगे	और वह	वह उन्हें आ पकड़ेगी	एक	चिंघाड़	मगर

ع ١٨ ٣ ٢ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٥٠﴾ ع وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ

तो यकायक वह	सूर में	और फूंका जाएगा	50	वह लौट सकेंगे	अपने घर वाले	तरफ़	और न	वसीयत करना

مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ﴿٥١﴾ قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا

किस ने उठा दिया हमें	ऐ वाए हम पर	वह कहेंगे	51	दौड़ेंगे	अपने रब की तरफ़	क़ब्रें	से

مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٥٢﴾

52	रसूलों	और सच कहा था	रहमान-अल्लाह	जो वादा किया	यह	हमारी क़ब्रें	से

وقف لازم
وقف منزل
وقف غفران

और सूरज अपने मुक़र्ररा रास्ते पर चलता रहता है, यह अल्लाह ग़ालिब और दाना का निज़ाम (मुक़र्रर करदह) है। (38)
और चाँद के लिए हम ने मनज़िलें मुक़र्रर कीं यहाँ तक कि वह खजूर की पुरानी शाख़ की तरह हो जाता है (पहली का बारीक सा चाँद)। (39)
न सूरज की मजाल कि चाँद को जा पकड़े और न रात की (मजाल) कि पहले आ सके दिन से, और सब अपने दाइरे में गर्दिश करते हैं। (40)
और उन के लिए एक निशानी है कि हम ने उन की औलाद को सवार किया भरी हुई कश्ती में। (41)
और हम ने उन के लिए उस कश्ती जैसी (और चीज़ें) पैदा कीं जिन पर वह सवार होते हैं। (42)
और अगर हम चाहें तो हम उन्हें ग़र्क़ कर दें तो न (कोई) उन के लिए फ़र्याद रस (हो) और न वह छुड़ाए जाएंगे। (43)
मगर हमारी रहमत से (कि पार लगते हैं) और एक वक़्ते मुअ़य्यन तक फ़ाइदा उठाते हैं। (44)
और जब उन से कहा जाए कि तुम डरो उस से जो तुम्हारे सामने है और जो तुम्हारे पीछे है, शायद तुम पर रहम किया जाए (तो सुन कर नहीं देते)। (45)
और उन के पास उन के रब की निशानियों में से कोई निशानी नहीं आती मगर वह उस से रूगर्दानी करते हैं। (46)
और जब उन से कहा जाए कि जो अल्लाह ने तुम्हें दिया है उस में से ख़र्च करो तो काफ़िर कहते हैं मोमिनों से कि क्या हम उसे खिलाएं? जिसे अगर अल्लाह चाहता तो उसे खाने को देता, तुम सिर्फ़ खुली गुमराही में हो। (47)
और वह (काफ़िर) कहते हैं कि कब (पूरा होगा) यह वादाए (क़ियामत)? अगर तुम सच्चे हो। (48)
वह इन्तिज़ार नहीं करते हैं मगर एक चिंघाड़ (सूर की तुन्द आवाज़) की, जो उन्हें आ पकड़ेगी और वह बाहम झगड़ रहे होंगे। (49)
फिर न वह वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों की तरफ़ लौट सकेंगे। (50)
और (दोबारा) फूंका जाएगा सूर में तो वह यकायक क़ब्रों से अपने रब की तरफ़ दौड़ेंगे। (51)
वह कहेंगे हाय हम पर! हमें किस ने उठा दिया? हमारी क़ब्रों से, यह है वह जो अल्लाह रहमान ने वादा किया था, और रसूलों ने सच कहा था। (52)

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ٥٣

53	हाज़िर किए जाएंगे	हमारे सामने	सब	वह	पस यकायक	एक	चिंघाड़	मगर	होगी	न

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ٥٤ إِنَّ

बेशक	54	करते थे	जो तुम	मगर-बस	और न तुम बदला पाओगे	कुछ	किसी शख़्स	न ज़ुल्म किया जाएगा	पस आज

أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ فٰكِهُونَ ٥٥ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلٰلٍ

सायों में	और उन की बीवियां	वह	55	बातें (मज़े करने में)	एक शुग्ल में	आज	अहले जन्नत

عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔونَ ٥٦ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُونَ ٥٧

57	जो वह चाहेंगे	और उन के लिए	मेवा	उस में	उन के लिए	56	तकिया लगाए हुए	तख़्तों पर

سَلٰمٌ قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيمٍ ٥٨ وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ٥٩

59	मुज्रिमो (जमा)	ऐ	आज	और अलग हो जाओ तुम	58	मेहरबान परवरदिगार	से	फ़रमाया जाएगा	सलाम

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيٓ اٰدَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ

दुश्मन	तुम्हारा	बेशक वह	शैतान	परस्तिश न करना	ऐ औलादे आदम	तुम्हारी तरफ़	क्या मैं ने हुक्म नहीं भेजा था

وقف غفران

مُّبِينٌ ٦٠ وَّأَنِ اعْبُدُونِي هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ٦١ وَلَقَدْ أَضَلَّ

और तहक़ीक़ गुमराह कर दिया	61	सीधा	रास्ता	यही	और यह कि तुम मेरी इबादत करना	60	खुला

مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ٦٢ هٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي

वह जिस का	जहन्नम	यह है	62	सो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?	बहुत सी	मख़्लूक़	तुम में से

كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ٦٣ اِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ٦٤ اَلْيَوْمَ

आज	64	तुम कुफ़्र करते थे	उस के बदले जो	आज	उस में दाख़िल हो जाओ	63	तुम से वादा किया गया था

نَخْتِمُ عَلٰى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا

वह थे	उस की जो	उन के पाऊँ	और गवाही देंगे	उन के हाथ	और हम से बोलेंगे	उन के मुँह	पर	हम मुहर लगा देंगे

يَكْسِبُونَ ٦٥ وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰى أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنّٰى

तो कहां	रास्ता	फिर वह सबक़त करें	उन की आँखें	पर	तो मिटा दें (मिलयामेट करदें)	और अगर हम चाहें	65	कमाते (करते थे)

يُبْصِرُونَ ٦٦ وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا

फिर न कर सेकें	उन की जगहें	पर-में	हम मस्ख़ कर दें उन्हें	और अगर हम चाहें	66	वह देख सकेंगे

ع ١٧ ٣

مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُونَ ٦٧ وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ

ख़ल्क़त (पैदाइश) में	औन्धा कर देते हैं	हम उम्र दराज़ कर देते हैं	और जिस	67	और न वह लौटें	चलना

أَفَلَا يَعْقِلُونَ ٦٨ وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ

नसीहत	मगर	वह (यह)	नहीं	उस के लिए	और नहीं शायान	शेर	और हम ने नहीं सिखाया उस को	68	तो क्या वह समझते नहीं?

وَّقُرْاٰنٌ مُّبِينٌ ٦٩ لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِينَ ٧٠

70	काफ़िर (जमा)	पर	बात (हुज्जत)	और साबित हो जाए	ज़िन्दा	हो	जो	ताकि (आप स) डराएं	69	और क़ुरआन वाज़ेह

(यह) न होगी मगर एक चिंघाड़, पस यकायक वह सब हमारे सामने हाज़िर किए जाएंगे। (53)
पस आज ज़ुल्म न किया जाएगा किसी शख़्स पर कुछ (भी) और जो तुम करते थे पस उसी का बदला पाओगे। (54)
बेशक आज अहले जन्नत एक शुग्ल में ख़ुश होते होंगे। (55)
वह और उन की बीवियां सायों में तख़्तों पर तकिया लगाए हुए (बैठे) होंगे। (56)
उन के लिए उस (जन्नत) में हर क़िस्म का मेवा और उन के लिए जो वह चाहेंगे (मौजूद होगा)। (57)
मेहरबान परवरदिगार की तरफ़ से सलाम फ़रमाया जाएगा। (58)
और ऐ मुज्रिमो! तुम आज अलग हो जाओ। (59)
क्या मैं ने तुम्हारी तरफ़ हुक्म नहीं भेजा था ऐ औलादे आदम! कि तुम परस्तिश न करना शैतान की, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है। (60)
और यह कि तुम मेरी इबादत करना, यही सीधा रास्ता है। (61)
और उस ने तुम में से बहुत लोगों को गुमराह कर दिया, सो किया तुम अक़्ल से काम नहीं लेते थे? (62)
यह है वह जहन्नम जिस का तुम से वादा किया गया था। (63)
तुम जो कुफ़्र करते थे उस के बदले आज इस में दाख़िल हो जाओ। (64)
आज हम उन के मुँह पर मुहर लगा देंगे, और हम से उन के हाथ बोलेंगे और उन के पाऊँ गवाही देंगे जो वह करते थे। (65)
और अगर हम चाहें तो उन की आँखें मिलयामेट कर दें, फिर वह रास्ते की तरफ़ सबक़त करें (दौड़ें) तो कहां देख सकेंगे? (66)
और अगर हम चाहें तो उन्हें उन की जगहों पर मस्ख़ कर दें, फिर वह न चल सकेंगे और न लौट सकेंगे। (67)
और हम जिस की उम्र दराज़ करते हैं उसे पैदाइश में औन्धा कर देते हैं तो क्या वह समझते नहीं? (68)
और हम ने उस (आप स) को शेर नहीं सिखाया और यह आप (स) के शायान नहीं है, यह नहीं मगर (किताबे) नसीहत और वाज़ेह क़ुरआन। (69)
ताकि आप (स) (उस को) डराएं जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर हुज्जत साबित हो जाए। (70)

اَوَلَمۡ يَرَوۡا اَنَّا خَلَقۡنَا لَهُمۡ مِّمَّا عَمِلَتۡ اَيۡدِيۡنَاۤ اَنۡعَامًا فَهُمۡ لَهَا مٰلِكُوۡنَ ﴿۷۱﴾

71	मालिक हैं	उन के	पस वह	चौपाए	बनाया अपने हाथों (कुदरत) से	उस से जो	उन के लिए	हम ने पैदा किया	या क्या वह नहीं देखते?

وَذَلَّلۡنٰهَا لَهُمۡ فَمِنۡهَا رَكُوۡبُهُمۡ وَمِنۡهَا يَاۡكُلُوۡنَ ﴿۷۲﴾ وَلَهُمۡ فِيۡهَا مَنَافِعُ

फ़ाइदे	उन में	और उन के लिए	72	वह खाते हैं	और उन से	उन की सवारी	पस उन से	उन के लिए	और हम ने फ़रमांबरदार किया उन्हें

وَمَشَارِبُ ؕ اَفَلَا يَشۡكُرُوۡنَ ﴿۷۳﴾ وَاتَّخَذُوۡا مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمۡ

शायद वह	और माबूद	अल्लाह के सिवा	और उन्हों ने बना लिए	73	क्या फिर वह शुक्र नहीं करते?	और पीने की चीज़ें

يُنۡصَرُوۡنَ ﴿۷۴﴾ؕ لَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ نَصۡرَهُمۡ وَهُمۡ لَهُمۡ جُنۡدٌ مُّحۡضَرُوۡنَ ﴿۷۵﴾

75	हाज़िर किए जाएंगे	लशकर	उन के लिए	और वह	उन की मदद	वह नहीं कर सकते	74	मदद किए जाएं

فَلَا يَحۡزُنۡكَ قَوۡلُهُمۡ ۘ اِنَّا نَعۡلَمُ مَا يُسِرُّوۡنَ وَمَا يُعۡلِنُوۡنَ ﴿۷۶﴾ اَوَلَمۡ يَرَ الۡاِنۡسَانُ

इन्सान	क्या नहीं देखा	76	वह ज़ाहिर करते हैं	और जो	जो वह छुपाते हैं	बेशक हम जानते हैं	उन की बात	पस आप (स) को मग़मूम न करे

اَنَّا خَلَقۡنٰهُ مِنۡ نُّطۡفَةٍ فَاِذَا هُوَ خَصِيۡمٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۷۷﴾ وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا

एक मिसाल	हमारे लिए	और उस ने बयान की	77	खुला	झगड़ालू	वह	फिर नागहां	नुत्फ़े से	कि हम ने पैदा किया उस को

وَّنَسِيَ خَلۡقَهٗ ؕ قَالَ مَنۡ يُّحۡيِ الۡعِظَامَ وَهِيَ رَمِيۡمٌ ﴿۷۸﴾ قُلۡ يُحۡيِيۡهَا الَّذِيۡۤ

वह जिस ने	उसे ज़िन्दा करेगा	फ़रमा दें	78	गल गई	जब कि वह	हड्डियां	कौन ज़िन्दा करेगा	कहने लगा	अपनी पैदाइश	और भूल गया

اَنۡشَاَهَاۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلۡقٍ عَلِيۡمُ ﴿۷۹﴾ۙ الَّذِيۡ جَعَلَ لَكُمۡ مِّنَ

से	तुम्हारे लिए	पैदा किया	जिस ने	79	जानने वाला	पैदा करना	हर तरह	और वह	पहली बार	उसे पैदा किया

الشَّجَرِ الۡاَخۡضَرِ نَارًا فَاِذَاۤ اَنۡتُمۡ مِّنۡهُ تُوۡقِدُوۡنَ ﴿۸۰﴾ اَوَلَيۡسَ الَّذِيۡ

वह जिस ने	क्या नहीं	80	सुलगाते हो	उस से	तुम	पस अब	आग	सब्ज़	दरख़्त

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ بِقٰدِرٍ عَلٰۤى اَنۡ يَّخۡلُقَ مِثۡلَهُمۡ ؕ بَلٰى ۚ وَهُوَ

और वह	हाँ	उन जैसा	वह पैदा करे	कि	पर	क़ादिर	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया

الۡخَلّٰقُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۸۱﴾ اِنَّمَاۤ اَمۡرُهٗۤ اِذَاۤ اَرَادَ شَيۡـًٔا اَنۡ يَّقُوۡلَ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ﴿۸۲﴾

82	तो वह हो जाती है	हो जा	उस को	वह कहता है	कि	वह इरादा करे किसी शै का	जब	उस का काम	इस के सिवा नहीं	81	दाना	बड़ा पैदा करने वाला

فَسُبۡحٰنَ الَّذِيۡ بِيَدِهٖ مَلَكُوۡتُ كُلِّ شَيۡءٍ وَّاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ﴿۸۳﴾

83	तुम लौट कर जाओगे	और उसी की तरफ़	हर शै	बादशाहत	उस के हाथ में	वह जिस	सो पाक है

وقف لازم — وقف غفران ۱۲ — ع ۱۶

اٰيَاتُهَا ۱۸۲ ❀ سُوۡرَةُ الصّٰٓفّٰتِ (۳۷) ❀ رُكُوۡعَاتُهَا ۵

आयात 182 — (37) सूरतुस साफ़्फ़ात — सफ़ बांधने वाले — रुकूआत 5

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿۱﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجۡرًا ﴿۲﴾ فَالتّٰلِيٰتِ ذِكۡرًا ﴿۳﴾

3	ज़िक्र (क़ुरआन)	फिर तिलावत करने वाले	2	झिड़क कर	फिर डांटने वाले	1	परा जमा कर	क़सम सफ़ बान्धने वाले

المنزل ٦

या क्या वह नहीं देखते कि हम ने जो (चीज़ें) अपनी कुदरत से बनाईं, उन से उन के लिए पैदा किए चौपाए, पस वह उन के मालिक हैं। (71) और हम ने उन (चौपायों) को उन के बस में कर दिया, पस उन में से (बाज़) उन की सवारी हैं और उन में से बाज़ को वह खाते हैं। (72) और उन में उन के लिए (बहुत से) फ़ाइदे और पीने की चीज़ें हैं, क्या फिर वह शुक्र नहीं करते? (73) और उन्हों ने बना लिए अल्लाह के सिवा और माबूद (इस ख़याले बातिल से कि) शायद वह मदद किए जाएंगे। (74) वह उन की मदद नहीं कर सकते और वह उन के लिए (मुजरिम) लशकर (की शक्ल में) हाज़िर किए जाएंगे। (75) पस आप (स) को उनकी बात मग़मूम न करे। बेशक हम जानते हैं जो वह छुपाते हैं और जो वह ज़ाहिर करते हैं। (76) क्या इन्सान ने नहीं देखा कि हम ने उस को नुत्फ़े से पैदा किया? और फिर नागहां वह हुआ झगड़ालू खुला। (77) और उस ने हमारे लिए एक मिसाल बयान की और अपनी पैदाइश को भूल गया, कहने लगा कौन हड्डियों को ज़िन्दा करेगा? जब कि वह गल गईं होंगी। (78) आप (स) फ़रमा दें: उसे वह ज़िन्दा करेगा जिस ने उसे पहली बार पैदा किया, और वह हर तरह से पैदा करना जानता है। (79) जिस ने तुम्हारे लिए सब्ज़ दरख़्त से आग पैदा की, पस अब तुम उस (आग) से सुलगाते हो। (80) वह जिस ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया, क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि उन जैसों को पैदा करे, हाँ (क्यों नहीं)! वह बड़ा पैदा करने वाला दाना है। (81) उस का काम उस के सिवा नहीं कि वह किसी शै का इरादा करता है तो वह उस को कहता है "हो जा" तो वह हो जाती है। (82) सो पाक है वह (ज़ाते वाहिद) जिस के हाथ में हर शै की बादशाहत है, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। (83)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है परा जमा कर सफ़ बान्धने वाले (फ़रिश्तों) की। (1) फिर झिड़क कर डांटने वालों की। (2) फिर क़ुरआन तिलावत करने वालों की। (3)

اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿٤﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ

और रब	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	रब	4	अलबत्ता एक	तुम्हारा माबूद	बेशक

الْمَشَارِقِ ﴿٥﴾ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ ِۨالْكَوَاكِبِ ﴿٦﴾ وَحِفْظًا

और महफ़ूज़ किया	6	सितारे	ज़ीनत से	आस्माने दुनिया	बेशक हम ने मुज़ैयन किया	5	मश्रिक़ों

مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ﴿٧﴾ لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ

और मारे जाते हैं	मलाए आला	तरफ़	कान नहीं लगा सकते	7	सरकश	हर शैतान	से

مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ﴿٨﴾ دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ﴿٩﴾ اِلَّا مَنْ خَطِفَ

ले भागा	जो	सिवाए	9	अ़ज़ाबे दाइमी	और उन के लिए	भगाने को	8	हर तरफ़	से

الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ﴿١٠﴾ فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ

या	ज़ियादा मुश्किल पैदा करना	क्या उन	पस उन से पूछें	10	एक अंगारा दहकता हुआ	तो उस के पीछे लगा	उचक कर

مَّنْ خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ﴿١١﴾ بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ﴿١٢﴾

12	और वह मज़ाक़ उड़ाते हैं	आप (स) ने तअ़ज्जुब किया	बल्कि	11	मिट्टी चिपकती हुई	से	बेशक हम ने पैदा किया उन्हें	हम ने पैदा किया	जो

وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ﴿١٣﴾ وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ﴿١٤﴾ وَقَالُوْٓا اِنْ

नहीं	और उन्हों ने कहा	14	वह हँसी में उड़ा देते हैं	वह देखते हैं कोई निशानी	और जब	13	वह नसीहत क़ुबूल नहीं करते	नसीहत की जाए	और जब

هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿١٦﴾

16	फिर उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां	मिट्टी	और हम हो गए	हम मर गए	क्या जब	15	जादू खुला	मगर-सिर्फ़	यह

اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ﴿١٧﴾ قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دٰخِرُوْنَ ﴿١٨﴾ فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ

ललकार	पस इस के सिवा नहीं वह	18	ज़लील ओ ख़्वार	और तुम	हाँ	फ़रमा दें	17	हमारे बाप दादा पहले	क्या

وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿٢٠﴾ هٰذَا

यह	20	बदले का दिन	यह	हाए हमारी ख़राबी	और वह कहेंगे	19	देखने लगेंगे	वह	पस नागहां	एक

ع ٢١ ٥ يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

वह जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	तुम जमा करो	21	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जिस	फ़ैसले का दिन

وَاَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ﴿٢٢﴾ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ

रास्ता	तरफ़	पस तुम उन को दिखाओ	अल्लाह के सिवा	22	वह परस्तिश करते थे	और जिस	और उन के जोड़े (साथी)

الربع الْجَحِيْمِ ﴿٢٣﴾ وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْـُٔوْلُوْنَ ﴿٢٤﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ﴿٢٥﴾

25	तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते	क्या हुआ तुम्हें	24	उन से पुर्सिश होगी	बेशक वह	और ठहराओ उन को	23	जहन्नम

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

27	बाहम सवाल करते हुए	बाज़ पर दूसरे की तरफ़	उन में से बाज़ (एक)	और रुख़ करेगा	26	सर झुकाए फ़रमांबरदार	आज	बल्कि वह

قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ﴿٢٨﴾ قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٩﴾

29	ईमान लाने वाले	तुम न थे	बल्कि	वह कहेंगे	28	दाएं तरफ़ से	तुम हम पर आए थे	बेशक तुम	वह कहेंगे

बेशक तुम्हारा माबूद एक ही है। (4) परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन दोनों के दरमियान है, और परवरदिगार है मश्रिक़ों (मुक़ामाते तुलूअ़) का। (5) बेशक हम ने मुज़ैयन किया आस्माने दुनिया को सितारों की ज़ीनत से। (6) और हर सरकश शैतान से महफ़ूज़ किया। (7) और मलाए आला (ऊपर की मज्लिस) की तरफ़ कान नहीं लगा सकते, हर तरफ़ से (अंगारे) मारे जाते हैं। (8) भगाने को और उन के लिए दाइमी अ़ज़ाब है। (9) सिवाए उस के जो उचक कर ले भागा तो उस के पीछे एक दहकता हुआ अंगारा लगा। (10) पस आप (स) उन से पूछें: क्या उन का पैदा करना ज़ियादा मुश्किल है या जो (मख़्लूक़) हम ने पैदा की? बेशक हम ने उन्हें चिपकती हुई मिट्टी (गारे) से पैदा किया। (11) बल्कि आप ने (उन की हालत पर) तअ़ज्जुब किया और वह मज़ाक़ उड़ाते हैं। (12) और जब उन्हें नसीहत की जाए तो वह नसीहत क़ुबूल नहीं करते। (13) और जब कोई निशानी देखते हैं तो वह हँसी में उड़ा देते हैं। (14) और उन्हों ने कहा यह तो सिर्फ़ खुला जादू है। (15) क्या जब हम मर गए और हम मिट्टी और हड्डियां हो गए? क्या हम फिर उठाए जाएंगे? (16) क्या हमारे पहले बाप दादा (भी)? (17) आप (स) फ़रमा दें हाँ! और तुम ज़लील ओ ख़्वार होगे। (18) पस इस के सिवा नहीं कि वह एक ललकार होगी, पस नागहां वह देखने लगेंगे। (19) और वह कहेंगे, हाए हमारी ख़राबी! यह बदले का दिन है। (20) यह फ़ैसले का दिन है, वह जिस को तुम झुटलाते थे। (21) तुम जमा करो ज़ालिमों और उन के साथियों को और जिस की वह परस्तिश करते थे। (22) अल्लाह के सिवाए। पस तुम उन को जहन्नम का रास्ता दिखाओ। (23) और उन को ठहराओ, बेशक उन से पुर्सिश होगी। (24) तुम्हें क्या हुआ? तुम एक दूसरे की मदद नहीं करते। (25) बल्कि वह आज सर झुकाए फ़रमांबरदार (अपने आप को पकड़वाते) हैं। (26) और उन में से एक दूसरे की तरफ़ बाहम सवाल करते हुए रुख़ करेगा। (27) वह कहेंगे बेशक तुम हम पर दाएं तरफ़ से (बड़े ज़ोर से) आते थे। (28) वह कहेंगे (नहीं) बल्कि तुम ईमान लाने वाले न थे। (29)

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ﴿٣٠﴾ فَحَقَّ عَلَيْنَا

हम पर	पस साबित हो गई	30	सरकश	एक क़ौम	तुम थे	बल्कि	कोई ज़ोर	तुम पर	हमारा	था	और न

قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ﴿٣١﴾ فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ﴿٣٢﴾ فَاِنَّهُمْ

पस बेशक वह	32	गुमराह	बेशक हम थे	पस हम ने बहकाया तुम्हें	31	अलबत्ता चखने वाले	बेशक हम	हमारा रब	बात

يَوْمَئِذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٤﴾

34	मुजरिमों के साथ	करते हैं	इसी तरह	बेशक हम	33	मुश्तरिक (शरीक)	अज़ाब में	उस दिन

اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٣٥﴾ وَيَقُوْلُوْنَ

और वह कहते हैं	35	वह तकब्बुर करते थे	अल्लाह के सिवा	नहीं कोई माबूद	उन को	कहा जाता	जब	वह थे	बेशक वह

اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ﴿٣٦﴾ بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ

और तस्दीक़ की	हक़ के साथ	वह आए	बल्कि	36	दीवाना	एक शायर की ख़ातिर	अपने माबूद	छोड़ देने वाले	क्या हम

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ﴿٣٨﴾ وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا

मगर जो	और तुम्हें बदला न दिया जाएगा	38	दर्दनाक	अज़ाब	ज़रूर चखने वाले	बेशक तुम	37	रसूलों की

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٤٠﴾ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	यही लोग	40	ख़ास किए हुए	अल्लाह के बन्दे	मगर	39	तुम करते थे

رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿٤١﴾ فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٤٢﴾ فِىْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٤٣﴾ عَلٰى

पर	43	नेमत के बाग़ात	में	42	एज़ाज़ वाले होंगे	और वह	मेवे	41	रिज़्क़ मालूम

سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾ بَيْضَآءَ لَذَّةٍ

लज़्ज़त	सफ़ेद	45	बहता हुआ शराब	से-का	जाम	उन पर-उन के आगे	दौरा होगा	44	तख़्त आमने सामने (जमा)

لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾ لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَعِنْدَهُمْ

और उन के पास	47	बहकी बातें करेंगे	उस से	और न वह	ख़राबी (दर्द सर)	न उस में	46	पीने वालों के लिए

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾ كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ

उन में से बाज़ (एक)	पस रुख़ करेगा	49	पोशीदा रखे हुए	अंडे	गोया वह	48	बड़ी आँखों वालियां	नीची निगाहों वालियां

عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾ قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّىْ كَانَ لِىْ قَرِيْنٌ ﴿٥١﴾

51	एक हमनशीन	मेरा	था	बेशक मैं	उन में से	एक कहने वाला	कहेगा	50	बाहम सवाल करते हुए	बाज़ पर (दूसरे की तरफ़)

يَّقُوْلُ ءَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا

और हड्डियां	मिट्टी	और हो गए	हम मर गए	क्या जब	52	सच्चे जानने वाले	से	क्या तू	वह कहता था

ءَاِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾ قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾ فَاطَّلَعَ

तो वह झांकेगा	54	झांकने वाले हो	तुम	क्या	वह कहने लगा	53	अलबत्ता बदला दिए जाएंगे	क्या हम

فَرَاٰهُ فِىْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾ قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾

56	कि तू मुझे हलाक कर डाले	तो क़रीब था	अल्लाह की क़सम	वह कहेगा	55	दोज़ख़	दरमियान	में	तो उसे देखेगा

और हमारा तुम पर कोई ज़ोर न था, बल्कि तुम एक सरकश क़ौम थे। (30)
पस हम पर हमारे रब की बात साबित हो गई, बेशक हम अलबत्ता (मज़ा) चखने वाले हैं। (31)
पस हम ने तुम्हें बहकाया, बेशक हम (खुद) गुमराह थे। (32)
पस बेशक वह उस दिन अज़ाब में (भी) शरीक रहेंगे। (33)
बेशक हम इसी तरह करते हैं मुजरिमों के साथ। (34)
बेशक जब उन से कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं (तो) वह तकब्बुर करते थे। (35)
और वह कहते हैं: क्या हम अपने माबूदों को छोड़ दें? एक शायर दीवाने की ख़ातिर। (36)
बल्कि वह (स) हक़ के साथ आए हैं और वह (स) तस्दीक़ करते हैं रसूलों की। (37)
बेशक तुम दर्दनाक अज़ाब ज़रूर चखने वाले हो। (38)
और तुम्हें बदला न दिया जाएगा मगर (उस के मुताबिक़) जो तुम करते थे। (39)
(हाँ) मगर अल्लाह के ख़ास किए हुए (चुने हुए) बन्दे। (40)
उन के लिए रिज़्क़ मालूम (मुक़र्रर) है। (41)
(यानी) मेवे, और वह एज़ाज़ वाले होंगे। (42)
नेमत के बाग़ात में। (43)
तख़्तों पर आमने सामने। (44)
दौरा होगा उन के आगे बहते हुए (साफ़) मशरूब के जाम का। (45)
सफ़ेद रंग का, पीने वालों के लिए लज़्ज़त (देने वाला)। (46)
न उस में दर्दसर होगा और न वह उस से बहकी बहकी बातें करेंगे। (47)
और उन के पास होंगी नीची निगाहों वालियां, बड़ी बड़ी आँखों वालियां। (48)
गोया वह अंडे हैं पोशीदा रखे हुए। (49)
फिर उन में से एक दूसरे की तरफ़ बाहम सवाल करते हुए रुख़ करेगा। (50)
उन में से एक कहने वाला कहेगा: बेशक (दुनिया में) मेरा एक हमनशीन था। (51)
वह कहा करता था क्या तू (क़ियामत को) सच मानने वालों में से है? (52)
क्या जब हम मर गए और हम हो गए मिट्टी और हड्डियां, क्या हमें बदला दिया जाएगा? (53)
वह कहेगा क्या तुम झांकने वाले हो (दोज़ख़ी को झाँक कर देख सकते हो?) (54)
तो वह झाँकेगा तो उसे देखेगा दोज़ख़ के दरमियान में। (55)
वह कहेगा अल्लाह की क़सम! क़रीब था कि तू मुझे हलाक कर डाले। (56)

وَلَوْ لَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَفَمَا نَحْنُ

क्या पस नहीं हम	57	हाज़िर किए जाने वाले	से	तो मैं ज़रूर होता	मेरा रब	नेमत	और अगर न

بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾ اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾ اِنَّ

बेशक	59	अ़ज़ाब दिए जाने वालों में से	हम	और नहीं	पहली	हमारी मौत	सिवाए	58	मरने वालों में से

هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾ لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾ اَذٰلِكَ

क्या यह	61	अ़मल करने वाले	पस चाहिए ज़रूर अ़मल करें	इस जैसी (नेमत) के लिए	60	कामयाबी अ़ज़ीम	अलबत्ता वह	यह

خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٢﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٣﴾

63	ज़ालिमों के लिए	एक आज़माइश	हम ने उस को बनाया	बेशक हम	62	थोहर का दरख़्त	या	ज़ियाफ़त	बेहतर

اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾ طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ

सर (जमा)	गोया कि वह	उस का ख़ोशा	64	जहन्नम	जड़	में	वह निकलता है	एक दरख़्त	बेशक वह

الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾ فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٦٦﴾

66	पेट (जमा)	उस से	सो भरने वाले	उस से	खाने वाले हैं	पस बेशक वह	65	शैतानों

ثُمَّ اِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٦٧﴾ ثُمَّ اِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى

अलबत्ता तरफ़	उन की वापसी	बेशक	फिर	67	खौलता हुआ पानी	से	मिला मिला कर	उस पर	उन के लिए	बेशक	फिर

الْجَحِيْمِ ﴿٦٨﴾ اِنَّهُمْ اَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ ﴿٦٩﴾ فَهُمْ عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ

उन के नक़्शे क़दम पर	सो वह	69	गुमराह (जमा)	अपने बाप दादा	उन्हों ने पाया	बेशक वह	68	जहन्नम

يُهْرَعُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ اَكْثَرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٧١﴾

71	अगलों में से अक्सर	उन से पहले	और तहक़ीक़ गुमराह हुए	70	दौड़ते जाते थे

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

अन्जाम	हुआ	कैसा	सो देखें	72	डराने वाले	उन में	और तहक़ीक़ हम ने भेजे

ع ٢ ٥٣ ٦ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٧٤﴾ وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ

नूह (अ)	और तहक़ीक़ हमें पुकारा	74	ख़ास किए हुए	अल्लाह के बन्दे	मगर	73	जिन्हें डराया गया

فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَنَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿٧٦﴾

76	बड़ी	मुसीबत	से	और उस के घर वाले	और हम ने नजात दी उसे	75	दुआ क़ुबूल करने वाले	सो हम अलबत्ता खूब

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبَاقِيْنَ ﴿٧٧﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿٧٨﴾

78	बाद में आने वाले	में	उस पर-उस का	और हम ने छोड़ा	77	बाक़ी रहने वाली	वह	उस की औलाद	और हम ने किया

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٩﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٨٠﴾

80	नेकोकारों	हम जज़ा देते हैं	इसी तरह	बेशक हम	79	सारे जहानों में	नूह (अ)	पर	सलाम हो

اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨١﴾ ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٨٢﴾

82	दूसरे	हम ने ग़र्क़ कर दिया	फिर	81	मोमिन (जमा)	हमारे बन्दे	से	बेशक वह

और अगर मेरे रब की नेमत न होती तो मैं ज़रूर (अ़ज़ाब के लिए) हाज़िर किए जाने वालों में से होता। (57)
तो क्या अब हम मरने वाले नहीं हैं? (58)
सिवाए हमारी पहली मौत (जिस से हम दो चार हो चुके) और न हम अ़ज़ाब दिए जाने वालों में से होंगे? (59)
बेशक यही है अ़ज़ीम कामयाबी। (60)
पस इस जैसी नेमत के लिए चाहिए कि ज़रूर अ़मल करें अ़मल करने वाले। (61)
क्या यह बेहतर ज़ियाफ़त है या थोहर का दरख़्त? (62)
बेशक हम ने उस को एक फ़ितना बनाया है ज़ालिमों के लिए। (63)
बेशक वह एक दरख़्त है जहन्नम की जड़ (गहराई) में निकलता है। (64)
उस का ख़ोशा, गोया कि वह शैतानों के सर (साँपों के फन) हैं। (65)
बेशक वह उस से खाएंगे, सो उस से पेट भरेंगे। (66)
फिर बेशक उस (खाने) पर उन के लिए खौलता हुआ पानी (पीप) मिला मिला कर (दिया जाएगा)। (67)
फिर उन की वापसी जहन्नम की तरफ़ होगी। (68)
बेशक उन्हों ने अपने बाप दादा को गुमराह पाया था। (69)
सो वह उन के नक़्शे क़दम पर दौड़ते जाते थे। (70)
और तहक़ीक़ उन से पहले गुमराह हुए थे (उन के) अगलों में से अक्सर। (71)
तहक़ीक़ हम ने उन में डराने वाले (रसूल) भेजे थे। (72)
सो आप (स) देखें कैसा हुआ उन का अन्जाम जिन्हें डराया गया था? (73)
मगर अल्लाह के ख़ास किए हुए बन्दे (बन्दगाने ख़ास का अन्जाम कितना अच्छा हुआ)। (74)
और तहक़ीक़ नूह (अ) ने हमें पुकारा, सो हम खूब दुआ क़ुबूल करने वाले हैं। (75)
और हम ने उसे और उस के घर वालों को बड़ी मुसीबत से नजात दी। (76)
और हम ने किया उस की औलाद को बाक़ी रहने वाली। (77)
और हम ने उस का (ज़िक्रे ख़ैर) बाद में आने वालों में छोड़ा। (78)
नूह (अ) पर सलाम हो सारे जहानों में। (79)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (80)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (81)
फिर हम ने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया। (82)

وَاِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَاِبْرٰهِيْمَ ﴿٨٣﴾ اِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٤﴾

84	साफ़	दिल के साथ	अपना रब	जब वह आया	83	अलबत्ता इब्राहीम (अ)	उस के तरीक़े पर चलने वाले	से	और बेशक

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٨٥﴾ اَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللّٰهِ

अल्लाह के सिवा	माबूद	क्या झूट मूट के	85	तुम परस्तिश करते हो	किस चीज़	और अपनी क़ौम	अपने बाप को	जब उस ने कहा	

تُرِيْدُوْنَ ﴿٨٦﴾ فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَنَظَرَ نَظْرَةً فِى النُّجُوْمِ ﴿٨٨﴾

88	सितारे	में-को	एक नज़र	फिर उस ने देखा	87	तमाम जहानों	रब के बारे में	तुम्हारा गुमान	सो क्या	86	तुम चाहते हो

فَقَالَ اِنِّىْ سَقِيْمٌ ﴿٨٩﴾ فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ ﴿٩٠﴾ فَرَاغَ اِلٰٓى اٰلِهَتِهِمْ

उन के माबूदों	तरफ़-में	फिर पोशीदा घुस गया	90	पीठ फेर कर	उस से	पस वह फिर गए	89	बीमार हूँ	बेशक मैं	तो उस ने कहा

فَقَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٩١﴾ مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ ﴿٩٢﴾ فَرَاغَ عَلَيْهِمْ

उन पर	फिर जा पड़ा वह	92	तुम बोलते नहीं	क्या हुआ तुम्हें?	91	क्या तुम नहीं खाते	फिर कहने लगा

ضَرْبًا بِالْيَمِيْنِ ﴿٩٣﴾ فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ ﴿٩٤﴾ قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ

क्या तुम परस्तिश करते हो	उस ने फ़रमाया	94	दौड़ते हुए	उस की तरफ़	फिर वह मुतवज्जुह हुए	93	अपने दाएं हाथ (क़ुदरत) से	मारता हुआ	

مَا تَنْحِتُوْنَ ﴿٩٥﴾ وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾ قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا

एक इमारत	उस के लिए	बनाओ	उन्हों ने कहा	96	तुम करते हो	और जो	उस ने पैदा किया तुम्हें	हालांकि अल्लाह	95	जो तुम तराशते हो

فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ ﴿٩٧﴾ فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٩٨﴾

98	नीचा	तो हम ने कर दिया उन्हें	दाओ	उस पर	फिर उन्हों ने चाहा	97	आग में	फिर डाल दो उसे

وَقَالَ اِنِّىْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٩٩﴾ رَبِّ هَبْ لِىْ مِنَ

से	मुझे अ़ता फ़रमा	ऐ मेरे रब	99	अ़नक़रीब वह मुझे राह दिखाएगा	अपने रब की तरफ़	जाने वाला हूँ	बेशक मैं	और उस (इब्राहीम) ने कहा

الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٠﴾ فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ ﴿١٠١﴾ فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْىَ

दौड़ने	उस के साथ	वह पहुँचा	फिर जब	101	बुर्दबार	एक लड़का	पस बशारत दी हम ने उसे	100	नेक सालेह (जमा)

قَالَ يٰبُنَىَّ اِنِّىْٓ اَرٰى فِى الْمَنَامِ اَنِّىْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى

तेरी राए	क्या	अब तू देख	तुझे ज़ुबह कर रहा हूँ	कि मैं	ख़्वाब	में	बेशक मैं देखता हूँ	ए मेरे बेटे	उस ने कहा

قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ

से	अल्लाह ने चाहा	अगर	आप जल्द ही मुझे पाएंगे	जो हुक्म आप को किया जाता है	आप करें	ऐ मेरे अब्बा जान	उस ने कहा	

الصّٰبِرِيْنَ ﴿١٠٢﴾ فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ ﴿١٠٣﴾ وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ ﴿١٠٤﴾

104	ऐ इब्राहीम (अ)	कि	और हम ने उस को पुकारा	103	पेशानी के बल	(बाप ने बेटे को) लिटाया	दोनों ने हुक्मे (इलाही) मान लिया	पस जब	102	सब्र करने वाले

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾ اِنَّ هٰذَا

बेशक यह	105	नेकोकारों	हम जज़ा दिया करते हैं	बेशक हम इसी तरह	ख़्वाब	तहक़ीक़ तू ने सच कर दिखाया

لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ ﴿١٠٦﴾ وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ ﴿١٠٧﴾

107	बड़ा	एक ज़बीहा	और हम ने उस का फ़िदया दिया	106	खुली	आज़माइश	अलबत्ता वह

وقف لازم

और बेशक इब्राहीम (अ) उसी के तरीक़े पर चलने वालों में से थे। (83)
जब वह अपने रब के पास आए साफ़ दिल के साथ। (84)
(याद करो) जब उस ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहाः तुम किस (वाहियात) चीज़ की परस्तिश करते हो? (85)
क्या तुम अल्लाह के सिवा झूट मूट के माबूद चाहते हो? (86)
सो तमाम जहानों के परवरदिगार के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है? (87)
फिर उस ने सितारों को एक नज़र देखा। (88)
तो उस ने कहा बेशक मैं बीमार हूँ। (89)
पस वह लोग पीठ फेर कर उस से फिर गए। (90)
फिर वह उन के माबूदों में छुप कर घुस गया, फिर वह (बतौरे तमस्ख़र) कहने लगाः क्या तुम नहीं खाते? (91)
क्या हुआ तुम्हें? तमु बोलते नहीं? (92)
फिर वह पूरी क़ुव्वत से मारता हुआ उन पर जा पड़ा। (93)
फिर वह (बुत परस्त) मुतवज्जुह हुए उसकी तरफ़ दौड़ते हुए (आए)। (94)
उस ने फ़रमाया क्या तुम (उनकी) परस्तिश करते हो? जो तुम ख़ुद तराशते हो। (95)
हालांकि अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, और जो तुम करते (बनाते) हो। (96)
उन्हों ने (एक दूसरे को) कहाः उस के लिए एक इमारत (आतिश ख़ाना) बनाओ, फिर उसे आग में डाल दो। (97)
फिर उन्हों ने उस पर दाओ करना चाहा तो हम ने उन्हें ज़ेर कर दिया। (98)
और इब्राहीम (अ) ने कहाः मैं अपने रब की तरफ़ जाने वाला हूँ, अ़नक़रीब वह मुझे राह दिखाएगा। (99)
ऐ मेरे रब! मुझे अ़ता फ़रमा (नेक औलाद) सालेहीन में से। (100)
पस हम ने उसे एक बुर्दबार लड़के की बशारत दी। (101)
फिर जब वह उस के साथ दौड़ने (की उम्र को) पहुँचा तो इब्राहीम (अ) ने कहा कि ऐ मेरे बेटे! बेशक मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुझे ज़ुबह कर रहा हूँ। अब तू देख कि तेरी क्या राए है? उस ने कहा ऐ मेरे अब्बाजान! आप को जो हुक्म किया जाता है वह करें, आप मुझे जल्द ही पाएंगे इंशाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) सब्र करने वालों में से। (102)
पस जब दोनों ने हुक्मे इलाही को मान लिया, बाप ने बेटे को पेशानी के बल लिटाया। (103)
और हम ने उस को पुकारा कि ऐ इब्राहीम (अ)! (104)
तहक़ीक़ तू ने ख़्वाब को सच कर दिखाया, बेशक हम नेकोकारों को इसी तरह जज़ा दिया करते हैं। (105)
बेशक यह खुली आज़माइश (बड़ा इम्तिहान था)। (106)
और हम ने एक बड़ा ज़बीहा (क़ुरबानी को) उस का फ़िदया दिया। (107)

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾ كَذٰلِكَ

इसी तरह	109	इब्राहीम (अ)	पर	सलाम	108	बाद में आने वालों में	उस पर (उस का ज़िक्रे ख़ैर)	और हम ने बाक़ी रखा

نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾ وَبَشَّرْنٰهُ

और हम ने उसे बशारत दी	111	मोमिनीन	हमारे बन्दे	से	बेशक वह	110	नेकोकारों	हम जज़ा दिया करते हैं

بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾ وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ؕ

इस्हाक़ (अ)	और पर	उस पर-उस को	और हम ने बरकत नाज़िल की	112	सालेहीन	से	एक नबी	इस्हाक़ (अ) की

ع ٣ ٣٩ ٧ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ﴿١١٣﴾ وَلَقَدْ مَنَنَّا

और हम ने एहसान किया	और तहक़ीक़ अलबत्ता	113	सरीह	अपनी जान पर	और ज़ुल्म करने वाला	नेकोकार	उन दोनों की औलाद	और से-में

عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١١٤﴾ وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾

115	बड़ा	ग़म	से	और उन की क़ौम	और उन दोनों को नजात दी	114	और हारून (अ)	मूसा (अ) पर

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾

117	वाज़ेह	किताब	और हम ने उन दोनों को दी	116	ग़ालिब (जमा)	वही	तो वह रहे	और हम ने मदद की उन की

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا

उन दोनों पर (उन का ज़िक्रे ख़ैर)	और हम ने बाक़ी रखा	118	सीधा	रास्ता	और हम ने उन दोनों को हिदायत दी

فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي

हम जज़ा देते हैं	बेशक हम इसी तरह	120	और हारून (अ)	मूसा (अ) पर	सलाम	119	बाद में आने वालों में

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾ اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾ وَاِنَّ اِلْيَاسَ

इल्यास (अ)	और बेशक	122	मोमिनीन	हमारे बन्दे	से	बेशक वह दोनों	121	नेकोकारों

لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾ اَتَدْعُوْنَ

क्या तुम पुकारते हो	124	क्या तुम नहीं डरते	अपनी क़ौम को	जब उस ने कहा	123	रसूलों	अलबत्ता-से

بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخٰلِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾ اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ

तुम्हारे बाप दादा	और रब	तुम्हारा रब	अल्लाह	125	पैदा करने वाला (जमा)	सब से बेहतर	और तुम छोड़ देते हो	बअ़ल

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾ اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ

अल्लाह के बन्दे	सिवाए	127	वह ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे	तो बेशक वह	पस उन्हों ने झुटलाया	126	पहले

الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾ سَلٰمٌ عَلٰٓى

पर	सलाम	129	बाद में आने वालों में	और हम ने बाक़ी रखा उस पर (उस का ज़िक्रे ख़ैर)	128	मुख़लिस (जमा)

اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾ اِنَّهٗ مِنْ

से	बेशक वह	131	नेकोकारों	जज़ा दिया करते हैं	बेशक हम इसी तरह	130	इलयासीन (इल्यास अ)

عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾ وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾

133	रसूल (जमा)	अलबत्ता-से	लूत (अ)	और बेशक	132	मोमिनीन	हमारे बन्दे

और हम ने उसका ज़िक्रे ख़ैर बाद में आने वालों में बाक़ी रखा। (108)
सलाम हो इब्राहीम (अ) पर। (109)
इसी तरह हम नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (110)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से था। (111)
और हम ने उसे बशारत दी इस्हाक़ (अ) की (कि वह) एक नबी सालेहीन में से होगा। (112)
और हम ने उस पर बरकत नाज़िल की और इस्हाक़ (अ) पर, और उन दोनों की औलाद में नेकोकार (भी हैं) और अपनी जान पर सरीह ज़ुल्म करने वाले (भी)। (113)
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) और हारून (अ) पर एहसान किया। (114)
और हम ने उन दोनों को और उन की क़ौम को बड़े ग़म (फ़िरऔन के मज़ालिम) से नजात दी। (115)
और हम ने उन की मदद की, तो वही ग़ालिब रहे। (116)
और हम ने उन दोनों को वाज़ेह किताब दी। (117)
और उन दोनों को सीधे रास्ते की हिदायत दी। (118)
और हम ने उन दोनों का ज़िक्रे ख़ैर बाद में आने वालों में बाक़ी रखा। (119)
सलाम हो मूसा (अ) और हारून (अ) पर। (120)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (121)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (122)
और बेशक इल्यास (अ) रसूलों में से थे। (123)
(याद करो) जब उस ने अपनी क़ौम से कहा क्या तुम (अल्लाह से) नहीं डरते? (124)
क्या तुम बअ़ल (बुत) को पुकारते हो? और तुम सब से बेहतर पैदा करने वाले को छोड़ते हो। (125)
(यानी) अल्लाह को (जो) तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे पहले बाप दादा का (भी) रब है। (126)
पस उन्हों ने उसे झुटलाया तो बेशक वह ज़रूर हाज़िर किए जाएंगे (पकड़े जाएंगे)। (127)
अल्लाह के मुख़लिस (ख़ास बन्दों) के सिवा। (128)
और हम ने उस का ज़िक्रे ख़ैर बाक़ी रखा बाद में आने वालों में। (129)
सलाम हो इल्यास (अ) पर। (130)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा दिया करते हैं। (131)
बेशक वह हमारे मोमिन बन्दों में से थे। (132)
और बेशक लूत (अ) रसूलों में से थे। (133)

إِذْ نَجَّيْنَٰهُ وَأَهْلَهُۥٓ أَجْمَعِينَ ﴿١٣٤﴾ إِلَّا عَجُوزًا فِى ٱلْغَٰبِرِينَ ﴿١٣٥﴾ ثُمَّ

फिर	135	पीछे रह जाने वाले	में	एक बुढ़िया	सिवाए	134	सब	और उस के घर वाले	हम ने उसे नजात दी	जब

دَمَّرْنَا ٱلْءَاخَرِينَ ﴿١٣٦﴾ وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِم مُّصْبِحِينَ ﴿١٣٧﴾ وَبِٱلَّيْلِ

और रात में	137	सुबह करते हुए (सुबह होते)	उन पर	अलबत्ता गुज़रते हो	और बेशक तुम	136	औरों को	हम ने हलाक किया

أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٣٨﴾ وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ ٱلْمُرْسَلِينَ ﴿١٣٩﴾ إِذْ أَبَقَ إِلَى ع ۲۵ ۸

तरफ़	भाग गए वह	जब	139	रसूलों	अलबत्ता-से	यूनुस (अ)	और बेशक	138	तो क्या तुम अ़क्ल से काम नहीं लेते

ٱلْفُلْكِ ٱلْمَشْحُونِ ﴿١٤٠﴾ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ ٱلْمُدْحَضِينَ ﴿١٤١﴾

141	धकेले गए	से	सो वह हुआ	तो क़ुरआ डाला	140	भरी हुई	कश्ती

فَٱلْتَقَمَهُ ٱلْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿١٤٢﴾ فَلَوْلَآ أَنَّهُۥ كَانَ مِنَ ٱلْمُسَبِّحِينَ ﴿١٤٣﴾

143	तस्बीह करने वाले	से	होता	यह कि वह	फिर अगर न	142	मलामत करने वाला	और वह	मछली	फिर उसे निगल लिया

لَلَبِثَ فِى بَطْنِهِۦٓ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤٤﴾ فَنَبَذْنَٰهُ بِٱلْعَرَآءِ وَهُوَ النصف

और वह	चटयल मैदान में	फिर हम ने उसे फेंक दिया	144	दोबारा जी उठने के दिन (रोज़े हश्र)	तक	उस के पेट में	अलबत्ता रहता

سَقِيمٌ ﴿١٤٥﴾ وَأَنۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّن يَقْطِينٍ ﴿١٤٦﴾ وَأَرْسَلْنَٰهُ إِلَىٰ

तरफ़	और हम ने भेजा उस को	146	बेलदार	से	दरख़्त	उस पर	और हम ने उगाया	145	बीमार

مِا۟ئَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ﴿١٤٧﴾ فَـَٔامَنُوا۟ فَمَتَّعْنَٰهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿١٤٨﴾

148	एक मुद्दत तक	तो हम ने उन्हें फ़ाइदा उठाने दिया	सो वह ईमान लाए	147	उस से ज़ियादा	या	एक लाख

فَٱسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ ٱلْبَنَاتُ وَلَهُمُ ٱلْبَنُونَ ﴿١٤٩﴾ أَمْ خَلَقْنَا ٱلْمَلَٰٓئِكَةَ

फ़रिश्ते	हम ने पैदा किया	क्या	149	बेटे	और उन के लिए	बेटियां	क्या तेरे रब के लिए	पस पूछें उन से

إِنَٰثًا وَهُمْ شَٰهِدُونَ ﴿١٥٠﴾ أَلَآ إِنَّهُم مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُولُونَ ﴿١٥١﴾

151	अलबत्ता कहते हैं	अपनी बुहतान तराज़ी	से	बेशक वह	याद रखो	150	देख रहे थे	और वह	औरत

وَلَدَ ٱللَّهُ وَإِنَّهُمْ لَكَٰذِبُونَ ﴿١٥٢﴾ أَصْطَفَى ٱلْبَنَاتِ عَلَى ٱلْبَنِينَ ﴿١٥٣﴾

153	बेटों पर	बेटियां	क्या उस ने पसंद किया	152	झूटे	और बेशक वह	अल्लाह साहिबे औलाद

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿١٥٤﴾ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٥﴾ أَمْ لَكُمْ سُلْطَٰنٌ

कोई सनद	तुम्हारे पास	क्या	155	तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?	154	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा	तुम्हें क्या हो गया

مُّبِينٌ ﴿١٥٦﴾ فَأْتُوا۟ بِكِتَٰبِكُمْ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ ﴿١٥٧﴾ وَجَعَلُوا۟ بَيْنَهُۥ

उस के दरमियान	और उन्हों ने ठहराया	157	सच्चे	तुम हो	अगर	अपनी किताब	तो ले आओ	156	खुली

وَبَيْنَ ٱلْجِنَّةِ نَسَبًا ۚ وَلَقَدْ عَلِمَتِ ٱلْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُونَ ﴿١٥٨﴾

158	हाज़िर किए जाएंगे	बेशक वह	जिन्नात	और तहक़ीक़ जान लिया	एक रिश्ता	जिन्नात	और दरमियान

سُبْحَٰنَ ٱللَّهِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٥٩﴾ إِلَّا عِبَادَ ٱللَّهِ ٱلْمُخْلَصِينَ ﴿١٦٠﴾

160	ख़ास किए हुए (चुने हुए)	अल्लाह के बन्दे	मगर	159	वह बयान करते हैं	उस से जो	पाक है अल्लाह

(याद करो) जब हम ने नजात दी उसे और उस के सब घर वालों को। (134) पीछे रह जाने वालों में से एक बुढ़िया के सिवा। (135) फिर हम ने और सब को हलाक किया। (136) और बेशक तुम सुबह होते और रात में उन पर (उन की बस्तियों से) गुज़रते हो। (137) तो क्या तुम अ़क्ल से काम नहीं लेते? (138) और बेशक यूनुस (अ) अलबत्ता रसूलों में से थे। (139) जब वह भाग कर भरी हुई कश्ती (के पास) गए। (140) तो उन्हों ने क़ुरआ डाला, सो वह (कश्ती से) धकेले गए। (141) फिर उन्हें मछली ने निगल लिया और वह (अपने आप को) मलामत कर रहे थे। (142) फिर अगर वह तस्बीह करने वालों में से न होते। (143) तो वह उस के पेट में क़ियामत के दिन तक रहते। (144) फिर हम ने उन्हें चटयल मैदान में फेंक दिया और वह बीमार थे। (145) और हम ने उगाया उस पर एक बेलदार दरख़्त। (146) और हम ने उसे एक लाख या उस से ज़ियादा लोगों की तरफ़ भेजा। (147) सो वह लोग ईमान लाए और हम ने उन्हें एक मुद्दत तक के लिए फ़ाइदा उठाने दिया। (148) पस आप (स) उन से पूछें क्या तेरे रब के लिए बेटियां हैं और उन के लिए बेटे? (149) क्या हम ने फ़रिश्तों को औरत ज़ात पैदा किया है? और वह देख रहे थे? (150) याद रखो, बेशक वह अपनी बुहतान तराज़ी से कहते हैं। (151) (कि) अल्लाह साहिबे औलाद है, और वह बेशक झूटे हैं। (152) क्या उस ने बेटियों को बेटों पर पसंद किया? (153) तुम्हें क्या हो गया है? तुम कैसा फ़सला करते हो? (154) तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (155) क्या तुम्हारे पास कोई खुली सनद है? (156) तो अपनी वह किताब ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (157) और उन्हों ने उस के और जिन्नात के दरमियान एक रिश्ता ठहराया, और तहक़ीक़ जान लिया जिन्नात ने के बेशक वह (अ़ज़ाब में) हाज़िर (गिरफ़्तार) किए जाएंगे। (158) अल्लाह उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। (159) सिवाए अल्लाह के चुने हुए बन्दे। (160)

فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ﴿١٦١﴾ مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ﴿١٦٢﴾ اِلَّا مَنْ هُوَ

जो-वह	सिवाए	162	उस के ख़िलाफ़ बहकाने वाले	नहीं हो तुम	161	तुम परसतिश करते हो	और जो	तो बेशक तुम

صَالِ الْجَحِيْمِ ﴿١٦٣﴾ وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ﴿١٦٤﴾ وَّاِنَّا لَنَحْنُ

अलबत्ता हम	और बेशक हम	164	एक मुअय्यन दर्जा	मगर उस के लिए	हम में से	और नहीं	163	जहन्नम	जाने वाला

الصَّآفُّوْنَ ﴿١٦٥﴾ وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ﴿١٦٦﴾ وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ﴿١٦٧﴾

167	कहा करते	वह थे	और बेशक	166	तस्बीह करने वाले	अलबता हम	और बेशक हम	165	सफ़ बस्ता होने वाले

لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦٨﴾ لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٦٩﴾

169	ख़ास किए (मुंतख़िब)	अल्लाह के बन्दे	ज़रूर हम होते	168	पहले लोग	से	कोई नसीहत हमारे पास	अगर होती

فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٧٠﴾ وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا

अपने बन्दों के लिए	हमारा वादा	और पहले सादिर हो चुका है	170	वह जान लेंगे	तो अनक़रीब	उस का	फिर उन्हों ने इन्कार किया

الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٧١﴾ اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ﴿١٧٢﴾ وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ

अलबत्ता वही	हमारा लशकर	और बेशक	172	फ़तहमन्द	अलबत्ता वही	बेशक वह	171	रसूलों

الْغٰلِبُوْنَ ﴿١٧٣﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٤﴾ وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٥﴾

175	वह देख लेंगे	पस अनक़रीब	और उन्हें देखते रहें	174	एक वक़्त तक	तक	उन से	पस एराज़ करें	173	ग़ालिब (जमा)

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ﴿١٧٦﴾ فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ

सुबह	तो बुरी	उन के मैदान में	वह नाज़िल होगा	तो जब	176	वह जल्दी कर रहे हैं	तो क्या हमारे अज़ाब के लिए

الْمُنْذَرِيْنَ ﴿١٧٧﴾ وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ﴿١٧٨﴾ وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ﴿١٧٩﴾

179	वह देख लेंगे	पस अनक़रीब	और देखते रहें	178	एक मुद्दत	तक	उन से	और एराज़ करें	177	जिन को डराया जा चुका है

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿١٨٠﴾ وَسَلٰمٌ عَلَى

पर	और सलाम	180	वह बयान करते हैं	उस से जो	इज़्ज़त वाला रब	तुम्हारा रब	पाक है

ع ٥ ٩ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٨١﴾ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٨٢﴾

182	तमाम जहानों का रब	और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	181	रसूलों

آيَاتُهَا ٨٨ ❀ (٣٨) سُوْرَةُ صٓ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकूआत 5 (38) सूरह साद आयात 88

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ﴿١﴾ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ﴿٢﴾

2	और मुख़ालिफ़त	घमंड में	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	बलकि	1	नसीहत देने वाला	क़ुरआन की क़सम	साद

كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ﴿٣﴾

3	छुटकारा	वक़्त	और न था	तो वह फ़र्याद करने लगे	उम्मतें	उन से क़ब्ल	हम ने हलाक कर दीं	कितनी ही

तो बेशक तुम और वह जिन की तुम परस्तिश करते हो। (161) तुम नहीं बहका सकते उस (अल्लाह) के ख़िलाफ़ (किसी को)। (162) उस के सिवा जो जहन्नम में जाने वाला है। (163) और (फ़रिश्तों ने कहा) हम में से कोई भी ऐसा नहीं जिस का एक मुअय्यन दर्जा न हो। (164) और बेशक हम ही सफ़ बस्ता रहने वाले हैं। (165) और बेशक हम ही तस्बीह करने वाले हैं। (166) और बेशक वह (कुफ़्फ़ारे मक्का) कहा करते थे। (167) अगर हमारे पास होती पहले लोगों की कोई (किताबे) नसीहत। (168) तो हम ज़रूर अल्लाह के मुंतख़िब बन्दों में से होते। (169) फिर उन्हों ने उस का इन्कार किया तो वह अनक़रीब (उस का अन्जाम) जान लेंगे। (170) और हमारा वादा अपने बन्दों (यानी) रसूलों के लिए पहले (ही) सादिर हो चुका है। (171) बेशक वही फ़तह मन्द होंगे। (172) और बेशक अलबत्ता हमारा लशकर ही ग़ालिब रहेगा। (173) पस आप (स) एक वक़्त तक (थोड़ा अ़र्सा) उन से एराज़ करें। (174) और उन्हें देखते रहें, पस अनक़रीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (175) तो क्या वह हमारे अ़ज़ाब के लिए जल्दी कर रहे हैं? (176) तो जब वह उन के मैदान में नाज़िल होगा तो उन की सुबह बुरी होगी जिन्हें डराया जा चुका है। (177) और आप (स) एक मुद्दत तक (थोड़ा अ़र्सा) उन से एराज़ करें। (178) और देखते रहें, पस अनक़रीब वह (अपना अन्जाम) देख लेंगे। (179) पाक है तुम्हारा रब इ़ज़्ज़त वाला रब, उस से जो वह बयान करते हैं। (180) और सलाम हो रसूलों पर। (181) और तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए जो तमाम जहानों का रब है। (182)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

साद। नसीहत देने वाले क़ुरआन की क़सम! (1) (आप की दावत बर हक़ है) बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह घमंड और मुख़ालिफ़त में हैं। (2) कितनी ही उम्मतें उन से क़ब्ल हम ने हलाक कर दीं तो वह फ़र्याद करने लगे और (अब) छुटकारे का वक़्त न था। (3)

और उन्हों ने तअ़ज्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डराने वाला आया, और काफ़िरों ने कहाः यह जादूगर है, झूटा है। (4)
क्या उस ने सारे माबूदों को बना दिया है एक माबूद, बेशक यह तो एक बड़ी अ़जीब बात है। (5)
और उन के कई सरदार यह कहते हुए चल पड़े कि चलो और अपने माबूदों पर जमे रहो, बेशक यह सोची समझी स्कीम है। (6)
हम ने पिछले मज़हब में ऐसी (बात) नहीं सुनी, यह तो महज़ मन घड़त है। (7)
क्या हम में से उसी परे अल्लाह का कलाम नाज़िल क्या गया? (हाँ) बल्कि वह शक में हैं मेरी नसीहत से, बल्कि (अभी) उन्हों ने मेरा अ़ज़ाब नहीं चखा। (8)
क्या तुम्हारे रब की रहमत के ख़ज़ाने उन के पास हैं? जो ग़ालिब, बहुत अ़ता करने वाला है। (9)
क्या उन के लिए है बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की और जो उन के दरमियान है? तो वह (आस्मानों पर) चढ़ जाएं रस्सियां तान कर। (10)
शिकस्त ख़ुर्दा गिरोहों में से यह भी एक लशकर है। (11)
उन से पहले झुटलाया क़ौमे नूह (अ) ने और आ़द और मीख़ों वाले फ़िरऔ़न ने। (12)
और समूद और क़ौमे लूत, और अयका वालों ने, गिरोह वह थे। (13)
उन सब ने रसूलों को झुटलाया, पस (उन पर) अ़ज़ाब आ पड़ा। (14)
और इन्तिज़ार नहीं करते यह लोग मगर एक चिंघाड़ का, जिस में कोई ढील (गुन्जाइश) न होगी। (15)
और उन्हों ने (मज़ाक़ के तौर पर) कहा कि ऐ हमारे रबः हमें जल्दी दे हमारा हिस्सा रोज़े हिसाब से पहले। (16)
जो वह कहते हैं उस पर आप (स) सब्र करें, और याद करें हमारे बन्दे दाऊद (अ) कुव्वत वाले को, बेशक वह ख़ूब रुजूअ़ करने वाला था। (17)
बेशक हम ने पहाड़ उस के साथ मुसख़्ख़र कर दिए थे, वह सुबह ओ शाम तस्बीह करते थे। (18)

وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ۫ وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ

यह जादूगर	काफ़िर (जमा)	और कहा	उन में से	एक डराने वाला	उन के पास आया	कि	और उन्हों ने तअ़ज्जुब किया

كَذَّابٌ ۝٤ اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ اِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝٥

5	बड़ी अ़जीब	एक शै (बात)	बेशक यह	एक	माबूद	सारे माबूदों	क्या उस ने बना दिया	4	झूटा

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا

बेशक यह	अपने माबूदों पर	और जमे रहो	चलो	कि	उन के	सरदार	और चल पड़े

لَشَيْءٌ يُّرَادُ ۝٦ مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚ اِنْ هٰذَآ اِلَّا

मगर- महज़	यह	नहीं	पिछला	मज़हब	में	ऐसी	हम ने नहीं सुना	6	इरादा की हुई (मतलब की)	कोई शै (बात)

اخْتِلَاقٌ ۝٧ ءَاُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَيْنِنَا ۭ بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ

शक में	वह	बल्कि	हम में से	ज़िक्र (कलाम)	उस पर	क्या नाज़िल किया गया	7	मन घड़त

مِّنْ ذِكْرِيْ ۚ بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ۝٨ اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ

ख़ज़ाने	उन के पास	क्या	8	मेरा अ़ज़ाब	चखा उन्हों ने	नहीं	बल्कि	मेरी नसीहत से

رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ۝٩ اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और ज़मीन	बादशाहत आस्मानों	क्या उन के लिए	9	बहुत अ़ता करने वाला	ग़ालिब	तुम्हारे रब की रहमत

وَمَا بَيْنَهُمَا ۣ فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْاَسْبَابِ ۝١٠ جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ

शिकस्त ख़ुर्दा	यहां	जो	एक लशकर	10	रस्सियों में (रस्सियां तान कर)	तो वह चढ़ जाएं	और जो उन दोनों के दरमियान

مِّنَ الْاَحْزَابِ ۝١١ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْاَوْتَادِ ۝١٢

12	कीलों वाला	और फ़िरऔन	और आद	क़ौमे नूह	उन से पहले	झुटलाया	11	गिरोहों में से

وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ ۭ اُولٰٓئِكَ الْاَحْزَابُ ۝١٣ اِنْ

नहीं	13	गिरोह	वह थे	और अयका वाले	और क़ौमे लूत	और समूद

كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝١٤ وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَاۗءِ ع ١٤ / ١٠

यह लोग	और इन्तिज़ार नहीं करते	14	अ़ज़ाब	पस आ पड़ा	रसूलों	झुटलाया	मगर	सब

اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۝١٥ وَقَالُوْا رَبَّنَا

ऐ हमारे रब	और उन्हों ने कहा	15	ढील	कोई	जिस के लिए नहीं	एक	चिंघाड़	मगर

عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۝١٦ اِصْبِرْ عَلٰى

उस पर	आप (स) सब्र करें	16	रोज़े हिसाब	पहले	हमारा हिस्सा	हमें	जल्दी दे

مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْاَيْدِ ۚ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝١٧

17	ख़ूब रुजूअ़ करने वाला	बेशक वह	कुव्वत वाला	दाऊद (अ)	हमारे बन्दे	और याद करें	जो वह कहते हैं

اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْاِشْرَاقِ ۝١٨

18	और सुबह के वक़्त	शाम के वक़्त	वह तस्बीह करते थे	उस के साथ	पहाड़	बेशक हम ने मुसख़्ख़र कर दिए

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ۭ كُلٌّ لَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿١٩﴾ وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ

हिक्मत	और हम ने उस को दी	उस की बादशाहत	और हम ने मज़बूत की	19	रुजूअ़ करने वाले	सब उस की तरफ़	इकट्ठे किए हुए	और परिन्दे

وقف لازم وَفَصْلَ الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾ وَهَلْ اَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ ۘ اِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾ لا

21	मेहराब	वह दीवार फांद कर आए	जब	ख़बर झगड़ने वाले	आप के पास आई (पहुँची)	और क्या	20	ख़िताब	और फ़ैसला कुन

اِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۚ خَصْمٰنِ بَغٰى

ज़्यादती की	हम दो झगड़ने वाले	ख़ौफ़ न खाओ	उन्हों ने कहा	उन से	तो वह घबराया	दाऊद (अ)	पर-पास	जब वह दाख़िल हुए

بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ اِلٰى

तरफ़	और हमारी रहनुमाई करें	और ज़ियादती (बेइन्साफ़ी न) करें	हक़ के साथ	हमारे दरमियान	तो आप फ़ैसला कर दें	दूसरे पर	हम में से एक

سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾ اِنَّ هٰذَآ اَخِيْ ۣ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً وَّلِيَ

और मेरे पास	दुंबियां	निन्यानवे (99)	उस के पास	मेरा भाई	बेशक यह	22	रास्ता	सीधा

نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ ۣ فَقَالَ اَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾ قَالَ

(दाऊद अ ने) कहा	23	गुफ़्तगू में	और उस ने मुझे दबाया	वह मेरे हवाले कर दे	पस उस ने कहा	एक	दुंबी

لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ اِلٰى نِعَاجِهٖ ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ

भागीदार	से	अक्सर	और बेशक	अपनी दुंबियां	तरफ़-साथ	तेरी दुंबी	मांगने से	यक़ीनन उस ने ज़ुल्म किया

لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

और उन्हों ने अ़मल किए दुरुस्त	जो ईमान लाए	सिवाए	बाज़	पर	उन में से बाज़	ज़ियादती किया करते हैं

وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ۭ وَظَنَّ دَاوٗدُ اَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا

झुक कर	और गिर गया	अपना रब	तो उस ने मग़्फ़िरत तलब की	हम ने उसे आज़माया है	कि कुछ	दाऊद (अ)	और ख़याल किया	वह-ऐसे	और बहुत कम

السجدة ١٠ وَّاَنَابَ ﴿٢٤﴾ فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۭ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ

और अच्छा	अलबत्ता कुर्ब	हमारे पास	उस के लिए	और बेशक	यह	उस की	पस हम ने बख़्श दी	24	और उस ने रुजूअ़ किया

مَاٰبٍ ﴿٢٥﴾ يٰدَاوٗدُ اِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْاَرْضِ فَاحْكُمْ

सो तू फ़ैसला कर	ज़मीन में	नाइब	हम ने तुझे बनाया	बेशक हम ने	ऐ दाऊद (अ)	25	ठिकाना

بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह का रास्ता	से	कि वह तुझे भटका दे	ख़ाहिश	और न पैरवी कर	हक़ के साथ	लोगों के दरमियान

اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا

उन्हों ने भुला दिया	उस पर कि	शदीद	अ़ज़ाब	उन के लिए	अल्लाह का रास्ता	से	भटकते हैं	जो लोग	बेशक

ع ٢ ١٢ ١١ يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾ وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ۭ

बातिल	उन के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मान	और नहीं पैदा किया हम ने	26	रोज़े हिसाब

ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾

27	आग	से	उन के लिए जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	पस ख़राबी है	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	गुमान	यह

और इकट्ठे किए हुए परिन्दे (भी उस के मुसख़्ख़र थे) सब उस की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले थे। (19) और हम ने उस की बादशाहत मज़बूत की और उस को हिक्मत दी और फ़ैसला कुन ख़िताब। (20) और क्या आप (स) के पास झगड़ने वालों (अहले मुक़द्दमा) की ख़बर पहुँची? जब वह दीवार फांद कर मेहराब में आ गए। (21) जब वह दाख़िल हुए दाऊद (अ) के पास तो वह उन से घबरागए। उन लोगों ने कहाः डरो नहीं, हम दो झगड़ने वाले (अहले मुक़द्दमा) हैं, हम में से एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है तो आप हमारे दरमियान फ़ैसला कर दें हक़ के साथ, और बेइन्साफ़ी न करें, और सीधे रास्ते की तरफ़ हमारी रहनुमाई करें। (22) बेशक मेरे इस भाई के पास निन्यानवे (99) दुंबियां हैं और मेरे पास (सिर्फ़) एक दुंबी है, पस उस ने कहा कि वह (भी) मेरे हवाले कर दे, और उस ने मुझे गुफ़्तगू में दबाया है। (23) दाऊद (अ) ने कहाः सचमुच उस ने तेरी दुंबी मांग कर ज़ुल्म किया है (कि) अपनी दुंबियों के साथ मिलाले, और बेशक अक्सर साथी एक दूसरे पर ज़ियादती किया करते हैं सिवाए उन के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए और (ऐसे लोग) बहुत कम हैं, और दाऊद (अ) ने ख़याल किया कि हम ने कुछ उसे आज़माया है तो उस ने अपने रब से मग़्फ़िरत तलब की, और झुक कर (सिज्दे में) गिर गया। (24) पस हम ने बख़्श दी उस की यह (लग़्ज़िश), और बेशक उस के लिए हमारे पास कुर्ब और अच्छा ठिकाना है। (25) ऐ दाऊद (अ)! बेशक हम ने तुझे बनाया ज़मीन (मुल्क) में नाइब, सो तू लोगों के दरमियान हक़ (इंसाफ़) के साथ फ़ैसला कर और (अपनी) ख़ाहिश की पैरवी न कर कि वह तुझे भटका दे अल्लाह के रास्ते से, बेशक जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटकते हैं उन के लिए शदीद अ़ज़ाब है इस लिए कि उन्हों ने रोज़े हिसाब को भुला दिया। (26) और हम ने आस्मान और ज़मीन और जो उन के दरमियान है बातिल (बेकार ख़ाली अज़ हिक्मत) नहीं पैदा किया, यह गुमान है (उन लोगों का) जिन्हों ने कुफ़्र किया, पस ख़राबी है काफ़िरों के लिए आग से। (27)

اَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	उन की तरह जो फ़साद फैलाते हैं	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	क्या हम कर देंगे

اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ﴿۲۸﴾ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ

मुबारक	आप (स) की तरफ़	हम ने उसे नाज़िल किया	एक किताब	28	बदकिरदारों की तरह	परहेज़गारों	हम कर देंगे	क्या

لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۲۹﴾ وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ

सुलेमान (अ)	दाऊद (अ) को	और हम ने अ़ता किया	29	अ़क़्ल वाले	और ताकि नसीहत पकड़ें	उस की आयात	ताकि वह ग़ौर करें

نِعْمَ الْعَبْدُ ۭ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ﴿۳۰﴾ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ

असील घोड़े	शाम के वक़्त	उस पर-सामने	पेश किए गए	जब	30	रुजूअ़ करने वाला	बेशक वह	बहुत अच्छा बन्दा

الْجِيَادُ ﴿۳۱﴾ فَقَالَ اِنِّىْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّىْ ۚ حَتّٰى

यहां तक कि	अपने रब की याद	से	माल की मुहब्बत	मैं ने दोस्त रखा	बेशक मैं	तो उस ने कहा	31	उम्दा

تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿۳۲﴾ رُدُّوْهَا عَلَىَّ ۭ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ

पिंडलियों पर	हाथ फेरना	फिर शुरु किया	मेरे सामने	फेर लाओ उन्हें	32	पर्दे में	छुप गए

وَالْاَعْنَاقِ ﴿۳۳﴾ وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا

एक धड़	उस के तख़्त पर	और हम ने डाला	सुलेमान	और अलबत्ता हम ने आज़माइश की	33	और गर्दनों

ثُمَّ اَنَابَ ﴿۳۴﴾ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَهَبْ لِىْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِىْ لِاَحَدٍ

किसी को	न सज़ा वार हो	ऐसी सलतनत	और अ़ता फ़रमा दे मुझे	मुझे बख़्शदे तू	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	34	फिर उस ने रुजूअ़ किया

مِّنْۢ بَعْدِىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿۳۵﴾ فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِىْ بِاَمْرِهٖ

उस के हुक्म से	वह चलती थी	हवा	फिर हम ने मुसख़्ख़र कर दिया उस के लिए	35	अ़ता फ़रमाने वाला	तू	बेशक तू	मेरे बाद

رُخَآءً حَيْثُ اَصَابَ ﴿۳۶﴾ وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ﴿۳۷﴾ وَّاٰخَرِيْنَ

और दूसरे	37	और ग़ोता मारने वाले	इमारत बनाने वाले	तमाम	और देव (जिन्नात)	36	वह पहुँचना चाहता	जहां	नर्मी से

مُقَرَّنِيْنَ فِى الْاَصْفَادِ ﴿۳۸﴾ هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ

बग़ैर	रोक रख	या	अब तू एहसान कर	हमारा अ़तिया	यह	38	ज़न्जीरों में	जकड़े हुए

حِسَابٍ ﴿۳۹﴾ وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿۴۰﴾ وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ ع ۳ ۱۴ ۱۲

हमारा बन्दा	और आप (स) याद करें	40	ठिकाना	और अच्छा	अलबत्ता क़ुर्ब	हमारे पास	और बेशक उस के लिए	39	हिसाब

اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ اَنِّىْ مَسَّنِىَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ﴿۴۱﴾ وقف لازم

41	और दुख	ईज़ा	शैतान	मुझे पहुँचाया	बेशक मैं	अपना रब	जब उस ने पुकारा	अय्यूब (अ)

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ ﴿۴۲﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗٓ

उस को	और हम ने अ़ता किया	42	और पीने के लिए	ठंडा	ग़ुस्ल के लिए	यह	अपना पाऊँ	(ज़मीन पर) मार

اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿۴۳﴾

43	अ़क़्ल वालों के लिए	और नसीहत	हमारी (तरफ़) से	रहमत	उन के साथ	और उन जैसे	उस के अहले ख़ाना

क्या हम कर देंगे? उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए उन लोगों की तरह जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं? क्या हम परहेज़गारों को कर देंगे फ़ाजिरों (बदकिरदारों) की तरह? (28)
हम ने आप की तरफ़ एक मुबारक किताब नाज़िल की ताकि वह उस की आयात पर ग़ौर करें, और ताकि अ़क़्ल वाले नसीहत पकड़ें। (29)
और हम ने दाऊद (अ) को सुलेमान (अ) अ़ता किया, बहुत अच्छा बन्दा, बेशक वह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करने वाला था। (30)
(वह वक़्त याद करो) जब शाम के वक़्त उस के सामने पेश किए गए असील, उम्दा घोड़े। (31)
तो उस ने कहा: बेशक मैं ने अपने रब की याद की वजह से माल की मुहब्बत को दोस्त रखा, यहां तक कि (घोड़े) छुप गए (दूरी के) परदे में। (32)
उन (घोड़ों) को मेरे सामने फेर लाओ, फिर वह उन की पिंडलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा। (33)
और अलबत्ता हम ने सुलेमान (अ) की आज़माइश की और हम ने उस के तख़्त पर एक धड़ डाला, फिर उस ने (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ किया। (34)
उस ने कहा ऐ मेरे रब! तू मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सलतनत अ़ता फ़रमा दे जो मेरे बाद किसी को सज़ावार (मयस्सर) न हो, बेशक तू ही अ़ता करने वाला है। (35)
फिर हम ने मुसख़्ख़र कर दिया उस के लिए हवा को, जहां वह पहुँचना चाहता, वह उस के हुक्म से नर्म नर्म चलती। (36)
और तमाम जिन्नात (ताबे कर दिए) इमारत बनाने वाले और ग़ोता मारने वाले। (37)
और दूसरे ज़न्जीरों में जकड़े हुए। (38)
यह हमारा अ़तिया है, अब तू एहसान कर या रख छोड़ हिसाब के बग़ैर (तुम से कुछ हिसाब न होगा)। (39)
और बेशक उस के लिए हमारे पास अलबत्ता क़ुर्ब और अच्छा ठिकाना है। (40)
और आप (स) याद करें हमारे बन्दे अय्यूब (अ) को जब उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने ईज़ा और दुख पहुँचाया है। (41)
(हम ने फ़रमाया) ज़मीन पर मार अपना पाऊँ, यह (लो) ग़ुस्ल के लिए ठंडा और पीने के लिए (शीरीं पानी)। (42)
और हम ने उस को उस के अहले ख़ाना और उन के साथ उन जैसे (और भी) अ़ता किए (यह) हमारी तरफ़ से रहमत और अ़क़्ल वालों के लिए नसीहत। (43)

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ

साबिर	हम ने उसे पाया	बेशक हम	और क़सम न तोड़	और उस से मार उस को	झाड़ू	अपने हाथ में	और तू ले

نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ﴿٤٤﴾ وَاذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ

और याक़ूब (अ)	और इस्हाक़ (अ)	इब्राहीम (अ)	हमारे बन्दों	और याद करें	44	बेशक वह (अल्लाह की तरफ़) रुजूअ़ करने वाला	अच्छा बन्दा

اُولِى الْاَيْدِىْ وَالْاَبْصَارِ ﴿٤٥﴾ اِنَّاۤ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ﴿٤٦﴾ ۚ

46	घर (आख़िरत का)	याद	ख़ास सिफ़त	हम ने उन्हें मुम्ताज़ किया	बेशक हम	45	और आँखों वाले	हाथों वाले

وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٧﴾ ؕ وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ

इस्माईल (अ)	और याद करें	47	सब से अच्छे	चुने हुए	अलबत्ता-से	हमारे नज़्दीक	और बेशक वह

وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ مِّنَ الْاَخْيَارِ ﴿٤٨﴾ ؕ هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَاِنَّ

और बेशक	यह एक नसीहत	48	सब से अच्छे लोग	से	और यह तमाम	और ज़ुलकिफ़्ल (अ)	और अलयसअ़ (अ)

لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٤٩﴾ ۙ جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ ﴿٥٠﴾ ۚ

50	दरवाज़े	उन के लिए	खुले हुए	हमेशा रहने के	बाग़ात	49	ठिकाना	अलबत्ता अच्छा	परहेज़गारों के लिए

مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ ﴿٥١﴾

51	और शराब (मश्रूबात)	बहुत से	मेवे	उन में	मंगवाएंगे	उन में	तकिया लगाए हुए वह

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ ﴿٥٢﴾ هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ

वादा किया जाता है तुम से	जो-जिस	यह	52	हम उम्र	निगाह	नीचे रखने वालियां	और उन के पास

لِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾ اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ ﴿٥٤﴾ ۚ هٰذَا ؕ وَاِنَّ

और बेशक	यह	54	ख़त्म होना	उसके लिए - उस को नहीं	यक़ीनन हमारा रिज़्क़	यह	बेशक	53	रोज़े हिसाब के लिए

لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ ﴿٥٥﴾ ۙ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿٥٦﴾ هٰذَا ۙ

यह	56	बिछोना	सो बुरा	वह उस में दाख़िल होंगे	जहन्नम	55	ठिकाना	अलबत्ता बुरा	सरकशों के लिए

فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ ﴿٥٧﴾ ۙ وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ ﴿٥٨﴾ ؕ هٰذَا

यह	58	कई क़िस्में	उस की शक्ल की	और उस के अ़लावा	57	और पीप	खौलता हुआ पानी	पस उस को चखो तुम

فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًا ۢ بِهِمْ ؕ اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ﴿٥٩﴾ قَالُوْا

वह कहेंगे	59	दाख़िल होने वाले जहन्नम में	बेशक वह	उन्हें	न हो कोई फ़राख़ी	तुम्हारे साथ	घुस रहे हैं	एक जमाअ़त

بَلْ اَنْتُمْ ۖ لَا مَرْحَبًا ۢ بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٦٠﴾

60	ठिकाना	सो बुरा	हमारे लिए	तुम ही यह आगे लाए	बेशक तुम	तुम्हें	कोई मरहबा न हो	बल्कि तुम

قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِى النَّارِ ﴿٦١﴾

61	जहन्नम में	दो चंद	अ़ज़ाब	तू ज़ियादा कर दे	यह	हमारे लिए	जो आगे लाया	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे

وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿٦٢﴾ ؕ

62	अश्रार (बहुत बुरे)	से	हम शुमार करते थे उन्हें	वह लोग	हम नहीं देखते	क्या हुआ हमें	और वह कहेंगे

और अपने हाथ में झाड़ू ले और तू उस से (अपनी बीवी को) मार, और क़सम न तोड़, बेशक हम ने उसे साबिर पाया (और) अच्छा बन्दा, बेशक अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ करने वाला। (44)

और आप (स) हमारे बन्दों इब्राहीम (अ) और इस्हाक़ (अ) और याक़ूब (अ) को याद करें जो हाथों वाले और आँखों वाले (इल्म ओ अ़क़्ल की क़ुव्वतों वाले) थे। (45)

हम ने उन्हें एक ख़ास सिफ़त से मुम्ताज़ किया (और वह है) याद आख़िरत के घर की। (46)

और बेशक वह हमारे नज़्दीक चुने हुए सब से अच्छे लोगों में से थे। (47)

और आप (स) याद करें इस्माईल (अ) और अलयसअ़ (अ) और ज़ुलकिफ़्ल (अ) को, और यह तमाम ही सब से अच्छे लोगों में से थे। (48)

यह एक नसीहत है, और परहेज़गारों के लिए अलबत्ता अच्छा ठिकाना है। (49)

हमेशा रहने के बाग़ात, जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले होंगे। (50)

उन में तकिया लगाए हुए होंगे, और उन में मंगवाएंगे मेवे बहुत से और मश्रूबात। (51)

और उन के पास नीची निगाह रखने वाली (बा हया) हम उम्र (औरतें) होंगी। (52)

यह है जिस का तुम से वादा किया जाता है रोज़े हिसाब के लिए। (53)

बेशक यह हमारा रिज़्क़ है, उस को (कभी) ख़तम होना नहीं। (54)

यह है (जज़ा)। और बेशक सरकशों के लिए अलबत्ता बुरा ठिकाना है। (55)

(यानी) जहन्नम, जिस में वह दाख़िल होंगे, सो बुरा है फ़र्श (उन की आरामगाह)। (56)

यह खौलता हुआ पानी और पीप है, पस तुम उस को चखो। (57)

और उस के अ़लावा उस की शक्ल की कई क़िस्में होंगी। (58)

यह एक जमाअ़त है जो तुम्हारे साथ (जहन्नम में) दाख़िल हो रही है, उन्हें कोई फ़राख़ी न हो, बेशक वह जहन्नम में दाख़िल होने वाले हैं। (59)

वह कहेंगेः बल्कि तुम्हें कोई फ़राख़ी न हो, बेशक तुम ही हमारे लिए यह (मुसीबत) आगे लाए हो, सो बुरा है ठिकाना। (60)

वह कहेंगे, ऐ हमारे रब! जो हमारे लिए यह (मुसीबत) आगे लाया है तू जहन्नम में (उस के लिए) अ़ज़ाब दो चन्द कर दे। (61)

और वह कहेंगे हमें क्या हुआ? हम (दोज़ख़ में) उन लोगों को नहीं देखते जिन्हें हम बुरे लोगों में शुमार करते थे। (62)

ع ٤ ١٣

اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾ اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ

बिलकुल सच	बेशक यह	63	आँखें	उन से	कज हो गई हैं	या	ठठे में	क्या हम ने उन्हें पकड़ा था

تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ

अल्लाह के सिवा	कोई माबूद	और नहीं	डराने वाला	कि मैं	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें	64	अहले दोज़ख़	बाहम झगड़ना

الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ

ग़ालिब	उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	रब	65	ज़बरदस्त	वाहिद (यकता)

الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾ قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾ اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾

68	मुँह फेरने वाले (बेपरवाह हो)	उस से	तुम	67	एक ख़बर बड़ी	वह-यह	फ़रमादें	66	बड़ा बख़्शने वाला

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍۢ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰٓى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٦٩﴾ اِنْ يُّوْحٰٓى

नहीं वहि की जाती	69	वह बाहम झगड़ते थे	जब	आलमे बाला की	कुछ ख़बर	मेरे पास (मुझे)	न था

اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٠﴾ اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ

कि मैं	फ़रिश्तों को	तुम्हारा रब	जब कहा	70	साफ़ साफ़	मैं डराने वाला	यह कि	सिवाए	मेरी तरफ़

خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ﴿٧١﴾ فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ

अपनी रूह	से	उस में	और मैं फूँकूं	मैं दुरुस्त कर दूँ उसे	फिर जब	71	मिट्टी से	एक बशर	पैदा करने वाला

فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٧٢﴾ فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِلَّآ

सिवाए	73	इकटठे	सब	फ़रिश्ते	पस सिज्दा किया	72	सिज्दा करते हुए	उस के लिए (आगे)	तो तुम गिर पड़ो

اِبْلِيْسَ ۭ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾ قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ

किस ने मना किया तुझे	ऐ इब्लीस	उस ने फ़रमाया	74	काफ़िरों	से	और वह हो गया	उस ने तकब्बुर किया	इब्लीस

اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۭ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ

से	या तू है	क्या तू ने तकब्बुर किया	अपने हाथों से	मैं ने पैदा किया	उस को जिसे	कि तू सिज्दा करे

الْعَالِيْنَ ﴿٧٥﴾ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۭ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ

और तू ने पैदा किया उसे	आग से	तू ने पैदा किया मुझे	उस से	बेहतर	मैं	उस ने कहा	75	बुलन्द दरजे वाले

مِنْ طِيْنٍ ﴿٧٦﴾ قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ ﴿٧٧﴾ وَّاِنَّ عَلَيْكَ

तुझ पर	और बेशक	77	रांदा-ए-दरगाह	क्योंकि तू	यहां से	पस निकल जा	उस ने फ़रमाया	76	मिट्टी	से

لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٧٨﴾ قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى

तक	पस तू मुझे मोहलत दे	ऐ मेरे रब	उस ने कहा	78	रोज़े क़ियामत	तक	मेरी लानत

يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ﴿٧٩﴾ قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ﴿٨٠﴾ اِلٰى يَوْمِ

दिन	तक	80	मोहलत दिए जाने वाले	से	पस बेशक तू	उस ने फ़रमाया	79	जिस दिन उठाए जाएंगे

الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ ﴿٨١﴾ قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٢﴾

82	सब	मैं ज़रूर उन्हें गुमराह करूँगा	सो तेरी इज़्ज़त की क़सम	उस ने कहा	81	वक़्त मुअय्यन

क्या हम ने उन्हें ठठे में पकड़ा था? या कज हो गई हैं उन से (हमारी) आँखें? (63) बेशक अहले दोज़ख़ का बाहम यह झगड़ना बिलकुल सच है। (64) आप (स) फ़रमा दें: इस के सिवा नहीं कि मैं डराने वाला हूँ और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वह यकता ज़बरदस्त है। (65) परवरदिगार है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन दोनों के दरमियान है, ग़ालिब, बड़ा बख़्शने वाला। (66) आप फ़रमा दें यह एक बड़ी ख़बर है। (67) तुम उस से बेपरवाह हो। (68) मुझे कुछ ख़बर न थी आलमे बाला (बुलन्द क़द्र फ़रिश्तों) की जब वह बाहम झगड़ते थे। (69) मेरी तरफ़ इस के सिवा वहि नहीं की जाती कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (70) (याद करो) जब तुम्हारे रब ने कहा फ़रिश्तों को कि मैं मिट्टी से एक बशर पैदा करने वाला हूँ। (71) फिर जब मैं उसे दुरुस्त कर दूँ और उस में अपनी रूह से फूँक दूँ तो तुम गिर पड़ो उस के आगे सिज्दा करते हुए। (72) पस सब फ़रिश्तों ने इकटठे सिज्दा किया। (73) सिवाए इब्लीस के, उस ने तकब्बुर किया और वह हो गया काफ़िरों में से। (74) (अल्लाह ने) फ़रमाया ऐ इब्लीस! उस को सिज्दा करने से तुझे किस ने मना किया (रोका) जिसे मैं ने अपने हाथों से पैदा किया? क्या तू ने तकब्बुर किया (अपने को बड़ा समझा) या तू बुलन्द दरजे वालों में से है? (75) उस ने कहा: मैं उस से बेहतर हूँ, तू ने मुझे आग से पैदा किया और उसे पैदा किया मिट्टी से। (76) (अल्लाह तआला ने) फ़रमाया: पस यहां से निकल जा क्योंकि तू रांदा-ए-दरगाह है। (77) और बेशक तुझ पर मेरी लानत रहेगी रोज़े क़ियामत तक। (78) उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुझे उस दिन तक मोहलत दे जिस दिन (मुर्दे) उठाए जाएंगे। (79) (अल्लाह ने) फ़रमाया: पस तू मोहलत दिए जाने वालों में से है। (80) उस दिन तक जिस का वक़्त मुझे मालूम है। (81) उस ने कहा मुझे तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं उन सब को ज़रूर गुमराह करूँगा। (82)

ع ٥ ٢٤ ١٤

اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿٨٣﴾ قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ ﴿٨٤﴾

84	मैं कहता हूँ	और सच	यह हक़ (सच)	उस ने फ़रमाया	83	मुख़्लिस (जमा)	उन में से	सिवाए तेरे बन्दे

لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٥﴾ قُلْ

फ़रमा दें	85	सब	उन से	तेरे पीछे चलें	और उन से जो	तुझ से	जहन्नम	मैं ज़रूर भर दूँगा

مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ ﴿٨٦﴾ اِنْ

नहीं	86	बनावट करने वालों से	मैं	और नहीं	कोई अजर	इस पर	मैं मांगता तुम से	नहीं

هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ ﴿٨٨﴾

88	एक वक़्त	बाद	उस का हाल	और तुम ज़रूर जान लोगे	87	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	यह मगर

آيَاتُهَا ٧٥ ❀ (٣٩) سُوْرَةُ الزُّمَرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٨

आयात 75 — (39) सूरतुज़ ज़ुमर — टोलियाँ, गिरोह — रुकूआत 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿١﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ

तुम्हारी तरफ़	बेशक हम ने नाज़िल की	1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह की तरफ़ से	यह किताब	नाज़िल किया जाना

الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿٢﴾ اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ

अल्लाह के लिए दीन	याद रखो	2	दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	पस अल्लाह की इबादत करो	हक़ के साथ	यह किताब

وقف لازم

الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ

नहीं इबादत करते हम उन की	दोस्त	उस के सिवा	बनाते हैं	और जो लोग	ख़ालिस

اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ

उस में	वह	जिस में	उन के दरमियान	फ़ैसला कर देगा	बेशक अल्लाह	क़ुर्ब का दर्जा	अल्लाह का	मगर इस लिए कि वह मुक़र्रब बना दें हमें

يَخْتَلِفُوْنَ ڛ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣﴾ لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ

चाहता अल्लाह	अगर	3	नाशुक्रा	झूटा	जो हो	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	वह इख़्तिलाफ़ करते हैं

اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ

वह पाक है	जिसे वह चाहता	वह पैदा करता है (मख़्लूक़)	उस से जो	अलबत्ता वह चुन लेता	औलाद	कि बनाए

هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٤﴾ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ

हक़ (दुरुस्त तदबीर के) साथ	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया	4	ज़बरदस्त	वाहिद (यकता)	वही अल्लाह

يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ

सूरज	और उस ने मुसख़्ख़र किया	रात पर	और दिन को लपेटता है	दिन पर	रात	वह लपेटता है

وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿٥﴾

5	बख़्शने वाला	वह ग़ालिब	याद रखो	मुक़र्ररा	एक मुद्दत	हर एक चलता है	और चाँद

उन में से तेरे मुख़्लिस (ख़ास) बन्दों के सिवा। (83) (अल्लाह ने) फ़रमायाः यह सच है और मैं सच ही कहता हूँ। (84) मैं ज़रूर जहन्नम भर दूँगा तुझ से और उन सब से जो तेरे पीछे चलें। (85) आप (स) फ़रमा दें: मैं तुम से इस (तबलीग़े क़ुरआन) पर कोई अजर नहीं मांगता, और नहीं हूँ मैं बनावट करने वालों में से। (86) यह (क़ुरआन) नहीं है मगर तमाम जहानों के लिए नसीहत। (87) और उस का हाल तुम एक वक़्त के बाद (जल्द ही) ज़रूर जान लोगे। (88)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

इस किताब का नाज़िल किया जाना अल्लाह ग़लिब, हिक्मत वाले की तरफ़ से है। (1) बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ यह किताब हक़ के साथ नाज़िल की है, पस तुम अल्लाह की इबादत करो दीन उसी के लिए ख़ालिस कर के। (2) याद रखो! दीन ख़ालिस अल्लाह ही के लिए है, और जो लोग उस के सिवा दोस्त बनाते हैं (वह कहते हैं) हम सिर्फ़ इस लिए उन की इबादत करते हैं कि वह क़ुर्ब के दरजे में हमें अल्लाह का मुक़र्रब बना दें, बेशक अल्लाह उन के दरमियान उस (अम्र) में फ़ैसला फ़रमा देगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते हैं, बेशक अल्लाह किसी झूटे, नाशुक्रे को हिदायत नहीं देता। (3) अगर अल्लाह चाहता कि बनाले (किसी को अपनी) औलाद तो वह अपनी मख़्लूक़ में से जिस को चाहता चुन लेता, वह पाक है, वही है अल्लाह यकता, ज़बरदस्त। (4) उस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को दुरुस्त तदबीर के साथ, वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उस ने मुसख़्ख़र किया सूरज और चाँद को, हर एक, एक मुद्दते मुक़र्ररा तक चलता है, याद रखो, वह ग़ालिब, बख़्शने वाला है। (5)

उस ने तुम्हें नफ़्से वाहिद (आदम अ) से पैदा किया, फिर उस ने उस से उस का जोड़ा बनाया, और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ जोड़े भेजे, वह तुम्हें पैदा करता है तुम्हारी माँओं के पेटों में, तीन तारीकियों के अन्दर एक कैफ़ियत के बाद दूसरी कैफ़ियत में, यह है तुम्हारा अल्लाह, तुम्हारा परवरदिगार, उसी के लिए है बादशाहत, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तुम कहां फिरे जाते हो? (6) अगर तुम नाशुक्री करोगे तो बेशक अल्लाह तुम से बेनियाज़ है, और वह पसंद नहीं करता अपने बन्दों के लिए नाशुक्री, और अगर तुम शुक्र करोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे पसंद करता है, और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता, फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौटना है, फिर वह तुम्हें जतला देगा जो तुम करते थे। बेशक वह दिलों की पोशीदा बातों को (भी) जानने वाला है। (7) और जब इन्सान को कोई सख़्ती पहुँचे तो वह अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ कर के उसे पुकारता है, फिर जब वह उसे अपनी तरफ़ से नेमत दे तो वह भूल जाता है जिस के लिए वह उस से क़ब्ल (अल्लाह को) पुकारता था, और वह अल्लाह के लिए शरीक बनालेता है ताकि उस के रास्ते से गुमराह करे, आप (स) फ़रमा दें: तू फ़ाइदा उठाले अपने कुफ़्र से थोड़ा, बेशक तू दोज़ख़ वालों में से है। (8) (क्या यह नाशुक्रा बेहतर है) या वह? जो रात की घड़ियों में इबादत करने वाला सिज्दा करने वाला हो कर और क़याम करने वाला, (और) वह आख़िरत से डरता है और अपने रब की रहमत से उम्मीद रखता है। आप (स) फ़रमा दें: क्या बराबर हैं वह जो इल्म रखते हैं और वह जो इल्म नहीं रखते? इस के सिवा नहीं कि अ़क़्ल वाले ही नसीहत क़ुबूल करते हैं। (9) आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो! तुम अपने रब से डरो, जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छे काम किए उन के लिए भलाई है, और अल्लाह की ज़मीन वसीअ़ है, इस के सिवा नहीं कि सब्र करने वालों को उन का अजर बेहिसाब पूरा पूरा दिया जाएगा। (10)

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ

उस ने पैदा किया तुम्हें	से	नफ़्से वाहिद	फिर उस ने बनाया	उस से	उस का जोड़ा	और उस ने भेजे	तुम्हारे लिए

مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِىْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا

चौपायों से	आठ (8)	जोड़े	वह पैदा करता है तुम्हें	पेटों में	तुम्हारी माएं	एक कैफ़ियत

مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِىْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَآ اِلٰهَ

के बाद	दूसरी कैफ़ियत	तारीकियों में	तीन (3)	यह तुम्हारा अल्लाह	तुम्हारा परवरदिगार	उस के लिए	बादशाहत	नहीं कोई माबूद

اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ﴿۶﴾ اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ عَنْكُمْ ۟

उस के सिवा	तो कहां	तुम फिरे जाते हो	6	अगर तुम नाशुक्री करोगे	तो बेशक अल्लाह	बेनियाज़	तुम से

وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ

और वह पसंद नहीं करता	अपने बन्दों के लिए	नाशुक्री	और अगर	तुम शुक्र करोगे	वह उसे पसंद करता है तुम्हारे लिए	और नहीं उठाता	कोई बोझ उठाने वाला बोझ

اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ

दूसरे का	फिर	तरफ़	अपना रब	लौटना है तुम्हें	फिर वह जतला देगा तुम्हें	वह जो	तुम करते थे	बेशक वह

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۷﴾ وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ

जानने वाला	सीनों (दिलों) की पोशीदा बातें	7	और जब	लगे- पहुँचे	इन्सान	कोई सख़्ती	वह पुकारता है अपना रब

مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِىَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ

रुजूअ़ कर के	उस की तरफ़	फिर जब	वह उसे दे	नेमत	अपनी तरफ़ से	वह भूल जाता है	जो	वह पुकारता था	उस की तरफ़-लिए

مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ

उस से क़ब्ल	और वह बना लेता है अल्लाह के लिए	शरीक (जमा)	ताकि गुमराह करे	उस के रास्ते से	फ़रमा दें	फ़ाइदा उठा ले

بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ؕ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ﴿۸﴾ اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ

अपने कुफ़्र से	थोड़ा	बेशक तू	से	आग (दोज़ख़) वाले	8	या जो	वह	इबादत करने वाला

اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ

घड़ियों में रात की	सिज्दा करने वाला	और क़याम करने वाला	वह डरता है	आख़िरत	और उम्मीद रखता है	रहमत	अपना रब

قُلْ هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا

फ़रमा दें	क्या	बराबर हैं	वह लोग जो	वह इल्म रखते हैं	और वह लोग	जो इल्म नहीं रखते	इस के सिवा नहीं

يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿۹﴾ قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا ع ١ ١٥

नसीहत क़ुबूल करते हैं	अ़क़्ल वाले	9	फ़रमा दें	ऐ मेरे बन्दो	जो	ईमान लाए	तुम डरो

رَبَّكُمْ ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِىْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَاَرْضُ اللّٰهِ

अपना रब	उन के लिए जिन्हों ने	अच्छे काम किए	में	इस दुनिया	भलाई	और अल्लाह की ज़मीन

وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۱۰﴾

वसीअ़	इस के सिवा नहीं	पूरा बदला दिया जाएगा	सब्र करने वाले	उन का अजर	बेहिसाब	10

قُلْ اِنِّیْۤ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ﴿١١﴾ وَاُمِرْتُ لِاَنْ

उस का	और मुझे हुक्म दिया गया	11	दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	मैं अल्लाह की इबादत करूँ	कि	बेशक मुझे हुक्म दिया गया	फ़रमा दें

اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٢﴾ قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّیْ عَذَابَ

अ़ज़ाब	अपना रब	मैं नाफ़रमानी करूँ	अगर	बेशक मैं डरता हूँ	फ़रमा दें	12	फ़रमांबरदार- मुस्लिम (जमा)	पहला	कि मैं हूँ

يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣﴾ قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِیْ ﴿١٤﴾ فَاعْبُدُوْا

परस्तिश करो	14	अपना दीन	उसी के लिए	ख़ालिस कर के	मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ	फ़रमा दें	13	एक बड़ा दिन

مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

अपने आप को	घाटे में डाला	वह जिन्हों ने	घाटा पाने वाले	बेशक	फ़रमा दें	उस के सिवाए	जिस की तुम चाहो

وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ﴿١٥﴾ لَهُمْ

उन के लिए	15	सरीह	घाटा	वह	यह	ख़ूब याद रखो	रोज़े क़ियामत	और अपने घर वाले

مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ

उस से	डराता है अल्लाह	यह	सायबान (चादरें)	और उन के नीचे से	आग के	सायबान	उन के ऊपर से

عِبَادَهٗ ؕ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ﴿١٦﴾ وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ

कि	सरकश (शैतान)	बचते रहे	और जो लोग	16	पस मुझ से डरो	ऐ मेरे बन्दो	अपने बन्दो

يَّعْبُدُوْهَا وَاَنَابُوْۤا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿١٧﴾ الَّذِيْنَ

वह जो	17	मेरे बन्दों	सो ख़ुशख़बरी दें	ख़ुशख़बरी	उन के लिए	अल्लाह की तरफ़	और उन्हों ने रुजूअ़ किया	उस की परस्तिश करें

يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ

उन्हें हिदायत दी अल्लाह ने	वह जिन्हें	वही लोग	उस की अच्छी बातें	फिर पैरवी करते हैं	बात	सुनते हैं

وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿١٨﴾ اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ

अ़ज़ाब	हुक्म- वईद	उस पर	साबित हो गया	क्या तो- जो-जिस	18	अ़क़्ल वाले	वह	और यही लोग

اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِى النَّارِ ﴿١٩﴾ لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ

बाला ख़ाने	उन के लिए	अपना रब	जो लोग डरे	लेकिन	19	आग में	जो	बचा लोगे	क्या पस तुम

مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ

ख़िलाफ़ नहीं करता	अल्लाह का वादा	नहरें	उन के नीचे	जारी हैं	बने बनाए	बाला ख़ाने	उन के ऊपर से

اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ﴿٢٠﴾ اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ

चश्मे	फिर चलाया उस को	पानी	आस्मान से	उतारा	कि अल्लाह	क्या तू ने नहीं देखा	20	वादा	अल्लाह

فِى الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا

ज़र्द	फिर तू देखे उसे	फिर वह ख़ुश्क हो जाती है	उस के रंग	मुख़्तलिफ़	खेती	उस से	वह निकालता है	फिर	ज़मीन में

ع ٢ ١٢ ١٦ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطٰمًا ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿٢١﴾

21	अ़क़्ल वालों के लिए	अलबत्ता नसीहत	इस में	बेशक	चूरा चूरा	फिर वह कर देता है उसे

आप (स) फ़रमा दें कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ ख़ालिस कर के उसी के लिए दीन। (11)
और मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहले मैं ख़ुद मुसलिम बनों। (12)
आप (स) फ़रमा दें, बेशक मैं डरता हूँ कि अगर मैं नाफ़रमानी करूँ अपने परवरदिगार की, एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से। (13)
आप (स) फ़रमा दें: मैं अल्लाह की इबादत करता हूँ उसी के लिए अपना दीन ख़ालिस कर के। (14)
पस तुम जिस की चाहो परस्तिश करो अल्लाह के सिवा, आप (स) फ़रमा दें: बेशक वह घाटा पाने वाले हैं जिन्हों ने अपने आप को और अपने घर वालों को घाटे में डाला रोज़े क़ियामत, ख़ूब याद रखो! यही है सरीह घाटा। (15)
उन के लिए उन के ऊपर से आग के साएबान होंगे और उन के नीचे से भी (आग की) चादरें। यह है जिस से अल्लाह अपने बन्दों को डराता है। ऐ मेरे बन्दो! मुझ ही से डरो। (16)
और जो लोग तागूत से बचते रहे कि उस की परस्तिश करें, और उन्हों ने अल्लाह की तरफ़ रुजूअ़ किया, उन के लिए ख़ुशख़बरी है। सो आप (स) मेरे बन्दों को ख़ुशख़बरी दें। (17)
जो (पूरी तवज्जुह से) बात सुनते हैं फिर उस की अच्छी अच्छी बातों की पैरवी करते हैं, यही वह लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी, और यही लोग हैं अ़क़्ल वाले। (18)
तो क्या जिस पर अ़ज़ाब की वईद साबित हो गई, पस क्या तुम उसे बचा लोगे जो आग में (गिर गया)? (19)
लेकिन जो लोग डरे अपने रब से, उन के लिए बाला ख़ाने हैं, उन के ऊपर बने बनाए बाला ख़ाने हैं, उन के नीचे नहरें जारी हैं, अल्लाह का वादा है, अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं करता। (20)
क्या तू ने नहीं देखा? कि अल्लाह ने आस्मान से पानी उतारा, फिर उसे चश्मे (बना कर) ज़मीन में चलाया, फिर वह उस से मुख़्तलिफ़ रंगों की खेती निकालता है, फिर वह ख़ुश्क हो जाती है, फिर तू उसे ज़र्द देखता है, फिर वह उसे चूरा चूरा कर देता है, बेशक इस में अलबत्ता नसीहत है अ़क़्ल वालों के लिए। (21)

اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ

सो ख़राबी	अपने रब की तरफ़ से	नूर	पर	तो वह	इस्लाम के लिए	उस का सीना	अल्लाह ने खोल दिया	क्या - पस जिस

لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٢﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	22	खुली	गुमराही	में	यही लोग	अल्लाह की याद	से	उन के दिल	उन के लिए- सख़्त

نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِىَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ

जिल्दें	उस से	बाल खड़े हो जाते हैं	दोहराई गई	मिलती जुलती (आयात वाली)	एक किताब	बेहतरीन कलाम	नाज़िल किया

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ

अल्लाह की याद	तरफ़	और उन के दिल	उन की जिल्दें	नर्म हो जाती हैं	फिर	अपना रब	वह डरते हैं	जो लोग

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ

गुमराह करता है अल्लाह	और जो- जिस	जिसे वह चाहता है	हिदायत देता है उस से	अल्लाह की हिदायत	यह

فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾ اَفَمَنْ يَّتَّقِىْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ

बुरा अज़ाब	अपने चेहरे से	बचाता है	क्या पस जो	23	कोई हिदायत देने वाला	उस के लिए	तो नहीं

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ﴿٢٤﴾ كَذَّبَ

झुटलाया	24	तुम कमाते (करते) थे	जो	तुम चखो	ज़ालिमों को	और कहा जाएगा	क़ियामत के दिन

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٥﴾

25	उन्हें ख़याल न था	जहां से	अज़ाब	तो उन पर आ गया	इन से पहले	जो लोग

فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْىَ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ

आख़िरत	और अलबत्ता अज़ाब	दुनिया	ज़िन्दगी	में	रुस्वाई	पस चखाया उन्हें अल्लाह ने

اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِىْ وقف لازم

में	लोगों के लिए	और तहक़ीक़ हम ने बयान की	26	वह जानते होते	काश	बहुत ही बड़ा

هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا

अरबी	क़ुरआन	27	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	मिसाल	हर क़िस्म की	इस क़ुरआन

غَيْرَ ذِىْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٢٨﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ

उस में	एक आदमी	एक मिसाल	बयान की अल्लाह ने	28	परहेज़गारी इख़्तियार करें	ताकि वह	किसी कजी के बग़ैर

شُرَكَآءُ مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ

मिसाल (हालत)	दोनों की बराबर है	क्या	एक आदमी के लिए	सालिम (ख़ालिस)	और एक आदमी	आपस में ज़िद्दी	कई शरीक

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٩﴾ اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ

और बेशक वह	मरने वाले	बेशक तुम	29	इल्म नहीं रखते	उन में अक्सर	बल्कि	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

مَّيِّتُوْنَ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ﴿٣١﴾ ع ٣ ١٧

31	तुम झगड़ोगे	अपना रब	पास	क़ियामत के दिन	बेशक तुम	फिर	30	मरने वाले

पस क्या जिस का सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया तो वह अपने रब की तरफ़ से नूर पर है (क्या वह और संगदिल बराबर हैं) सो ख़राबी है उन के लिए जिन के दिल अल्लाह के ज़िक्र से ज़ियादा सख़्त हो गए, यही लोग गुमराही में हैं खुली। (22)

अल्लाह ने बेहतरीन कलाम नाज़िल किया, एक किताब जिस के मज़ामीन मिलते जुलते, बार बार दोहराए गए हैं, उस से बाल (रोंगटे) खड़े हो जाते हैं उन लोगों की जिल्दों पर जो अपने रब से डरते हैं, फिर उन की जिल्दें और उन के दिल नर्म हो जाते हैं अल्लाह की याद की तरफ़ (राग़िब होते हैं), यह है अल्लाह की हिदायत, उस से अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और जिसे अल्लाह गुमराह करे उस के लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं। (23)

पस क्या जो शख़्स क़ियामत के दिन अपने चेहरे को बुरे अज़ाब से बचाता है (अहले जन्नत के बराबर हो सकता है?) और ज़ालिमों को कहा जाएगा तुम (उस का मज़ा) चखो जो तुम करते थे। (24)

जो लोग उन से पहले थे उन्हों ने झुटलाया तो उन पर अज़ाब आगया जहां से उन्हें ख़याल (भी) न था। (25)

पस अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रुस्वाई (का मज़ा) चखाया, और अलबत्ता आख़िरत का अज़ाब बहुत ही बड़ा है, काश वह जानते होते। (26)

और तहक़ीक़ हम ने इस क़ुरआन में लोगों के लिए बयान की हर क़िस्म की मिसाल ताकि वह नसीहत पकड़ें। (27)

क़ुरआन अ़रबी (ज़बान में), किसी (भी) कजी के बग़ैर ताकि वह परहेज़गारी इख़्तियार करें। (28)

अल्लाह ने एक मिसाल बयान की है, एक आदमी (ग़ुलाम) है, उस में कई (आक़ा) शरीक हैं जो आपस में ज़िद्दी (झगड़ालू) हैं और एक आदमी एक आदमी का (ग़ुलाम) है, क्या दोनों की हालत बराबर है? तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं बल्कि उन में से अक्सर इल्म नहीं रखते। (29)

बेशक तुम मरने (इन्तिक़ाल करने) वाले हो, और वह (भी) मरने वाले हैं। (30)

फिर बेशक तुम क़ियामत के दिन अपने रब के पास झगड़ोगे। (31)

فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ

पस कौन	बड़ा ज़ालिम	से-जिस	झूट बान्धा	अल्लाह पर	और उस ने झुटलाया	सच्चाई को

اِذْ جَآءَهٗ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَالَّذِيْ جَآءَ

जब	वह उस के पास आई	क्या नहीं	जहन्नम में	ठिकाना	काफ़िरों के लिए	32	और जो शख़्स	आया

بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿٣٣﴾ لَهُمْ

सच्चाई के साथ	और उस ने उस की तस्दीक़ की	उस को	यही लोग	वह	मुत्तक़ी (जमा)	33	उन के लिए

مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ ذٰلِكَ جَزٰۗؤُا الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٣٤﴾ لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ

जो वह चाहेंगे	हाँ-पास	उन का रब	यह	जज़ा	नेकोकारों (जमा)	34	ताकि दूर कर दे अल्लाह

عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ

उन से	बुराई	वह जो	उन्हों ने किए (आमाल)	और उन्हें जज़ा दे	उन का अजर	बेहतरीन (आमाल)

الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٥﴾ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ۭ وَيُخَوِّفُوْنَكَ

वह जो	वह करते थे	35	क्या नहीं	अल्लाह	काफ़ी	अपने बन्दे को	और वह ख़ौफ़ दिलाते हैं आप को

بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

उन से जो	उस के सिवा	और जिस	गुमराह कर दे अल्लाह	तो नहीं उस के लिए	कोई हिदायत देने वाला	36

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ۭ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ

और जिस	अल्लाह हिदायत दे	तो नहीं	उस के लिए	कोई	गुमराह करने वाला	क्या नहीं अल्लाह	ग़ालिब

ذِي انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾ وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

बदला लेने वाला	37	और अगर	तुम पूछो उन से	कौन-किस	पैदा किया	आस्मानों

وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ

और ज़मीन	तो वह ज़रूर कहेंगे	अल्लाह	फ़रमा दें	क्या पस देखा तुम ने	जिन को तुम पुकारते हो

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ

से	अल्लाह के सिवा	अगर	चाहे मेरे लिए अल्लाह	कोई ज़र्र	क्या	वह सब	दूर करने वाले हैं

ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ۭ قُلْ

उस का ज़र्र	या	वह चाहे मेरे लिए	कोई रहमत	क्या	वह सब	रोकने वाले हैं	उस की रहमत	फ़रमा दें

حَسْبِيَ اللّٰهُ ۭ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿٣٨﴾ قُلْ يٰقَوْمِ

काफ़ी है मेरे लिए अल्लाह	उस पर	भरोसा करते हैं	भरोसा करने वाले	38	फ़रमा दें	ऐ मेरी क़ौम

اعْمَلُوْا عَلٰي مَكَانَتِكُمْ اِنِّىْ عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾

तुम काम किए जाओ	पर	अपनी जगह	बेशक मैं	काम करता हूँ	पस अनक़रीब	तुम जान लोगे	39

مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ﴿٤٠﴾

कौन	आता है उस पर	अज़ाब	रुस्वा कर दे उस को	और उतर आता है	उस पर	अज़ाब	दाइमी	40

पस उस से बड़ा ज़ालिम और कौन? जिस ने अल्लाह पर झूट बान्धा, और सच्चाई को झुटलाया जब वह उस के पास आई, क्या काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? (32)
और जो शख़्स सच्चाई के साथ आया और उस ने उस की तस्दीक़ की, यही लोग मुत्तक़ी (परहेज़गार) हैं। (33)
उन के लिए हैं उन के रब के हां जो (भी) वह चाहेंगे, यह जज़ा है नेकोकारों की। (34)
ताकि अल्लाह उन से उन के आमाल की बुराई दूर करदे और उन्हें नेक कामों का अजर दे उन के बेहतरीन अमल के लिहाज़ से जो वह करते थे। (35)
क्या अल्लाह अपने बन्दे को काफ़ी नहीं? और वह आप (स) को डराते हैं उन (झूटे माबूदों) से जो उस के सिवा हैं, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे तो उस को कोई हिदायत देने वाला नहीं। (36)
और जिस को अल्लाह हिदायत दे तो उस को कोई गुमराह करने वाला नहीं, क्या अल्लाह ग़ालिब, बदला देने वाला नहीं? (37)
और अगर आप (स) उन से पूछें कि आस्मानों और ज़मीन को किस ने पैदा क्या? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह ने", आप (स) फ़रमा दें: पस क्या तुम ने देखा जिन को पुकारते हो अल्लाह के सिवा, अगर अल्लाह मेरे लिए कोई ज़र्र चाहे तो क्या वह सब उस का ज़र्र दूर कर सकती हैं? या वह मेरे लिए कोई रहमत चाहे तो क्या वह सब उस की रहमत रोक सकती हैं? आप (स) फ़रमा दें मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। (38)
आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरी क़ौम! तुम अपनी जगह काम किए जाओ, बेशक मैं (अपना) काम करता हूँ, पस अनक़रीब तुम जान लोगे। (39)
कौन है जिस पर आता है अज़ाब जो उसे रुस्वा कर दे और (कौन है) जिस पर दाइमी अज़ाब उतरता है? (40)

बेशक हम ने आप (स) पर लोगों (की हिदायत) के लिए किताब नाज़िल की हक़ के साथ, पस जिस ने हिदायत पाई तो अपनी ज़ात के लिए, और जो गुमराह हुआ तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने लिए गुमराह होता है, और आप (स) नहीं उन पर निगहबान (ज़िम्मेदार)। (41)
अल्लाह रूह को उस की मौत के वक़्त क़ब्ज़ करता है, और जो न मरे अपनी नींद में, जिस की मौत का फ़ैसला किया तो उस को (नींद की सूरत में ही) रोक लेता है और दूसरी (रूहों को) छोड़ देता है एक मुक़र्ररा वक़्त तक, बेशक उस में उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं। (42)
क्या उन्हों ने अल्लाह के सिवा बना लिए हैं शफ़ाअ़त (सिफ़ारिश) करने वाले? आप (स) फ़रमा दें: (इस सूरत में भी) कि वह कुछ भी इख़्तियार न रखते हों और न समझ रखते हों? (43)
आप (स) फ़रमा दें: अल्लाह ही के (इख़्तियार में) है तमाम शफ़ाअ़त, उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, फिर उस की तरफ़ तुम लौटोगे। (44)
और जब ज़िक्र किया जाता है अल्लाह वाहिद का, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन के दिल मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं, और जब उन का ज़िक्र किया जाता है जो उस के सिवा हैं (यानी औरों का) तो फ़ौरन ख़ुश हो जाते हैं। (45)
आप (स) फ़रमा दें: ऐ अल्लाह! पैदा करने वाले आस्मानों और ज़मीन के, जानने वाले पोशीदा और ज़ाहिर के, तू अपने बन्दों के दरमियान (इस अमर में) फ़ैसला करेगा जिस में वह इख़्तिलाफ़ करते थे। (46)
और अगर जिन लोगों ने ज़ुल्म किया, जो कुछ ज़मीन में है सब का सब और उस के साथ उतना ही (और भी) उन के पास हो तो वह बदले में दे दें रोज़े क़ियामत बुरे अ़ज़ाब से (बचने के लिए), और अल्लाह की तरफ़ से उन पर ज़ाहिर हो जाएगा जिस का वह गुमान (भी) न करते थे। (47)

اِنَّـآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى

हिदायत पाई	पस जिस	हक़ के साथ	लोगों के लिए	किताब	आप (स) पर	बेशक हम ने नाज़िल की

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ

उन पर	आप (स)	और नहीं	अपने लिए	वह गुमराह होता है	तो इस के सिवा नहीं	गुमराह हुआ	और जो	तो अपनी ज़ात के लिए

بِوَكِيْلٍ ﴿٤١﴾ اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِىْ ع ٤ ١٠ ١

और जो	उस की मौत	वक़्त	(जमा) जान-रूह	क़ब्ज़ करता है	अल्लाह	41	निगहबान

لَمْ تَمُتْ فِىْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِىْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ

मौत	उस पर	फ़ैसला किया उस ने	वह जिस	तो रोक लेता है	अपनी नींद	में	न मरे

وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

लोगों के लिए	अलबत्ता निशानियां	उस में	बेशक	मुक़र्ररा	एक वक़्त	तक	दूसरों को	वह छोड़ देता है

يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ؕ قُلْ

फ़रमा दें	शफ़ाअ़त करने वाले	अल्लाह के सिवा	उन्हों ने बना लिया	क्या	42	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं

اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٣﴾ قُلْ لِّلّٰهِ

फ़रमा दें अल्लाह के लिए	43	और न वह समझ रखते हों	कुछ	वह न इख़्तियार रखते हों	क्या अगर

الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ؕ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ ثُمَّ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	फिर	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	उसी के लिए	तमाम	शफ़ाअ़त

تُرْجَعُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	दिल	मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं	एक-वाहिद	ज़िक्र किया जाता है अल्लाह	और जब	44	तुम लौटोगे

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ

वह	तो फ़ौरन	उस के सिवा	उन का जो	ज़िक्र किया जाता है	और जब	आख़िरत पर	ईमान नहीं रखते

يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾ قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ

और जानने वाला	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करने वाला	ऐ अल्लाह	फ़रमा दें	45	ख़ुश हो जाते हैं

الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِىْ مَا كَانُوْا

वह थे	उस में जो	अपने बन्दों	दरमियान	तू फ़ैसला करेगा	तू	और ज़ाहिर	पोशीदा

فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿٤٦﴾ وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِى الْاَرْضِ

और जो कुछ ज़मीन में	ज़ुल्म किया	उन के लिए जिन्हों ने	हो	और अगर	46	इख़्तिलाफ़ करते	उस में

جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ

अ़ज़ाब	बुरे	से	उस को	बदले में दें वह	उस के साथ	और इतना ही	सब का सब

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ﴿٤٧﴾

47	गुमान करते	न थे वह	जो	अल्लाह (की तरफ़) से	और ज़ाहिर हो जाएगा उन पर	रोज़े क़ियामत

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ

उस का	वह थे	जो	उन को	और घेर लेगा	जो वह करते थे	बुरे काम	और ज़ाहिर हो जाएंगे उन पर

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٤٨﴾ فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۡ ثُمَّ اِذَا

जब फिर	कोई तक्लीफ़ वह हमें पुकारता है	इन्सान	पहुँचती है	फिर जब	48	मज़ाक़ उड़ाते

خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ ۭ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ

एक आज़माइश	बल्कि यह	इल्म	पर	मुझे दी गई है	यह तो	वह कहता है	अपनी तरफ़ से	कोई नेमत	हम अ़ता करते हैं उस को

وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٩﴾ قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ

इन से पहले	से	जो लोग	यक़ीनन यही कहा था	49	जानते नहीं	उन में अक्सर	और लेकिन

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٥٠﴾ فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ

बुराइयां	पस उन्हें पहुँचें	50	वह करते थे	जो	उन से	तो वह न दूर किया

مَا كَسَبُوْا ۭ وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَاۗءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ

बुराइयां	जल्द पहुँचेंगी इन्हें	इन में से	और जिन लोगों ने ज़ुल्म किया	जो उन्हों ने कमाई

مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ﴿٥١﴾ اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ

फ़राख़ करता है	कि अल्लाह	क्या यह नहीं जानते	51	आजिज़ करने वाले	और यह नहीं	जो इन्हों ने कमाया

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

उन लोगों के लिए	निशानियां	इस में	बेशक	और तंग कर देता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़्क़

٥ ع ١١ ٢ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥٢﴾ قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓي اَنْفُسِهِمْ

अपनी जानें	पर	ज़ियादती की	वह जिन्हों ने	ऐ मेरे बन्दो	फ़रमा दें	52	वह ईमान लाए

لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۭ

सब	गुनाह (जमा)	बख़्श देता है	बेशक अल्लाह	अल्लाह की रहमत	से	मायूस न हो तुम

اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٣﴾ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ

और फ़रमांबरदार हो जाओ उस के	अपना रब	तरफ़	और रुजूअ़ करो	53	मेहरबान	बख़्शने वाला	वही	बेशक वह

مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿٥٤﴾ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ

सब से बेहतर	और पैरवी करो	54	तुम मदद न किए जाओगे	फिर	अ़ज़ाब	तुम पर आए	कि	इस से क़ब्ल

مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ

अ़ज़ाब	कि तुम पर आए	इस से क़ब्ल	तुम्हारा रब	से	तुम्हारी तरफ़	जो नाज़िल की गई

بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٥٥﴾ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰي

उस पर	हाए अफ़्सोस	कोई शख़्स	कि कहे	55	तुम को शऊर (ख़बर) न हो	और तुम	अचानक

مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ ۙ

56	हँसी उड़ाने वाले	अलबत्ता-से	और यह कि मैं	अल्लाह की जनाब	में	जो मैं ने कोताही की

और उन पर बुरे काम ज़ाहिर हो जाएंगे जो वह करते थे और वह (अ़ज़ाब) उन को घेर लेगा जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (48) फिर जब इन्सान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो वह हमें पुकारता है, फिर जब हम उस को अपनी तरफ़ से कोई नेमत अ़ता करते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझे दिया गया है (मेरे) इल्म (की बिना) पर, (नहीं) बल्कि यह एक आज़माइश है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (49) यक़ीनन यह उन लोगों ने (भी) कहा था जो इन से पहले थे, तो जो वह करते थे उस ने उन से (अ़ज़ाब को) दूर न किया। (50) पस उन्हें पहुँचें (उन पर आ पड़ें) बुराइयां जो उन्हों ने कमाई थीं, और इन में से जिन लोगों ने ज़ुल्म किया जल्द इन्हें पहुँचेंगी (इन पर आ पड़ेंगी) बुराइयां जो इन्हों ने कमाई हैं, और यह नहीं हैं (अल्लाह को) आजिज़ करने वाले। (51) किया यह नहीं जानते कि अल्लाह जिस के लिए चाहता है रिज़्क़ फ़राख़ कर देता है (और वह जिस के लिए चाहता है) तंग कर देता है, बेशक इस में उन लोगों के लिए शिानियां हैं जो ईमान लाए। (52) आप (स) फ़रमा दें, ऐ मेरे बन्दो! जिन्हों ने ज़ियादती की है अपनी जानों पर, तुम अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक वही बख़्शने वाला, मेहरबान है। (53) और तुम अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करो, और उस के फ़रमांबरदार हो जाओ इस से क़ब्ल कि तम पर अ़ज़ाब आ जाए, फिर तुम मदद न किए जाओगे। (54) और पैरवी करो सब से बेहतर (किताब की) जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की गई है तुम्हारे रब की तरफ़ से, इस से क़ब्ल कि तुम पर अचानक अ़ज़ाब आ जाए और तुम्हें ख़बर भी न हो। (55) कि कोई शख़्स कहे, हाए अफ़्सोस उस पर जो मैं ने अल्लाह के हक़ में कोताही की और यह कि मैं हँसी उड़ाने वालों में से रहा। (56)

या यह कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं ज़रूर परहेज़गारों में से होता। (57) या जब वह अ़ज़ाब देखे तो कहे: काश! अगर मेरे लिए दोबारा (दुनिया में जाना हो) तो मैं नेकोकारों में से हो जाऊँ। (58) (अल्लाह फ़रमाएगा) हाँ! तहक़ीक़ तेरे पास मेरी आयात आईं, तू ने उन्हें झुटलाया, और तू ने तकब्बुर किया, और तू काफ़िरों में से था। (59) और क़ियामत के दिन तुम देखोगे जिन लोगों ने अल्लाह पर झूट बोला, उन के चेहरे सियाह होंगे, क्या तकब्बुर करने वालों का ठिकाना जहन्नम में नहीं? (60) और जिन लोगों ने परहेज़गारी की, अल्लाह उन्हें उन को कामयाबी के साथ नजात देगा, न उन्हें कोई बुराई छुएगी, न वह ग़मगीन होंगे। (61) अल्लाह हर शै का पैदा करने वाला है, और वह हर शै पर निगहबान है। (62) उसी के पास हैं आस्मानों और ज़मीन की कुंजियां, और जो लोग अल्लाह की आयात से मुन्किर हुए वही ख़सारा पाने वाले हैं। (63) आप (स) फ़रमा दें कि ऐ जाहिलो! क्या तुम मुझे कहते हो कि मैं अल्लाह के सिवा (किसी और) की परस्तिश करूँ। (64) और यक़ीनन आप (स) की तरफ़ और आप (स) से पहलों की तरफ़ वहि भेजी गई है, अगर तुम ने शिर्क किया तो तुम्हारे अ़मल बिलकुल अकारत जाएंगे और तुम ज़रूर ख़सारा पाने वालों (ज़यां कारों) में से होगे। (65) बल्कि तुम अल्लाह ही की इबादत करो, और शुक्र गुज़ारों में से हो। (66) और उन्हों ने अल्लाह की क़द्र शनासी न की जैसा कि उस की क़द्र शनासी का हक़ था, और तमाम ज़मीन रोज़े क़ियामत उस की मुट्ठी में होगी, और तमाम आस्मान उस के दाएं हाथ में लिपटे होंगे, और वह उस से पाक और बरतर है जो वह शरीक करते हैं। (67)

اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٥٧﴾ اَوْ

या	57	परहेज़गार (जमा)	से	मैं ज़रूर होता	मुझे हिदायत देता	यह कि अल्लाह	अगर	वह कहे	या

تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ

से	तो मैं हो जाऊँ	दोबारा	मेरे लिए	काश अगर	अ़ज़ाब	देखे	जब	वह कहे

الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٨﴾ بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ

और तू ने तकब्बुर किया	उन्हें	तू ने झुटलाया	मेरी आयात	तहक़ीक़ तेरे पास आईं	हाँ	58	नेकोकार (जमा)

وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٩﴾ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا

जिन लोगों ने झूट बोला	तुम देखोगे	और क़ियामत के दिन	59	काफ़िरों	से	और तू था

عَلَى اللّٰهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ۭ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى

ठिकाना	जहन्नम	में	क्या नहीं	सियाह	उन के चेहरे	अल्लाह पर

لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٦٠﴾ وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۡ

उन की कामयाबी के साथ	वह जिन्हों ने परहेज़गारी की	और नजात देगा अल्लाह	60	तकब्बुर करने वाले

لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦١﴾ اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۡ

हर शै	पैदा करने वाला	अल्लाह	61	ग़मगीन होंगे	और न वह	बुराई	न छुएगी उन्हें

وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ﴿٦٢﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ

और ज़मीन	आस्मानों	उस के पास कुंजियां	62	निगहबान	चीज़	हर	पर	और वह

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٦٣﴾ قُلْ ع ١١ ٦ ٣

फ़रमा दें	63	ख़सारा पाने वाले	वह	वही लोग	अल्लाह की आयात के	मुन्किर हुए	और जो लोग

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ ﴿٦٤﴾ وَلَقَدْ اُوْحِيَ

और यक़ीनन वहि भेजी गई है	64	जाहिलो	ऐ	मैं परस्तिश करूँ	तुम मुझे कहते हो	तो क्या अल्लाह के सिवा

اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَىِٕنْ اَشْرَكْتَ

तू ने शिर्क किया	अलबत्ता अगर	आप (स) से पहले	वह जो कि	और तरफ़	आप (स) की तरफ़

لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٥﴾ بَلِ اللّٰهَ

बल्कि अल्लाह	65	ख़सारा पाने वाले	से	और तू होगा ज़रूर	तेरे अ़मल	अलबत्ता अकारत जाएंगे

فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٦﴾ وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ

हक़	और उन्हों ने क़द्र शनासी न की अल्लाह की	66	शुक्र गुज़ारो	से	और हो	पस इबादत करो

قَدْرِهٖ ڰ وَالْاَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ

और तमाम आस्मान	रोज़े क़ियामत	उस की मुट्ठी	तमाम	और ज़मीन	उस की क़द्र शनासी

مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	वह शिर्क करते हैं	उस से जो	और बरतर	वह पाक है	उस के दाएं हाथ में	लिपटे हुए

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ

ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	तो बेहोश हो जाएगा	सूर में	और फूंक दी जाएगी

اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ ﴿٦٨﴾

68	देखने लगेंगे	खड़े	वह	तो फ़ौरन	दोबारा	फूंक मारी जाएगी उस में	फिर	चाहे अल्लाह	सिवाए जिसे

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِایْٓءَ بِالنَّبِيّٖنَ

नबी (जमा)	और लाए जाएंगे	किताब	और रख दी जाएगी	अपने रब के नूर से	ज़मीन	और चमक उठेगी

وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِىَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٦٩﴾ وَوُفِّيَتْ

और पूरा पूरा दिया जाएगा	69	ज़ुल्म न किया जाएगा	और वह (उन पर)	हक़ के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला किया जाएगा	और गवाह (जमा)

كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٠﴾ وَسِيْقَ

और हांके जाएंगे	70	जो कुछ वह करते हैं	खूब जानता है	और वह	जो उस ने किया (उस के आमाल)	हर शख़्स

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ

खोल दिए जाएंगे	वह आएंगे वहां	यहां तक कि जब	गिरोह दर गिरोह	जहन्नम	तरफ़	कुफ़्र किया (काफ़िर)	वह जिन्हों ने

اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ

तु में से	रसूल (जमा)	क्या नहीं आए थे तुम्हारे पास	उस के मुहाफ़िज़	उन से	और कहेंगे	उस के दरवाज़े

يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ

तुम्हारा दिन	मुलाक़ात	और तुम्हें डराते थे	तुम्हारे रब की आयतें (अहकाम)	तुम पर	वह पढ़ते थे

هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧١﴾

71	काफ़िरों	पर	अ़ज़ाब	हुक्म	पूरा हो गया	और लेकिन	हाँ	वह कहेंगे	यह

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى

ठिकाना	सो बुरा है	उस में	हमेशा रहने को	जहन्नम	दरवाज़े	तुम दाख़िल हो	कहा जाएगा

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٧٢﴾ وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ؕ

गिरोह दर गिरोह	जन्नत की तरफ़	अपना रब	वह डरे	वह लोग जो	ले जाया जाएगा	72	तकब्बुर करने वाले

حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا

उस के मुहाफ़िज़	उन से	और कहेंगे	उस के दरवाज़े	और खोल दिए जाएंगे	वह वहां आएंगे	जब	यहां तक कि

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ ﴿٧٣﴾ وَقَالُوا

और वह कहेंगे	73	हमेशा रहने को	सो इस में दाख़िल हो	तुम अच्छे रहे	तुम पर	सलाम

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ

ज़मीन	और हमें वारिस बनाया	अपना वादा	हम से सच्चा किया	वह जिस ने	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

نَتَبَوَّاُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٧٤﴾

74	अ़मल करने वाले	अजर	सो किया ही अच्छा	हम चाहें	जहां	जन्नत	से-में	हम मुक़ाम करलें

और सूर में फूंक मारी जाएगी तो (हर कोई) जो आस्मानों और ज़मीन में है बेहोश हो जाएगा, सिवाए उस के जिसे अल्लाह चाहे, फिर उस में फूंक मारी जाएगी दोबारा, तो वह फ़ौरन खड़े हो कर (इधर उधर) देखने लगेंगे। (68)

और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी और (आमाल की) किताब (खोल कर) रख दी जाएगी और नबी और गवाह लाए जाएंगे, और उन के दरमियान हक़ के साथ (ठीक ठीक) फ़ैसला किया जाएगा और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (69)

और हर शख़्स को उस के आमाल का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा, और वह खूब जानता है जो कुछ वह करते हैं। (70)

और काफ़िर हाँके जाएंगे गिरोह दर गिरोह जहन्नम की तरफ़, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे तो उस के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उन से कहेंगे उस के मुहाफ़िज़ (दारोग़ा) क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आए थे? जो तुम पर तुम्हारे रब के अहकाम पढ़ते थे, और तुम्हें डराते थे इस दिन की मुलाक़ात से। वह कहेंगे "हाँ" लेकिन काफ़िरों पर अ़ज़ाब का हुक्म पूरा हो गया। (71)

कहा जाएगा तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो, इस में हमेशा रहने को, सो बुरा है तकब्बुर करने वालों का ठिकाना। (72)

और जो लोग अपने रब से डरे उन्हें जन्नत की तरफ़ गिरोह दर गिरोह ले जाया जाएगा, यहां तक कि जब वह वहां आएंगे और खोल दिए जाएंगे उस के दरवाज़े, और उन से उस के मुहाफ़िज़ (दारोग़ा) कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम अच्छे रहे, सो इस में हमेशा रहने को दाख़िल हो। (73)

और वह कहेंगे तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, जिस ने अपना वादा सच्चा किया और हमें ज़मीन का वारिस बनाया कि हम मुक़ाम कर लें जन्नत में जहां हम चाहें, सो किया ही अच्छा है अ़मल करने वालों का अजर। (74)

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ

तारीफ़ के साथ	पाकीज़गी बयान करते हुए	अर्श के गिर्द	से	हलक़ा बान्धे	फ़रिश्ते	और तुम देखोगे

رَبِّهِمْ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٥﴾ ع ٥/٥ الربع

75	परवरदिगार सारे जहानों का	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए	और कहा जाएगा	हक़ के साथ	उन के दरमियान	और फ़ैसला कर दिया जाएगा	अपना रब

آيَاتُهَا ٨٥ ❀ سُوْرَةُ الْمُؤْمِن (٤٠) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٩

रुकूआत 9 — (40) सूरतुल मोमिन — आयात 85

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٢﴾ غَافِرِ الذَّنْبِ

गुनाह (जमा)	बख़्शने वाला	2	हर चीज़ का जानने वाला	ग़ालिब	अल्लाह से	किताब (क़ुरआन)	उतारा जाना	1	हा-मीम

وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ

उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	बड़े फ़ज़्ल वाला	शदीद अज़ाब वाला	तौबा	और क़बूल करने वाला

اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿٣﴾ مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया	मगर	अल्लाह की आयात	में	वह नहीं झगड़ते	3	लौट कर जाना	उसी की तरफ़

فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ﴿٤﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ

नूह (अ) की क़ौम	इन से क़ब्ल	झुटलाया	4	शहरों में	उन का चलना फिरना	सो तुम्हें धोके में न डाल दे

وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۠ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ

अपने रसूल के मुतअल्लिक़	हर उम्मत	और इरादा बान्धा	उन के बाद	और गिरोह (जमा)

لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ ۣ

तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया	हक़	उस से	ताकि नाचीज़ कर दें, दबा दें	नाहक़	और झगड़ा करें	कि वह उसे पकड़ लें

فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿٥﴾ وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى

पर	तुम्हारे रब की	बात	साबित हो गई	और इसी तरह	5	मेरा अज़ाब	हुआ	सो कैसा

الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٦﴾ اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وقف لازم / وقف النبي ﷺ ١٢

अर्श	उठाए हुए हैं	वह जो (फ़रिश्ते)	6	दोज़ख़ वाले	कि वह	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ

और मग़फ़िरत मांगते हैं	उस पर	और ईमान लाते हैं	अपना रब	तारीफ़ के साथ	वह पाकीज़गी बयान करते हैं	और जो उस के इर्द गिर्द

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ

सो तू बख़्श दे	और इल्म	रहमत	हर शै	समो लिया है	ऐ हमारे रब	वह ईमान लाए	उन के लिए जो

لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٧﴾

7	जहन्नम	अज़ाब	और तू उन्हें बचाले	तेरा रास्ता	और उन्हों ने पैरवी की	वह लोग जिन्हों ने तौबा की

और तुम देखोगे फ़रिश्तों को हलक़ा बान्धे अर्श के गिर्द, अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हुए, उन के दरमियान हक़ के साथ (ठीक ठीक) फ़ैसला कर दिया जाएगा और कहा जाएगा तमाम तारीफ़ें सारे जहानों के परवरदिगार अल्लाह के लिए हैं। (75)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1) इस क़ुरआन का उतारा जाना अल्लाह ग़ालिब, हर चीज़ के जानने वाले (की तरफ़) से है। (2) गुनाहों को बख़्शने वाला, तौबा क़ुबूल करने वाला, शदीद अज़ाब वाला, बड़े फ़ज़्ल वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, उसी की तरफ़ लौट कर जाना है। (3) नहीं झगड़ते अल्लाह की आयात में, मगर वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया, सो तुम्हें धोके में न डाल दे उन की चलत फिरत दुनिया के मुल्कों में। (4) उन से क़ब्ल नूह (अ) की क़ौम और उन के बाद (दूसरे) गिरोहों ने झुटलाया, और हर उम्मत ने अपने रसूलों के बारे में इरादा बान्धा कि वह उसे पकड़ लें, और नाहक़ झगड़ा करें ताकि उस से हक़ को दबा दें, तो मैं ने उन्हें पकड़ लिया, सो (देखो) कैसा हुआ मेरा अज़ाब। (5) और इसी तरह तुम्हारे रब की बात काफ़िरों पर साबित हो गई कि वह दोज़ख़ वाले हैं। (6) जो फ़रिश्ते अर्श को उठाए हुए हैं और जो उस के इर्द गिर्द हैं वह तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करते हैं अपने रब की, और वह उस पर ईमान लाते हैं, और ईमान लाने वालों के लिए मग़्फ़िरत मांगते हैं कि ऐ हमारे रब! हर शै को समो लिया है (तेरी) रहमत और इल्म ने, सो तू उन लोगों को बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की, और तेरे रास्ते की पैरवी की, और तू उन्हें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले। (7)

رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِیْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ

सालेह हैं	और जो	तू ने उन से वादा किया	वह जिन का	हमेशगी के बाग़ात	और उन्हें दाख़िल करना	ऐ हमारे रब

مِنْ اٰبَآىِٕهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ

ग़ालिब	तू ही	बेशक तू	और उन की औलाद	और उन की बीवियां	उन के बाप दादा	से

الْحَكِيْمُ ۙ﴿٨﴾ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَىِٕذٍ

उस दिन	बुराइयों	बचा	और जो	बुराइयों	और तू उन्हें बचाले	8	हिक्मत वाला

ع ١ ٩ ٦ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	9	अज़ीम	कामयाबी	(यही) वह	और यह	तो यक़ीनन तू ने उस पर रहम किया

يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ

अपने तईं	तुम्हारा बेज़ार होना	से	बहुत बड़ा	अलबत्ता अल्लाह का बेज़ार होना	वह पुकारे जाएंगे

اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ﴿١٠﴾ قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا

तू ने हमें मुर्दा रखा	ऐ हमारे रब	वह कहेंगे	10	तो तुम कुफ़्र करते थे	ईमान की तरफ़	तुम बुलाए जाते थे	जब

اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى

तरफ़	तो क्या	अपने गुनाहों का	पस हम ने एतिराफ़ कर लिया	दो बार	और ज़िन्दगी बख़्शी हमें तू ने	दो बार

خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿١١﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗۤ اِذَا دُعِىَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ

वाहिद	पुकारा जाता अल्लाह	इस लिए कि जब	यह तुम (पर)	11	सबील	से-कोई	निकलना

كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ؕ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿١٢﴾

12	बड़ा	बुलन्द	पस हुक्म अल्लाह के लिए	तुम मान लेते	उस का शरीक किया जाता	और अगर	तुम कुफ़्र करते

هُوَ الَّذِىْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ

रिज़्क़	आस्मानों से	तुम्हारे लिए	और उतारता है	अपनी निशानियां	तुम्हें दिखाता है	जो कि	वह

وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾ فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ

उस के लिए	ख़ालिस करते हुए	पस पुकारो अल्लाह	13	रुजूअ करता है	सिवाए जो	और नहीं नसीहत क़बूल करता

الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ

अर्श का मालिक	दरजे	बुलन्द	14	काफ़िर (जमा)	बुरा मानें	अगरचे	इबादत

يُلْقِى الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ

ताकि वह डराए	अपने बन्दों (में) से	वह चाहता है	जिस पर	अपने हुक्म से	वह डालता है रूह

يَوْمَ التَّلَاقِ ۙ﴿١٥﴾ يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ

अल्लाह पर	न पोशीदा होंगी	ज़ाहिर होंगे	वह	जिस दिन	15	मुलाक़ात (क़ियामत) का दिन

مِنْهُمْ شَىْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾

16	ज़बरदस्त क़हर वाला	वाहिद	अल्लाह के लिए	आज	बादशाहत	किस के लिए	कोई शै	उन से-की

ऐ हमारे रब! और उन्हें हमेशगी के बाग़ात में दाख़िल फ़रमा, वह जिन का तू ने उन से वादा किया है और (उन को भी) जो सालेह हैं उन के बाप दादा में से और उन की बीवियों और उन की औलाद में से, बेशक तू ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (8)

और उन्हें बुराइयों से बचाले और जो उस दिन बुराइयों से बचा, तो यक़ीनन तू ने उस पर रहम किया और यही अज़ीम कामयाबी है। (9)

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह पुकारे जाएंगे (उन्हें पुकार कर कहा जाएगा) कि अल्लाह का बेज़ार होना तुम्हारे अपने तईं बेज़ार होने से बहुत बड़ा है, जब तुम ईमान की तरफ़ बुलाए जाते थे तो तुम कुफ़्र करते थे। (10)

वह कहेंगे ऐ हमारे रब! तू ने हमें मुर्दा रखा दो बार, और हमें ज़िन्दगी बख़्शी दो बार, पस हम ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, तो क्या (अब यहां से) निकलने की कोई सबील है? (11)

कहा जाएगा यह तुम पर इस लिए (है) कि जब अल्लाह वाहिद को पुकारा जाता तो तुम कुफ़्र करते और अगर (किसी को) उस का शरीक किया जाता तो तुम मान लेते, पस हुक्म अल्लाह के लिए है जो बुलन्द, बड़ा है। (12)

वह जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, और तुम्हारे लिए आस्मान से रिज़्क़ उतारता है, और नसीहत क़बूल नहीं करता सिवाए जो (अल्लाह की तरफ़) रुजुअ करता है। (13)

पस तुम अल्लाह को पुकारो, उसी के लिए इबादत ख़ालिस करते हुए, अगरचे काफ़िर बुरा मानें। (14)

बुलन्द दरजों वाला, अर्श का मालिक, वह अपने हुक्म से रूह (वहि) डालता है (भेजता है) जिस पर अपने बन्दों में से चाहता है ताकि वह क़ियामत के दिन से डराए। (15)

जिस दिन वह ज़ाहिर होंगे, न पोशीदा होंगी अल्लाह पर उन की कोई शै, (निदा होगी) आज किस के लिए है बादशाहत? (एलान होगा) "अल्लाह के लिए" जो वाहिद, ज़बरदस्त क़हर वाला है। (16)

आज हर शख़्स को उस के आमाल का बदला दिया जाएगा, आज कोई ज़ुल्म न होगा, बेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (17) और उन्हें क़रीब आने वाले रोज़े क़ियामत से डराएं, जब दिल ग़म से भरे गलों के नज़्दीक (कलेजे मुँह को) आ रहे होंगे। ज़ालिमों के लिए नहीं कोई दोस्त, न कोई सिफ़ारिश करने वाला, जिस की बात मानी जाए। (18)
वह जानता है आँखों की ख़ियानत और जो वह सीनों में छुपाते हैं। (19)
और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करता है, और जो लोग उस के सिवा पुकारते हैं वह कुछ भी फ़ैसले नहीं करते, बेशक अल्लाह ही सुनने वाला, देखने वाला है। (20)
क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कैसा अन्जाम हुआ उन लोगों का जो उन से पहले थे, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा सख़्त थे, और ज़मीन में आसार (निशानियों के एतिबार से भी), तो अल्लाह ने उन्हें गुनाहों के सबब पकड़ा, और उन के लिए नहीं है कोई अल्लाह से बचाने वाला। (21)
इस लिए कि उन के पास उन के रसूल खुली निशानियां ले कर आते थे, तो उन्हों ने कुफ़्र किया, पस उन्हें अल्लाह ने पकड़ा, बेशक वह क़व्वी, सख़्त अज़ाब देने वाला है। (22)
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को भेजा अपनी निशानियों और रोशन सनद के साथ। (23)
फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ तो उन्हों ने कहा (मूसा अ तो) जादूगर, बड़ा झूटा है। (24)
फिर जब वह उन के पास हमारी तरफ़ से हक़ के साथ आए, तो उन्हों ने कहा: उन के बेटों को क़त्ल कर डालो जो उस के साथ ईमान लाए, और उन की बेटियों को ज़िन्दा रहने दो, और काफ़िरों का दाओ गुमराही के सिवा (कुछ) नहीं। (25)

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۭ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	आज	नहीं ज़ुल्म	वह जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख़्स	बदला दिया जाएगा	आज

سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾ وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ

जब दिल (जमा)	क़रीब आने वाला रोज़ (क़ियामत)	और आप (स) उन्हें डराएं	17	हिसाब लेने वाला	तेज़

لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ۬ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ

और न कोई सिफ़ारिश करने वाला	दोस्त	से-कोई	नहीं ज़ालिमों के लिए	ग़म से भरे हुए	गलों के नज़्दीक

يُّطَاعُ ﴿١٨﴾ يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِى الصُّدُوْرُ ﴿١٩﴾

19	सीने (जमा)	छुपाते हैं	और जो कुछ	आँखों	ख़ियानत	वह जानता है	18	जिस की बात मानी जाए

وَاللّٰهُ يَقْضِىْ بِالْحَقِّ ۭ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

उस के सिवा	पुकारते हैं	और जो लोग	हक़ के साथ	फ़ैसला करता है	और अल्लाह

لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿٢٠﴾ اَوَ لَمْ ع ٢ ١١

क्या नहीं	20	देखने वाला	सुनने वाला	वही	बेशक अल्लाह	कुछ भी	नहीं फ़ैसले करते

يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

उन लोगों का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देखते	ज़मीन में	वह चले फिरे

كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا

और आसार	कुव्वत	इन से	ज़ियादा सख़्त	वह	वह थे	इन से पहले	थे

فِى الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ

अल्लाह से	उन के लिए	है	और नहीं	उन के गुनाहों के सबब	तो उन्हें पकड़ा अल्लाह	ज़मीन में

مِنْ وَّاقٍ ﴿٢١﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ

खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आते थे	इस लिए कि वह	यह	21	बचाने वाला	से-कोई

فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٢﴾

22	सख़्त अज़ाब वाला	क़व्वी	बेशक वह	पस पकड़ा उन्हें अल्लाह	तो उन्हों ने कुफ़्र किया

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٣﴾ اِلٰى فِرْعَوْنَ

फ़िरऔन की तरफ़	23	रोशन	और सनद	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने भेजा

وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ﴿٢٤﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ

वह आए उन के पास	फिर जब	24	बड़ा झूटा	जादूगर	तो उन्हों ने कहा	और क़ारून	और हामान

بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ

उस के साथ	ईमान लाए	वह जो	उन के बेटे	तुम क़त्ल करो	उन्हों ने कहा	हमारे पास (तरफ़) से	हक़ के साथ

وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ۭ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٢٥﴾

25	गुमराही में	सिवाए	काफ़िरों	और नहीं दाओ	उन की औरतें (बेटियां)	और ज़िन्दा रहने दो

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ

अपना रब	और उसे पुकारने दो	मूसा (अ)	मैं क़त्ल करूँ	मुझे छोड़ दो	फ़िरऔन	और कहा

اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	यह कि ज़ाहिर कर दे (फैला दे)	या	तुम्हारा दीन	कि वह बदल दे	बेशक मैं डरता हूँ

الْفَسَادَ ﴿٢٦﴾ وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ

और तुम्हारे रब से-की	अपने रब से-की	पनाह ले ली	बेशक मैं	मूसा (अ)	और कहा	26	फ़साद

ع ٣ ٧ ٨ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿٢٧﴾ وَقَالَ رَجُلٌ

एक मर्द	और कहा	27	रोज़े हिसाब पर	(जो) ईमान नहीं रखता	मग़रूर	हर	से

مُّؤْمِنٌ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا

एक आदमी	क्या तुम क़त्ल करते हो	अपना ईमान	वह छुपाए हुए था	फ़िरऔन के लोग	से	मोमिन

اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۭ

तुम्हारे रब की तरफ़ से	खुली निशानियों के साथ	और वह तुम्हारे पास आया है	मेरा रब अल्लाह	कि वह कहता है

وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ

तुम्हें पहुँचेगा	सच्चा	और अगर है वह	उस का झूट	तो उस पर	झूटा	वह है	और अगर

بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ

हद से गुज़रने वाला	जो हो	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	तुम से वादा करता है	वह जो	कुछ

كَذَّابٌ ﴿٢٨﴾ يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	ग़ालिब	आज	बादशाहत	तुम्हारे लिए	ऐ मेरी क़ौम	28	सख़्त झूटा

فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ۭ قَالَ فِرْعَوْنُ

फ़िरऔन	कहा	अगर वह आ जाए हम पर	अल्लाह का अ़ज़ाब	से	हमारी मदद करेगा	तो कौन

مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

29	भलाई	राह	मगर	और राह नहीं दिखाता तुम्हें	जो मैं देखता हूँ	मैं दिखाता (राए देता) तुम्हें मगर	नहीं

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ

मानिंद	तुम पर	मैं डरता हूँ	ऐ मेरी क़ौम	ईमान ले आया	वह शख़्स जो	और कहा

يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿٣٠﴾ مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ

और समूद	और आद	क़ौमे नूह	हाल	जैसे	30	(साबिक़ा) गिरोहों का दिन

وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿٣١﴾

31	अपने बन्दों के लिए	कोई ज़ुल्म	चाहता	अल्लाह	और नहीं	उन के बाद	और जो लोग

وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

32	दिन चीख़ ओ पुकार	तुम पर	मैं डरता हूँ	और ऐ मेरी क़ौम

और फ़िरऔन ने कहाः मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा (अ) को क़त्ल कर दूँ और उसे अपने रब को पुकारने दो, बेशक मैं डरता हूँ कि वह बदल देगा तुम्हारा दीन या ज़मीन में फ़साद फैलाएगा। (26)

और मूसा (अ) ने कहा, बेशक मैं ने पनाह ले ली है अपने और तुम्हारे रब की, हर मग़रूर से जो रोज़े हिसाब पर ईमान नहीं रखता। (27)

और कहा फ़िरऔन के लोगों में से एक मोमिन मर्द ने (जो) अपना ईमान छुपाए हुए था, क्या तुम एक आदमी को (महज़ इस बात पर) क़त्ल करते हो कि वह कहता है "मेरा रब अल्लाह है" और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली निशानियों के साथ आया है और अगर वह झूटा है तो उस के झूट (का वबाल) उसी पर होगा, और अगर वह सच्चा है तो वह जो तुम से वादा कर रहा हे उस का कुछ (अ़ज़ाब) तुम पर (ज़रूर) पहुँचेगा, बेशक अल्लाह (उसे) हिदायत नहीं देता जो हद से गुज़रने वाला, सख़्त झूटा। (28)

ऐ मेरी क़ौम आज बादशाहत तुम्हारी है, तुम ग़ालिब हो ज़मीन में, अगर अल्लाह का अ़ज़ाब हम पर आ जाए तो उस से बचाने के लिए कौन हमारी मदद करेगा? फ़िरऔन ने कहा, मैं तुम्हें राए नहीं देता मगर जो मैं देखता हूँ, और मैं तुम्हें राह नहीं दिखाता मगर भलाई की राह। (29)

और उस शख़्स ने कहा जो ईमान ले आया था, ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर साबिक़ा गिरोहों के दिन के मानिंद (अ़ज़ाब नाज़िल होने से) डरता हूँ, (30)

जैसे हाल हुआ क़ौमे नूह और आ़द और समूद का और जो उन के बाद (हुए) और अल्लाह नहीं चाहता अपने बन्दों के लिए कोई ज़ुल्म। (31)

और ऐ मेरी क़ौम! मैं तुम पर चीख़ ओ पुकार के दिन से डरता हूँ। (32)

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ

गुमराह कर दे	और जिस को	बचाने वाला	कोई	अल्लाह से	नहीं तुम्हारे लिए	पीठ फेर कर	तुम फिर जाओगे (भागोगे)	जिस दिन

اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾ وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ

इस से क़ब्ल	यूसुफ़ (अ)	और तहक़ीक़ आए तुम्हारे पास	33	कोई हिदायत देने वाला	तो नहीं उस के लिए	अल्लाह

بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ؕ حَتّٰۤى اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ

तुम ने कहा	वह फ़ौत हो गए	जब	यहां तक	आए तुम्हारे पास जिस के साथ	शक में उस से	सो तुम हमेशा रहे	(वाज़ेह) दलाइल के साथ

لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ؕ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ هُوَ

जो वह	गुमराह करता है अल्लाह	इसी तरह	कोई रसूल	उस के बाद	हरगिज़ न भेजेगा अल्लाह

مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ﴿٣٤﴾ ۚ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ

बग़ैर किसी दलील	अल्लाह की आयतें	में	झगड़ा करते हैं	जो लोग	34	शक में रहने वाला	हद से गुज़रने वाला

اَتٰىهُمْ ؕ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ

मुहर लगा देता है अल्लाह	इसी तरह	ईमान लाए	उन लोगों के जो	और नज़्दीक	अल्लाह के नज़्दीक	सख़्त ना पसंद	आई उन के पास

عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ﴿٣٥﴾ وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ

बना दे तो	ऐ हामान	फ़िरऔन	और कहा	35	सरकश	मग़रूर	हर दिल	पर

لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْۤ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ﴿٣٦﴾ اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ

पस झाँक लूँ	आस्मानों	रास्ते	36	रास्ते	पहुँच जाऊँ	शायद कि मैं	एक (बुलन्द) महल	मेरे लिए

اِلٰۤى اِلٰهِ مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ؕ وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ

फ़िरऔन को	आरास्ता दिखाए गए	और उसी तरह	झूटा	उसे अलबत्ता गुमान करता हूँ	और बेशक मैं	मूसा (अ) का माबूद	तरफ़, को

سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ؕ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ تَبَابٍ ﴿٣٧﴾ ع ١٠ ٩

37	मगर (सिर्फ़) तबाही में	फ़िरऔन	और नहीं तदबीर	सीधा रास्ता	से	और वह रोक दिया गया	उस के बुरे अ़मल

وَقَالَ الَّذِيْۤ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿٣٨﴾ ۚ

38	भलाई	रास्ता	मैं तुम्हें राह दिखाऊँगा	तुम मेरी पैरवी करो	ऐ मेरी क़ौम	वह जो ईमान ले आया था	और कहा

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۫ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ

वह	आख़िरत	और बेशक	(थोड़ा) फ़ाइदा	दुनिया की ज़िन्दगी	यह	इस के सिवा नहीं	ऐ मेरी क़ौम

دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾ مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ

और जो-जिस	उसी जैसा	मगर	उसे बदला न दिया जाएगा	बुरा	अ़मल किया	जो-जिस	39	(हमेशा) रहने का घर

عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ

तो यही लोग	और (बशर्ते यह कि) वह मोमिन	या औ़रत	मर्द	से	अच्छा	अ़मल किया

يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

40	बे हिसाब	उस में	वह रिज़्क़ दिए जाएंगे	जन्नत	दाख़िल होंगे

जिस दिन तुम भागोगे पीठ फेर कर, तुम्हारे लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा, और जिस को अल्लाह गुमराह करदे उस के लिए कोई नहीं हिदायत देने वाला। (33)

और तहक़ीक़ तुम्हारे पास इस से क़ब्ल यूसुफ़ (अ) वाज़ेह दलाइल के साथ आए, सो तुम हमेशा शक में रहे उस (के बारे में) जिस के साथ वह तुम्हारे पास आए, यहां तक कि जब वह फ़ौत हो गए तो तुम ने कहाः उस के बाद अल्लाह हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा, इसी तरह अल्लाह (उसे) गुमराह करता है जो हद से गुज़रने वाला, शक में रहने वाला हो। (34)

जो लोग अल्लाह की आयतों (के बारे) में झगड़ते हैं किसी दलील के बग़ैर जो उन के पास हो (उन की यह कज बह्सी) सख़्त ना पसंद है अल्लाह के नज़्दीक और उन के नज़्दीक जो ईमान लाए, इसी तरह अल्लाह हर मग़रूर, सरकश के दिल पर मुहर लगा देता है। (35)

और फ़िरऔन ने कहा ऐ हामान! मेरे लिए बुलन्द इमारत बना, शायद कि मैं पहुँच जाऊँ। (36)

आस्मानों के रास्ते, पस मैं मूसा (अ) के माबूद को झाँक लूँ, और बेशक मैं उसे झूटा गुमान करता हूँ, और उसी तरह फ़िरऔन को उस के बुरे अ़मल आरास्ता दिखाए गए और वह रोक दिया गया सीधे रास्ते से, और फ़िरऔन की तदबीर सिर्फ़ तबाही ही थी। (37)

और जो शख़्स ईमान ले आया था, उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! तुम मेरी पैरवी करो, मैं तुम्हें भलाई का रास्ता दिखाऊँगा। (38)

ऐ मेरी क़ौम! इस के सिवा नहीं कि यह दुनिया की ज़िन्दगी थोड़ा सा फ़ाइदा है, और आख़िरत बेशक हमेशा रहने का घर है। (39)

जिस शख़्स ने बुरा अ़मल किया उसे उस जैसा बदला दिया जाएगा, और जिस ने अच्छा अ़मल किया, वह ख़ाह मर्द हो या औ़रत, बशर्ते यह कि वह मोमिन हो, तो यही लोग दाख़िल होंगे जन्नत में, उस में उन्हें बे हिसाब रिज़्क़ दिया जाएगा। (40)

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

और ऐ मेरी क़ौम	क्या हुआ मुझे	मैं बुलाता हूँ तुम्हें	तरफ़	नजात	और बुलाते हो तुम मुझे	तरफ़	आग (जहन्नम)	41

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ

तुम बुलाते हो मुझे	कि मैं इन्कार करूँ	अल्लाह का	और मैं शरीक ठहराऊँ	उस के साथ	जो	नहीं	मुझे	उस का	कोई इल्म

وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿٤٢﴾ لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ

और मैं	बुलाता हूँ तुम्हें	तरफ़	ग़ालिब	बख़्शने वाला	42	कोई शक नहीं	यह कि	तमु बुलाते हो मुझे

اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِى الدُّنْيَا وَلَا فِى الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَآ

उस की तरफ़	नहीं उस के लिए	बुलाना	दुनिया में	और न	आख़िरत में	और यह कि	फिर जाना है हमें

اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾ فَسَتَذْكُرُوْنَ

अल्लाह की तरफ़	और यह कि	हद से बढ़ने वाले	वह-वही	आग वाले (जहन्नमी)	43	सो तुम जल्द याद करोगे

مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۭ وَاُفَوِّضُ اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ

जो मैं कहता हूँ	तुम्हें	और मैं सौंपता हूँ	अपना काम	अल्लाह को	बेशक अल्लाह	देखने वाला

بِالْعِبَادِ ﴿٤٤﴾ فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ

बन्दों को	44	सो उसे बचा लिया अल्लाह ने	बुराइयां	दाओ जो वह करते थे	और घेर लिया

بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْۗءُ الْعَذَابِ ﴿٤٥﴾ اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا

फ़िरऔन वालों को	बुरा अज़ाब	45	आग	वह हाज़िर किए जाते हैं	उस पर

غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۣ اَدْخِلُوْٓا

सुबह	और शाम	और जिस दिन	क़ाइम होगी	क़ियामत	दाख़िल करो तुम

اٰلَ فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ﴿٤٦﴾ وَاِذْ يَتَحَاۗجُّوْنَ فِي النَّارِ

फ़िरऔन वाले	शदीद तरीन	अज़ाब	46	और जब	वह बाहम झगड़ेंगे	आग (जहन्नम) में

فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰۗؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ

तो कहेंगे	कमज़ोर	उन लोगों को जो	वह बड़े बनते थे	बेशक हम थे	तुम्हारे

تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾

ताबे	तो क्या	तुम	दूर कर दोगे	हम से	कुछ हिस्सा	से-का	आग	47

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ

कहेंगे	वह लोग जो	बड़े बनते थे	बेशक हम	सब	इस में	बेशक अल्लाह	फ़ैसला कर चुका है

بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿٤٨﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ

बन्दों के दरमियान	48	और कहेंगे	वह लोग जो	आग में	निगहबान दारोग़ा (जमा) को	जहन्नम

ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

तुम दुआ करो	अपने रब से	हल्का कर दे	हम से	एक दिन	से-का अज़ाब	49

और ऐ मेरी क़ौम! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात की तरफ़ बुलाता हूँ और तुम मुझे जहन्नम की तरफ़ बुलाते हो। (41)

तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह का इन्कार करूँ और उस के साथ उसे शरीक ठहराऊँ जिस का मुझे कोई इल्म नहीं और मैं तुम्हें ग़ालिब बख़्शने वाले (अल्लाह) की तरफ़ बुलाता हूँ। (42)

कोई शक नहीं कि तुम मुझे जिस की तरफ़ बुलाते हो उस का दुनिया में और आख़िरत में (कुछ भी) नहीं और यह कि हमें फिर जाना है अल्लाह की तरफ़, और यह कि हद से बढ़ जाने वाले ही जहन्नमी हैं। (43)

सो तुम जल्दी याद करोगे जो मैं तुम्हें कहता हूँ और मैं अपना काम (मामला) अल्लाह को सौंपता हूँ, बेशक अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (44)

सो अल्लाह ने उसे बचा लिया (उन) बुरे दाओ से जो वह करते थे, और फ़िरऔन वालों को बुरे अज़ाब ने घेर लिया। (45)

(जहन्नम की) आग जिस पर वह सुबह ओ शाम पेश किए जाते हैं, और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी (हुक्म होगा कि) तुम दाख़िल करो फ़िरऔन वालों को शदीद तरीन अज़ाब में। (46)

और जब वह जहन्नम में बाहम झगड़ेंगे तो कहेंगे कमज़ोर उन लोगों को जो बड़े बनते थे: बेशक हम (दुनिया में) तुम्हारे मातहत थे तो क्या (अब) तुम दूर कर दोगे हम से आग का कुछ हिस्सा? (47)

वह लोग जो बड़े बनते थे कहेंगे: बेशक हम सब इस में हैं, बेशक अल्लाह बन्दों के दरमियान फ़ैसला कर चुका है। (48)

और वह लोग जो आग में होंगे वह कहेंगे दारोग़ों (जहन्नम के निगहबान फ़रिश्तों) को: अपने रब से दुआ करो, एक दिन का अज़ाब हम से हल्का कर दे। (49)

قَالُوْٓا اَوَ لَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ قَالُوْا بَلٰى ؕ

हाँ	वह कहेंगे	निशानियों के साथ	तुम्हारे रसूल	तुम्हारे पास आते	क्या नहीं थे	वह कहेंगे

قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ﴿٥٠﴾ ع ٥ ١٣ ١٠

50	गुमराही में (बेसूद)	मगर	काफ़िर (जमा)	पुकार	और न	तो तुम पुकारो	वह कहेंगे

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया	ज़िन्दगी	में	ईमान लाए	और जो लोग	अपने रसूल (जमा)	ज़रूर मदद करते हैं	बेशक हम

وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿٥١﴾ يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिम (जमा)	नफ़ा न देगी	जिस दिन	51	गवाही देने वाले	खड़े होंगे	और जिस दिन

مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا

और तहक़ीक़ हम ने दी	52	बुरा घर (ठिकाना)	और उन के लिए	लानत	और उन के लिए	उन की उज़्र ख़ाही

مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿٥٣﴾

53	किताब (तौरेत)	बनी इस्राईल	और हम ने वारिस बनाया	हिदायत	मूसा (अ)

هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿٥٤﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

अल्लाह का वादा	बेशक	पस आप (स) सब्र करें	54	अक़्ल मन्दों के लिए	और नसीहत	हिदायत

حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ

अपने परवरदिगार की तारीफ़ के साथ	और पाकीज़गी बयान करें	अपने गुनाहों के लिए	और मग़्फ़िरत तलब करें	सच्चा

بِالْعَشِيِّ وَالْاِبْكَارِ ﴿٥٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ

अल्लाह की आयात	में	झगड़ते हैं	वह लोग जो	बेशक	55	और सुबह	शाम

بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا كِبْرٌ

तकब्बुर	सिवाए	उन के सीने (दिल)	में	नहीं	उन के पास आई हो	किसी सनद	बग़ैर

مَّا هُمْ بِبَالِغِيْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ

वही सुनने वाला	बेशक वह	अल्लाह की	पस आप (स) पनाह चाहें	उस तक पहुँचने वाले	नहीं वह

الْبَصِيْرُ ﴿٥٦﴾ لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ

से	बहुत बड़ा	और ज़मीन	आस्मानों	यक़ीनन पैदा करना	56	देखने वाला

خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	जानते (समझते) नहीं	अक्सर लोग	और लेकिन	लोगों को पैदा करना

وَمَا يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

और जो लोग ईमान लाए	और बीना	नाबीना	और बराबर नहीं

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيْٓءُ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾

58	जो तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो	बहुत कम	और न बदकार	और उन्हों ने अच्छे अमल किए

वह कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल खुली निशानियों के साथ नहीं आए थे? वह कहेंगे हाँ! वह कहेंगे तो तुम पुकारो, और न होगी काफ़िरों की पुकार मगर बेसूद। (50)

बेशक हम ज़रूर मदद करते हैं अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए दुनिया की ज़िन्दगी में और (उस दिन भी) जिस दिन गवाही देने वाले खड़े होंगे। (51)

जिस दिन ज़ालिमों को नफ़ा न देगी उन की उज़्र ख़ाही, और उन के लिए लानत (अल्लाह की रहमत से दूरी) है और उन के लिए बुरा घर है। (52)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को हिदायत (तौरेत) दी और हम ने बनी इस्राईल को तौरेत का वारिस बनाया। (53)

(जो) अक़्ल मन्दों के लिए हिदायत और नसीहत है। (54)

पस आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, और अपने क़ुसूरों के लिए मग़्फ़िरत तलब करें, और अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करें शाम और सुबह। (55)

बेशक जो लोग अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं बग़ैर किसी सनद के, जो उन के पास आई हो, उन के दिलों में तकब्बुर (बड़ाई की हवस) के सिवा कुछ नहीं, जिस तक वह कभी पहुँचने वाले नहीं। पस आप अल्लाह की पनाह चाहें, बेशक वही सुनने वाला देखने वाला है। (56)

यक़ीनन आस्मानों का और ज़मीन का पैदा करना लोगों के पैदा करने से बहुत बड़ा है, लेकिन अक्सर लोग समझते नहीं। (57)

और बराबर नहीं नाबीना और बीना, और (न) वह जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अमल किए, और न वह जो बदकार हैं। बहुत कम तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करते हो। (58)

اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ

लोग	अक्सर	और लेकिन	इस में	नहीं शक	ज़रूर आने वाली	क़ियामत	बेशक

لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ۭ

तुम्हारी	मैं क़ुबूल करूँगा	तुम दुआ करो मुझ से	तुम्हारे रब ने	और कहा	59	ईमान नहीं लाते

اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِيْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ

जहन्नम	अ़नक़रीब वह दाख़िल होंगे	मेरी इबादत	से	तकब्बुर करते हैं	जो लोग	बेशक

ع ٦ / ١٠ / ١١ دٰخِرِيْنَ ﴿٦٠﴾ ع اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ

उस में	ताकि तुम सुकून हासिल करो	रात	तुम्हारे लिए	बनाई	वह जिस ने	अल्लाह	60	ख़ार हो कर

وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ

लोगों पर	फ़ज़्ल वाला	बेशक अल्लाह	दिखाने को	और दिन

وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿٦١﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ

पैदा करने वाला	तुम्हारा रब	अल्लाह	यह है	61	शुक्र नहीं करते	अक्सर लोग	और लेकिन

كُلِّ شَيْءٍ ۘ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۡ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾ كَذٰلِكَ

इसी तरह	62	उलटे फिरे जाते हो	तो कहां तुम	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	हर शै

يُؤْفَكُ الَّذِيْنَ كَانُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٦٣﴾ اَللّٰهُ

अल्लाह	63	वह इन्कार करते हैं	अल्लाह की आयात से - का	थे	वह लोग जो	उलटे फिर जाते हैं

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَاۗءَ بِنَاۗءً وَّصَوَّرَكُمْ

और तुम्हें सूरत दी	छत	और आस्मान	क़रारगाह	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस ने

فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۭ ذٰلِكُمُ

यह है	पाकीज़ा चीज़ें	से	और तुम्हें रिज़्क़ दिया	तुम्हें सूरत दी	तो बहुत ही हसीन

اللّٰهُ رَبُّكُمْ ښ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٤﴾ هُوَ

वही	64	परवरदिगार सारे जहानों का	सो बरकत वाला है अल्लाह	अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार

الْحَيُّ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۭ

उस के लिए दीन	ख़ालिस कर के	पस तुम पुकारो उसे	सिवाए उस के	नहीं कोई माबूद	ज़िन्दा रहने वाला

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٥﴾ قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ

कि परस्तिश करूँ मैं	मुझे मना कर दिया गया है	बेशक मैं	आप (स) फ़रमा दें	65	परवरदिगार सारे जहानों का	तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए

الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَاۗءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ

खुली निशानियां	वह मेरे पास आ गईं	जब	अल्लाह के सिवा	तुम पूजा करते हो	वह जिन की

مِنْ رَّبِّيْ ۡ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٦﴾

66	परवरदिगार के लिए तमाम जहानों का	कि मैं अपनी गर्दन झुका दूँ	और मुझे हुक्म दिया गया	मेरे रब से

बेशक क़ियामत ज़रूर आने वाली है, इस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (59)
और तुम्हारे रब ने कहाः तुम मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी (दुआ) क़ुबूल करूँगा, बेशक जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर (सरताबी) करते हैं अ़नक़रीब ख़ार हो कर वह जहन्नम में दाख़िल होंगे। (60)
अल्लाह वह है जिस ने बनाई तुम्हारे लिए रात ताकि तुम उस में सुकून हासिल करो और दिन दिखाने को (रोशन बनाया), बेशक अल्लाह फ़ज़्ल वाला है लोगों पर और लेकिन अक्सर लोग शुक्र नहीं करते। (61)
यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, हर शै का पैदा करने वाला, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, तो तुम कहां उलटे फिरे जाते हो? (62)
इसी तरह वह लोग उलटे फिर जाते हैं जो अल्लाह की आयात का इन्कार करते हैं। (63)
अल्लाह, जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को क़रारगाह बनाया और आस्मान को छत (बनाया) और तुम्हें सूरत दी तो बहुत ही हसीन सूरत दी, और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों से रिज़्क़ दिया, यह है अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार, सो बरकत वाला है अल्लाह, सारे जहां का परवरदिगार। (64)
वही ज़िन्दा रहने वाला है, नहीं कोई माबूद उस के सिवा, पस तुम उसी को पुकारो उस के लिए दीन ख़ालिस करके, तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं, सारे जहान का परवरदिगार। (65)
आप (स) फ़रमा दें: बेशक मुझे मना कर दिया गया है कि मैं उन की परस्तिश करूँ जिन की तुम अल्लाह के सिवा पूजा करते हो, जब मेरे पास आ गईं मेरे रब (की तरफ़) से खुली निशानियां, और मुझे हुक्म दिया गया है कि तमाम जहानों के परवरदिगार के लिए अपनी गर्दन झुका दूँ, (66)

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ

लोथड़े से	फिर	नुत्फ़े से	फिर	मिट्टी से	पैदा किया तुम्हें	वह जिस ने

ثُمَّ یُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُیُوْخًا ۚ

बूढ़े	ताकि तुम हो जाओ	फिर	अपनी जवानी	ताकि तुम पहुँचो	फिर	बच्चा सा	तुम्हें निकालता है वह	फिर

وَمِنْكُمْ مَّنْ یُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ

और ताकि तुम	वक़्ते मुक़र्ररा	और ताकि तुम पहुँचो	उस से क़ब्ल	जो फ़ौत हो जाता है	और तुम में से

تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٧﴾ هُوَ الَّذِیْ یُحْیٖ وَیُمِیْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا

तो इस के सिवा नहीं	किसी अमर	वह फ़ैसला करता है	फिर जब	और मारता है	ज़िन्दगी अ़ता करता है	वही है जो	67	समझो

ع ٨ ١٢

یَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَیَكُوْنُ ﴿٦٨﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِیْنَ یُجَادِلُوْنَ فِیْٓ

में	झगड़ते हैं	जो लोग	तरफ़	क्या नहीं देखा तुम ने	68	सो वह हो जाता है	हो जा	वह कहता है उस के लिए

اٰیٰتِ اللّٰهِ ؕ اَنّٰى یُصْرَفُوْنَ ﴿٦٩﴾ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ

औ उस को जो	किताब को	झुटलाया	जिन लोगों ने	69	फिरे जाते हैं	कहां	अल्लाह की आयात

معانقة ١٣ عند المتأخرين ١٢

اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۫ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ ﴿٧٠﴾ اِذِ الْاَغْلٰلُ

तौक़ (जमा)	जब	70	वह जान लेंगे	पस जल्द	अपने रसूल	उस के साथ	हम ने भेजा

فِیْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ؕ یُسْحَبُوْنَ ﴿٧١﴾ فِی الْحَمِیْمِ ۙ ثُمَّ

फिर	खौलते हुए पानी में	71	वह घसीटे जाएंगे	और ज़न्जीरें	उन की गर्दनों में

فِی النَّارِ یُسْجَرُوْنَ ﴿٧٢﴾ ثُمَّ قِیْلَ لَهُمْ اَیْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٣﴾

73	शरीक करते	जिन को तुम थे	कहां	उन को	कहा जाएगा	फिर	72	वह झोंक दिए जाएंगे	आग में

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا

पुकारते थे हम	नहीं	बल्कि	हम से	वह गुम हो गए	वह कहेंगे	अल्लाह के सिवा

مِنْ قَبْلُ شَیْـًٔا ؕ كَذٰلِكَ یُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِیْنَ ﴿٧٤﴾ ذٰلِكُمْ بِمَا

उस का बदला जो	यह	74	काफ़िरों	गुमराह करता है अल्लाह	इसी तरह	कोई चीज़	इस से क़ब्ल

كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَیْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ﴿٧٥﴾

75	इतराते	तुम थे	और बदला उस का जो	नाहक़	ज़मीन में	तुम खुश होते थे

اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَى

ठिकाना	सो बुरा	उस में	हमेशा रहने को	जहन्नम	दरवाज़े	तुम दाखिल हो जाओ

الْمُتَكَبِّرِیْنَ ﴿٧٦﴾ فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِیَنَّكَ

हम आप (स) को दिखा दें	पस अगर	सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	आप सब्र करें	76	तकब्बुर करने (बड़ा बनने) वालों का

بَعْضَ الَّذِیْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّیَنَّكَ فَاِلَیْنَا یُرْجَعُوْنَ ﴿٧٧﴾

77	वह लौटाए जाएंगे	पस हमारी तरफ़	हम आप (स) को वफ़ात दे दें	या	हम उन से वादा करते हैं	वह जो	बाज़ (कुछ हिस्सा)

वह जिस ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़े से, फिर लोथड़े से, फिर वह तुम्हें निकालता है (माँ के पेट से) बच्चा सा, फिर (तुम्हें बाक़ी रखता है) ताकि तुम अपनी जवानी को पहुँचो, फिर (ज़िन्दा रखता है) ताकि तुम बूढ़े हो जाओ और तुम में से (कोई है) जो फ़ौत हो जाता है उस से क़ब्ल, और ताकि तुम सब (अपने अपने) वक़्ते मुक़र्ररा को पहुँचो और ताकि तुम समझो। (67)

वही है जो ज़िन्दगी अ़ता करता है और मारता है, फिर जब वह किसी अमर का फ़ैसला करता है तो उस के सिवा नहीं कि वह उस को कहता है "हो जा" सो वह हो जाता है। (68)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयात में झगड़ते हैं? वह कहां फिरे जाते (भटकते) हैं? (69)

जिन लोगों ने किताब को झुटलाया और उसे जिस के साथ हम ने अपने रसूलों को भेजा, पस वह जल्द जान लेंगे। (70)

जब उन की गर्दनों में तौक़ और ज़न्ज़ीरें होंगी, वह घसीटे जाएंगे। (71)

खौलते हुए पानी में, फिर वह आग (जहन्नम) में झोंक दिए जाएंगे। (72)

फिर कहा जाएगा उन को, कहां हैं वह जिन को तुम अल्लाह के सिवा शरीक करते थे? (73)

वह कहेंगे वह तो हम से गुम हो गए (कहीं नज़र नहीं आते) बल्कि हम तो इस से क़ब्ल किसी चीज़ को पुकारते ही न थे, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों को गुमराह करता है। (74)

यह उस का बदला है जो तुम ज़मीन में नाहक़ खुश होते (फिरते) थे, और बदला है उस का जिस पर तुम इतराते थे। (75)

तुम जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, हमेशा उस में रहने को, सो बड़ा बनने वालों का बुरा है ठिकाना। (76)

पस आप (स) सब्र करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, पस अगर हम आप को उस (अ़ज़ाब) का कुछ हिस्सा दिखा दें जो हम उन से वादा करते हैं या (उस से क़ब्ल) हम आप को वफ़ात दे दें (बहर सूरत) वह हमारी ही तरफ़ लौटाए जाएंगे। (77)

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ

आप (स) पर- से	हम ने हाल बयान किया	जो- जिन	उन में से	आप (स) से पहले	बहुत से रसूल	और तहक़ीक़ हम ने भेजे

وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ؕ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِىَ

वह लाए	कि	किसी रसूल के लिए	और न था	आप (स) पर- से	हम ने हाल नहीं बयान किया	जो- जिन	और उन में से

بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِىَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ

और घाटे में रह गए	हक़ के साथ	फ़ैसला कर दिया गया	अल्लाह का हुक्म	आ गया	सो जब	अल्लाह के हुक्म से	मगर- बग़ैर	कोई निशानी

ع ٨ ١٠ ١٣
هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَللّٰهُ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ

चौपाए	तुम्हारे लिए	बनाए	वह जिस ने	अल्लाह	78	अहले बातिल	उस वक़्त

لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٩﴾ وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ

बहुत से फ़ाइदे	उन में	और तुम्हारे लिए	79	तुम खाते हो	और उन से	उन से	ताकि तुम सवार हो

وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِىْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا

और उन पर	तुम्हारे सीनों (दिलों में)	हाजत	उन पर	और ताकि तुम पहुँचो

وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ﴿٨٠﴾ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ۖ فَاَىَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ ﴿٨١﴾

81	तुम इन्कार करोगे	अल्लाह की निशानियों का	तो किन किन	अपनी निशानियां	और वह दिखाता है तुम्हें	80	लदे फिरते हो	और कशतियों पर

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देखते	ज़मीन में	पस क्या वह चले फिरे नहीं

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً

क़ुव्वत	और बहुत ज़ियादा	इन से	बहुत ज़ियादा	वह थे	इन से क़ब्ल	उन लोगों का जो

وَّاٰثَارًا فِى الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿٨٢﴾

82	वह कमाते (करते) थे	जो	उन के	वह काम आया	सो न	ज़मीन में	और आसार

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ

इल्म से	उन के पास	ख़ुश हुए (इतराने लगे) उस पर जो	खुली निशानियों के साथ	उन के रसूल	उन के पास आए	फिर जब

وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا

हमारा अज़ाब	उन्हों ने देखा	फिर जब	83	मज़ाक़ उड़ाते	उस का	थे	जो वह	उन्हें	और घेर लिया

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾

84	शरीक करते	उस के साथ	हम थे	वह जिस	और हम मुन्किर हुए	वह वाहिद	अल्लाह पर	हम ईमान लाए	वह कहने लगे

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا ؕ سُنَّتَ اللّٰهِ

अल्लाह का दस्तूर	हमारा अज़ाब	जब उन्हों ने देख लिया	उन का ईमान	उन को नफ़ा देता	तो न हुआ

ع ٩ ٧ ١٣
الَّتِىْ قَدْ خَلَتْ فِىْ عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

85	काफ़िर (जमा)	उस वक़्त	और घाटे में रह गए	उस के बन्दों में	गुज़र चुका है	वह जो

और तहक़ीक़ हम ने आप (स) से पहले बहुत से रसूल भेजे, उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान किया और उन में से (कुछ हैं) जिन का हाल हम ने आप से बयान नहीं किया, और किसी रसूल के लिए (मक़्दूर) न था कि वह कोई निशानी अल्लाह के हुक्म के बग़ैर ले आए, सो जब अल्लाह का हुक्म आ गया, हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया गया, और अहले बातिल उस वक़्त घाटे में रह गए। (78)
अल्लाह (ही) है जिस ने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए। ताकि तुम सवार हो उन में से (बाज़ पर), और उन में से (बाज़) तुम खाते हो, (79)
और तुम्हारे लिए उन में बहुत से फ़ाइदे हैं और ताकि तुम उन पर (सवार हो कर) अपने दिलों की मुराद (मन्ज़िले मक़्सूद) को पहुँचो और उन पर और कशतियों पर तुम लदे फिरते हो। (80)
और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है, तुम अल्लाह की किन किन निशानियों का इन्कार करोगे? (81)
पस क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देखते कि कैसा हुआ अन्जाम उन लोगों का जो उन से क़ब्ल थे, वह तादाद और क़ुव्वत में इन से बहुत ज़ियादा थे, और वह ज़मीन में (इन से बढ़ चढ़ कर) आसार (छोड़ गए) सो जो वह करते थे उन के (कुछ) काम न आया। (82)
फिर जब उन के पास उन के रसूल खुली निशानियों के साथ आए तो वह उस इल्म पर इतराने लगे जो उन के पास था और उन्हें उस (अज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (83)
फिर जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देखा तो वह कहने लगे हम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाए और हम उस के मुन्किर हुए जिस को हम उस के साथ शरीक करते थे। (84)
तो (उस वक़्त ऐसा) न हुआ कि उन का ईमान उन को नफ़ा देता जब उन्हों ने हमारा अज़ाब देख लिया, अल्लाह का दस्तूर है जो उस के बन्दों में गुज़र चुका (होता चला आया है) और उस वक़्त काफ़िर घाटे में रह गए। (85)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1)

(यह कलाम) नाज़िल किया हुआ है निहायत मेहरबान रहम करने वाले (अल्लाह की तरफ़) से। (2)

यह एक किताब है जिस की आयतें वाज़ेह कर दी गई हैं, कुरआन अ़रबी ज़बान में उन लोगों के लिए जो जानते हैं। (3)

खुशख़बरी देने वाला, डर सुनाने वाला, सो उन में से अक्सर ने मुँह फेर लिया, पस वह सुनते नहीं। (4)

और उन्हों ने कहा कि हमारे दिल पर्दों में हैं उस (बात) से जिस की तरफ़ तुम हमें बुलाते हो, और हमारे कानों में गिरानी है, और हमारे और तुम्हारे दरमियान एक पर्दा है, सो तुम अपना काम करो, बेशक हम अपना काम करते हैं। (5)

आप (स) फ़रमा दें, इस के सिवा नहीं कि मैं तुम जैसा एक बशर हूँ, मेरी तरफ़ वहि की जाती है कि तुम्हारा माबूद, माबूदे यकता है, पस सीधे रहो उस के हुज़ूर और उस से मग़्फ़िरत मांगो, और ख़राबी है मुश्रिकों के लिए। (6)

वह जो ज़कात नहीं देते और वह आख़िरत के मुन्किर हैं। (7)

बेशक जो लोग ईमान लाए, और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए अजर है न ख़तम होने वाला। (8)

आप (स) फ़रमा दें क्या तुम उस का इन्कार करते हो जिस ने ज़मीन को दो (2) दिनों में पैदा किया और तुम उस के शरीक ठहराते हो, यही है सारे जहानों का रब। (9)

और उस ने उस (ज़मीन) में बनाए उस के ऊपर पहाड़, और उस में बरकत रखी, और उस में चार (4) दिनों में उन की ख़ुराकें मुक़र्रर कीं, यकसां तमाम सवाल करने वालों के लिए। (10)

फिर उस ने आस्मान की तरफ़ तवज्जुह फ़रमाई, और वह एक धुआं था, तो उस ने उस से और ज़मीन से कहा तुम दोनों आओ खुशी से या नाखुशी से, उन दोनों ने कहा, हम दोनों खुशी से हाज़िर हैं। (11)

آيَاتُهَا ٥٤ ❀ (٤١) سُوْرَةُ حٰمٓ اَلسَّجْدَةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٦

रुकुआत 6 | (41) सूरह हा-मीम सजदा | आयात 54

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٢﴾ كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا

कुरआन	जुदा जुदा (वाज़ेह) कर दी गईं उस की आयतें	एक किताब	2	रहम करने वाला	निहायत मेहरबान	से	नाज़िल किया हुआ	1	हा-मीम

عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٣﴾ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ

पस वह	उन में से अक्सर	सो मुँह फेर लिया	और डर सुनाने वाला	खुशख़बरी देने वाला	3	वह जानते हैं	उन लोगों के लिए	अ़रबी (ज़बान) में

لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿٤﴾ وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ

उस की तरफ़	तुम बुलाते हो हमें	उस से जो	पर्दों में	हमारे दिल	और उन्हों ने कहा	4	वह सुनते नहीं

وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ﴿٥﴾

5	काम करते हैं	बेशक हम	सो तुम काम करो	एक पर्दा	और तुम्हारे दरमियान	और हमारे दरमियान	बोझ-गिरानी	और हमारे कानों में

الثلثة

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ

यकता	माबूद	तुम्हारा माबूद	यह कि	मेरी तरफ़	वहि की जाती है	तुम जैसा	कि मैं एक बशर	इस के सिवा नहीं	फ़रमा दें

فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦﴾ الَّذِيْنَ

वह जो	6	मुश्रिकों के लिए	और ख़राबी	उस से मग़्फ़िरत मांगो	उस की तरफ़ (उस के हुज़ूर)	पस सीधे रहो

لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٧﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	जो लोग	बेशक	7	मुन्किर हैं	वह	आख़िरत का	और वह	ज़कात	नहीं देते

ع ١ ٨ ١٥

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٨﴾ قُلْ اَئِنَّكُمْ

क्या तुम	फ़रमा दें	8	ख़तम न होने वाला	अजर	उन के लिए	और उन्हों ने अ़मल किए अच्छे

لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ

उस के	और तुम ठहराते हो	दो (2) दिनों में	ज़मीन	पैदा किया	उस का जिस ने	इन्कार करते हो

اَنْدَادًا ۗ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩﴾ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا

उस के ऊपर	पहाड़ (जमा)	उस में	और उस ने बनाए	9	सारे जहानों का रब	वह	शरीक (जमा)

وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۗ سَوَآءً

यकसां	चार (4) दिन (जमा)	में	उन की ख़ुराकें	उस में	और मुक़र्रर कीं	उस में	और बरकत रखी

لِّلسَّآئِلِيْنَ ﴿١٠﴾ ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ

तो उस ने कहा	एक धुआं	और वह	आस्मान की तरफ़	फिर उस ने तवज्जुह फ़रमाई	10	तमाम सवाल करने वालों के लिए

لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ۗ قَالَتَآ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ﴿١١﴾

11	खुशी से	हम दोनों आए (हाज़िर हैं)	उन दोनों ने कहा	नाखुशी से	या	खुशी से	तुम दोनों आओ	और ज़मीन से	उस से

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوَاتٍ فِىْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِىْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا

उस का काम	हर आस्मान	में	और वहि कर दी	दो (2) दिनों में	सात आस्मान	फिर उस ने बनाए

وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ

ग़ालिब	अन्दाज़ा (फ़ैसला)	यह	और हिफ़ाज़त के लिए	चिराग़ों (सितारों) से	दुनिया	आस्मान	और हम ने ज़ीनत दी

الْعَلِيْمِ ﴿١٢﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ

चिंघाड़	जैसी	एक चिंघाड़	मैं डराता हूँ तुम्हें	तो फ़रमा दें	वह मुँह मोड़ लें	फिर अगर	12	इल्म वाला

عَادٍ وَّثَمُوْدَ ﴿١٣﴾ ؕ اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ

और उन के पीछे से	उन के आगे से	रसूल	जब आए उन के पास	13	आ़द और समूद

اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً

फ़रिश्ते	तो ज़रूर उतारता	हमारा रब	अगर चाहता	उन्हों ने जवाब दिया	सिवाए अल्लाह	कि तुम न इबादत करो

فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا

तो वह तकब्बुर (ग़ुरूर) करने लगे	आ़द	फिर जो	14	मुन्किर हैं	उस के साथ	तुम भेजे गए हो	उस का जो	पस बेशक

فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	वह देखते	क्या नहीं	कुव्वत	हम से	ज़ियादा	कौन	और वह कहने लगे	नाहक़	ज़मीन (मुल्क) में

الَّذِىْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿١٥﴾

15	इन्कार करते	हमारी आयतों का	और वह थे	कुव्वत	उन से	बहुत ज़ियादा	वह	पैदा किया उन्हें	वह जिस ने

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِىْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ

ताकि हम चखाएं उन्हें	नहूसत	दिनों में	तुन्द ओ तेज़	हवा	उन पर	पस हम ने भेजी

عَذَابَ الْخِزْىِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ

और वह	ज़ियादा रुस्वा करने वाला	आख़िरत	और अलबत्ता अ़ज़ाब	दुनिया की ज़िन्दगी	में	रुस्वाई	अ़ज़ाब

لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٦﴾ وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى

हिदायत पर	अन्धा रहना	तो उन्हों ने पसंद किया	सो हम ने रास्ता दिखाया उन्हें	समूद	और रहे	16	मदद न किए जाएंगे

فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٧﴾ ج

17	वह कमाते (करते थे)	उस की सज़ा में जो	ज़िल्लत	अ़ज़ाब	चिंघाड़	तो उन्हें आ पकड़ा

ع ٢ ١٠ ١٦ وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿١٨﴾ ع وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ

अल्लाह के दुश्मन	जमा किए जाएंगे	और जिस दिन	18	और वह परहेज़गारी करते थे	ईमान लाए	वह लोग जो	और हम ने बचा लिया

اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٩﴾ حَتّٰٓى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ

गवाही देंगे	वह आएंगे उस के पास	जब	यहां तक कि	19	गिरोह गिरोह किए जाएंगे	तो वह	जहन्नम की तरफ़

عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٠﴾

20	जो वह करते थे	उस पर	और उन की जिल्दें (गोश्त पोस्त)	और उन की आँखें	उन के कान	उन पर

फिर उस ने दो दिनों में सात आस्मान बनाए और हर आस्मान में उस के काम की वहि कर दी, और हम ने आस्माने दुनिया को सितारों से ज़ीनत दी और खूब महफ़ूज़ कर दिया, यह ग़ालिब, इल्म वाले (अल्लाह का) फ़ैसला है। (12)
फिर अगर वह मुहँ मोड़ लें तो आप (स) फ़रमा दें कि मैं तुम्हें डराता हूँ एक चिंघाड़ से, जैसी चिंघाड़ आ़द ओ समूद (पर अ़ज़ाब आया था)। (13)
जब उन के पास रसूल आए, उन के आगे से और उन के पीछे से कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, तो उन्हों ने जवाब दिया कि अगर हमारा रब चाहता तो ज़रूर फ़रिशते उतारता, पस तुम जिस (पैग़ाम) के साथ भेजे गए हो, हम बेशक उस के मुन्किर हैं। (14)
फिर जो आ़द थे वह मुल्क में ग़ुरूर करने लगे नाहक़, और वह कहने लगे कि हम से ज़ियादा कुव्वत में कौन है? क्या वह नहीं देखते कि अल्लाह जिस ने उन्हें पैदा किया, वह कुव्वत में उन से बहुत ज़ियादा है, और वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (15)
पस हम ने भेजी उन पर नहूसत के दिनों में तुन्द ओ तेज़ हवा, ताकि हम उन्हें रुस्वाई का अ़ज़ाब चखाएं दुनिया की ज़िन्दगी में, और अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब ज़ियादा रुस्वा करने वाला है, और न वह मदद किए जाएंगे। (16)
और रहे समूद, सो हम ने उन्हें रास्ता दिखाया तो उन्हों ने हिदायत (के मुक़ाबले) पर अन्धा रहना पसंद किया, तो उन्हें चिंघाड़ ने आ पकड़ा (यानी) ज़िल्लत के अ़ज़ाब ने, उस की सज़ा में जो वह करते थे। (17)
और हम ने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए, और वह परहेज़गारी करते थे। (18)
और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन जहन्नम की तरफ़ जमा किए (हांके) जाएंगे तो वह गिरोह दर गिरोह (तक़्सीम) कर दिए जाएंगे। (19)
यहां तक कि जब वह उस के पास आएंगे तो उन पर उन के कान, और उन की आँखें, और उन के गोश्त पोस्त गवाही देंगे उस पर जो वह करते थे। (20)

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْٓا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ

हमें गोयाई दी अल्लाह ने	वह जवाब देंगे	हम पर (हमारे ख़िलाफ़)	तुम ने गवाही दी	क्यों	अपनी जिल्दों (गोश्त पोस्त) से	और वह कहेंगे

الَّذِيْٓ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ

और उसी की तरफ़	पहली बार	तुम्हें पैदा किया	और वह-उस	हर शै	गोया अता फ़रमाया	वह जिस ने

تُرْجَعُوْنَ ﴿٢١﴾ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ

तुम पर (तुम्हारे ख़िलाफ़)	कि गवाही देंगे	तुम छुपाते थे	और जो	21	तुम लौटाए जाओगे

سَمْعُكُمْ وَلَآ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	तुम ने गुमान कर लिया था	और लेकिन (बल्कि)	और न तुम्हारी जिल्दें (गोश्त पोस्त)	और न तुम्हारी आँखें	तुम्हारे कान

لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ

वह जो	तुम्हारा गुमान	और उस	22	तुम करते हो	जो	बहुत कुछ	नहीं जानता

ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾ فَاِنْ

फिर अगर	23	ख़सारा पाने वाले	से	सो तुम हो गए	हलाक किया तुम्हें	अपने रब के मुतअ़ल्लिक़	तुम ने गुमान किया था

يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ

से	तो न वह	वह माफ़ी चाहें	और अगर	उन के लिए	ठिकाना	तो जहन्नम	वह सब्र करें

الْمُعْتَبِيْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا

जो	तो उन्हों ने आरास्ता कर दिखाया उन के लिए	कुछ हमनशीन	उन के लिए	और हम ने मुक़र्रर किए	24	माफ़ी क़ुबूल किए जाने वाले

بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ اُمَمٍ

उन उम्मतों में	क़ौल	उन पर	और पूरा हो गया	और जो उन के पीछे	उन के आगे

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ

बेशक वह	और इन्सान	जिन्नात में से-की	उन से क़ब्ल	जो गुज़र चुकीं

كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿٢٥﴾ ع وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ ٣ ع ١٧

इस क़ुरआन को	तुम मत सुनो	उन्हों ने कुफ़्र किया	उन लोगों ने जो	और कहा	25	ख़सारा पाने वाले थे

وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿٢٦﴾ فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

उन लोगों को जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	पस हम ज़रूर चखाएंगे	26	तुम ग़ालिब आ जाओ	शायद कि तुम	उस में	और गुल मचाओ

عَذَابًا شَدِيْدًا وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ

वह जो	बदतरीन	और हम उन्हें ज़रूर बदला देंगे	सख़्त अ़ज़ाब

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا

उस में	उन के लिए	जहन्नम	अल्लाह के दुश्मन (जमा)	बदला	यह	27	वह करते थे (आमाल)

دَارُ الْخُلْدِ ؕ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	इन्कार करते	हमारी आयतों का	वह थे	उस का जो	बदला	हमेशगी का घर

और वह अपने गोश्त पोस्त से कहेंगे, तुम ने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी? वह जवाब देंगे: हमें उस अल्लाह ने गोयाई दी जिस ने हर शै को गोया कर दिया है, और उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे। (21)

और जो तुम छुपाते थे (तुम ने समझा) कि तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही न देंगे तुम्हारे कान और न तुम्हारी आँखें और न तुम्हारे गोश्त पोस्त, बल्कि तुम ने गुमान कर लिया था कि अल्लाह उस से (उस के बारे में) बहुत कुछ नहीं जानता जो तुम करते हो। (22)

तुम्हारे उस गुमान (ख़याले बातिल) ने जो तुम ने अपने रब के बारे में किया था तुम्हें हलाक किया, सो तुम हो गए ख़सारा पाने वालों में से। (23)

फिर अगर वह सब्र करें तो (भी) जहन्नम उन के लिए ठिकाना है, और अगर वह (अब) माफ़ी चाहें तो वह माफ़ी क़ुबूल किए जाने वालों में से न होंगे। (24)

और हम ने उन के कुछ हमनशीन मुक़र्रर किए, तो उन्हों ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया जो उन के आगे और जो उन के पीछे था और उन पर (अ़ज़ाब की वईद का) क़ौल पूरा हो गया जैसे उन उम्मतों में जो गुज़र चुकी हैं उन से क़बल जिन्नात और इन्सानों की, बेशक वह ख़सारा पाने वाले थे। (25)

और उन लोगों ने कहा जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िरों ने) कि तुम इस क़ुरआन को सुनो ही मत, और अगर (सुनाने लगें) तो इस में गुल मचाओ, शायद कि तुम ग़ालिब आ जाओ। (26)

पस हम काफ़िरों को ज़रूर सख़्त अ़ज़ाब चखाएंगे, और अलबत्ता हम उन के बदतरीन आमाल का उन्हें ज़रूर बदला देंगे। (27)

यह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला जहन्नम, और उन के लिए है उस में हमेशगी का घर, उस का बदला जो वह हमारी आयतों का इन्कार करते थे। (28)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ اَرِنَا الَّذَيْنِ اَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ

जिन्नात में से	जिन्हों ने गुमराह किया हमें	उन्हें	हमें दिखा दे	ऐ हमारे रब	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहेंगे

وَالْاِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ اَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿٢٩﴾

29	इन्तिहाई ज़लील (जमा)	से	ताकि वह हों	अपने पाऊँ	तले	हम उन दोनों को डालें	और इन्सानों

اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ

उन पर	उतरते हैं	वह साबित क़दम रहे	फिर	हमारा रब अल्लाह	उन्हों ने कहा	वह जिन्हों ने	बेशक

الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ

वह जो	जन्नत पर	और तुम ख़ुश हो जाओ	और न ग़मगीन हो	कि न तुम ख़ौफ़ खाओ	फ़रिश्ते

كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٠﴾ نَحْنُ اَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ

और आख़िरत में	दुनिया	ज़िन्दगी में	तुम्हारे रफ़ीक़	हम	30	तुम्हें वादा दिया जाता है

وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ﴿٣١﴾ نُزُلًا مِّنْ

से	ज़ियाफ़त	31	तुम मांगोगे	जो	उस में	और तुम्हारे लिए	तुम्हारे दिल	जो चाहें	उस में	और तुम्हारे लिए

ع ٤ ١٨ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ﴿٣٢﴾ وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَى اللّٰهِ وَعَمِلَ

और अ़मल करे	अल्लाह की तरफ़	बुलाए	उस से जो	बात	बेहतर	और किस	32	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٣﴾ وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ

नेकी	और बराबर नहीं होती	33	मुसलमानों	से	बेशक मैं	और वह कहे	अच्छे

وَلَا السَّيِّئَةُ ۭ اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ

और उस के दरमियान	आप के दरमियान	वह जो शख़्स	तो यकायक	बेहतरीन	वह	उस से जो	दूर कर दें आप (स)	और न बुराई

عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ ﴿٣٤﴾ وَمَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا

और नहीं	सब्र किया	वह जिन्हों ने	मगर	और नहीं मिलती यह	34	क़रावती (जिगरी)	दोस्त	गोया कि वह	अ़दावत

يُلَقّٰىهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿٣٥﴾ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ

कोई वस्वसा	शैतान	से	तुम्हें वस्वसा आए	और अगर	35	बड़े नसीब वाले	मगर	मिलती यह

فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٦﴾ وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ

और दिन	रात	उस की निशानियां	और से	36	जानने वाला	सुनने वाला	वही	बेशक वह	अल्लाह की	तो पनाह चाहें

وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۭ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ

और तुम सिज्दा करो अल्लाह को	चाँद को	और न	सूरज को	तुम न सिज्दा करो	और चाँद	और सूरज

الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿٣٧﴾ فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ

सो वह जो	तकब्बुर करें	पस अगर वह	37	इबादत करते	सिर्फ़ उस की	तुम हो	अगर	पैदा किया उन्हें	वह जिस ने

السجدة ١١ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿٣٨﴾

38	नहीं उकताते	और वह	और दिन	रात	उस की	वह तस्बीह करते हैं	आप के रब के नज़्दीक

और काफ़िर कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमें दिखा दे जिन्हों ने हमें गुमराह किया था जिन्नात में से और इन्सानों में से कि हम उन को अपने पाऊँ तले (रौन्द) डालें ताकि वह इन्तिहाई ज़लीलों में से हों। (29)

बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर उस पर साबित क़दम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं कि न तुम ख़ौफ़ खाओ और न तुम ग़मगीन हो, और तमु उस जन्नत पर ख़ुश हो जाओ जिस का तुम्हें वादा दिया जाता है। (30)

हम तुम्हारे रफ़ीक़ हैं ज़िन्दगी में दुनिया की और आख़िरत में (भी), और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद हैं) जो तुम्हारे दिल चाहें, और तुम्हारे लिए उस में (मौजूद हैं) जो तुम मांगोगे। (31)

(यह) ज़ियाफ़त है बख़्शने वाले, रहीम (अल्लाह) की तरफ़ से। (32)

और उस से बेहतर किस का क़ौल? जो बुलाए अल्लाह की तरफ़ और अच्छे अ़मल करे और कहेः बेशक मैं मुसलमानों में से हूँ। (33)

और बराबर नहीं होती नेकी और बुराई, आप (स) (बुराई को) इस (अन्दाज़ से) दूर करें जो बेहतरीन हो तो यकायक वह शख़्स कि आप के दरमियान और उस के दरमियान अ़दावत थी (ऐसे हो जाएगा कि) गोया वह जिगरी दोस्त है। (34)

और यह (सिफ़त) नहीं मिलती मगर उन्हें जिन्हों ने सब्र किया और यह नहीं मिलती मगर बड़े नसीब वालों को। (35)

और अगर तुम्हें शैतान की तरफ़ से आए कोई वस्वसा तो अल्लाह की पनाह चाहें, बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है। (36)

और उस की निशानियों में से हैं रात और दिन, और सूरज और चाँद, तुम न सूरज को सिज्दा करो न चाँद को, और तुम अल्लाह को सिज्दा करो, वह जिस ने उन (सब) को पैदा किया अगर तुम सिर्फ़ उस की इबादत करते हो। (37)

पस अगर वह तकब्बुर करें (तो उस से क्या फ़र्क़ पड़ता है), सो वह (फ़रिश्ते) जो आप के रब के नज़्दीक हैं वह रात दिन उस की तस्बीह करते हैं, और वह उकताते नहीं। (38)

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ

पानी	उस पर	हम ने उतारा	फिर जब	दबी हुई (सुनसान)	ज़मीन	तू देखता है	कि तू	और उस की निशानियों में से

اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ۭ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ۭ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

हर शै पर	बेशक वह	अलबत्ता ज़िन्दा करने वाला मुर्दों को	उस को ज़िन्दा किया	वह जिस ने	बेशक	और फूलती है	वह लहलहाने लगती है

قَدِيْرٌ ﴿٣٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ۭ

हम पर	वह पोशीदा नहीं	हमारी आयात में	कज रवी करते हैं	जो लोग	बेशक	39	कुदरत रखने वाला

اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ اِعْمَلُوْا

तुम करो	रोज़े क़ियामत	अमान के साथ	आए	या जो	बेहतर	आग में	डाला जाए	तो क्या जो

مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٤٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا

जब	ज़िक्र (क़ुरआन) का	वह जिन्हों ने इन्कार किया	बेशक	40	देखने वाला	जो तुम करते हो	बेशक वह	जो तुम चाहो

جَاۗءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿٤١﴾ ۙ لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ

उस के सामने से	बातिल	उस के पास नहीं आता	41	ज़बरदस्त	अलबत्ता किताब है	और बेशक यह	वह आया उन के पास

وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ۭ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿٤٢﴾ مَا يُقَالُ لَكَ اِلَّا

सिवाए	आप को	नहीं कहा जाता	42	सज़ावारे हम्द	हिक्मत वाले	से	नाज़िल किया गया	और न उस के पीछे से

مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ

और सज़ा देने वाला	बड़ी मग़फ़िरत वाला	आप (स) का रब	बेशक	आप (स) से क़ब्ल	रसूलों को	जो कहा जा चुका है

اَلِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ۭ

उस की आयतें	साफ़ बयान की गईं	क्यों न	तो वह कहते	अ़जमी (ज़बान का)	क़ुरआन (को)	और अगर हम बनाते उसे	43	दर्दनाक

ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ۭ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَاۗءٌ ۭ

और शिफ़ा	हिदायत	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	वह-यह	फ़रमा दें	और अ़रबी (रसूल)	क्या अ़जमी (किताब)

وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۭ اُولٰۗىِٕكَ

यह लोग	अन्धापन	उन पर	और वह-यह	गिरानी	उन के कानों में	ईमान नहीं लाए	और जो लोग

يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٤٤﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ ع ١٢/١٩

किताब	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने दी	44	दूर	किसी जगह	से	पुकारे जाते हैं

فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ

तो फ़ैसला हो चुका होता	आप (स) के रब की तरफ़ से	पहले ठहर चुकी	एक बात	और अगर न होती	उस में	तो इख़्तिलाफ़ किया गया

بَيْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿٤٥﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

अच्छे	अ़मल किए	जो-जिस	45	तरद्दुद में डालने वाले शक में	उस से	ज़रूर शक में	और बेशक वह	उन के दरमियान

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَاۗءَ فَعَلَيْهَا ۭ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٤٦﴾

46	अपने बन्दों पर	मुत्लक़ ज़ुल्म करने वाला	आप (स) का रब	और नहीं	तो उस पर (उस का वबाल)	बुराई की	और जिस	तो अपनी ज़ात के लिए

ا قرا حفص بتسهيل الهمزة الثانية ١٢

और उस की निशानियों में से है कि तू ज़मीन को सुनसान देखता है, फिर जब हम ने उस पर पानी उतारा तो वह लहलहाने लगती है और फूलती है, बेशक वह जिस ने उस को ज़िन्दा किया, अलबत्ता वह मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, बेशक वह हर शै पर कुदरत रखने वाला है। (39)

बेशक जो लोग हमारी आयात में कज रवी करते हैं वह हम पर (हम से) पोशीदा नहीं, तो क्या जो शख़्स आग में डाला जाए बेहतर है या जो रोज़े क़ियामत अमान के साथ आए? तुम जो चाहो करो, बेशक तुम जो कुछ करते हो वह देखने वाला है। (40)

बेशक जिन लोगों ने क़ुरआन का इन्कार किया जब वह उन के पास आया (वह अपना अन्जाम देख लेंगे), बेशक यह ज़बरदस्त किताब है। (41)

उस के पास नहीं आता बातिल उस के सामने से और न उस के पीछे से, नाज़िल किया गया हिक्मत वाले, सज़ावारे हम्द (अल्लाह की तरफ़) से। (42)

आप (स) को उस के सिवा नहीं कहा जाता जो आप (स) से पहले रसूलों को कहा जा चुका है, बेशक आप (स) का रब बड़ी मग़फ़िरत वाला, और दर्दनाक सज़ा देने वाला है। (43)

और अगर हम क़ुरआन को अ़जमी ज़बान का बनाते तो वह कहतेः उस की आयतें क्यों न साफ़ साफ़ बयान की गईं? क्या किताब अ़जमी और रसूल अ़रबी? आप (स) फ़रमा देंः जो ईमान लाए यह उन लोगों के लिए हिदायत और शिफ़ा है, और जो लोग ईमान नहीं लाते उन के कानों में गिरानी है और यह उन के लिए आंखों पर पट्टी, (गोया) यह लोग पुकारे जाते हैं किसी दूर जगह से। (44)

और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को किताब दी तो उस में इख़्तिलाफ़ किया गया और अगर न आप (स) के रब की तरफ़ से एक बात पहले ठहर चुकी होती तो उन के दरमियान फ़ैसला हो चुका होता, और बेशक वह ज़रूर उस से तरद्दुद में डालने वाले शक में हैं। (45)

जिस ने अच्छे अ़मल किए तो अपनी ज़ात के लिए (किए) और जिस ने बुराई की उस का वबाल उसी पर होगा, और आप (स) का रब अपने बन्दों पर मुत्लक़ ज़ुल्म करने वाला नहीं। (46)

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۭ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ

से	फल (जमा)	कोई	और नहीं निकलता	क़ियामत का इल्म	उस की तरफ़ लौटाया (हवाले किया) जाता है

اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۭ وَيَوْمَ

और जिस दिन	उस के इल्म में	मगर	और न वह बच्चा जनती है	कोई औरत	और नहीं हामिला होती है	उस के ग़िलाफ़ों (गाभों)

يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَاۗءِيْ ۙ قَالُوْٓا اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ ۚ ٤٧

47	कोई शाहिद	नहीं हम से	इत्तिलाअ़ दे दी हम ने तुझे	वह कहेंगे	मेरे शरीक	कहां	वह पुकारेगा उन्हें

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ

नहीं उन के लिए	और उन्हों ने समझ लिया	उस से क़ब्ल	जो वह पुकारते थे	उन से	और खोया गया

مِّنْ مَّحِيْصٍ ٤٨ لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَاۗءِ الْخَيْرِ ۡ وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ

बुराई	उसे लग जाए	और अगर	भलाई मांगने	से	इन्सान	नहीं थकता	48	कोई बचाओ (ख़लासी)

فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ ٤٩ وَلَىِٕنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّاۗءَ

किसी तक्लीफ़	के बाद	अपनी तरफ़ से	रहमत	हम चखाएं उसे	और अलबत्ता अगर	49	नाउम्मीद	तो मायूस हो जाता है

مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَاۗىِٕمَةً ۙ وَّلَىِٕنْ

और अलबत्ता अगर	क़ाइम होने वाली	क़ियामत	और मैं ख़याल नहीं करता	यह मेरे लिए	तो वह ज़रूर कहेगा	जो उस को पहुँची

رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ

पस हम ज़रूर आगाह कर देंगे	अलबत्ता भलाई	उस के पास	मेरे लिए	बेशक	अपने रब की तरफ़	मुझे लौटाया गया

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۡ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ ٥٠ وَاِذَآ

और जब	50	सख़्त	एक अ़ज़ाब	से	और अलबत्ता हम ज़रूर चखाएंगे उन्हें	उस से जो उन्हों ने किया (आमाल)	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ

बुराई	आ लगे उसे	और जब	अपना पहलू	और बदल लेता है	वह मुँह मोड़ लेता है	इन्सान पर	हम इन्आ़म करते हैं

فَذُوْ دُعَاۗءٍ عَرِيْضٍ ٥١ قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ

अल्लाह के पास	से	अगर हो	क्या तुम ने देखा	आप (स) फ़रमा दें	51	(लम्बी) चौड़ी	तो दुआओं वाला

ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ٥٢

52	दूर दराज़	ज़िद	में	वह	उस से जो	बड़ा गुमराह	कौन	तुम ने कुफ़्र किया उस से	फिर

سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ

कि यह	उन के लिए	ज़ाहिर हो जाए	यहां तक	और उन की ज़ात में	अतराफ़े आ़लम में	हम जल्द दिखा देंगे उन्हें अपनी आयात

الْحَقُّ ۭ اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ٥٣ اَلَآ اِنَّهُمْ

ख़ूब याद रखो बेशक वह	53	शाहिद	हर शै	पर-का	कि वह	आप के रब के लिए	क्या काफ़ी नहीं	हक़

فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَاۗءِ رَبِّهِمْ ۭ اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ٥٤ ع

54	अहाता किए हुए	हर शै पर-का	याद रखो बेशक वह	अपना रब	मुलाक़ात से	शक में

क़ियामत का इल्म उसी के हवाले किया जाता है, और कोई फल अपने गाभों से नहीं निकलता और कोई औ़रत (मादा) हामिला नहीं होती और वह बच्चा नहीं जनती मगर (यह सब) उस के इल्म में होता है। और जिस दिन वह उन्हें पुकारेगाः कहां हैं मेरे शरीक? वह कहेंगेः हम ने तुझे इत्तिलाअ़ दे दी कि हम में से कोई (उस का) शाहिद (गवाह) नहीं। (47)

और खोया गया उन से जिसे वह (अल्लाह के सिवा) पुकारते थे उस से क़ब्ल, और उन्हों ने समझ लिया कि (अब) उन के लिए कोई ख़लासी नहीं। (48)

इन्सान भलाई मांगने से नहीं थकता, और अगर उसे कोई बुराई लग जाए तो वह नाउम्मीद हो कर मायूस हो जाता है। (49)

और अलबत्ता अगर उसे कोई तक्लीफ़ पहुँचने के बाद हम अपनी तरफ़ से अपनी रहमत का मज़ा चखाएं तो वह ज़रूर कहेगाः यह मेरे लिए है, और मैं ख़याल नहीं करता कि क़ियामत क़ाइम होने वाली है, और अगर मुझे अपने रब की तरफ़ लौटाया गया तो बेशक उस के पास मेरे लिए अलबत्ता भलाई होगी, पस हम काफ़िरों को उन के आमाल से ज़रूर आगाह करेंगे, और अलबत्ता हम उन्हें ज़रूर चखाएंगे एक अ़ज़ाब सख़्त। (50)

और जब हम इन्सान पर इन्आ़म करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है, और अपना पहलू बदल लेता है, और जब उसे (ज़रा) बुराई लगे तो लम्बी चौड़ी दुआओं वाला (बन जाता है)। (51)

आप (स) फ़रमा देंः क्या तुम ने देखा (यह तो बतलाओ) अगर (यह क़ुरआन) अल्लाह के पास से हो, फिर तुम ने उस से कुफ़्र किया तो उस से बड़ा गुमराह कौन जो मुख़ालिफ़त में दूर तक निकल गया हो? (52)

हम जल्द अपनी आयात उन्हें अतराफ़े आ़लम में और (ख़ुद) उन की ज़ात में दिखा देंगे यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि यह (क़ुरआन) हक़ है, क्या आप (स) के रब के लिए काफ़ी नहीं कि वह हर शै का शाहिद है। (53)

ख़ूब याद रखो! बेशक वह अपने रब की मुलाक़ात (रूबरू हाज़री) से शक में हैं, याद रखो! बेशक वह हर शै का अहाता किए हुए है। (54)

ع ٦ ١

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
हा-मीम। (1)
अ़यन-सीन-क़ाफ़। (2)
इसी तरह आप (स) की तरफ़ और आप (स) के पहलों की तरफ़ वहि फ़रमाता है अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला। (3)
उसी के लिए है जो आस्मानों में और ज़मीन में, और वह बुलन्द, अ़ज़मत वाला है। (4)
क़रीब है कि आस्मान उन के ऊपर से फट पड़ें। और फ़रिश्ते अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्बीह करते हैं और उन के लिए मग़्फ़िरत तलब करते हैं जो ज़मीन में हैं, याद रखो! बेशक अल्लाह ही बख़्शने वाला रहम करने वाला (5)
और जो लोग ठहराते हैं अल्लाह के सिवा (दूसरों को) रफ़ीक़, अल्लाह उन्हें देख रहा है, आप (स) उन पर ज़िम्मेदार नहीं। (6)
और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ़ वहि किया क़ुरआन अ़रबी ज़बान में ताकि आप (स) डराएं अहले मक्का को और उन्हें जो उस के इर्द गिर्द हैं, और आप (स) डराएं जमा होने के दिन से, कोई शक नहीं उस में, एक फ़रीक़ जन्नत में होगा और एक फ़रीक़ दोज़ख़ में। (7)
और अगर अल्लाह चाहता तो ज़रूर उन्हें एक उम्मत बना देता और लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और ज़ालिमों के लिए न कोई कारसाज़ है और न मददगार। (8)
क्या उन्हों ने अल्लाह के सिवा कारसाज़ ठहरा लिए हैं? पस अल्लाह ही कारसाज़ है, वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और वही हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। (9)
और जिस बात में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो उस का फ़ैसला अल्लाह के पास है, वही है अल्लाह मेरा रब, उस पर मैं ने भरोसा किया, और उसी की तरफ़ मैं रुजूअ़ करता हूँ। (10)

آيَاتُهَا ٥٣ ❀ سُوْرَةُ الشُّوْرٰى (٤٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٥

रुकूआ़त 5	(42) सूरतुश शूरा सलाह औ मशवरा	आयात 53

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ۝١ عٓسٓقٓ ۝٢ كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ

आप (स) से पहले	वह जो	और तरफ़	आप (स) की तरफ़	वहि फ़रमाता है	इसी तरह	2	अ़यन-सीन-क़ाफ़	1	हा-मीम

اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ

और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	उसी के लिए	3	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह

الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ۝٤ تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	उन के ऊपर से	फट पड़ें	आस्मानों (जमा)	क़रीब है	4	अ़ज़मत वाला	बुलन्द

يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ

बेशक अल्लाह	याद रखो	ज़मीन में	उस के लिए जो	और वह मग़्फ़िरत तलब करते हैं	अपने रब की तारीफ़ के साथ	तस्बीह करते हैं

هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٥ وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ اللّٰهُ

अल्लाह	रफ़ीक़	उस के सिवा	ठहराते हैं	और जो लोग	5	मेहरबान	बख़्शने वाला	वह-वही

حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ ڮ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝٦ وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ

हम ने वहि किया	और उसी तरह	6	ज़िम्मेदार	उन पर	और आप (स) नहीं	निगरान उन पर (उन्हें देख रहा है)

اِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ

और आप (स) डराएं	उस के इर्द गिर्द	और जो	बस्तियों का मरकज़ (अहले मक्का)	ताकि आप (स) डराएं	अ़रबी ज़बान	क़ुरआन	आप (स) की तरफ़

يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ ۝٧

7	दोज़ख़ में	और एक फ़रीक़	जन्नत में	एक फ़रीक़	उस में	नहीं शक	जमा होने का दिन

وَلَوْ شَاۗءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَاۗءُ

जिसे चाहता है	वह दाख़िल करता है	और लेकिन	एक उम्मत	ज़रूर बना देता उन्हें	चाहता अल्लाह	और अगर

فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٨ اَمِ اتَّخَذُوْا

उन्हों ने ठहरा लिए	क्या	8	और न मददगार	कारसाज़	कोई	नहीं उन के लिए	और ज़ालिम (जमा)	अपनी रहमत में

مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۚ فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ۡ وَهُوَ

और वह	मुर्दों	ज़िन्दा करता है	और वही	वही कारसाज़	पस अल्लाह	कारसाज़ (जमा)	उस के सिवा

عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٩ وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ ع ١ / ٢

तो उस का फ़ैसला	किसी चीज़	उस में	इख़्तिलाफ़ करते हो तुम	और जो-जिस	9	क़ुदरत रखने वाला	चीज़	हर	पर

اِلَى اللّٰهِ ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ڰ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝١٠

10	मैं रुजूअ़ करता हूँ	और उस की तरफ़	भरोसा किया मैं ने	उस पर	मेरा रब	वही है अल्लाह	तरफ़-पास अल्लाह

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا

जोड़े	तुम्हारी ज़ात (जिन्स) से	तुम्हारे लिए	उस ने बनाए	और ज़मीन	पैदा करने वाला आस्मानों

وَّمِنَ الْاَنْعَامِ اَزْوَاجًا ۚ يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ۭ لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ

और वह	कोई शै	उस के मिस्ल	नहीं	इस (दुनिया) में	वह फैलाता है तुम्हें	जोड़े	चौपायों	और से

السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ﴿١١﴾ لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يَبْسُطُ

वह फ़राख़ करता है	और ज़मीन	आस्मानों	कुंजियां	उस के लिए (पास)	11	देखने वाला	सुनने वाला

الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ ۭ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٢﴾ شَرَعَ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	उस ने मुक़र्रर किया	12	जानने वाला	हर शै का	बेशक वह	और तंग करता है	वह चाहता है	जिस के लिए	रिज़्क़

مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ

आप की तरफ़ (को)	हम ने वहि की	और वह जिस	नूह (अ)	उस का	उस ने जिस का हुक्म दिया	वही दीन

وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى اَنْ اَقِيْمُوا الدِّيْنَ

दीन	कि तुम क़ाइम करो	और ईसा (अ)	और मूसा (अ)	इब्राहीम (अ)	उस का	और जिस का हुक्म दिया हम ने

وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۭ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ اِلَيْهِ ۭ اَللّٰهُ

अल्लाह	उस की तरफ़	जिस की तरफ़ आप उन्हें बुलाते हैं	मुशरिकों पर	सख़्त	उस में	और तफ़र्रक़ा न डालो तुम

يَجْتَبِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْٓ اِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ﴿١٣﴾ وَمَا تَفَرَّقُوْٓا

और उन्हों ने तफ़र्रक़ा न डाला	13	जो रुजूअ करता है	उस की तरफ़	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है	अपनी तरफ़	चुन लेता है

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَاۗءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۭ وَلَوْ لَا

और अगर न	आपस की	ज़िद	इल्म	कि आ गया उन के पास	उस के बाद	मगर

كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۭ

उन के दरमियान	तो फ़ैसला कर दिया जाता	एक मुद्दते मुक़र्ररा	तक	आप के रब की तरफ़ से	गुज़र चुका होता	फ़ैसला

وَاِنَّ الَّذِيْنَ اُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ﴿١٤﴾

14	तरद्दुद में डालने वाला	उस से	अलबत्ता वह शक में	उन के बाद	किताब के वारिस बनाए गए	जो लोग	और बेशक

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ اُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَاۗءَهُمْ ۚ

उन की ख़्वाहिशात	और आप न चलें	जैसा कि मैं ने हुक्म दिया है आप (स) को	और क़ाइम रहें	आप बुलाएं	पस उसी के लिए

وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَاُمِرْتُ لِاَعْدِلَ

कि मैं इंसाफ़ करूँ	और मुझे हुक्म दिया गया	से - हर किताब	नाज़िल की अल्लाह ने	उस पर जो	मैं ईमान ले आया	और कहें

بَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۭ لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۭ

तुम्हारे आमाल	और तुम्हारे लिए	हमारे आमाल	हमारे लिए	और तुम्हारा रब	हमारा रब	अल्लाह	तुम्हारे दरमियान

لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۭ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٥﴾

15	बाज़गश्त (लौटना)	और उसी की तरफ़	हमारे दरमियान (हमें)	जमा करेगा	अल्लाह	और तुम्हारे दरमियान	कोई हुज्जत (झगड़ा) नहीं हमारे दरमियान

आस्मानों और ज़मीन का पैदा
करने वाला, उस ने बनाए तुम्हारे
लिए तुम्हारी जिन्स से जोड़े और
चौपायों से जोड़े, वह तुम्हें इस
(दुनिया) में फैलाता है। उस के
मिस्ल कोई शै नहीं, और वह सुनने
वाला, देखने वाला। (11)
उसी के पास हैं आस्मानों और ज़मीन
की कुंजियां, वह रिज़्क़ फ़राख़ करता
है जिस के लिए वह चाहता है (और
जिस पर चाहे) तंग कर देता है, बेशक
वह हर शै का जानने वाला। (12)
उस ने तुम्हारे लिए वही दीन मुक़र्रर
किया है जिस के क़ाइम करने का
उस ने हुक्म दिया था नूह (अ) को
और जिस की हम ने आप (स) की
तरफ़ वहि की, और जिस का हुक्म
हम ने इब्राहीम (अ) और मूसा (अ)
और ईसा (अ) को दिया था कि तुम
दीन क़ाइम करो और उस में तफ़र्रक़ा
न डालो, वह मुशरिकों पर गरां
गुज़रती है जिस की तरफ़ आप (स)
उन्हें बुलाते हैं, अल्लाह अपनी
तरफ़ (अपने क़ुर्ब के लिए) जिस को
चाहता है चुन लेता है। और जो उस
की तरफ़ रुजूअ करता है उसे अपनी
तरफ़ से हिदायत देता है। (13)
और उन्हों ने तफ़र्रक़ा न डाला
मगर उस के बाद कि उन के
पास इल्मे (वहि) आ गया आपस
की ज़िद की वजह से, और अगर
आप (स) के रब की तरफ़ से एक
मुद्दते मुक़र्ररा तक मोहलत देने
का फ़ैसला न गुज़र चुका होता तो
उन के दरमियान फ़ैसला कर दिया
जाता, और बेशक जो लोग उन के
बाद किताब के वारिस बनाए गए
अलबत्ता वह उस से तरद्दुद में
डालने वाले शक में हैं। (14)
पस उसी के लिए आप (स) बुलाएं
और (उस पर) क़ाइम रहें जैसा कि
मैं ने आप को हुक्म दिया है और
आप (स) उन की ख़्वाहिशात पर न
(चलें), और कहें कि मैं ईमान
ले आया हर किताब पर जो अल्लाह
ने नाज़िल की और मुझे हुक्म
दिया गया है कि मैं तुम्हारे दरमियान
इंसाफ़ करूँ, अल्लाह हमारा भी रब
है और तुम्हारा भी रब है। हमारे
लिए हमारे आमाल और तुम्हारे
लिए तुम्हारे आमाल, हमारे और
तुम्हारे दरमियान कोई झगड़ा नहीं,
अल्लाह हमें जमा करेगा, और उसी
की तरफ़ बाज़गश्त है। (15)

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِى اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ

उन की हुज्जत	कि क़ुबूल कर लिया गया उस के लिए - उस को	उस के बाद	अल्लाह के बारे में	झगड़ा करते हैं	और जो लोग

دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ١٦

16	सख़्त	अ़ज़ाब	और उन के लिए	ग़ज़ब	और उन पर	उन का रब	हां	लगू

اَللّٰهُ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ

तुझे ख़बर	और क्या	और मीज़ान	हक़ के साथ	किताब	नाज़िल की	वह जिस ने	अल्लाह

لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ١٧ يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ईमान नहीं रखते	वह लोग जो	उस की	वह जल्दी मचाते हैं	17	क़रीब	क़ियामत	शायद

بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ

हक़	कि यह	और वह जानते हैं	उस से	वह डरते हैं	ईमान लाए	और जो लोग	उस पर

اَلَاۤ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِى السَّاعَةِ لَفِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ١٨

18	दूर	अलबत्ता गुमराही में	क़ियामत के बारे में	झगड़ते हैं	बेशक जो लोग	याद रखो

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ١٩ ع ١٠ ٢ ٣

19	ग़ालिब	क़वी	और वह	जिस को चाहे	वह रिज़्क़ देता है	अपने बन्दों पर	मेहरबान	अल्लाह

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِىْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ

और जो	खेती में उस की	हम इज़ाफ़ा कर देते हैं उस के लिए	आख़िरत	खेती	चाहता है	जो शख़्स

كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ

आख़िरत में	और नहीं उस के लिए	उस में से	हम उसे देते हैं	दुनिया की खेती	चाहता है

مِنْ نَّصِيْبٍ ٢٠ اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ

दीन	से - ऐसा	उन के लिए	उन्हों ने मुक़र्रर किया	कुछ शरीक (जमा)	क्या उन के लिए	20	कोई हिस्सा

مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ

उन के दरमियान	तो फ़ैसला हो जाता	एक क़ौले फ़ैसल	और न अगर	अल्लाह	उस की	इजाज़त दी	जो - जिस नहीं

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ٢١ تَرَى الظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिमों	तुम देखोगे	21	दर्दनाक	अ़ज़ाब	उन के लिए	ज़ालिमों	और बेशक

مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ

और जो लोग	उन पर	वाक़े होने वाला	और वह	उस से जो उन्हों ने कमाया (आमाल)	डरते होंगे

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ

उन के लिए	जन्नतों	बाग़ात	में	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए

مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ٢٢

22	बड़ा	फ़ज़्ल	वह - यही	यह	उन के रब के हां	जो वह चाहेंगे

और जो लोग अल्लाह के बारे में झगड़ा करते हैं उस के बाद कि उस को क़ुबूल कर लिया गया, उन की हुज्जत (क़ुबूल करने वालों से झगड़ा) उन के रब के हां लगू (बेसबात) है और उन पर ग़ज़ब है, और उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब है। (16) अल्लाह है जिस ने किताब हक़ के साथ नाज़िल की और मीज़ान (भी), और तुझे क्या ख़बर कि शायद क़ियामत क़रीब हो। (17) उस की वह लोग जल्दी मचाते हैं जो उस पर ईमान नहीं रखते। और जो लोग ईमान लाए वह उस से डरते हैं और वह जानते हैं कि यह हक़ है, याद रखो! बेशक जो लोग क़ियामत के बारे में झगड़ते हैं वह दूर (बड़ी) गुमराही में हैं। (18) अल्लाह अपने बन्दों पर मेहरबान है, वह जिसे चाहता है रिज़्क़ देता है, और वह क़वी, ग़ालिब है। (19) जो शख़्स चाहता है खेती आख़िरत की, हम उस की खेती में उस के लिए इज़ाफ़ा कर देते हैं, और जो दुनिया की खेती चाहता है हम उसे उस में से देते हैं और उस के लिए नहीं आख़िरत में कोई हिस्सा। (20) या उन के कुछ शरीक हैं जिन्हों ने उन के लिए ऐसा दीन मुक़र्रर किया है जिस की अल्लाह ने इजाज़त नहीं दी, और अगर एक क़ौले फ़ैसल न होता तो उन के दरमियान (यहीं) फ़ैसला हो जाता, और बेशक ज़ालिमों के लिए अ़ज़ाब है दर्दनाक। (21) तुम ज़ालिमों को देखोगे अपने आमाल (के वबाल) से डरते होंगे, और वह उन पर वाक़े होने वाला है, और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, वह जन्नतों के बाग़ात में होंगे, वह जो चाहेंगे उन के रब के हां (मिलेगा) यही है बड़ा फ़ज़्ल। (22)

ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ

और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए	वह जो ईमान लाए	अपने बन्दे	अल्लाह बशारत देता है	वह जिस	यही

قُلْ لَّآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ؕ وَمَنْ يَّقْتَرِفْ

कमाएगा	और जो	क़राबतदारी में-की	मुहब्बत	सिवाए	कोई अजर	इस पर	मैं तुम से नहीं मांगता	फ़रमा दें

حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ﴿۲۳﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ

वह कहते हैं	क्या	23	क़द्र दान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	खूबी	उस में	हम बढ़ा देंगे उस के लिए	कोई नेकी

افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ فَاِنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ؕ وَيَمْحُ

और मिटाता है	तुम्हारे दिल पर	वह मुहर लगा देता	चाहता अल्लाह	सो अगर	झूट	अल्लाह पर	उस ने बाँधा

اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۲۴﴾

24	दिलों की बातों को	जानने वाला	बेशक वह	अपने कलिमात से	हक़	और साबित करता है	बातिल	अल्लाह

وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ

बुराइयां	से-को	और माफ़ कर देता है	अपने बन्दों से	तौबा	जो क़ुबूल फ़रमाता है	और वही

وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿۲۵﴾ ۙ وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	वह जो ईमान लाए	और क़ुबूल करता है	25	जो तुम करते हो	और वह जानता है

وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿۲۶﴾ وَلَوْ

और अगर	26	सख़्त	अ़ज़ाब	उन के लिए	और काफ़िरों	अपने फ़ज़्ल से	और उन को ज़ियादा देता है

بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ

अन्दाज़े से	वह उतारता है	और लेकिन	ज़मीन में	तो वह सरकशी करते	अपने बन्दों के लिए	रिज़्क़	कुशादा कर देता अल्लाह

مَّا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ﴿۲۷﴾ وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ

बारिश	नाज़िल फ़रमाता है	वह जो	और वही	27	देखने वाला	बाख़बर	अपने बन्दों से	बेशक वह	जिस क़द्र वह चाहता है

مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿۲۸﴾

28	सतूदा सिफ़ात	कारसाज़	और वही	अपनी रहमत	और फैलाता है	जब वह मायूस हो गए	बाद

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ

चौपाए	उन के दरमियान	उस ने फैलाए	और जो	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा करना	उस की निशानियां	और से

ع ٣ ١٠ ٤ الربع

وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿۲۹﴾ وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا

तो उस के सबब जो	कोई मुसीबत	और जो पहुँची तुम्हें	29	क़ुदरत रखने वाला	जब वह चाहे	उन के जमा करने पर	और वह

كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿۳۰﴾ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ

आ़जिज़ करने वाले	तुम	और नहीं	30	बहुत से	और माफ़ फ़रमा देता है	तुम्हारे हाथों	कमाया

فِي الْاَرْضِ ۚ ۖ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿۳۱﴾

31	और न कोई मददगार	कोई कारसाज़	अल्लाह के सिवा	और नहीं तुम्हारे लिए	ज़मीन में

यही है वह जिस की अल्लाह अपने बन्दों को बशारत देता है जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, आप (स) फ़रमा दें: मैं तुम से क़राबत की मुहब्बत के सिवा इस पर कोई अजर नहीं मांगता, और जो शख़्स कोई नेकी कमाएगा (करेगा) हम उस के लिए उस में ख़ूबी बढ़ा देंगे, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, क़द्र दान है। (23)
क्या वह कहते हैं कि उस ने अल्लाह पर बाँधा है झूट, सो अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा देता, और अल्लाह बातिल को मिटाता है और हक़ को साबित करता है अपने कलिमात से, बेशक वह दिलों की बातों को जानने वाला है। (24)
और वही है जो अपने बन्दों से तौबा क़ुबूल फ़रमाता है और बुराइयों को माफ़ कर देता है, और वह जानता है जो तुम करते हो। (25)
और वह (उन की दुआएं) क़ुबूल करता है जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, और वह उन को अपने फ़ज़्ल से और ज़ियादा देता है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अ़ज़ाब है। (26)
और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रिज़्क़ कुशादा कर देता तो वह ज़मीन में सरकशी करते, लेकिन वह अन्दाज़े से जिस क़द्र चाहता है उतारता है, बेशक वह अपने बन्दों (की ज़रुरतों) से बाख़बर देखने वाला है। (27)
और उस के बाद जब कि वह नाउम्मीद हो गए तो वही है जो बारिश नाज़िल फ़रमाता है, और अपनी रहमत फैलाता है, और वही है कारसाज़, सतूदा सिफ़ात। (28)
और उस की निशानियों में से है पैदा करना आस्मानों का और ज़मीन का, और जो उस ने उन के दरमियान चौपाए फैलाए, और वह जब चाहे उन के जमा करने पर क़ुदरत रखता है। (29)
और तुम्हें जो कोई मुसीबत पहुँची तो वह उस के सबब (पहुँची) जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (किया) और वह बहुत से (गुनाह) माफ़ (ही) कर देता है। (30)
और तुम ज़मीन में (अल्लाह तआ़ला को) आजिज़ करने वाले नहीं हो, और अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए न कोई कारसाज़ है और न कोई मददगार। (31)

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿٣٢﴾ اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ

हवा	वह ठहरा दे	अगर वह चाहे	32	पहाड़ों जैसे	समन्दर में	जहाज़	और उस की निशानियों से

فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ

हर सब्र करने वाले के लिए	अलबत्ता निशानियां	बेशक उस में	उस की पीठ (सतह) पर	खड़े हुए	तो वह रह जाएं

شَكُوْرٍ ﴿٣٣﴾ اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٤﴾ وَّيَعْلَمَ

और जान लें	34	बहुतों को	और माफ़ कर दे	उन के आमाल के सबब	वह उन्हें हलाक कर दे	या	33	शुक्र करने वाले

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِىْٓ اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٥﴾ فَمَآ اُوْتِيْتُمْ

पस जो कुछ दी गई तुम्हें	35	ख़लासी	कोई	नहीं उन के लिए	हमारी आयात में	झगड़ते हैं	वह लोग जो

مِّنْ شَىْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى

और हमेशा बाक़ी रहने वाला	बेहतर	अल्लाह के पास	और जो	दुनियवी ज़िन्दगी	तो फ़ाइदा	कोई शै

لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٣٦﴾ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ

वह बचते हैं	और जो लोग	36	वह भरोसा करते हैं	और अपने रब पर वह	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए

كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	वह माफ़ कर देते हैं	वह गुस्से में होते हैं	और जब	और बेहयाइयां	कबीरा (बड़े) गुनाह

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۠ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى

मश्वरा	और उन का काम	नमाज़	और उन्हों ने क़ाइम की	अपने रब का (फ़रमान)	क़ुबूल किया	और जिन लोगों ने

بَيْنَهُمْ ۠ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ

उन्हें पहुँचे	जब	और जो लोग	38	वह ख़र्च करते हैं	हम ने अ़ता किया उन्हें	और उस से जो	बाहम

الْبَغْىُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ

उस जैसी	बुराई	बुराई	और बदला	39	बदला लेते हैं	वह	कोई ज़ुल्म ओ तअ़द्दी

فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

40	ज़ालिम (जमा)	दोस्त नहीं रखता	बेशक वह	अल्लाह पर-ज़िम्मे	तो उस का अजर	और इस्लाह कर दी	माफ़ कर दिया	सो जिस

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ

नहीं उन पर	सो यह लोग	अपने ऊपर ज़ुल्म के बाद	उस ने बदला लिया	और अलबत्ता-जिस

مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤١﴾ اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ

लोग	वह ज़ुल्म करते हैं	वह लोग जो	पर	राह (इल्ज़ाम)	इस के सिवा नहीं	41	कोई राह

وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ

उन के लिए	यही लोग	नाहक़	ज़मीन में	और वह फ़साद करते हैं

عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾ وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿٤٣﴾ ع

43	बड़ी हिम्मत के काम	अलबत्ता-से	बेशक यह	और माफ़ कर दिया	सब्र किया	और अलबत्ता-जिस	42	दर्दनाक अ़ज़ाब

और उस की निशानियों में से समन्दर में पहाड़ों जैसे जहाज़ हैं। (32) अगर वह चाहे तो हवा को ठहरा दे तो उस की सत्ह पर वह खड़े हुए रह जाएं, बेशक उस में निशानियां हैं हर सब्र करने वाले, शुक्र करने वाले के लिए। (33) या वह उन्हें उन के आमाल के सबब हलाक कर दे और बहुतों को माफ़ कर दे। (34) और जान लें वह लोग जो हमारी आयात में झगड़ते हैं कि उन के लिए कोई ख़लासी (जाए फ़िरार) नहीं। (35) पस तुम्हें जो कुछ कोई शै दी गई है तो वह दुनियवी ज़िन्दगी का (नापाइदार) फ़ाइदा है, और जो अल्लाह के पास है वह बेहतर और हमेशा बाक़ी रहने वाला है, उन लोगों के लिए जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। (36) और जो लोग बचते है बड़े गुनाहों से और बेहयाइयों से और जब वह गुस्से में होते हैं तो माफ़ कर देते हैं। (37) और जिन लोगों ने क़ुबूल किया अपने रब का फ़रमान और उन्हों ने नमाज़ क़ाइम की, और उन का काम बाहम मश्वरा (से होता है) और जो हम ने उन्हें दिया उस में से वह ख़र्च करते हैं। (38) और जो लोग (ऐसे हैं कि) जब उन पर कोई ज़ुल्म ओ अत्याचार पहुँचे तो वह बदला लेते हैं। (39) और बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है, सो जिस ने माफ़ कर दिया और इस्लाह (दुरुस्ती) कर दी तो उस का अजर अल्लाह के ज़िम्मे है, बेशक वह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता। (40) और अलबत्ता जिस ने बदला लिया अपने ऊपर ज़ुल्म के बाद, सो यह लोग हैं जिन पर कोई राहे (इल्ज़ाम) नहीं। (41) इस के सिवा नहीं कि इल्ज़ाम उन पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, और ज़मीन में नाहक़ फ़साद मचाते हैं, यही लोग हैं जिन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (42) और अलबत्ता जिस ने सब्र किया और माफ़ कर दिया तो बेशक यह बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (43)

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिम (जमा)	और तुम देखोगे	उस के बाद	कोई कारसाज़	तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस को

لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۚ ﴿٤٤﴾ وَتَرٰىهُمْ

और तू देखेगा उन्हें	44	कोई राह	लौटना	तरफ़-का	क्या	वह कहेंगे	अज़ाब	वह देखेंगे	जब

يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ

गोशाए चश्म पोशीदा (नीम कुशादा)	से	वह देखते होंगे	ज़िल्लत से	आजिज़ी करते हुए	उस (दोज़ख़) पर	पेश किए जाएंगे वह

وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ

और अपना घराना	अपने आप को	ख़सारे में डाला	वह जिन्हों ने	ख़सारा पाने वाले	बेशक	जो ईमान लाए (मोमिन)	और कहेंगे

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ﴿٤٥﴾ وَمَا كَانَ لَهُمْ

उन के लिए	और नहीं हैं	45	हमेशा रहने वाला अ़ज़ाब	में	ज़ालिम (जमा)	ख़ूब याद रखो! बेशक	रोज़े क़ियामत

مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ

तो नहीं उस के लिए	गुमराह कर दे अल्लाह	और जिस	अल्लाह के सिवा	वह मदद दें उन्हें	कोई कारसाज़

مِنْ سَبِيْلٍ ﴿٤٦﴾ اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ

उस के लिए	फेरने वाला नहीं	वह दिन	कि आए	इस से क़ब्ल	अपने रब का (फ़रमान)	तुम क़ुबूल कर लो	46	कोई रास्ता

مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ﴿٤٧﴾ فَاِنْ اَعْرَضُوْا

वह मुँह फेर लें	फिर अगर	47	कोई इन्कार (रोक टोक करने वाला)	और नहीं तुम्हारे लिए	उस दिन	पनाह	कोई	नहीं तुम्हारे लिए	अल्लाह से

فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّاۤ اِذَاۤ اَذَقْنَا

चखाते हैं हम	जब	और बेशक	पहुँचाना	सिवा	आप पर-ज़िम्मे	नहीं	निगहबान	उन पर	हम ने भेजा तुम्हें	तो नहीं

الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ

आगे भेजा	उस के बदले	कोई बुराई	पहुँचे उन्हें	और अगर	ख़ुश हो जाता है उस से	रहमत	अपनी तरफ़ से	इन्सान

اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ﴿٤٨﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और ज़मीन	आस्मानों	अल्लाह के लिए बादशाहत	48	बड़ा नाशुक्रा	तो बेशक इन्सान	उन के हाथों

يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ﴿٤٩﴾

49	बेटे	जिस के लिए वह चाहता है	और अ़ता करता है	बेटियां	जिस के लिए वह चाहता है	वह अ़ता करता है	जो वह चाहता है	वह पैदा करता है

اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ

जानने वाला	बेशक वह	बाँझ	जिस को वह चाहता है	और कर देता है	और बेटियां	बेटे	जमा कर देता है उन्हें	या

قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾ وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ

पीछे से	या	मगर वहि से	कि उस से कलाम करे अल्लाह	किसी बशर को	और नहीं है	50	क़ुदरत रखने वाला

حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٥١﴾

51	हिक्मत वाला	बुलन्द तर	बेशक वह	जो वह चाहे	उस के हुक्म से	पस वह वहि करे	कोई फ़रिश्ता	या वह भेजे	एक पर्दा

और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे तो उस के लिए नहीं उस के बाद कोई कारसाज़, और तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वह अ़ज़ाब देखेंगे (तो) वह कहेंगेः क्या लौटने की कोई राह है? (44)

और तू देखेगा जब वह आजिज़ी करते हुए ज़िल्लत से दोज़ख़ पर पेश किए जाएंगे तो वह देखते होंगे अध खुली आँखों से, और मोमिन कहेंगेः ख़सारा पाने वाले वह हैं जिन्हों ने ख़सारे में डाला अपने आप को और अपने घराने को रोज़े क़ियामत, ख़ूब याद रखो! ज़ालिम बेशक हमेशा रहने वाले अ़ज़ाब में होंगे। (45)

और उन के लिए नहीं है कोई कारसाज़ जो उन्हें अल्लाह के सिवा मदद दे, और जिस को अल्लाह गुमराह कर दे उस के लिए (हिदायत का) कोई रास्ता नहीं। (46)

तुम अपने रब का फ़रमान उस से क़ब्ल क़ुबूल कर लो कि वह दिन आए जिस को अल्लाह (की जानिब) से कोई फेरने वाला नहीं, तुम्हारे लिए नहीं उस दिन कोई पनाह, और तुम्हारे लिए कोई रोक टोक करने वाला नहीं। (47)

फिर अगर वह मुँह फेर लें तो हम ने आप को उन पर नहीं भेजा निगहबान, आप (स) के ज़िम्मे (पैग़ाम) पहुँचाने के सिवा नहीं, और बेशक जब हम इन्सान को अपनी तरफ़ से रहमत (का मज़ा) चखाते हैं तो वह उस से ख़ुश हो जाता है, और अगर उन्हें उस के बदले कोई बुराई पहुँचे जो उन के हाथों ने आगे भेजा, तो बेशक इन्सान बड़ा नाशुक्रा है। (48)

अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, जो वह चाहता है पैदा करता है, वह अ़ता करता है जिस को वह चाहे बेटियां, और वह अ़ता करता है जिस के लिए वह चाहता है बेटे। (49)

या उन्हें जमा कर देता (जोड़े देता है) बेटे और बेटियां, और जिस को वह चाहता है बाँझ (बेऔलाद) कर देता है, बेशक वह जानने वाला क़ुदरत रखने वाला है। (50)

और किसी बशर की (मजाल) नहीं कि अल्लाह उस से कलाम करे मगर वहि (इशारे) से या पर्दे के पीछे से, या वह कोई फ़रिश्ता भेजे, पस वह उस के हुक्म से जो (अल्लाह) चाहे वह वहि करे (पैग़ाम पहुँचा दे), बेशक वह बुलन्द तर, हिक्मत वाला है। (51)

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِىْ مَا الْكِتٰبُ

क्या है किताब	तुम न जानते थे	अपने हुक्म से	कुरआन	तुम्हारी तरफ़	हम ने वहि किया	और उसी तरह

وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِىْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ

अपने बन्दों में से	जिस को हम चाहते हैं	हम हिदायत देते हैं उस से	नूर	हम ने बना दिया उसे	और लेकिन	और न ईमान

وَاِنَّكَ لَتَهْدِىْۤ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۙ﴿۵۲﴾ صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا

जो कुछ	वह जिस के लिए	रास्ता अल्लाह का	52	सीधा	रास्ता	तरफ़	ज़रूर रहनुमाई करते हो	और बेशक तुम

فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿۵۳﴾ع ع ٦

53	तमाम काम	बाज़गश्त	अल्लाह की तरफ़	याद रखें	ज़मीन में	और जो कुछ	आस्मानों में

آيَاتُهَا ٨٩ ❀ سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ (٤٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٧

रुकूआत 7 | (43) सूरतुज़ ज़ुख़रुफ़ चमक-दमक | आयात 89

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿۱﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ﴿۲﴾ اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ صح ١١ عدد المتقدمين ١٢

ताकि तुम	अरबी ज़बान	कुरआन	हम ने इसे बनाया	बेशक हम	2	वाज़ेह	क़सम है किताब	1	हा-मीम

تَعْقِلُوْنَ ﴿۳﴾ج وَاِنَّهٗ فِىْۤ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِىٌّ حَكِيْمٌ ﴿۴﴾ؕ اَفَنَضْرِبُ

क्या हम हटा लें	4	बाहिक्मत	बुलन्द मरतबा	हमारे पास	असल किताब (लौहे महफ़ूज़)	में	और बेशक वह	3	समझो

عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿۵﴾ وَكَمْ اَرْسَلْنَا

और कितने ही भेजे हम ने	5	हद से गुज़रने वाले	लोग	तुम हो	कि	एराज़ कर के	नसीहत	तुम से

مِنْ نَّبِىٍّ فِى الْاَوَّلِيْنَ ﴿۶﴾ وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِىٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ

उस से	वह थे	मगर	कोई नबी	और नहीं आया उन के पास	6	पहले लोगों में	नबी

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۷﴾ فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ

मिसाल	और गुज़र चुकी	पकड़	उन से	सख़्त	पस हम ने हलाक किया	7	मज़ाक़ करते

الْاَوَّلِيْنَ ﴿۸﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ

तो वह ज़रूर कहेंगे	और ज़मीन	पैदा किया आस्मानों को	किस	तुम उन से पूछो	और अगर	8	पहले लोग

خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ۙ﴿۹﴾ الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا

फ़र्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	बनाया	वह जिस	9	इल्म वाला	ग़ालिब	उन्हें पैदा किया

وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۰﴾ج وَالَّذِىْ نَزَّلَ

उतारा	और वह जिस	10	तुम राह पाओ	ताकि तुम	रास्ते - सबील	उस में	तुम्हारे लिए	और बनाए

مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ۚ فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿۱۱﴾

11	तुम निकाले जाओगे	उसी तरह	मुर्दा ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया हम ने	एक अंदाज़े से	पानी	आस्मान से

और उसी तरह हम ने आप (स) की तरफ़ अपने हुक्म से कुरआन को वहि किया, आप (स) न जानते थे कि किताब क्या है? और न ईमान (की तफ़सील) और लेकिन हम ने उसे नूर बना दिया, उस से हम अपने बन्दों में से जिस को चाहते हैं हिदायत देते हैं, और बेशक आप (स) ज़रूर रहनुमाई करते हैं सीधे रास्ते की तरफ़। (52)
(यानी) अल्लाह का रास्ता, उसी के लिए है जो कुछ आस्मानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, याद रखें! तमाम कामों की बाज़गश्त अल्लाह की तरफ़ है। (53)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1)
क़सम है वाज़ेह किताब की। (2)
बेशक हम ने उसे बनाया अरबी ज़बान में कुरआन, ताकि तुम समझो। (3)
और बेशक वह (कुरआन) हमारे पास लौहे महफ़ूज़ में है, बुलन्द मरतबा, बाहिक्मत। (4)
क्या हम यह नसीहत तुम से एराज़ कर के इस लिए हटा लें कि तुम हद से गुज़रने वाले लोग हो। (5)
और हम ने पहले लोगों में बहुत से नबी भेजे। (6)
और उन के पास नहीं आया कोई नबी, मगर वह उस से ठठा करते थे। (7)
पस हम ने उन (अहले मक्का) से ज़ियादा सख़्त पकड़ (ताक़त) वाले लोगों को हलाक किया और गुज़र चुकी है पहले लोगों की मिसाल। (8)
और अगर तुम उन से पूछो कि किस ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया? तो वह ज़रूर कहेंगे "उन्हें पैदा किया है ग़ालिब, इल्म वाले (अल्लाह) ने"। (9)
वह जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया और तुम्हारे लिए उस में बनाए रास्ते ताकि तुम राह पाओ। (10)
और वह अल्लाह जिस ने एक अन्दाज़े के साथ आस्मानों से पानी उतारा, फिर हम ने उस से ज़िन्दा किया मुर्दा ज़मीन को, उसी तरह तुम (क़ब्रों से) निकाले जाओगे। (11)

وَالَّذِىْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ

और चौपाए	कश्तियां	तुम्हारे लिए	और बनाई	उन सब के	जोड़े	पैदा किए	और वह जिस

مَا تَرْكَبُوْنَ ﴿١٢﴾ لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا

जब	अपना रब	नेमत	तुम याद करो	फिर	उन की पीठों पर	ताकि तुम ठीक बैठो	12	तुम सवार होते हो	जिस

اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِىْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا

और न थे हम	इस	मुसख़्ख़र किया हमारे लिए	वह ज़ात जिस	पाक है	और तुम कहो	उस पर	तुम ठीक बैठ जाओ

لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ﴿١٣﴾ وَاِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٤﴾ وَجَعَلُوْا لَهٗ

उस के लिए	उन्हों ने बना लिया	14	ज़रूर लौट कर जाने वाले	अपना रब	तरफ़	और बेशक हम	13	क़ाबू में लाने वाले	इस को

ع ١٥ ٧ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾ اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ

उस से जो उस ने पैदा किया	क्या उस ने बना लीं	15	खुले तौर पर	नाशुक्रा	बेशक इन्सान	हिस्सा (लख़्ते जिगर)	उस के बन्दों में से

بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ بِالْبَنِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ

उस ने बयान कीं	उस की जो	उन में से एक	ख़ुशख़बरी दी जाए	और जब	16	बेटों के साथ	और तुम्हें मख़सूस किया	बेटियां

لِلرَّحْمٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ﴿١٧﴾ اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا

पर्वरिश पाए	किया जो	17	ग़मगीन	और वह	सियाह	हो जाता है उस का चेहरा	मिसाल	रहमान (अल्लाह) के लिए

فِى الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِى الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ﴿١٨﴾ وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ

फ़रिश्ते	और उन्हों ने ठहरा लिया	18	ग़ैर वाज़ेह	झगड़े (बहस मुबाहसा) में	और वह	ज़ेवर में

الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ سَتُكْتَبُ

अभी लिख लिया जाएगा	उन की पैदाइश	क्या तुम मौजूद थे	औरतें	रहमान (अल्लाह के) बन्दे	वह	वह जो

شَهَادَتُهُمْ وَيُسْـَٔلُوْنَ ﴿١٩﴾ وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ

हम न इबादत करते उन की	रहमान (अल्लाह)	अगर चाहता	और वह कहते हैं	19	और उन से पूछा जाएगा	उन की गवाही (दावा)

مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٢٠﴾ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ

हम ने दी उन्हें	क्या	20	अटकल दौड़ाते हैं	मगर-सिर्फ़	वह	नहीं	कुछ इल्म	उस का	उन्हें नहीं

كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ مُسْتَمْسِكُوْنَ ﴿٢١﴾ بَلْ قَالُوْٓا اِنَّا وَجَدْنَآ

बेशक हम ने पाया	वह कहते हैं	बल्कि	21	थामे हुए हैं	सो वह उस को	इस से क़ब्ल	कोई किताब

اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَكَذٰلِكَ

और उसी तरह	22	राह पाने वाले (चल रहे हैं)	उन के नक़्शे क़दम पर	और बेशक हम	एक तरीक़े पर	अपने बाप दादा

مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِىْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ

उस के खुशहाल	कहा	मगर	कोई डर सुनाने वाला	किसी बस्ती में	इस से पहले	नहीं भेजा हम ने

اِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى اُمَّةٍ وَّاِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ ﴿٢٣﴾

23	पैरवी करते हैं	उन के नक़्शे क़दम पर	और बेशक हम	एक तरीक़े पर	अपने बाप दादा	बेशक हम ने पाया

और वह जिस ने उन सब के जोड़े बनाए, और तुम्हारे लिए बनाईं कश्तियां और चौपाए जिन पर तुम सवार होते हो। (12)
ताकि तुम उन की पीठों पर ठीक तौर से बैठो, फिर तुम याद करो अपने रब की नेमत को, जब तुम उस पर ठीक बैठ जाओ, और तुम कहोः पाक है वह ज़ात जिस ने इसे हमारे लिए मुसख़्ख़र (ताबे फ़रमान) किया और हम इस को क़ाबू में लाने वाले न थे। (13)
और बेशक हम अपने रब की तरफ़ ज़रूर लौट कर जाने वाले हैं। (14)
और उन्हों ने उस के बन्दों में से उस के लिए बना लिया है जुज़ (लख़्ते जिगर), बेशक इन्सान सरीह नाशुक्रा है। (15)
क्या उस ने अपनी मख़लूक़ में से (अपने लिए) बेटियां बना लीं? और तुम्हें मख़सूस किया (नवाज़ा) बेटों के साथ? (16)
और जब उन में से किसी को उस (बेटी) की ख़ुशख़बरी दी जाए जिस की मिसाल उस ने अल्लाह के लिए दी तो उस का चेहरा सियाह हो जाता है, और वह ग़म से भर जाता है। (17)
क्या वह (औलाद) जो ज़ेवर में पर्वरिश पाए और वह बहस मुबाहसा में ग़ैर वाज़ेह हो (अल्लाह के हिस्से में आई)। (18)
और उन्हों ने ठहराया फ़रिश्तों को औरतें, जो अल्लाह के बन्दे हैं, क्या तुम उन की पैदाइश (के वक़्त) मौजूद थे? उन का यह दावा अभी लिख लिया जाएगा और क़ियामत के (दिन) उन से पूछा जाएगा। (19)
और वह कहते हैंः अगर अल्लाह चाहता तो हम उन की इबादत न करते, उन्हें उस का कुछ इल्म नहीं, वह तो सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (20)
क्या हम ने उन्हें उस से क़ब्ल कोई किताब दी है जिस को वह थामे हुए हैं (उस से इस्तिद्लाल करते हैं)। (21)
बल्कि वह कहते हैं कि हम ने अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर पाया, और बेशक हम उन के नक़्शे क़दम पर चल रहे हैं। (22)
और उसी तरह हम ने आप (स) से पहले किसी बस्ती में कोई डर सुनाने वाला नहीं भेजा, मगर उस के खुशहाल लोगों ने कहा, बेशक हम ने पाया अपने बाप दादा को एक तरीक़े पर, और बेशक हम उन के नक़्शे क़दम की पैरवी करते हैं। (23)

قٰلَ اَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِاَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ؕ قَالُوْٓا اِنَّا

बेशक हम	वह बोले	अपने बाप दादा	उस पर	तुम ने पाया	उस से जिस	बेहतर राह बताने वाला	क्या अगरचे मैं तुम्हारे पास लाया हूँ	(नबी ने) कहा

بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۲۴﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ

हुआ	कैसा	सो देखो	उन से	तो हम ने बदला लिया	24	इन्कार करने वाले	जिस के साथ तुम भेजे गए	उस पर

عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۲۵﴾ وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ اِنَّنِىْ ع ۲ ۱۰ ۸ النصف

बेशक मैं	और अपनी क़ौम	अपने बाप को	इब्राहीम (अ)	कहा	और जब	25	झुटलाने वालों का	अन्जाम

بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ ﴿۲۶﴾ اِلَّا الَّذِىْ فَطَرَنِىْ فَاِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ ﴿۲۷﴾

27	जल्द मुझे हिदायत देगा	तो बेशक वह	मुझे पैदा किया	मगर वह जिस ने	26	उस से जिस की तुम परस्तिश करते हो	बेज़ार

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِىْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۸﴾ بَلْ مَتَّعْتُ

बल्कि मैं ने सामाने ज़ीस्त दिया	28	रुजूअ करते रहें	ताकि वह	अपनी नस्ल में	बाक़ी रहने वाली	बात	और उस ने किया उस को

هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿۲۹﴾ وَلَمَّا

और जब	29	साफ़ साफ़ बयान करने वाला	और रसूल	हक़ (क़ुरआन)	आ गया उन के पास	यहां तक कि	और उन के बाप दादा	उन को

جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ ﴿۳۰﴾ وَقَالُوْا

और वह बोले	30	इन्कार करने वाले	इस का	और बेशक हम	जादू	यह	वह कहने लगे	हक़	आ गया उन के पास

لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ ﴿۳۱﴾ اَهُمْ

क्या वह	31	बड़े	दो बस्तियां	से	किसी आदमी पर	यह क़ुरआन	क्यों न उतारा गया

يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

दुनिया की ज़िन्दगी	में	उन की रोज़ी	उन के दरमियान	हम ने तक़सीम की	हम	तुम्हारा रब	रहमत	तक़सीम करते हैं

وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا

उन में से बाज़ (एक) दूसरे को	ताकि बनाए	दरजे	बाज़ (दूसरे) पर	उन में से बाज़ (एक)	और हम ने बुलन्द किए

سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۳۲﴾ وَلَوْلَآ

और अगर (यह) न होता	32	वह जमा करते हैं	उस से जो	बेहतर	और तुम्हारे रब की रहमत	ख़िदमतगार

اَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ

रहमान (अल्लाह) का	उनके लिए जो कुफ़्र करते हैं	तो हम बनाते	एक उम्मत (तरीक़ा)	तमाम लोग	कि हो जाएंगे

لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَلِبُيُوْتِهِمْ

उन के घरों के लिए	33	वह चढ़ते	जिन पर	और सीढ़ियां	चाँदी से-की	छत	उनके घरों के लिए

اَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔوْنَ ﴿۳۴﴾ وَزُخْرُفًا ؕ وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا

मगर	यह सब	और नहीं	और आराइश करते	34	वह तकिया लगाते	जिन पर	और तख़्त	दरवाज़े

مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۳۵﴾ ع ۳ ۹

35	परहेज़गारों के लिए	तुम्हारे रब के नज़दीक	और आख़िरत	दुनिया की ज़िन्दगी	पूंजी

नबी (स) ने कहाः क्या (उस सूरत में भी) अगरचे मैं बेहतर राह बतलाने वाला (दीने हक़ लाया) हूँ उस से जिस पर तुम ने अपने बाप दादा को पाया? वह बोलेः बेशक हम उस का इन्कार करने वाले हैं जिस के साथ तुम भेजे गए हो। (24)
तो हम ने उन से बदला लिया, सो देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ? (25)
और (याद करो) जब इब्राहीम (अ) ने अपने बाप दादा और अपनी क़ौम को कहाः बेशक मैं उस से बेज़ार हूँ जिस की तुम परस्तिश करते हो, (26)
मगर (हाँ) जिस ने मुझे पैदा किया, तो बेशक वह जल्द मुझे हिदायत देगा। (27)
और उस (इब्राहीम अ) ने उस को किया अपनी नस्ल में बाक़ी रहने वाली बात, ताकि वह रुजूअ करते रहें। (28)
बल्कि मैं ने उन्हें और उन के बाप दादा को सामाने ज़ीस्त दिया, यहां तक कि उन के पास क़ुरआन आ गया, और साफ़ साफ़ बयान करने वाला रसूल। (29)
और जब उन के पास हक़ आया तो वह कहने लगे कि यह जादू है, और बेशक हम इस का इन्कार करने वाले हैं। (30)
और वह बोले कि यह क़ुरआन क्यों न नाज़िल किया गया दो बस्तियों (मक्का या ताइफ़) के किसी बड़े आदमी पर? (31)
क्या वह तुम्हारे रब की रहमत तक़सीम करते हैं, और हम ने उन के दरमियान उन की रोज़ी दुनिया की ज़िन्दगी में तक़सीम की है, और हम ने उन में से एक के दरजे दूसरे पर बुलन्द किए हैं ताकि उन में से एक दूसरे को ख़िदमतगार बनाए, और तुम्हारे रब की रहमत उस से बेहतर है जो वह जमा करते हैं। (32)
और अगर (एहतिमाल) न होता कि तमाम लोग एक तरीक़े पर हो जाएंगे तो हम बनाते उन के लिए जो कुफ़्र करते हैं अल्लाह का। उन के घरों के लिए चाँदी की छत और सीढ़ियां जिन पर वह चढ़ते हैं (33)
और उन के घरों के दरवाज़े और तख़्त जिन पर वह तकिया लगाते हैं। (34)
और (ख़ूब) आराइश करते, और यह सब (कुछ) नहीं मगर दुनिया की ज़िन्दगी की पूंजी है, और तुम्हारे रब के नज़दीक आख़िरत परहेज़गारों के लिए है। (35)

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾

36	साथी	उस का	तो वह	एक शैतान	हम मुक़र्रर (मुसल्लत) कर देते हैं उस के लिए	रहमान (अल्लाह) की याद	से	ग़फ़लत करे	और जो

وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾

37	हिदायत याफ़्ता	कि वह	और वह गुमान करते हैं	रास्ते से	अलबत्ता वह रोकते हैं उन्हें	और बेशक वह

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ

मश्रिक़ ओ मग़रिब	दूरी	और तेरे दरमियान	मेरे दरमियान	ऐ काश	वह कहेगा	वह आएंगे हमारे पास	जब	यहां तक कि

فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ﴿٣٨﴾ وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ اَنَّكُمْ فِى الْعَذَابِ

अज़ाब में	यह कि तुम	जब ज़ुल्म कर चुके तुम ने	आज	और हरगिज़ नफ़ा न देगा तुम्हें	38	साथी	तू बुरा

مُشْتَرِكُوْنَ ﴿٣٩﴾ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِى الْعُمْىَ وَمَنْ كَانَ

और जो हो	अँधों	या राह दिखाएंगे	बहरों	सुनाएंगे	तो क्या आप (स)	39	मुशतरिक हो

فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٤٠﴾ فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ﴿٤١﴾

41	इन्तिक़ाम लेने वाले	उन से	तो बेशक हम	आप (स) को	ले जाएं	फिर अगर	40	सरीह गुमराही	में

اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِىْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ ﴿٤٢﴾ فَاسْتَمْسِكْ

पस आप (स) मज़बूती से थाम लें	42	क़ुदरत रखने वाले (क़ादिर) हैं	उन पर	तो बेशक हम	हम ने वादा किया उन से	वह जो	या हम दिखादें तुम्हें

بِالَّذِىْٓ اُوْحِىَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٣﴾ وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ

नसीहत (नामा)	और बेशक यह	43	सीधा	रास्ता	पर	बेशक आप (स)	आप (स) की तरफ़	वहि किया गया	वह जो

لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ تُسْـَٔلُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا

हम ने भेजे	जो	और पूछ लें	44	तुम से पूछा जाएगा	और अनक़रीब	और आप (स) की क़ौम के लिए	आप (स) के लिए

مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ ۗ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً

कोई माबूद	रहमान (अल्लाह) के सिवा	से	क्या हम ने मुक़र्रर किए	हमारे रसूलों में से	आप (स) से पहले

ع ٤ ١٠ ١٠ يُّعْبَدُوْنَ ﴿٤٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ

और उस के सरदार	फ़िरऔन	तरफ़	अपनी निशानियों के साथ	मूसा (अ)	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	45	उन की इबादत के लिए

فَقَالَ اِنِّىْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ اِذَا هُمْ

वह	नागहां	हमारी निशानियों के साथ	वह आया	फिर जब	46	तमाम जहानों का परवरदिगार	बेशक मैं रसूल	तो उस ने कहा

مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِىَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۖ

उस की बहन (दूसरी निशानी)	से	बड़ी	मगर वह	कोई निशानी	और हम उन्हें दिखाते थे	47	उस से (उन निशानियों पर) हँसने लगे

وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَقَالُوْا يٰٓاَيُّهَ

ऐ	और उन्हों ने कहा	48	वह रुजूअ करें	ताकि वह	अज़ाब में	और हम ने गिरफ़्तार किया उन्हें

السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ﴿٤٩﴾

49	अलबत्ता हिदायत पाने वाले	बेशक हम	तेरे पास	उस अहद के सबब जो	अपना रब	हमारे लिए	दुआ कर	जादूगर

और जो कोई अल्लाह की याद से ग़फ़लत करे, हम मुसल्लत कर देते हैं उस के लिए एक शैतान, तो वह उस का साथी हो जाता है। (36)
और बेशक वह उन्हें (अल्लाह के) रास्ते से रोकते हैं, और वह गुमान करते हैं कि वह हिदायत याफ़्ता हैं। (37)
यहां तक कि जब वह हमारे पास आएंगे तो वह (अपने शैतान साथी से) कहेगाः ऐ काश मेरे और तेरे दरमियान मश्रिक़ ओ मग़रिब की दूरी होती, तू बुरा साथी निकला। (38)
और जब कि तुम ज़ुल्म कर चुके तो आज तुम्हें यह हरगिज़ नफ़ा न देगा कि तुम अज़ाब में मुशतरिक हो। (39)
तो क्या आप (स) बहरों को सुनाएंगे या अँधों को राह दिखाएंगे? और उस को जो सरीह गुमराही में हो। (40)
फिर अगर हम आप (स) को (दुनिया से) ले जाएं तो बेशक हम (फिर भी) उन से इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। (41)
या हम आप (स) को दिखा दें वह जो हम ने उन से वादा किया है तो बेशक हम उन पर क़ादिर हैं। (42)
पस आप (स) वह मज़बूती से थाम लें जो आप (स) की तरफ़ वहि किया गया है, बेशक आप (स) सीधे रास्ते पर हैं। (43)
और बेशक यह (क़ुरआन) एक नसीहत नामा है आप (स) के लिए और आप (स) की क़ौम के लिए। और अनक़रीब तुम से पूछा जाएगा। (44)
आप (स) हमारे उन रसूलों से पूछ लें जो हम ने आप से पहले भेजेः क्या हम ने अल्लाह के सिवा कोई माबूद मुक़र्रर किए थे जिन की इबादत की जाए। (45)
और तहक़ीक़ हम ने मूसा (अ) को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरऔन और उस के सरदारों की तरफ़, तो उस ने कहाः बेशक मैं तमाम जहानों के परवरदिगार का रसूल हूँ। (46)
फिर जब वह हमारी निशानियों के साथ उन के पास आया तो नागहां वह उन निशानियों पर हँसने लगे। (47)
और हम उन्हें कोई निशानी नहीं दिखाते थे, मगर वह पहली निशानी से बड़ी होती, हम ने उन्हें अज़ाब में गिरफ़्तार किया ताकि वह (हक़ की तरफ़) रुजूअ करें। (48)
और उन्हों ने कहाः ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने रब से दुआ कर उस अहद के सबब जो तेरे पास है, बेशक हम हिदायत पाने वाले हैं (हिदायत पा लेंगे)। (49)

फिर जब हम ने उन से अ़ज़ाब हटा दिया तो नागहां वह अ़हद तोड़ गए। (50)
और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम में पुकारा (मनादी की), उस ने कहा: ऐ मेरी क़ौम! क्या मिस्र की बादशाहत मेरी नहीं? और यह नहरें जारी हैं मेरे (महलात के) नीचे से, तो क्या तुम नहीं देखते? (51)
बल्कि मैं उस से बेहतर हूँ जो कम क़द्र है, और वह मालूम नहीं होता साफ़ गुफ़्तगू करता। (52)
तो उस पर सोने के कंगन क्यों न डाले गए? या उस के साथ फ़रिश्ते (क्यों न) आए परा बान्ध कर। (53)
पस उस ने अपनी क़ौम को बेअ़क्ल कर दिया, तो उन्हों ने उस की इताअ़त की, बेशक वह नाफ़रमान लोग थे। (54)
फिर जब उन्हों ने हमें गुस्सा दिलाया तो हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया और उन सब को ग़र्क़ कर दिया। (55)
तो हम ने उन्हें गए गुज़रे कर दिया, और बाद में आने वालों के लिए एक दास्तान। (56)
और जब ईसा (अ) इब्ने मरयम की मिसाल बयान की गई तो यकायक तुम्हारी क़ौम उस से ख़ुशी के मारे चिल्लाने लगी। (57)
वह बोले: क्या हमारे माबूद बेहतर हैं या वह (ईसा इब्ने मरयम)? वह उस को तुम्हारे सामने सिर्फ़ झगड़ने के लिए बयान करते हैं, बल्कि वह तो हैं ही झगड़ालू। (58)
ईसा (अ) सिर्फ़ एक बन्दे हैं, हम ने इन्आम किया उन पर और हम ने उन्हें बनी इस्राईल के लिए एक मिसाल बनाया। (59)
और अगर हम चाहते तो तुम में से फ़रिश्ते पैदा करते ज़मीन में, वह तुम्हारे जांनशीन होते। (60)
और बेशक वह क़ियामत की एक निशानी है, तो तुम हरगिज़ उस में शक न करो, और मेरी पैरवी करो, यह सीधा रास्ता है। (61)
और शैतान तुम्हें रोक न दे, बेशक वह तुम्हारे लिए खुला दुश्मन है। (62)
और जब ईसा (अ) आए खुली निशानियों के साथ, तो उन्हों ने कहा: तहक़ीक़ मैं तुम्हारे पास हिक्मत के साथ आया हूँ, और इस लिए कि मैं तुम्हारे लिए वह बाज़ बातें बयान कर दूँ जिन में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो। (63)

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿٥٠﴾ وَنَادٰى فِرْعَوْنُ

फ़िरऔन	और पुकारा	50	अ़हद तोड़ गए	नागहां वह	अ़ज़ाब	उन से	हम ने खोला (हटा दिया)	फिर जब

فِىْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ اَلَيْسَ لِىْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ

नहरें	और यह	मिस्र की बादशाहत	क्या नहीं मेरे लिए	उस ने कहा ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम	में

تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِىْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٥١﴾ ؕ اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِىْ هُوَ

वह	वह जो	उस से	बेहतर	क्या-बल्कि मैं	51	देखते तुम	तो क्या नहीं	मेरे नीचे से	जारी हैं

مَهِيْنٌ ۙ وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ﴿٥٢﴾ فَلَوْلَاۤ اُلْقِىَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ

सोने के	कंगन	उस पर	डाले गए	तो क्यों न	52	साफ़ गुफ़्तगू करता	और वह मालूम नहीं होता	कम क़द्र

اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ﴿٥٣﴾ فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ؕ

तो उन्हों ने उस की इताअ़त की	अपनी क़ौम	पस उस ने बेअ़क्ल कर दिया	53	परा बान्ध कर	फ़रिश्ते	उस के साथ	या आए

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٤﴾ فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ

पस हम ने ग़र्क़ कर दिया उन्हें	उन से	हम ने इन्तिक़ाम लिया	उन्हों ने गुस्सा दिलाया हमें	फिर जब	54	नाफ़रमान	लोग	थे	बेशक वह

ع ١١ ١١ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٥﴾ ۙ فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ﴿٥٦﴾ ع وَلَمَّا ضُرِبَ

बयान की गई	और जब	56	बाद में आने वाले	पेश रो (गए गुज़रे) और मिसाल (दास्तान)	तो हम ने कर दिया उन्हें	55	सब

ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ﴿٥٧﴾ وَقَالُوْۤا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ

बेहतर	क्या हमारे माबूद	और वह बोले	57	उस से (ख़ुशी से) चिल्लाने लगते हैं	यका यक तुम्हारी क़ौम	मिसाल	ईसा इब्ने मरयम

اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ﴿٥٨﴾ اِنْ هُوَ

नहीं वह (ईसा अ)	58	झगड़ालू	लोग	बल्कि वह	मगर (सिर्फ़) झगड़ने को	तुम्हारे लिए	नहीं वह बयान करते उस को	या वह

اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾ ؕ وَلَوْ نَشَآءُ

और अगर हम चाहते	59	बनी इस्राईल के लिए	एक मिसाल	और हम ने बनाया उस को	उस पर	हम ने इन्आम क्या	एक बन्दा	सिर्फ़

لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِى الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ﴿٦٠﴾ وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ

एक निशानी	और बेशक वह	60	वह (तुम्हारे) जांनशीन होते	ज़मीन में	फ़रिश्ते	तुम में से	अलबत्ता हम करते

لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦١﴾

61	सीधा	रास्ता	यह	और मेरी पैरवी करो	उस में	तो हरगिज़ शक न करो तुम	क़ियामत की

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ﴿٦٢﴾ وَلَمَّا

और जब	62	दुश्मन खुला	तुम्हारे लिए	बेशक वह	शैतान	और रोक न दे तुम्हें

جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ

और इस लिए कि बयान कर दूँ	हिक्मत के साथ	तहक़ीक़ मैं आया हूँ तुम्हारे पास	उस ने कहा	खुली निशानियों के साथ	ईसा (अ)	आए

لَكُمْ بَعْضَ الَّذِىْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٦٣﴾

63	और मेरी इताअ़त करो	सो डरो अल्लाह से	उस में	तुम इख़्तिलाफ़ करते हो	वह जो कि	बाज़	तुम्हारे लिए

إِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٦٤﴾

64	सीधा	रास्ता	यह	सो तुम उस की इबादत करो	और तुम्हारा रब	मेरा रब	वह	बेशक अल्लाह

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا

जिन्हों ने ज़ुल्म किया	उन लोगों के लिए	सो ख़राबी	आपस में	गिरोह (जमा)	फिर इख़्तिलाफ़ डाल लिया

مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ﴿٦٥﴾ هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ

वह उन पर आ जाए	कि	क़ियामत	सिर्फ़	वह इन्तिज़ार करते हैं	क्या	65	दिन दुख देने वाला	अज़ाब से

بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٦﴾ اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ

बाज़ से (एक)	उन के बाज़ (दूसरे)	उस दिन	तमाम दोस्त	66	शऊर न रखते हूँ	और वह	अचानक

ع ٦ ١١ ١٢ عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٧﴾ يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَاۤ اَنْتُمْ

और न तुम	आज	तुम पर	कोई ख़ौफ़ नहीं	ऐ मेरे बन्दो	67	परहेज़गारों	सिवा	दुश्मन

تَحْزَنُوْنَ ﴿٦٨﴾ اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ﴿٦٩﴾ اُدْخُلُوا

तुम दाख़िल हो जाओ	69	मुसलिम (जमा)	और वह थे	हमारी आयात पर	जो ईमान लाए	68	ग़मगीन होंगे

الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ ﴿٧٠﴾ يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ

रिकाबियां	उन पर	लिए फिरेंगे	70	तुम ख़ुश बख़्त किए जाओगे	और तुम्हारी बीवियां	तुम	जन्नत

مِّنْ ذَهَبٍ وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ وَتَلَذُّ

और लज़्ज़त होगी	जी (जमा)	वह जो चाहेंगे	और उस में	और आबख़ोरे	सोने की

الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٧١﴾ وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْۤ اُوْرِثْتُمُوْهَا

तुम वारिस बनाए गए उस के	वह जिस	जन्नत	और यह	71	हमेशा रहोगे	उस में	और तुम	आँखों

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧٢﴾ لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ

बहुत	मेवे	उस में	तुम्हारे लिए	72	जो तुम करते थे	उस के बदले

مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ ﴿٧٣﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ﴿٧٤﴾

74	हमेशा रहेंगे	अज़ाबे जहन्नम	में	मुजरिम (जमा)	बेशक	73	तुम खाते हो	उस से

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿٧٥﴾ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ

और हम ने ज़ुल्म नहीं किया उन पर	75	नाउम्मीद पड़े रहेंगे	और वह उस में	उन से	हल्का न किया जाएगा

وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٧٦﴾ وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا

अच्छा हो कि मौत का फ़ैसला कर दे हम पर (हमारी)	ऐ मालिक	और वह पुकारेंगे	76	ज़ालिम (जमा)	वह	वह थे	और लेकिन (बल्कि)

رَبُّكَ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ﴿٧٧﴾ لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ

लेकिन	हक़ के साथ	तहक़ीक़ हम आए तुम्हारे पास	77	हमेशा रहने वाले	बेशक तुम	वह कहेगा	तेरा रब

اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿٧٨﴾ اَمْ اَبْرَمُوْۤا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿٧٩﴾

79	ठहराने वाले	तो बेशक हम	कोई बात	उन्हों ने ठहरा ली	क्या	78	नापसंद करने वाले	हक़ से-को	तुम में से अक्सर

बेशक अल्लाह ही मेरा रब और तुम्हारा रब है, सो तुम उस की इबादत करो, यह रास्ता है सीधा। (64)
फिर गिरोहों ने आपस में इख़्तिलाफ़ डाल लिया, सो उन लोगों के लिए ख़राबी है जिन्हों ने ज़ुल्म किया, अज़ाब से दुख देने वाले दिन के। (65)
क्या वह सिर्फ़ क़ियामत का इन्तिज़ार करते हैं कि वह उन पर अचानक आ जाए और वह शऊर (ख़बर भी) न रखते हूँ। (66)
परहेज़गारों के सिवा उस दिन तमाम दोस्त एक दूसरे के दुश्मन होंगे। (67)
ऐ मेरे बन्दो! तुम पर कोई ख़ौफ़ नहीं आज के दिन और न तुम ग़मगीन होंगे। (68)
जो लोग हमारी आयात पर ईमान लाए और वह मुस्लिम (फ़रमांबरदार) थे। (69)
तुम दाख़िल हो जाओ तुम और तुम्हारी बीवियां जन्नत में, तुम ख़ुश बख़्त किए जाओगे। (70)
उन पर सोने की रिकाबियां और आबख़ोरे लिए फिरेंगे, और उस में (मौजूद होगा) जो (उन के) दिल चाहेंगे और आँखों की लज़्ज़त (होगी), और तुम उस में हमेशा रहोगे। (71)
और यह वह जन्नत है जिस के तुम वारिस बनाए गए हो उन (आमाल) के बदले जो तुम करते थे। (72)
तुम्हारे लिए उस में बहुत मेवे हैं, उन में से तुम खाओगे। (73)
बेशक मुजरिम जहन्नम के अज़ाब में हमेशा रहेंगे। (74)
उन से हल्का न किया जाएगा, और वह उस में नाउम्मीद पड़े रहेंगे। (75)
और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वही ज़ालिम थे। (76)
और वह पुकारेंगे ए मालिक (दारोग़ाए जहन्नम)! अच्छा हो कि तेरा रब हमारी मौत का फ़ैसला करदे, वह कहेगाः बेशक तुम (इसी हाल में) हमेशा रहने वाले हो। (77)
तहक़ीक़ हम तुम्हारे पास हक़ के साथ आए, लेकिन तुम में से अक्सर हक़ को नापसंद करने वाले थे। (78)
क्या उन्हों ने कोई बात ठहरा ली है तो बेशक हम (भी) ठहराने वाले हैं। (79)

क्या वह गुमान करते हैं? कि हम नहीं सुनते उन की पोशीदा बातों और उन की सरगोशियों को, हाँ (क्यों नहीं) हमारे फ़रिश्ते उन के पास लिखते हैं। **(80)**

आप (स) फ़रमा दें: अगर अल्लाह का कोई बेटा होता तो मैं (उस का) पहला इबादत करने वाला होता। **(81)**

आस्मानों और ज़मीन का रब, अ़र्श का रब, उस से पाक है जो वह बयान करते हैं। **(82)**

पस आप (स) उन को छोड़ दें कि वह बेहूदा बातें करें और खेलें यहां तक कि वह उस दिन को पा लें जिस का उन से वादा किया जाता है। **(83)**

और वही जो आस्मानों में माबूद है और ज़मीन में माबूद है, और वही हिक्मत वाला, इल्म वाला है। **(84)**

और बड़ी बरकत वाला और जिस के लिए बादशाहत आस्मानों की और ज़मीन की, और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है, और उस के पास है क़ियामत का इल्म, और उसी की तरफ़ तुम लौट कर जाओगे। **(85)**

और वह जिन को अल्लाह के सिवा पुकारते हैं, वह शफ़ाअ़त का इख़्तियार नहीं रखते, सिवाए उस के जिस ने गवाही दी हक़ की और वह जानते हैं। **(86)**

और अगर आप (स) उन से पूछें कि उन्हें किस ने पैदा किया? तो वह ज़रूर कहेंगे "अल्लाह ने" तो वह किधर उलटे फिरे जाते हैं? **(87)**

क़सम है (रसूल के यह) कहने की कि ऐ मेरे रब! यह लोग ईमान नहीं लाएंगे। **(88)**

तो आप (स) उन से मुँह फेर लें और सलाम कहें, पस जल्द वह (अन्जाम) जान लेंगे। **(89)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। **(1)**

क़सम है वाज़ेह किताब की। **(2)**

बेशक हम ने उसे एक मुबारक रात (लैलतल क़द्र) में नाज़िल किया, बेशक हम ही हैं डराने वाले। **(3)**

उस (रात) में फ़ैसल किया जाता है हर अम्र हिक्मत वाला। **(4)**

اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ؕ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ

उन के पास	और हमारे फ़रिश्ते	हाँ	और उन की सरगोशियां	उन की पोशीदा बातें	हम नहीं सुनते	कि हम	क्या वह गुमान करते हैं

يَكْتُبُوْنَ ﴿٨٠﴾ قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴿٨١﴾

81	इबादत करने वाला	पहला	तो मैं	कोई बेटा	रहमान (अल्लाह का)	अगर होता	फ़रमा दें	80	लिखते हैं

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿٨٢﴾

82	वह बयान करते हैं	उस से जो	अ़र्श का रब	और ज़मीन	आस्मानों का रब	पाक है

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٨٣﴾

83	उन को वादा किया जाता है	वह जिस	उस दिन को	वह पा लें	यहां तक	और खेलें	वह बेहूदा बातें करें	पस छोड़ दें उन को

وَهُوَ الَّذِىْ فِى السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِى الْاَرْضِ اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ

हिक्मत वाला	और वही	माबूद	और ज़मीन में	माबूद	आस्मानों में	वह जो	और वही

الْعَلِيْمُ ﴿٨٤﴾ وَتَبٰرَكَ الَّذِىْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ

और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	बादशाहत	उस के लिए	वह जो	और बड़ी बरकत वाला	84	इल्म वाला

وَعِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿٨٥﴾ وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ

वह जिन को	और इख़्तियार नहीं रखते	85	तुम लौट कर जाओगे	और उस की तरफ़	क़ियामत का इल्म	और उस के पास

يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ

और वह	हक़ की	जिस ने गवाही दी	सिवाए	शफ़ाअ़त	उस के सिवा	वह पुकारते हैं

يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٦﴾ وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَاَنّٰى

तो किधर	तो वह ज़रूर कहेंगे अल्लाह	पैदा किया उन्हें	किस	आप (स) उन से पूछें	और अगर	86	जानते हैं

يُؤْفَكُوْنَ ﴿٨٧﴾ وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٨٨﴾ وقف لازم

88	ईमान नहीं लाएंगे	लोग	यह	बेशक	ऐ मेरे रब	क़सम उस के कहने की	87	वह उलटे फिरे जाते हैं

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾ ع ٢٢ ١٣

89	पस जल्द उन्हें मालूम हो जाएगा	सलाम	और कहें	उन से	तो आप (स) मुँह फेर लें

آيَاتُهَا ٥٩ ❀ سُوْرَةُ الدُّخَانِ (٤٤) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3	(44) सूरतुद दुख़ान धुवाँ	आयात 59

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾ اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِىْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ ع ١٢ عند المتقدمين ١٢

एक मुबारक रात	में	बेशक हम ने नाज़िल किया इसे	2	वाज़ेह	क़सम किताब	1	हा-मीम

اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿٣﴾ فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿٤﴾

4	हिक्मत वाला	हर अम्र	फ़ैसल किया जाता है	उस में	3	डराने वाले	बेशक हम हैं

اَمۡرًا مِّنۡ عِنۡدِنَا ؕ اِنَّا كُنَّا مُرۡسِلِيۡنَ ﴿۵﴾ رَحۡمَةً مِّنۡ رَّبِّكَ ؕ

तुम्हारा रब	से	रहमत	5	भेजने वाले	बेशक हम हैं	हमारे पास से	हुक्म हो कर

وقف لازم

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ﴿۶﴾ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ۘ

उन दोनों के दरमियान	और जो	और ज़मीन	रब है आस्मानों	6	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक वही

اِنۡ كُنۡتُمۡ مُّوۡقِنِيۡنَ ﴿۷﴾ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحۡىٖ وَيُمِيۡتُ ؕ رَبُّكُمۡ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ

तुम्हारे बाप दादा	और रब	तुम्हारा रब	वह जान डालता है और जान निकालता है	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	7	यक़ीन करने वाले	अगर तुम हो

الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۸﴾ بَلۡ هُمۡ فِىۡ شَكٍّ يَّلۡعَبُوۡنَ ﴿۹﴾ فَارۡتَقِبۡ يَوۡمَ تَاۡتِى السَّمَآءُ

आस्मान लाए	उस दिन	तो तुम इन्तिज़ार करो	9	खेलते हैं	शक में	बल्कि वह	8	पहले

بِدُخَانٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۱۰﴾ يَّغۡشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ﴿۱۱﴾ رَبَّنَا اكۡشِفۡ

खोल (दूर) कर दे	ऐ हमारे रब	11	अज़ाब दर्दनाक	यह	लोगों	वह ढांप लेगा	10	ज़ाहिर	धुआँ

عَنَّا الۡعَذَابَ اِنَّا مُؤۡمِنُوۡنَ ﴿۱۲﴾ اَنّٰى لَهُمُ الذِّكۡرٰى وَقَدۡ جَآءَهُمۡ

और तहक़ीक़ आ चुका उन के पास	नसीहत	उन को	कहां	12	ईमान ले आएंगे	बेशक हम	अज़ाब	हम से

وقف لازم

رَسُوۡلٌ مُّبِيۡنٌ ﴿۱۳﴾ ثُمَّ تَوَلَّوۡا عَنۡهُ وَقَالُوۡا مُعَلَّمٌ مَّجۡنُوۡنٌ ﴿۱۴﴾ اِنَّا

बेशक हम	14	दीवाना	सिखाया हुआ	और कहने लगे	उस से	वह फिर गए	फिर	13	रसूल खोल खोल कर बयान करने वाला

وقف لازم

كَاشِفُوا الۡعَذَابِ قَلِيۡلًا اِنَّكُمۡ عَآئِدُوۡنَ ﴿۱۵﴾ يَوۡمَ نَبۡطِشُ الۡبَطۡشَةَ

पकड़	हम पकड़ेंगे	जिस दिन	15	तुम बेशक (पिछली) हालत पर लौट आने वाले हो	थोड़ा	अज़ाब	खोलने वाले

الۡكُبۡرٰى ۚ اِنَّا مُنۡتَقِمُوۡنَ ﴿۱۶﴾ وَلَقَدۡ فَتَنَّا قَبۡلَهُمۡ قَوۡمَ فِرۡعَوۡنَ وَجَآءَهُمۡ

और आया उन के पास	क़ौमे फ़िरऔन	इन से क़ब्ल	और हम आज़मा चुके हैं	16	इन्तिक़ाम लेने वाले	बेशक हम	बड़ी (सख़्त)

رَسُوۡلٌ كَرِيۡمٌ ﴿۱۷﴾ اَنۡ اَدُّوۡۤا اِلَىَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّىۡ لَـكُمۡ رَسُوۡلٌ اَمِيۡنٌ ﴿۱۸﴾

18	एक रसूल अमीन	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	बन्दे अल्लाह के	मेरे	कि हवाले कर दो	17	करीम (आली क़द्र)	एक रसूल

وَّاَنۡ لَّا تَعۡلُوۡا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّىۡۤ اٰتِيۡكُمۡ بِسُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ﴿۱۹﴾ وَاِنِّىۡ

और बेशक मैं	19	वाज़ेह	दलील के साथ	आया हूँ तुम्हारे पास	बेशक मैं	अल्लाह पर (के मुक़ाबिल)	तुम सरकशी न करो	और यह कि

عُذۡتُ بِرَبِّىۡ وَرَبِّكُمۡ اَنۡ تَرۡجُمُوۡنِ ﴿۲۰﴾ وَاِنۡ لَّمۡ تُؤۡمِنُوۡا لِىۡ فَاعۡتَزِلُوۡنِ ﴿۲۱﴾

21	तो एक किनारे हो जाओ मुझ से	मुझ पर	तुम ईमान नहीं लाते	और अगर	20	तुम मुझे संगसार कर दो	कि	और तुम्हारा रब	अपने रब की	पनाह चाहता हूँ

الثلثة

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوۡمٌ مُّجۡرِمُوۡنَ ﴿۲۲﴾ فَاَسۡرِ بِعِبَادِىۡ لَيۡلًا

रात में	तो तू ले जा मेरे बन्दों को	22	मुजरिम लोग	यह	कि	तो उस ने दुआ की अपने रब से

اِنَّكُمۡ مُّتَّبَعُوۡنَ ﴿۲۳﴾ وَاتۡرُكِ الۡبَحۡرَ رَهۡوًا ؕ اِنَّهُمۡ جُنۡدٌ مُّغۡرَقُوۡنَ ﴿۲۴﴾

24	डूबने वाले	एक लशकर	बेशक वह	ठहरा हुआ	दर्या	और छोड़ जाओ	23	पीछा किए जाओगे	बेशक तुम

كَمۡ تَرَكُوۡا مِنۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ﴿۲۵﴾ وَّزُرُوۡعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيۡمٍ ﴿۲۶﴾

26	और मकान नफ़ीस	और खेतियां	25	और चश्मे	बाग़ात	से	वह कितने (ही) छोड़ गए

हुक्म हो कर हमारे पास से। बेशक हम ही हैं (रसूल) भेजने वाले। (5) रहमत आप (स) के रब की तरफ़ से, बेशक वही है सुनने वाला जानने वाला। (6) रब है आस्मानों का और ज़मीन का और जो उन के दरमियान है, अगर तुम हो यक़ीन करने वाले। (7) उस के सिवा कोई माबूद नहीं, वही जान डालता है, वही जान निकालता है, और (वही) रब है तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप दादा का। (8) बल्कि वह शक में पड़े खेलते हैं। (9) तो तुम उस दिन का इन्तिज़ार करो कि आस्मान ज़ाहिर धुआँ लाएगा, (10) और ढांप लेगा (छा जाएगा) लोगों पर, यह है दर्दनाक अज़ाब। (11) (अब वह कहेंगे) ऐ हमारे रब! हम से अज़ाब दूर कर दे, बेशक हम ईमान ले आएंगे। (12) उन को नसीहत कहां याद आएगी? उन के पास तो खोल खोल कर बयान करने वाला रसूल आ चुका है। (13) फिर वह उस से फिर गए और कहने लगेः (यह तो) सिखाया हुआ दीवाना है। (14) बेशक हम थोड़ा अज़ाब खोलने वाले हैं (मगर) तुम बेशक फिर बाग़ियाना हालत पर लौट आने वाले हो। (15) जिस दिन हम सख़्त पकड़ पकड़ेंगे। बेशक हम इन्तिक़ाम लेने वाले हैं। (16) और हम उन से पहले क़ौमे फ़िरऔन को आज़मा चुके हैं, और उन के पास एक आली क़द्र रसूल आया। (17) कि अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो, बेशक मैं तुम्हारे लिए एक रसूल अमीन हूँ। (18) और यह कि तुम अल्लाह के मुक़ाबिल सरकशी न करो, बेशक मैं तुम्हारे पास वाज़ेह दलील के साथ आया हूँ। (19) और बेशक मैं पनाह लेता हूँ अपने रब की और तुम्हारे रब की (उस से) कि तुम मुझे संगसार कर दो। (20) और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझ से एक किनारे हो जाओ। (21) तो उस ने अपने रब से दुआ की कि यह मुजरिम लोग हैं। (22) (इरशादे इलाही हुआ) तो तुम मेरे बन्दों को ले जाओ रातों रात, बेशक तुम्हारा पीछा किया जाएगा। (23) और छोड़ जाओ दर्या ठहरा (खुला) हुआ, बेशक वह एक लशकर हैं डूबने वाले। (24) और वह छोड़ गए कितने ही बाग़ात, और चश्मे, (25) और खेतियां, और नफ़ीस मकान, (26)

وَّنَعۡمَةٍ كَانُوۡا فِيۡهَا فٰكِهِيۡنَ ﴿٢٧﴾ كَذٰلِكَ وَاَوۡرَثۡنٰهَا قَوۡمًا اٰخَرِيۡنَ ﴿٢٨﴾

28	दूसरे	क़ौम	और हम ने वारिस बनाया उन का	उसी तरह	27	मज़े उड़ाते	उस में	वह थे	और नेमतें

ع ٢٩ ١٤ فَمَا بَكَتۡ عَلَيۡهِمُ السَّمَآءُ وَالۡاَرۡضُ وَمَا كَانُوۡا مُنۡظَرِيۡنَ ﴿٢٩﴾

29	ढील दिए गए	और न हुए वह	और ज़मीन	आस्मान	उन पर	सो न रोए

وَلَقَدۡ نَجَّيۡنَا بَنِيۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ مِنَ الۡعَذَابِ الۡمُهِيۡنِ ﴿٣٠﴾ مِنۡ فِرۡعَوۡنَ

फ़िरऔन	से	30	अ़ज़ाब ज़िल्लत वाला	से	बनी इस्राईल	और तहक़ीक़ हम ने नजात दी

اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الۡمُسۡرِفِيۡنَ ﴿٣١﴾ وَلَقَدِ اخۡتَرۡنٰهُمۡ عَلٰى عِلۡمٍ

दानिस्ता	और अलबत्ता हम ने उन्हें पसंद किया	31	हद से बढ़ जाने वालों में से	सरकश	था	बेशक वह

عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿٣٢﴾ وَاٰتَيۡنٰهُمۡ مِّنَ الۡاٰيٰتِ مَا فِيۡهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيۡنٌ ﴿٣٣﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ

बेशक यह लोग	33	खुली	आज़माइश	वह जिन में	निशानियां	और हम ने उन्हें दीं	32	तमाम जहान वालों पर

لَيَقُوۡلُوۡنَ ﴿٣٤﴾ اِنۡ هِىَ اِلَّا مَوۡتَتُنَا الۡاُوۡلٰى وَمَا نَحۡنُ بِمُنۡشَرِيۡنَ ﴿٣٥﴾

35	दोबारा उठाए जाने वाले	और हम नहीं	पहली (एक ही) बार	हमारा मरना	मगर-सिर्फ़	नहीं यह	34	अलबत्ता कहते हैं

فَاۡتُوۡا بِاٰبَآٮِٕنَاۤ اِنۡ كُنۡتُمۡ صٰدِقِيۡنَ ﴿٣٦﴾ اَهُمۡ خَيۡرٌ اَمۡ قَوۡمُ تُبَّعٍ

क़ौमे तुब्बअ़	या	बेहतर	क्या वह	36	सच्चे	अगर तुम हो	हमारे बाप दादा	तो ले आओ

وَّالَّذِيۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ ؕ اَهۡلَكۡنٰهُمۡ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا مُجۡرِمِيۡنَ ﴿٣٧﴾ وَمَا

और नहीं	37	मुज्रिम (जमा)	थे	बेशक वह	हम ने हलाक किया उन्हें	उन से क़ब्ल	और जो लोग

خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَا لٰعِبِيۡنَ ﴿٣٨﴾ مَا خَلَقۡنٰهُمَاۤ اِلَّا

मगर	हम ने नहीं पैदा किया उन्हें	38	खेलते हुए	और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	हम ने पैदा किया

بِالۡحَقِّ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّ يَوۡمَ الۡفَصۡلِ

फ़ैसले का दिन	बेशक	39	नहीं जानते	उन में से अक्सर	और लेकिन	हक़ के साथ (ठीक तौर पर)

مِيۡقَاتُهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿٤٠﴾ يَوۡمَ لَا يُغۡنِىۡ مَوۡلًى عَنۡ مَّوۡلًى شَيۡـًٔا

कुछ	किसी साथी के	कोई साथी	न काम आएगा	जिस दिन	40	सब	उन सब का वक़्ते मेक़र्रर

ع ٢ ١٣ ١٥ وَّلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ﴿٤١﴾ اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ﴿٤٢﴾

42	रहम करने वाला	वह ग़ालिब	बेशक वह	रहम किया अल्लाह ने	जिस	मगर	41	मदद किए जाएंगे	और न वह

معانقة ١٢ عند المتأخرين ١٢ اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوۡمِ ﴿٤٣﴾ طَعَامُ الۡاَثِيۡمِ ﴿٤٤﴾ كَالۡمُهۡلِ ۚ يَغۡلِىۡ

खौलता है	पिघले हुए तांबे की तरह	44	खाना गुनाहगारों का	43	थोहर का दरख़्त	बेशक

فِى الۡبُطُوۡنِ ﴿٤٥﴾ كَغَلۡىِ الۡحَمِيۡمِ ﴿٤٦﴾ خُذُوۡهُ فَاعۡتِلُوۡهُ اِلٰى

तक	फिर खींचो उसे	तुम पकड़ लो उसे	46	गर्म पानी	जैसे खौलता हुआ	45	पेटों में

سَوَآءِ الۡجَحِيۡمِ ﴿٤٧﴾ ثُمَّ صُبُّوۡا فَوۡقَ رَاۡسِهٖ مِنۡ عَذَابِ الۡحَمِيۡمِ ﴿٤٨﴾

48	अ़ज़ाब खौलता हुआ पानी	से	उस का सर	पर-ऊपर	फिर डालो	47	बीचों बीच जहन्नम

और नेमतें, जिन में वह मज़े उड़ाते थे। **(27)**
उसी तरह (हुआ उन का अन्जाम), और हम ने दूसरी क़ौम को उन का वारिस बनाया। **(28)**
सो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और वह न हुए ढील दिए गए (लोगों में)। **(29)**
और तहक़ीक़ हम ने बनी इस्राईल को ज़िल्लत वाले अ़ज़ाब से नजात दी, **(30)**
(यानी) फ़िरऔन से, बेशक वह हद से बढ़ जाने वालों में से सरकश था। **(31)**
और अलबत्ता हम ने उन्हें तमाम जहान वालों पर दानिस्ता पसंद किया। **(32)**
और हम ने उन्हें खुली निशानियां दीं, जिन में खुली आज़माइश थी। **(33)**
बेशक यह लोग कहते हैं, **(34)**
यह हमारा मरना तो सिर्फ़ एक ही बार है और हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं। **(35)**
अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादा को ले आओ। **(36)**
क्या वह बेहतर हैं या तुब्बअ़ की क़ौम? और जो लोग उन से क़ब्ल थे? हम ने उन्हें हलाक किया, बेशक वह मुज्रिम लोग थे। **(37)**
और हम ने आस्मानों और ज़मीन को और जो कुछ उन के दरमियान है खेलते हुए (अबस खेल कूद के लिए) नहीं पैदा किया। **(38)**
हम ने उन्हें नहीं पैदा किया मगर हक़ के साथ, लेकिन उन में से अक्सर नहीं जानते। **(39)**
बेशक फ़ैसले का दिन (रोज़े क़ियामत) उन सब का वक़्ते मुक़र्रर (मीआ़द) है। **(40)**
जिस दिन काम न आएगा कोई साथी कुछ भी किसी साथी के, और न वह मदद किए जाएंगे। **(41)**
मगर जिस पर अल्लाह ने रहम किया, बेशक वही है ग़ालिब रहम करने वाला। **(42)**
बेशक थोहर का दरख़्त। **(43)**
गुनाहगारों का खाना है। **(44)**
(वह) पेटों में पिघले हुए तांबे की तरह खौलता रहेगा। **(45)**
जैसे खौलता हुआ गर्म पानी। **(46)**
उसे पकड़ लो, फिर उसे जहन्नम के बीचों बीच तक खींचो। **(47)**
फिर उस के सर के ऊपर डालो खौलते हुए पानी के अ़ज़ाब से। **(48)**

ذُقْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ ﴿٤٩﴾ اِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهٖ

उस में	जो तुम थे	बेशक यह	49	इज़्ज़त वाला	ज़ोर आवर	तू	बेशक तू	चख

تَمْتَرُوْنَ ﴿٥٠﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ اَمِيْنٍ ﴿٥١﴾ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿٥٢﴾

52	और चश्मे	बाग़ात	में	51	अम्न का मुक़ाम	में	बेशक मुत्तक़ीन (अल्लाह से डरने वाले)	50	शक करते

يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٥٣﴾ كَذٰلِكَ ۛ وَزَوَّجْنٰهُمْ

और हम जोड़े बना देंगे उन के लिए	इसी तरह	53	एक दूसरे के आमने सामने	और दबीज़ रेशम	बारीक रेशम	से-के	पहने हुए

بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ

वह न चखेंगे	55	इत्मीनान से	हर क़िस्म का मेवा	उस में	वह मांगेंगे	54	ख़ूबरू बड़ी बड़ी आँखों वालियां

فِيْهَا الْمَوْتَ اِلَّا الْمَوْتَةَ الْاُوْلٰى ۚ وَوَقٰىهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿٥٦﴾

56	जहन्नम का अ़ज़ाब	और उस (अल्लाह) ने बचा लिया उन्हें	पहली मौत	सिवाए	मौत	वहाँ

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٥٧﴾ فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ

हम ने इसे आसान कर दिया	इस के सिवा नहीं	57	कामयाबी बड़ी	यही	यह	तुम्हारा रब	से-के	फ़ज़्ल से

ع ١٧/١٦ ٣ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ اِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	इन्तिज़ार में हैं	बेशक वह	पस आप (स) इन्तिज़ार करें	58	नसीहत पकड़ें	ताकि वह	आप (स) की ज़बान में

آيَاتُهَا ٣٧ ❀ سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ (٤٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4	(45) सूरतुल जासिया गिरी हुई	आयात 37

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ﴿١﴾ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ﴿٢﴾ اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	बेशक	2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह (की तरफ़) से	नाज़िल की हुई किताब	1	हा-मीम

وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾ وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ

जो जानवर	वह फैलाता है	और जो	और तुम्हारी पैदाइश में	3	अहले ईमान के लिए	अलबत्ता निशानियां	और ज़मीन

اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٤﴾ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ

अल्लाह ने उतारा	और जो	और दिन	रात	और तबदीली	4	यक़ीन करने वाले लोगों के लिए	निशानियां

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا

उस के मरने (ख़ुश्क होने) के बाद	ज़मीन	उस से	फिर ज़िन्दा किया	रिज़्क़	आस्मान से

وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ﴿٥﴾ تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا

हम वह पढ़ते हैं	अल्लाह के अहकाम	यह	5	अ़क़्ल (सलीम) वालों के लिए	निशानियां	हवाएं	और गर्दिश

عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦﴾

6	वह ईमान लाएंगे	और उसकी आयात	अल्लाह के बाद	बात	पस किस	हक़ के साथ	आप (स) पर

चख, बेशक ज़ोर आवर, इज़्ज़त वाला है तू। (49)
बेशक यह है वह जिस में तुम शक करते थे। (50)
बेशक मुत्तक़ी अम्न के मुक़ाम में होंगे। (51)
बाग़ात और चश्मों में। (52)
पहने हुए बारीक और दबीज़ रेशम के कपड़े एक दूसरे के आमने सामने (बैठे होंगे)। (53)
उसी तरह हम ख़ूबरू बड़ी बड़ी आँखों वालियों से उन के जोड़े बना देंगे। (54)
वह मांगेंगे उस में इत्मीनान से हर क़िस्म का मेवा। (55)
वह पहली मौत के सिवा वहाँ (फिर) मौत का ज़ाइक़ा न चखेंगे, और अल्लाह ने उन्हें जहन्नम के अ़ज़ाब से बचा लिया। (56)
तुम्हारे रब का फ़ज़्ल, यही है बड़ी कामयाबी। (57)
बेशक हम ने इस (क़ुरआन) को आसान कर दिया है आप की ज़बान में ताकि वह नसीहत पकड़ें। (58)
पस आप (स) इन्तिज़ार करें, बेशक वह भी मुन्तज़िर हैं। (59)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
हा-मीम। (1)
यह नाज़िल की हुई किताब है, ग़ालिब हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ़ से। (2)
बेशक आस्मानों और ज़मीन में अलबत्ता अहले ईमान के लिए निशानियां हैं। (3)
और तुम्हारी पैदाइश में और जो जानवर वह फैलाता है, उन में यक़ीन करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (4)
और रात दिन की तबदीली में, और उस रिज़्क़ (बारिश) में जो अल्लाह ने आस्मान से उतारा, फिर उस से ज़िन्दा किया ज़मीन को उस के ख़ुश्क होने के बाद और हवाओं की गर्दिश में अ़क़्ले सलीम रखने वालों के लिए निशानियां हैं। (5)
यह अल्लाह के अहकाम हैं जिन्हें हम आप (स) पर हक़ के साथ (ठीक ठीक) पढ़ते हैं, पस अल्लाह और उस की आयात के बाद वह किस बात पर ईमान लाएंगे? (6)

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٧﴾ يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

तकब्बुर करता हुआ	फिर अड़ा रहता है	पढ़ी जाती हैं उस पर	अल्लाह की आयात	वह सुनता है	7	गुनाहगार	हर झूट बान्धने वाले के लिए	ख़राबी

كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٨﴾ وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا

किसी शै	हमारी आयात में से	और जब वह वाक़िफ़ हो	8	दर्दनाक	अ़ज़ाब की	पस उसे ख़ुशख़बरी दो	उस ने नहीं सुना उसे	गोया कि

اِتَّخَذَهَا هُزُوًا ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ؕ ﴿٩﴾ مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ

जहन्नम	उन की दूसरी तरफ़ (आगे)	9	अ़ज़ाब रुस्वा करने वाला	उन के लिए	यही लोग	हँसी मज़ाक़	वह उस को पकड़ता है

وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ ۚ

कारसाज़	अल्लाह के सिवा	और न जो उन्हों ने ठहराया	कुछ	जो उन्हों ने कमाया	और न काम आएगा उन के

وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ؕ ﴿١٠﴾ هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ

उन के लिए	अपना रब	आयात को	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया (न माना)	यह (क़ुरआन) हिदायत	10	बड़ा	अ़ज़ाब	और उन के लिए

عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ﴿١١﴾ اَللّٰهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ ع ١١ ١٧

कश्तियां	ताकि चलें	दर्या	तुम्हारे लिए	मुसख़्ख़र किया	अल्लाह वह जिस	11	दर्दनाक अ़ज़ाब	से	एक अ़ज़ाब

فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾ وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا

जो	और उस ने मुसख़्ख़र किया तुम्हारे लिए	12	शुक्र करो	और ताकि तुम	उस के फ़ज़्ल से	और कि तुम तलाश करो	उस के हुक्म से	उस में

فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

निशानियां	उस में	बेशक	अपने हुक्म से	सब	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ

उम्मीद नहीं रखते	उन लोगों से जो	दरगुज़र करें	ईमान लाए	उन लोगों को जो	फ़रमा दें	13	ग़ौर ओ फ़िक्र करते हैं	उन लोगों के लिए

اَيَّامَ اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا

अ़मल किया नेक	जिस	14	वह कमाते थे (आमाल)	उस का जो	उन लोगों को	ताकि वह बदला दे	अल्लाह के अय्याम

فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۫ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا

और तहक़ीक़ हम ने दी	15	तुम लौटाए जाओगे	तुम अपने रब की तरफ़	फिर	तो उस पर	बुरा किया	और जिस	तो अपनी ज़ात के लिए

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ

पाकीज़ा चीज़ें	और हम ने अ़ता कीं उन्हें	और नबुव्वत	और हुक्म	किताब	बनी इस्राईल

وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا

तो उन्हों ने इख़तिलाफ़ किया	अम्र से (दीन के बारे में)	वाज़ेह निशानियां	और हम ने उन्हें दीं	16	जहान वालों पर	और हम ने फ़ज़ीलत दी उन्हें

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْيًا ۢ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

बेशक तुम्हारा रब	आपस की	ज़िद से	इल्म	जब आ गया उन के पास	उस के बाद	मगर

يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٧﴾

17	इख़तिलाफ़ करते	उस में	वह थे	उस में	क़ियामत के दिन	उन के दरमियान	फ़ैसला करेगा

ख़राबी है हर झूट बान्धने वाले गुनाहगार के लिए। (7) वह अल्लाह की आयात को सुनता है जो उस पर पढ़ी जाती हैं, फिर तकब्बुर करता हुआ अड़ा रहता है गोया कि उस ने सुना ही नहीं, पस उसे दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी दो। (8) और जब वह हमारी आयात के किसी शै से वाक़िफ़ होता है तो वह उस को पकड़ता (बनाता है) हँसी मज़ाक़, यही लोग हैं जिन के लिए रुस्वा करने वाला अ़ज़ाब है। (9) उन के आगे जहन्नम है, और उन के कुछ काम न आएंगे जो उन्हों ने कमाया और वह न जिन को उन्हों ने अल्लाह के सिवा कारसाज़ ठहराया, और उन के लिए बड़ा अ़ज़ाब है। (10) यह (क़ुरआन सरासर) हिदायत है, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया अपने रब की आयात का, उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब में से एक बड़ा अ़ज़ाब होगा। (11) अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिए दर्या को मुसख़्ख़र किया ताकि चलें उस में उस के हुक्म से कश्तियां, और ताकि उस के फ़ज़्ल से (रोज़ी) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (12) और उस ने तुम्हारे लिए अपने हुक्म से मुसख़्ख़र किया सब को जो आस्मानों में और ज़मीन में हैं, बेशक उस में ग़ौर ओ फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए निशानियां हैं। (13) आप (स) उन लोगों को फ़रमा दें जो ईमान लाए कि वह उन लोगों से दरगुज़र करें जो अल्लाह के अय्याम (जज़ाए आमाल) की उम्मीद नहीं रखते ताकि अल्लाह उन लोगों को बदला दे उन के आमाल का। (14) जिस ने नेक अ़मल किया अपनी ज़ात के लिए (किया) और जिस ने बुरा किया तो (उस का वबाल) उसी पर (होगा), फिर तुम अपने रब की तरफ़ लौटाए जाओगे। (15) और तहक़ीक़ हम ने बनी इस्राईल को किताब (तौरेत) और हुकूमत और नुबुव्वत दी और हम ने उन्हें पाकीज़ा चीज़ें अ़ता कीं, और हम ने उन्हें जहान वालों पर फ़ज़ीलत दी। (16) और हम ने उन्हें दीन के बारे में वाज़ेह निशानियां दीं तो उन्हों ने इख़तिलाफ़ न किया मगर उस के बाद कि जब उन के पास इल्म आ गया आपस की ज़िद की वजह से, बेशक तुम्हारा रब उन के दरमियान फ़ैसला फ़रमाएगा क़ियामत के दिन जिस में वह इख़तिलाफ़ करते थे। (17)

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ

ख़ाहिशात	और न पैरवी करें	तो आप (स) उस की पैरवी करें	दीन से-के	शरीअ़त (ख़ास तरीक़ा) पर	हम ने कर दिया आप को	फिर

الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨﴾ اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ

कुछ	अल्लाह से (के सामने)	आप (स) के	हरगिज़ काम न आएंगे	बेशक वह	18	इल्म नहीं रखते	उन लोगों की जो

وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٩﴾

19	परहेज़गारों	रफ़ीक़	और अल्लाह	बाज़ (दूसरे)	रफ़ीक़ (जमा)	उन में से बाज़ (एक)	ज़ालिम (जमा)	और बेशक

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٢٠﴾

20	यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए	और रहमत	और हिदायत	लोगों के लिए	दानाई की बातें	यह

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	उन लोगों की तरह जो	कि हम कर देंगे उन्हें	बुराइयां	कमाईं (कीं)	वह जिन्हों ने	क्या गुमान करते हैं

ع ٢ ١٠ ١٨ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾

21	जो वह हुक्म लगाते हैं	बुरा	और उन का मरना	उन का जीना	बराबर	और उन्हों ने अ़मल किए अच्छे

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ

उस का जो उस ने कमाया (आमाल)	हर शख़्स	और ताकि बदला दिया जाए	हक़ (हिक्मत) के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	और पैदा किया अल्लाह ने

وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ

और गुमराह कर दिया उसे अल्लाह	अपनी ख़ाहिश	अपना माबूद	बना लिया	जो-जिस	क्या तुम ने देखा	22	ज़ुल्म न किए जाएंगे	और वह

عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ

तो कौन	पर्दा	उस की आँख पर	और कर दिया (डाल दिया)	और उस का दिल	उस के कान	और उस ने मुहर लगा दी	इल्म पर (के बावजूद)

يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَقَالُوْا مَا هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا

हमारी ज़िन्दगी	सिर्फ़	नहीं यह	और उन्हों ने कहा	23	तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते?	अल्लाह के बाद	उसे हिदायत देगा

الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ

उस का	उन्हें	और नहीं	ज़माना	मगर-सिर्फ़	और नहीं हलाक करता हमें	और हम जीते हैं	हम मरते हैं	दुनिया

مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

वाज़ेह	हमारी आयात	पढ़ी जाती हैं उन पर	और जब	24	अटकल दौड़ाते हैं	मगर-सिर्फ़	वह	नहीं	से-कोई इल्म

مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ اِنْ كُنْتُمْ

अगर तुम हो	हमारे बाप दादा को	तुम ले आओ	वह कहते हैं	सिवा यह कि	उन की हुज्जत	नहीं होती

صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى

तरफ़	वह फिर तुम्हें जमा करेगा	वह फिर तुम्हें मौत देगा	अल्लाह तुम्हें ज़िन्दगी देता है	फ़रमा दें	25	सच्चे

ع ٣ ٥ ١٩ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾

26	जानते नहीं	अक्सर लोग	और लेकिन	उस में	कोई शक नहीं	क़ियामत का दिन

फिर हम ने आप (स) को दीन के एक ख़ास तरीक़े पर कर दिया तो आप (स) उस की पैरवी करें, और जो लोग इल्म नहीं रखते उन की ख़ाहिशात की पैरवी न करें। (18)
बेशक वह अल्लाह के सामने आप के काम न आएंगे कुछ भी और बेशक ज़ालिम एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, और अल्लाह परहेज़गारों का रफ़ीक़ है। (19)
यह लोगों के लिए दानाई की बातें हैं, और हिदायत ओ रहमत यक़ीन रखने वाले लोगों के लिए। (20)
क्या वह लोग यह गुमान करते हैं जिन्हों ने बुराइयां कीं कि हम उन्हें उन लोगों की तरह कर देंगे जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए ताकि बराबर (हो जाए) उन का जीना और मरना, बुरा है जो वह हुक्म लगाते हैं। (21)
और अल्लाह ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया हिक्मत के साथ और ताकि हर शख़्स को उस के आमाल का बदला दिया जाए और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (22)
क्या तुम ने उस शख़्स को देखा जिस ने बना लिया अपनी ख़ाहिशों को अपना माबूद, और अल्लाह ने इल्म के बावजूद उसे गुमराह कर दिया, और मुहर लगा दी उस के कान और उस के दिल पर, और डाल दिया उस की आँख पर पर्दा, तो कौन अल्लाह के बाद उसे हिदायत देगा, तो क्या तुम ग़ौर नहीं करते? (23)
और उन्हों ने कहा कि यह (ज़िन्दगी और कुछ) नहीं सिर्फ़ हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है, हम मरते हैं और हम जीते हैं, और हमें सिर्फ़ ज़माना हलाक कर देता है, और उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ़ अटकल दौड़ाते हैं। (24)
और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं तो उन की हुज्जत (दलील) नहीं होती इस के सिवा कि वह कहते हैं: हमारे बाप दादा को ले आओ अगर तुम सच्चे हो। (25)
आप फ़रमा दें: अल्लाह (ही) तुम्हें ज़िन्दगी देता है (वही) फिर तुम्हें मौत देगा फिर (वही) तुम्हें क़ियामत के दिन जमा करेगा, जिस में कोई शक नहीं, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं। (26)

और अल्लाह (ही) के लिए है बादशाहत आस्मानों और ज़मीन की, और जिस दिन क़ियामत क़ाइम (बपा) होगी उस दिन बातिल परस्त ख़सारा पाएंगे। (27)
और तुम हर उम्मत को घुटनों के बल गिरी हुई देखोगे, हर उम्मत अपने नामाए आमाल की तरफ़ पुकारी जाएगी, आज तुम्हें बदला दिया जाएगा उस का जो तुम करते थे। (28)
यह हमारी तहरीर है जो तुम्हारे बारे में हक़ के साथ बोलती है, बेशक हम लिखाते थे जो तुम करते थे। (29)
पस जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए तो उन्हें उन का रब अपनी रहमत में दाख़िल करेगा, यही है खुली कामयाबी। (30)
और वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (उन्हें कहा जाएगा) सो क्या तुम पर मेरी आयात न पढ़ी जाती थीं? तो तुम ने तकब्बुर किया और तुम मुज्रिम लोग थे। (31)
और जब (तुम से) कहा जाता था कि बेशक अल्लाह का वादा सच है और क़ियामत में कोई शक नहीं, तो तुम ने कहाः हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है! हम तो बस एक गुमान सा रखते हैं, और हम नहीं हैं यक़ीन करने वाले। (32)
और उन पर उन के आमाल की बुराइयां खुल गईं और उन्हें उस (अ़ज़ाब ने) घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (33)
और कहा जाएगाः हम ने तुम्हें भुला दिया है जैसे तुम ने इस दिन के मिलने को भुला दिया था, और तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, और तुम्हारा कोई मददगार नहीं। (34)
यह इस लिए है कि तुम ने बना लिया था अल्लाह की आयात को एक मज़ाक़, और तुम्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दे रखा था, सो वह आज उस से न निकाले जाएंगे और न उन्हें (अल्लाह की) रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा। (35)
पस तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जो रब है आस्मानों का और रब है ज़मीन का, और रब है तमाम जहानों का। (36)
और उसी के लिए है किबरियाई (बड़ाई) आस्मानों में और ज़मीन में, और वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (37)

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَىِٕذٍ يَّخْسَرُ

ख़सारा पाएंगे	उस दिन	क़ियामत	क़ाइम होगी	और जिस दिन	और ज़मीन	आस्मानों	और अल्लाह के लिए बादशाहत

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۣ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ۭ

अपनी किताब (नामाए आमाल) की तरफ़	पुकारी जाएगी	उम्मत	हर	घुटनों के बल गिरी हुई	हर उम्मत	और तुम देखोगे	27	बातिल परस्त

اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ

तुम पर (तुम्हारे बारे में)	बोलती है	यह हमारी किताब (तहरीर)	28	तुम करते थे	जो	तुम्हें बदला दिया जाएगा	आज

بِالْحَقِّ ۭ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान लाए	पस जो	29	तुम करते थे	जो	लिखाते थे	बेशक हम	हक़ के साथ

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ

कामयाबी	वह (यही)	यह	अपनी रहमत में	उन का रब	तो वह दाख़िल करेगा उन्हें	और उन्हों ने अ़मल किए नेक

الْمُبِيْنُ ﴿٣٠﴾ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۣ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ

तुम पर	पढ़ी जाती	मेरी आयात	सो क्या न थीं	कुफ़्र किया	और वह लोग जिन्हों ने	30	खुली

فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ

अल्लाह का वादा	कहा जाता था बेशक	और जब	31	मुज्रिम (जमा)	लोग	और तुम थे	तो तुम ने तकब्बुर किया

حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ

क्या है क़ियामत	हम नहीं जानते	तुम ने कहा	उस में	कोई शक नहीं	और क़ियामत	सच

اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿٣٢﴾ وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ

बुराइयां	उन पर	और खुल गईं	32	यक़ीन करने वाले	हम	और नहीं	अटकल जैसा	मगर-सिर्फ़	नहीं हम गुमान करते

مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٣﴾ وَقِيْلَ الْيَوْمَ

आज	और कहा जाएगा	33	वह मज़ाक़ उड़ाते	उस का	जिस का वह थे	उन्हें	और घेर लिया	जो उन्हों ने किया (आमाल)

نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ

और नहीं तुम्हारे लिए	जहन्नम	और तुम्हारा ठिकाना	इस	अपना दिन	मिलना	तुम ने भुला दिया	जैसे	हम ने भुला दिया तुम्हें

مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿٣٤﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ

और फ़रेब दिया तुम्हें	एक मज़ाक़	अल्लाह की आयात	तुम ने बना लिया	इस लिए कि तुम	यह	34	कोई मददगार (जमा)

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	रज़ा मन्दी हासिल करने का मौक़ा दिया जाएगा	और न उन्हें	उस से	वह न निकाले जाएंगे	सो आज	दुनिया की ज़िन्दगी

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٦﴾

36	तमाम जहानों का रब	और ज़मीन का रब	आस्मानों का रब	पस अल्लाह के लिए तमाम तारीफ़ें

وَلَهُ الْكِبْرِيَاۗءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۠ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٣٧﴾ ع ١١ ٢٠

37	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	किबरियाई	और उस के लिए

آيَاتُهَا ٣٥ ❀ سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ (٤٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4	(46) सूरतुल अहक़ाफ़ रेगिस्तान	आयात 35

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

حٰمٓ ۝١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ۝٢

2	हिक्मत वाला	ग़ालिब	अल्लाह से	किताब	नाज़िल करना	1	हा-मीम

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ

हक़ के साथ	मगर	और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	नहीं पैदा किया हम ने

وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝٣ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

भला तुम देखो	फ़रमा दें	3	रूगर्दानी करने वाले	वह डराए जाते हैं	जिस से	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और एक मीआ़द मुक़र्ररा

مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ

ज़मीन से	उन्हों ने पैदा किया	क्या	दिखाओ मुझे तुम	अल्लाह के सिवा	जिन को तुम पुकारते हो

اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۭ اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ

या	इस	से पहले	कोई किताब	ले आओ मेरे पास	आस्मानों में	कुछ साझा	उन के लिए	या

اَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤ وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا

उस से जो वह पुकारता है	बड़ा गुमराह	और कौन	4	सच्चे	तुम हो	अगर	इल्म से-की	आसार

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ وَهُمْ عَنْ

से	और वह	क़ियामत का दिन	तक	उस को	जवाब न देगा	जो	अल्लाह के सिवा

دُعَاۗىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝٥ وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَاۗءً

दुश्मन	उन के	वह होंगे	जमा किए जाएंगे लोग	और जब	5	बेख़बर हैं	उन का पुकारना

وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝٦ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ

वाज़ेह	हमारी आयात	पढ़ी जाती हैं उन पर	और जब	6	मुन्किर (जमा)	उन की इबादत से	और वह होंगे

قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهُمْ ۙ هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧ۭ

7	खुला	यह जादू	उन के पास आ गया वह	जब	हक़ का	जिन लोगों ने इन्कार किया	कहते हैं वह

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَلَا تَمْلِكُوْنَ

तो तुम इख़्तियार नहीं रखते	मैं ने खुद बना लिया है इसे	अगर	फ़रमा दें	उस ने खुद बना लिया है इसे	वह कहते हैं	क्या

لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ۭ كَفٰى بِهٖ

वह काफ़ी है इस का	इस में	तुम बातें बनाते हो	वह जो	वह खूब जानता है	कुछ भी	अल्लाह से	मेरे लिए

شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۭ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٨

8	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और वह	और तुम्हारे दरमियान	मेरे दरमियान	गवाह

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

हा-मीम। (1)

किताब का नाज़िल करना ग़ालिब, हिक्मत वाले अल्लाह (की तरफ़) से है। (2)

हम ने नहीं पैदा किया है आस्मानों और ज़मीन को और जो उन दोनों के दरमियान है मगर हक़ के साथ और एक मुक़र्ररा मीआ़द (के लिए) और जिन लोगों ने कुफ़्र किया जिस से वह डराए जाते हैं (उस से) रूगर्दानी करने वाले हैं। (3)

आप (स) फ़रमा दें भला तुम देखो (सोचो) तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो मुझे दिखाओ कि उन्हों ने ज़मीन से क्या पैदा किया? या उन के लिए आस्मानों में कुछ साझा है? ले आओ मेरे पास इस से पहले की कोई किताब या कोई इल्मी आसार (निशानात) अगर तुम सच्चे हो। (4)

और उस से बड़ा गुमराह कौन है? जो अल्लाह के सिवा उस को पुकारता है जो उसे जवाब न देगा क़ियामत के दिन तक, और वह उन के पुकारने से (भी) बेख़बर हैं। (5)

और जब लोग (मैदाने हश्र) में जमा किए जाएंगे वह उन के दुश्मन होंगे और वह उन की इबादत के मुन्किर होंगे। (6)

और जब उन पर हमारी वाज़ेह आयात पढ़ी जाती हैं तो वह कहते हैं जिन्हों ने इन्कार किया हक़ के बारे में जब कि वह उन के पास आ गया: यह खुला जादू है। (7)

क्या वह कहते हैं कि उस ने इसे खुद बना लिया है, आप (स) फ़रमा दें: अगर मैं ने इसे खुद बना लिया है तो तुम मुझे अल्लाह से (बचाने का) कुछ भी इख़्तियार नहीं रखते, वह खूब जानता है जो तुम इस (के बारे) में बातें बनाते हो, वह काफ़ी है इस का गवाह मेरे और तुम्हारे दरमियान, और वह है बख़्शने वाला, रहम करने वाला। (8)

आप (स) फ़रमा दें कि मैं रसूलों में नया नहीं हूँ, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा, मैं सिर्फ़ उस की पैरवी करता हूँ जो मेरी तरफ़ वहि किया जाता है, और मैं सिर्फ़ साफ़ साफ़ डर सुनाने वाला हूँ। (9)
आप (स) फ़रमा दें: भला तुम देखो तो अगर (यह क़ुरआन) अल्लाह के पास से है, और तुम ने इस का इन्कार किया, और गवाही दी एक गवाह ने बनी इस्राईल में से उस जैसी किताब पर, और वह ईमान ले आया, और तुम ने तकब्बुर किया (तुम अड़े रहे), बेशक अल्लाह हिदायत नहीं देता ज़ालिम लोगों को। (10)
और काफ़िरों ने मोमिनों के लिए (के बारे में) कहा: अगर (यह) बेहतर होता तो वह इस की तरफ़ हम पर पहल न करते, और जब उन्हों ने इस से हिदायत न पाई तो अब कहेंगे: यह पुराना झूट है। (11)
और इस से पहले मूसा (अ) की किताब (तौरेत) थी रहनुमा और रहमत, और है यह किताब (उस की) तस्दीक़ करने वाली अ़रबी ज़बान में ताकि ज़ालिमों को डराए, और ख़ुशख़बरी है नेकोकारों के लिए। (12)
बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वह (उस पर) क़ाइम रहे, तो कोई ख़ौफ़ नहीं उन पर और न वह ग़मगीन होंगे। (13)
यही लोग अहले जन्नत हैं, हमेशा उस में रहेंगे, (यह) उन की जज़ा है जो वह अ़मल करते थे। (14)
और हम ने इन्सान को माँ बाप के साथ हुस्ने सुलूक का हुक्म दिया, उस की माँ उसे तक्लीफ़ के साथ (पेट में) उठाए रही और उस ने उसे तक्लीफ़ के साथ जना, और उस का हम्ल और उस का दूध छुड़ाना 30 महीने में (हुआ) यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुँचा और हुआ चालीस (40) साल का तो उस ने अ़र्ज़ की: ऐ मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी नेमत का शुक्र करूँ जो तू ने मुझ पर इन्आ़म फ़रमाई और मेरे माँ बाप पर, और यह कि मैं नेक अ़मल करूँ जिसे तू पसंद करे, और मेरे लिए मेरी औलाद में इस्लाह कर दे (नेक बना दे), बेशक मैं ने तेरी तरफ़ (तेरे हुज़ूर) तौबा की और बेशक मैं फ़रमांबरदारों में से हूँ। (15)

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِىْ مَا يُفْعَلُ بِىْ وَلَا بِكُمْ ؕ

और न तुम्हारे साथ	मेरे साथ	क्या किया जाएगा	और नहीं जानता मैं	रसूलों में से	नया	नहीं हूँ मैं	फ़रमा दें

اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۹﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

भला तुम देखो तो	फ़रमा दें	9	डर सुनाने वाला साफ़ साफ़	मगर- सिर्फ़	और नहीं हूँ मैं	मेरी तरफ़	जो वहि किया जाता है	सिवाए- सिर्फ़	नहीं पैरवी करता

اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ

से	एक गवाह	और गवाही दी	इस का	और तुम ने इन्कार किया	अल्लाह के पास से	है	अगर

بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ

लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह	और तुम ने तकब्बुर किया	फिर वह ईमान ले आया	इस जैसी (एक किताब) पर	बनी इस्राईल

الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰﴾ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا ع ١

बेहतर	अगर होता	उन के लिए जो ईमान लाए (मोमिन)	वह लोग जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	और कहा	10	ज़ालिम (जमा)

مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ؕ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ﴿۱۱﴾

11	पुराना	झूट	यह	तो अब कहेंगे	इस से	न हिदायत पाई उन्हों ने	और जब	इस की तरफ़	न वह पहल करते हम पर

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ

तस्दीक़ करने वाली	किताब	और यह	और रहमत	रहनुमा- इमाम	मूसा (अ)	किताब	और इस से पहले

لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۲﴾ اِنَّ

बेशक	12	नेकोकारों के लिए	और ख़ुशख़बरी	उन लोगों को जिन्हों ने ज़ुल्म किया (ज़ालिम)	ताकि वह डराए	अ़रबी	ज़बान

الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ

और न वह	उन पर	तो कोई ख़ौफ़ नहीं	वह क़ाइम रहे	फिर	हमारा रब अल्लाह	जिन लोगों ने कहा

يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۳﴾ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ جَزَآءًۢ بِمَا

उस की जो	जज़ा	उस में	हमेशा रहेंगे	अहले जन्नत	यही लोग	13	ग़मगीन होंगे

كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۱۴﴾ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ

उस की माँ	वह उस को उठाए रही	हुस्ने सुलूक का	माँ बाप के साथ	इन्सान	और हम ने हुक्म दिया	14	वह अ़मल करते थे

كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ

वह पहुँचा	जब	यहां तक	तीस (30) महीने	और उस का दूध छुड़ाना	और उस का हम्ल	और उस ने उस को जना तक्लीफ़ के साथ	तक्लीफ़ के साथ

اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِىْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ

तेरी नेमत	कि मैं शुक्र करूँ	तौफ़ीक़ दे मुझे	ऐ मेरे रब	उस ने अ़र्ज़ की	साल	चालीस (40)	और वह पहुँचा (हुआ)	अपने ज़ोर (जवानी) को

الَّتِىْٓ اَنْعَمْتَ عَلَىَّ وَعَلٰى وَالِدَىَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ

तू पसंद करे उसे	नेक अ़मल	और यह कि मैं अ़मल करूँ	और मेरे माँ बाप पर	तू ने इन्आ़म फ़रमाई मुझ पर	वह जो

وَاَصْلِحْ لِىْ فِىْ ذُرِّيَّتِىْ ۚ اِنِّىْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّىْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿۱۵﴾

15	मुसलमानों (फ़रमांबरदारों)	से	और बेशक मैं	तेरी तरफ़	बेशक मैं ने तौबा की	मेरी औलाद में	मेरे लिए	और इस्लाह कर दे

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَنَتَجَاوَزُ عَن سَيِّئَاتِهِمْ

उन की बुराइयां	से	और हम दरगुज़र करते हैं	उन्हों ने किए	जो	बेहतरीन (अ़मल)	उन से	हम क़ुबूल करते हैं	वह जो कि	यही लोग

فِي أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾ وَالَّذِي

और वह जिस	16	उन्हें वादा दिया जाता था	वह जो	सच्चा वादा	अहले जन्नत	में

قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَا أَتَعِدَانِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُونُ

(बहुत से) गिरोह	हालांकि गुज़र चुके	मैं निकाला जाऊँगा	क्या तुम मुझे वादा (ख़बर) देते हो	तुम्हारे लिए-पर	तुफ़	अपने माँ बाप के लिए	उस ने कहा

مِن قَبْلِي ۖ وَهُمَا يَسْتَغِيثَانِ اللَّهَ وَيْلَكَ آمِنْ ۖ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ

सच्चा	अल्लाह का वादा	बेशक	तू ईमान ले आ	तेरा बुरा हो	फ़र्याद करते हैं अल्लाह से	और वह दोनों	मुझ से पहले

فَيَقُولُ مَا هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ

उन पर	साबित हो गई	वह जो	यही लोग	17	पहलों	कहानियां	मगर-सिर्फ़	यह	नहीं	तो वह कहता है

الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِم مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ ۖ إِنَّهُمْ

बेशक वह	जिन्नात और इन्सान (जमा)	से	इन से क़ब्ल	गुज़र चुकीं	उम्मतों में	बात (अ़ज़ाब)

كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿١٨﴾ وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ

उन के आमाल	और ताकि वह पूरा दे उन को	उस से जो उन्हों ने किया	दरजे	और हर एक के लिए	18	ख़सारा पाने वाले	थे

وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾ وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ ۖ

आग के सामने	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	लाए जाएंगे	और जिस दिन	19	उन पर न ज़ुल्म किया जाएगा	और वह-उन

أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُم بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ

पस आज	उन का	और तुम फ़ाइदा उठा चुके	अपनी दुनिया की ज़िन्दगी	में	अपनी नेमतें	तुम ले गए (हासिल कर चुके)

تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ

तुम तकब्बुर करते थे	इस लिए कि	रुस्वाई का अ़ज़ाब	नहीं बदला दिया जाएगा

ع ٢ ١٠ ٢ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنتُمْ تَفْسُقُونَ ﴿٢٠﴾ ۞ وَاذْكُرْ

और याद कर	20	तुम नाफ़रमानियां करते थे	और इस लिए कि	नाहक़	ज़मीन में

أَخَا عَادٍ ۖ إِذْ أَنذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ

डराने वाले	और गुज़र चुके	अहक़ाफ़ में	अपनी क़ौम	उस ने डराया	जब	आ़द के भाई

مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ

बेशक मैं डरता हूँ	अल्लाह के सिवा	कि तुम इबादत न करो	और उस के बाद	उस से पहले

عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٢١﴾ قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا

क्या तू हमारे पास आया कि तू फेर दे हमें	वह बोले	21	एक बड़ा दिन	अ़ज़ाब	तुम पर

عَنْ آلِهَتِنَا ۖ فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٢﴾

22	सच्चे (जमा)	से	तू है	अगर	जो कुछ तू वादा करता है हम से	पस ले आ हम पर	हमारे माबूद	से

यही वह लोग हैं जिन के बेहतरीन अ़मल हम क़ुबूल करते हैं जो उन्हों ने किए और हम उन की बुराइयों से दरगुज़र करते हैं, (यह) अहले जन्नत में से (होंगे), सच्चा वादा है जो उन्हें वादा दिया जाता था। (16) और जिस ने अपने माँ बाप के लिए कहाः तुम पर तुफ़! क्या तुम मुझे यह ख़बर देते हो कि मैं (रोज़े हश्र) निकाला जाऊँगा, हालांकि बहुत से गिरोह गुज़र चुके हैं मुझ से पहले, और वह दोनों अल्लाह से फ़र्याद करते हैं (और उस को कहते हैं): तेरा बुरा हो, तू ईमान ले आ, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, तो वह कहता है कि यह तो सिर्फ़ पहलों (अगलों) की कहानियां हैं। (17) यही लोग हैं जिन पर अ़ज़ाब की बात साबित हो गई (उन) उम्मतों में जो इन से क़ब्ल गुज़र चुकीं जिन्नात में से और इन्सानों में से, बेशक वह ख़सारा पाने वालों में से थे। (18) और हर एक के लिए दरजे हैं, उस (के मुताबिक़) जो उन्हों ने किया ताकि वह उन को उन के आमाल का पूरा (बदला) दे, और उन पर ज़ुल्म न किया जाएगा। (19) और जिस दिन लाए जाएंगे काफ़िर आग के सामने (उन से कहा जाएगा): तुम अपनी नेमतें अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में हासिल कर चुके हो और उन का फ़ाइदा (भी) उठा चुके हो, पस आज तुम्हें रुस्वाई के अ़ज़ाब का बदला दिया जाएगा, इस लिए कि तुम ज़मीन में नाहक़ तकब्बुर करते थे, और इस लिए कि तुम नाफ़रमानियां करते थे। (20) और क़ौमे आ़द के भाई (हूद) को याद कर, जब उस ने अपनी क़ौम को (सर ज़मीने) अहक़ाफ़ में डराया, और गुज़र चुके हैं डराने वाले (नबी) उस से पहले और उस के बाद (भी) कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो, बेशक मैं डरता हूँ तुम पर एक बड़े दिन के अ़ज़ाब से। (21) वह बोलेः क्या तू हमारे पास इस लिए आया कि हमें हमारे माबूदों से फेर दे, पस तू जो कुछ हम से वादा करता है हम पर ले आ अगर तू सच्चों में से है (सच्चा है)। (22)

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ

और लेकिन मैं	जो मैं भेजा गया हूँ उस के साथ	और मैं पहुँचाता हूँ तुम्हें	अल्लाह के पास	इल्म	इस के सिवा नहीं	उस ने कहा

اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ﴿٢٣﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ

उन की वादियां	सामने (चला) आ रहा है	एक अब्र	फिर जब देखा उन्हों ने उस को	23	तुम जहालत करते हो	गिरोह-लोग	देखता हूँ तुम्हें

قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۭ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ۭ

उस की	तुम जल्दी करते थे	जिस	बल्कि वह	हम पर बारिश बरसाने वाला	एक बादल	यह	वह बोले

رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٤﴾ تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۢ بِاَمْرِ رَبِّهَا

अपना रब	हुक्म से	शै	हर	वह तहस नहस कर देगी	24	दर्दनाक अ़ज़ाब	उस में	एक हवा (आन्धी)

فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي

हम बदला देते हैं	इसी तरह	उन के मकान	सिवाए	न दिखाई देता था	पस वह रह गए

الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ

उस में-पर	नहीं हम ने क़ुदरत दी तुम्हें	उस में	और अलबत्ता हम ने उनको क़ुदरत दी थी	25	मुजरिम लोग

وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ۡ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ

काम आए उन के	तो न	और दिल (जमा)	और आँखें	कान	उन्हें	और हम ने बना दिए

سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَيْءٍ اِذْ

जब	कुछ भी	और न दिल उन के	और न उन की आँखें	उन के कान

كَانُوْا يَجْحَدُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ

उस का	जो वह थे	उन को	और उस ने घेर लिया	अल्लाह की आयात का	वह इन्कार करते थे

يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٢٦﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى ع ٣ ٦ ٣

बस्तियां	से	जो तुम्हारे इर्द गिर्द	और तहक़ीक़ हम ने हलाक कर दिया	26	वह मज़ाक़ उड़ाते

وَصَرَّفْنَا الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٧﴾ فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ

मदद की उन की	फिर क्यों न	27	लौट आएं	ताकि वह	और हम ने बार बार दिखाईं अपनी निशानियां

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ۭ بَلْ

बल्कि	माबूद	क़ुर्ब हासिल करने को	अल्लाह के सिवा	जिन्हें बना लिया उन्हों ने

ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٨﴾ وَاِذْ صَرَفْنَآ

हम फेर लाए	और जब	28	वह इफ़्तिरा करते थे	और जो	उन का बुहतान	और यह	वह गुम (ग़ाइब) हो गए उन से

اِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ

वह हाज़िर हुए उस के पास	पस जब	क़ुरआन	वह सुनते थे	जिन्नात की	एक जमाअ़त	आप (स) की तरफ़

قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا اِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ ﴿٢٩﴾

29	डर सुनाते हुए	अपनी क़ौम	तरफ़	वह लौटे	(पढ़ना) तमाम हुआ	फिर जब	चुप रहो	उन्हों ने कहा

उस ने कहाः इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है और मैं जिस (पैग़ाम) के साथ भेजा गया हूँ वह तुम्हें पहुँचाता हूँ, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग जहालत करते हो। (23)

फिर जब उन्हों ने उस को देखा कि एक अब्र उन की वादियों की तरफ़ चला आ रहा है, तो वह बोलेः यह हम पर बारिश बरसाने वाला बादल है, (नहीं) बल्कि यह वह है जिस की तुम जल्दी करते थे, एक आन्धी जिस में दर्दनाक अ़ज़ाब है। (24)

वह तहस नहस कर देगी हर शै को अपने रब के हुक्म से, पस (उन का यह हाल होगया कि) उन के मकानों के सिवा कुछ न दिखाई देता था, इसी तरह हम मुजरिम लोगों को बदला दिया करते हैं। (25)

और हम ने उन्हें उन (बातों) में इस क़द्र क़ुदरत दी थी कि तुम्हें उस पर उस क़द्र क़ुदरत नहीं दी, और हम ने उन को दिए कान और आँखें और दिल, पस न उन के कान और न उन की आँखें और न उन के दिल उन के कुछ भी काम आए, जब वह इन्कार करते थे अल्लाह की आयात का, और उन को उस (अ़ज़ाब) ने घेर लिया जिस का वह मज़ाक़ उड़ाते थे। (26)

और तहक़ीक़ हम ने हलाक कर दीं तुम्हारे इर्द गिर्द की बस्तियां, और हम ने बार बार अपनी निशानियां दिखाईं ताकि वह लौट आएं। (27)

फिर क्यों न उन की मदद की उन्हों ने जिन्हें बना लिया था (अल्लाह का) क़ुर्ब हासिल करने के लिए अल्लाह के सिवा माबूद, बल्कि वह उन से ग़ाइब हो गए, और यह उन का बुहतान था जो वह इफ़्तिरा करते (घड़ते थे)। (28)

और जब हम आप (स) की तरफ़ जिन्नात की एक जमाअ़त फेर लाए, वह क़ुरआन सुनते थे, पस वह आप (स) के पास हाज़िर हुए तो उन्हों ने (एक दूसरे को) कहाः चुप रहो, फिर जब पढ़ना तमाम हुआ तो वह अपनी क़ौम की तरफ़ डर सुनाते हुए लौटे। (29)

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا

तस्दीक़ करने वाली	मूसा (अ)	बाद	नाज़िल की गई	एक किताब	बेशक हम ने सुनी	ऐ हमारी क़ौम	उन्हों ने कहा

لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٣٠﴾ يٰقَوْمَنَآ

ऐ हमारी क़ौम	30	रास्त	राह	और तरफ़	हक़ की तरफ़	वह रहनुमाई करती है	उस (अपने) से पहले	उस की जो

اَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ

और वह पनाह देगा तुम्हें	तुम्हारे गुनाह	से	बख़्श देगा तुम्हें	उस पर	और ईमान ले आओ	अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला	क़ुबूल कर लो

مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٣١﴾ وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ

आजिज़ करने वाला	तो नहीं	अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाला	न क़ुबूल करेगा	और जो	31	दर्दनाक अज़ाब	से

فِي الْاَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءُ ؕ اُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٢﴾

32	गुमराही खुली	में	यही लोग	हिमायती	उस के सिवा	उस के लिए	और नहीं	ज़मीन में

اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ

और वह थका नहीं	और ज़मीन	पैदा किया आस्मानों को	वह जिस ने	कि अल्लाह	क्या नहीं देखा उन्हों ने

بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِيَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٣٣﴾

33	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	बेशक वह	हाँ	मुर्दे	कि वह ज़िन्दा करे	पर	वह क़ादिर है	उन के पैदा करने से

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا

वह कहेंगे	हक़	यह	क्या नहीं	आग के सामने	जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	पेश किए जाएंगे	और जिस दिन

بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٤﴾ فَاصْبِرْ

पस आप (स) सब्र करें	34	तुम इन्कार करते थे	वह जिस	अज़ाब	पस तुम चखो	वह फ़रमाएगा	हमारे रब की क़सम	हाँ

كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَاَنَّهُمْ

गोया कि वह	उन के लिए	और जल्दी न करें	रसूलों	से	ऊलूल अज़्म	सब्र किया	जैसे

يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ

दिन की	एक घड़ी	मगर-सिर्फ़	वह नहीं ठहरे	जिस का वादा किया जाता है उन से	जिस दिन देखेंगे वह

ع ٤ ٩ ٤ الربع
بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٣٥﴾

35	नाफ़रमान लोग	मगर	पस नहीं हलाक होंगे	पहुँचाना

آيَاتُهَا ٣٨ ❀ (٤٧) سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकूआत 4 — (47) सूरह मुहम्मद — आयात 38

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿١﴾

1	उन के आमाल	अकारत कर दिए	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्हों ने रोका	काफ़िर हुए	जो लोग

उन्हों ने कहा कि ऐ हमारी क़ौम! हम ने एक किताब सुनी है जो नाज़िल की गई है मूसा (अ) के बाद, अपने से पहले की तस्दीक़ करने वाली, वह रहनुमाई करने वाली (दीने) हक़ की तरफ़ और राहे रास्त की तरफ़। (30)
ऐ हमारी क़ौम! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले (की बात) क़ुबूल कर लो और उस पर ईमान ले आओ, (अल्लाह) तुम्हें तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और वह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से पनाह देगा। (31)
और जो अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की बात को क़ुबूल न करेगा, वह ज़मीन में (अल्लाह को) आजिज़ करने वाला नहीं, और उस (अल्लाह) के सिवा उस के लिए कोई हिमायती नहीं, यही लोग खुली गुमराही में हैं। (32)
क्या उन्हों ने नहीं देखा? कि अल्लाह ही है जिस ने आस्मानों को और ज़मीन को पैदा किया, और वह उन के पैदा करने से नहीं थका, वह उस पर क़ादिर है कि मुर्दों को ज़िन्दा करे, हाँ! बेशक वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (33)
और जिस दिन काफ़िर आग (जहन्नम) के सामने पेश किए जाएंगे, (पूछा जाएगा) क्या यह हक़ (अम्रे वाक़ई) नहीं? वह कहेंगेः हमारे रब की क़सम, हाँ (यह हक़ है), अल्लाह तआला फ़रमाएगाः पस तुम अज़ाब चखो जिस का तुम इन्कार करते थे। (34)
पस आप (स) सब्र करें जैसे ऊलूलअज़्म (बाहिम्मत) रसूलों ने सब्र किया, और उन के लिए (अज़ाब की) जल्दी न करें, वह जिस दिन देखेंगे (वह अज़ाब) जिस का उन से वादा किया जाता है (उन्हें ऐसा मालूम होगा कि) गोया वह दुनिया में सिर्फ़ दिन की एक घड़ी ठहरे थे, (पैग़ाम) पहुँचाना है, पस हलाक न होंगे मगर नाफ़रमान लोग। (35)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
जो लोग काफ़िर हुए और उन्हों ने अल्लाह के रास्ते से रोका, उन के आमाल (अल्लाह ने) अकारत कर दिए। (1)

और जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए और वह उस पर ईमान लाए जो मुहम्मद (स) पर नाज़िल किया गया, और वह उन के रब की तरफ़ से हक़ है, उस (अल्लाह) ने उन से उन के गुनाह दूर कर दिए और उन का हाल दुरुस्त कर दिया। (2)
यह इस लिए हुआ कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हों ने बातिल की पैरवी की और यह कि जो लोग ईमान लाए, उन्हों ने अपने रब की तरफ़ से हक़ की पैरवी की, इसी तरह अल्लाह लोगों के लिए उन की मिसालें (अहवाल) बयान करता है। (3)
फिर जब तुम काफ़िरों से भिड़ जाओ तो उन की गर्दनें मारो, यहां तक कि जब उन की खूब खूं रेज़ी कर चुको तो उन की क़ैद मज़बूत कर लो (मुशकें कस लो), पस उस के बाद एहसान कर दो (बिला मुआवज़ा रिहा कर दो) या मुआवज़ा (ले कर छोड़ दो) यहां तक कि लड़ने वाले अपने हथियार रख दें (डाल दें), यह है (हुक्मे इलाही), और अगर अल्लाह चाहता तो उन से खुद ही निपट लेता, लेकिन (वह चाहता है) कि तुम में से बाज़ (एक) को दूसरे से आज़माए, और जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे गए तो वह उन के आमाल हरगिज़ ज़ाया न करेगा। (4)
वह जल्द उन को हिदायत देगा और उन का हाल संवारेगा। (5)
और वह उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा जिस से उस ने उन्हें शनासा कर दिया है। (6)
ऐ मोमिनो! अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा (तुम्हें साबित क़दम कर देगा)। (7)
और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए तबाही है और उस (अल्लाह) ने उन के अ़मल ज़ाया कर दिए। (8)
यह इस लिए कि उन्हों ने उसे नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल किया तो (अल्लाह) ने उन के अ़मल अकारत कर दिए। (9)
क्या वह ज़मीन में चले फिरे नहीं? तो वह देख लेते कि कैसा अन्जाम हुआ उन से पहले लोगों का, अल्लाह ने उन पर तबाही डाल दी, और काफ़िरों को उन की मानिंद (सज़ा होगी)। (10)
यह इस लिए कि अल्लाह उन लोगों का कारसाज़ है जो ईमान लाए और काफ़िरों का कोई कारसाज़ नहीं। (11)

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ

मुहम्मद (स) पर	उस पर जो नाज़िल किया गया	और वह ईमान लाए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	ईमान लाए	और जो लोग

وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ﴿٢﴾

2	उन का हाल	और दुरुस्त कर दिया	उन की बुराइयां (गुनाह)	उन से	उस ने दूर कर दिए	उन का रब	से	हक़	और वह

ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا

ईमान लाए	जो लोग	और यह कि	बातिल	उन्हों ने पैरवी की	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	यह इस लिए कि

اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ﴿٣﴾

3	उन की मिसालें	लोगों के लिए	अल्लाह बयान करता है	इसी तरह	अपने रब (की तरफ़) से	हक़	उन्हों ने पैरवी की

فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ

खूब खून रेज़ी कर चुको उन की	जब	यहां तक कि	गर्दनें	तो मारो तुम	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	भिड़ जाओ	फिर जब तुम

فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۙ فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَاۗءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ

रख दे लड़ाई (लड़ने वाले)	यहां तक कि	मुआवज़ा	और या	उस के बाद	एहसान करो	पस या	क़ैद	तो मज़बूत कर लो

اَوْزَارَهَا ڔ ذٰلِكَ ڔ وَلَوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا

ताकि आज़माए	और लेकिन	उन से	ज़रूर इन्तिक़ाम लेता	अल्लाह चाहता	और अगर	यह	अपने हथियार

بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٤﴾

4	उन के आमाल	तो वह हरगिज़ ज़ाया न करेगा	अल्लाह का रास्ता	में	मारे गए	और जो लोग	बाज़ (दूसरे) से	तुम से बाज़ को

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ﴿٥﴾ ج وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ﴿٦﴾

6	उस ने जिस से शनासा कर दिया है उन्हें	जन्नत	और दाख़िल करेगा उन्हें	5	उन का हाल	और संवारेगा	वह जल्द उन को हिदायत देगा

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ

और जमा देगा	वह मदद करेगा तुम्हारी	तुम मदद करोगे अल्लाह की	अगर	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

اَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ﴿٨﴾

8	उन के अ़मल	और उस ने ज़ाया कर दिए	उन के लिए	तो तबाही है	और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	7	तुम्हारे क़दम

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٩﴾

9	उन के अ़मल	तो अकारत कर दिए	नाज़िल किया अल्लाह ने	जो	इस लिए कि उन्हों ने नापसंद किया	यह

اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ

उन लोगों का जो	अन्जाम	हुआ	कैसा	तो वह देख लेते	ज़मीन में	क्या वह चले फिरे नहीं

مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ دَمَّرَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۡ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾ ذٰلِكَ

यह	10	उन की मानिंद	और काफ़िरों के लिए	उन पर	तबाही डाल दी अल्लाह ने	उन से पहले

بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ﴿١١﴾ ع

11	उन के लिए	कोई कारसाज़ नहीं	काफ़िरों	और यह कि	उन लोगों का जो ईमान लाए	कारसाज़	इस लिए कि अल्लाह

صح ١٢ عند المتقدمين ١٢

وقد يبتدا بقوله ذٰلِكَ ولكن حسن اتصاله بما قبله ويوقف على ذٰلِكَ ١٢

ع ١ ٥

اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ

बहती हैं	बाग़ात	और उन्हों ने नेक अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	दाख़िल करता है	बेशक अल्लाह

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ كَمَا

जैसे	और वह खाते हैं	वह फ़ाइदा उठाते हैं	कुफ़्र किया	और जिन लोगों ने	नहरें	उन के नीचे

تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ﴿۱۲﴾ وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِىَ اَشَدُّ

बहुत ही सख़्त	वह	बस्तियां	और बहुत सी	12	उन के लिए	ठिकाना	और आग	चौपाए	खाते हैं

قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِىْٓ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ﴿۱۳﴾

13	उन के लिए	तो कोई न मदद करने वाला	हम ने हलाक कर दिया उन्हें	आप (स) को निकाल दिया	वह जिस	आप (स) की बस्ती से	कुव्वत में

اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ

उस के बुरे अ़मल	आरास्ता दिखाए गए उसको	उस की तरह	अपने रब से-के	रोशन (रास्ता)	पर	है	पस क्या जो

وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿۱۴﴾ مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِيْهَآ

उस में	परहेज़गारों	वह जो वादा की गई	जन्नत	मिसाल (कैफ़ियत)	14	अपनी ख़्वाहिशात	और उन्हों ने पैरवी की

اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ

और नहरें	उस का ज़ाइक़ा	बदलने वाला	न	दूध की	और नहरें	बदबू न करने वाला	पानी	से-की	नहरें

مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَلَهُمْ فِيْهَا

उस में	और उन के लिए	मुसफ़्फ़ा	शहद की	और नहरें	पीने वालों के लिए	सरासर लज़्ज़त	शराब की

مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِى النَّارِ

हमेशा रहने वाला आग में	वह	उस की तरह जो	उन के रब से	और बख़्शिश	हर क़िस्म के फल

وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ﴿۱۵﴾ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ

सुनते हैं	जो	और उन में से	15	उन की अंतड़ियां	टुकड़े टुकड़े कर डालेगा	गर्म पानी	और उन्हें पिलाया जाएगा

اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

इल्म दिया गया (अहले इल्म)	उन लोगों से जिन्हें	वह कहते हैं	आप (स) के पास से	वह निकलते हैं	जब	यहां तक कि	आप (स) की तरफ़

مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۫ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ

उन के दिलों पर	मुहर कर दी अल्लाह ने	वह जो	यही लोग	अभी	उस ने कहा	क्या

وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ﴿۱۶﴾ وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰهُمْ

और उन्हें अ़ता की	हिदायत	और ज़ियादा दी उन्हें	और वह लोग जिन्हों ने हिदायत पाई	16	अपनी ख़्वाहिशात	और उन्हों ने पैरवी की

تَقْوٰىهُمْ ﴿۱۷﴾ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً ۚ

अचानक	आ जाए उन पर	कि	क़ियामत	मगर	मुन्तज़िर	पस नहीं वह	17	उन की परहेज़गारी

فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ﴿۱۸﴾

18	उन का नसीहत (कुबूल करना)	वह आगई उन के पास	जब	उन के लिए-को	तो कहां	उस की अ़लामात	सो आ चुकी हैं

बेशक अल्लाह दाख़िल करता है उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए बाग़ात में जिन के नीचे नहरें बहती हैं, और जिन लोगों ने कुफ़्र किया वह फ़ाइदा उठाते हैं और (उसी तरह) खाते हैं जैसे चौपाए खाते हैं, और आग (जहन्नम) उन का ठिकाना है। (12)
और बहुत सी बस्तियां (थीं), वह बहुत ही सख़्त थीं कुव्वत में आप (स) की बस्ती से जिस के रहने वालों ने आप (स) को निकाल दिया, हम ने उन्हें हलाक कर दिया तो कोई उन की मदद करने वाला न हुआ। (13)
पस क्या जो अपने परवरदिगार के रोशन रास्ते पर हो उस की तरह है जिसे उस के बुरे अ़मल आरास्ता कर दिखाए गए, और उन्हों ने अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी की। (14)
जन्नत की कैफ़ियत जो परहेज़गारों को वादा की गई, (यह है) कि उस में नहरें हैं बदबू न करने वाले पानी की, नहरें हैं दूध की जिस का ज़ाइक़ा बदलने वाला नहीं, और नहरें हैं शराब की जो पीने वालों के लिए सरासर लज़्ज़त है, और नहरें हैं मुसफ़्फ़ा (साफ़ किए हुए) शहद की, और उस में उन के लिए हर क़िस्म के फल हैं, और उन के रब (की तरफ़ से) बख़्शिश, (क्या वह) उस की तरह है? जो हमेशा आग में रहने वाला है, और उन्हें गर्म (खौलता हुआ) पानी पिलाया जाएगा जो उन की अंतड़ियां टुकड़े टुकड़े कर देगा। (15)
और उन में से बाज़ ऐसे हैं जो आप (स) की तरफ़ (कान लगा कर) सुनते हैं, फिर जब वह आप (स) के पास से निकलते हैं तो वह अहले इल्म से कहते हैं कि उस (हज़रत स) ने अभी क्या कहा है? यही वह लोग हैं जिन के दिलों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है, और उन्हों ने अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी की। (16)
और जिन लोगों ने हिदायत पाई (अल्लाह ने) उन्हें और ज़ियादा हिदायत दी और उन्हें अ़ता की उन की परहेज़गारी। (17)
पस वह मुन्तज़िर नहीं मगर क़ियामत (की आमद) के, कि उन पर अचानक आ जाए, सो उस की अ़लामात तो आ चुकी हैं, जब वह उन के पास आ गई तो उन्हें नसीहत कुबूल करना कहां (नसीब) होगा। (18)

فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ

और मोमिन मर्दों के लिए	अपने क़ुसूर के लिए	और बख़्शिश मांगें आप (स)	अल्लाह के सिवा	नहीं कोई माबूद	यह कि	सो जान लो

وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ﴿١٩﴾ وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ع ٢ ٨ ٦

वह जो लोग ईमान लाए	और वह कहते हैं	19	और तुम्हारे रहने सहने का मुक़ाम	तुम्हारा चलना फिरना	जानता है	और अल्लाह	और मोमिन औरतों

لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا

उस में	और ज़िक्र किया जाता है	फ़ैसला कुन सूरत	उतारी जाती है	सो जब	एक सूरत	क्यों न उतारी गई

الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ

देखना	आप (स) की तरफ़	वह देखते हैं	बीमारी	उन के दिलों में	वह लोग	तुम देखोगे	जंग

الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ؕ فَاَوْلٰى لَهُمْ ﴿٢٠﴾ طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۫

मअ़रूफ़	और बात	इताअ़त	20	सो ख़राबी उन के लिए	मौत की	उस पर	बेहोशी तारी हो गई

فَاِذَا عَزَمَ الْاَمْرُ ۫ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ﴿٢١﴾ فَهَلْ عَسَيْتُمْ

सो तुम इस के नज़्दीक	21	अलबत्ता होता बेहतर उन के लिए	पस अगर वह सच्चे होते अल्लाह के साथ	पुख़्ता हो जाए काम	फिर जब

اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ﴿٢٢﴾

22	अपने रिश्ते	और तुम काटो (तोड़ डालो)	ज़मीन में	कि तुम फ़साद मचाओ	तुम वाली (हाकिम) हो जाओ	अगर

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ﴿٢٣﴾

23	उन की आँखें	और अन्धा कर दिया	फिर उन को बहरा कर दिया	अल्लाह ने लानत की	वह लोग जिन पर	यही हैं

اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ اَقْفَالُهَا ﴿٢٤﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا

पलट गए	जो लोग	बेशक	24	उन के ताले	दिलों पर	क्या	क़ुरआन	तो क्या वह ग़ौर नहीं करते?

عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ سَوَّلَ لَهُمْ ؕ

उन के लिए	आरास्ता कर दिखाया	शैतान	हिदायत	उन के लिए	जब वाज़ेह हो गई	इस के बाद	अपनी पुश्त पर

وَاَمْلٰى لَهُمْ ﴿٢٥﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ

अ़नक़रीब हम तुम्हारा कहा मान लेंगे	जो नाज़िल किया अल्लाह ने	उन्हों ने नापसंद किया	उन लोगों से जिन्हों	उन्हों ने कहा	इस लिए कि वह	यह	25	उन को	और ढील दी गई

فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ ﴿٢٦﴾ فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ

जब उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे	पस क्या	26	उन की ख़ुफ़िया बातें	जानता है	और अल्लाह	काम	बाज़	में

الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ﴿٢٧﴾ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا

पैरवी की	यह इस लिए कि उन्हों ने	27	और उन की पीठों	उन के चेहरों	वह मारते होंगे	फ़रिश्ते

مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ ﴿٢٨﴾ اَمْ حَسِبَ ع ٣ ٩ ٧

क्या गुमान करते हैं?	28	उन के आमाल	तो उस ने अकारत कर दिए	उस की रज़ा	और उन्हों ने पसंद न किया	अल्लाह को नाराज़ किया	जो-जिस

الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ ﴿٢٩﴾

29	उन के दिल की अ़दावतें	हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा अल्लाह	कि	मरज़-रोग	उन के दिलों में	(वह लोग) जिन

सो जान लो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और आप (स) बख़्शिश मांगें अपने क़ुसूरों के लिए, मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों के लिए, और अल्लाह जानता है तुम्हारा चलना फिरना, और तुम्हारे रहने सहने के मुक़ाम को। (19)
और जो लोग ईमान लाए वह कहते हैं कि (जिहाद की) एक सूरत क्यों न उतारी गई? सो जब मुहक्कम (साफ़ साफ़ मतलब वाली) सूरत उतारी जाती है और ज़िक्र किया जाता है उस में जंग का, तो तुम देखोगे कि वह लोग जिन के दिलों में (निफ़ाक़ की) बीमारी है, वह आप (स) की तरफ़ देखते हैं (उस शख़्स के) देखने की तरह बेहोशी तारी हो गई हो जिस पर मौत की, सो ख़राबी है उन के लिए। (20)
(सहीह तो यह था कि वह) इताअ़त करते और माक़ूल बात कहते, पस जब काम पुख़्ता होजाए, अगर वह अल्लाह के साथ सच्चे होते तो अलबत्ता उन के लिए बेहतर होता। (21)
सो तुम इस के नज़्दीक हो कि अगर तुम हाकिम हो जाओ तो तुम फ़साद मचाओ ज़मीन में, और अपने रिश्ते तोड़ डालो। (22)
यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, फिर उन्हें बहरा कर दिया और अन्धा कर दिया उन की आँखों को। (23)
तो क्या वह क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते? क्या उन के दिलों पर ताले (पड़े हैं)? (24)
बेशक जो लोग अपनी पुश्त फेर कर पलट गए उस के बाद जब कि उन के लिए हिदायत वाज़ेह हो गई, शैतान ने उन के लिए आरास्ता कर दिखाया और उन को ढील दी। (25)
यह इस लिए कि उन्हों ने उन लोगों से कहा जिन्हों ने इस (किताब) को नापसंद किया जो अल्लाह ने नाज़िल की कि अ़नक़रीब हम तुम्हारा कहना मान लेंगे बाज़ कामों (बातों) में, और अल्लाह उन की ख़ुफ़िया बातों को जानता है। (26)
पस कैसा (हाल होगा)? जब फ़रिश्ते उन की रूह क़ब्ज़ करेंगे (और) मारते होंगे उन के चेहरों और उन की पीठों पर। (27)
यह इस लिए होगा कि उन्हों ने उस की पैरवी की जिस ने अल्लाह को नाराज़ किया और उन्हों ने उस की रज़ा को नापसंद किया तो उस (अल्लाह) ने उन के आमाल अकारत कर दिए। (28)
क्या जिन लोगों के दिलों में रोग है वह गुमान करते हैं कि अल्लाह हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा उन की दिली अदावतों को। (29)

وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ؕ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِىْ

में-से	और तुम ज़रूर पहचान लोगे उन्हें	उन के चेहरों से	सो अलबत्ता तुम उन्हें पहचान लो	तो तुम्हें दिखा दें वह लोग	और अगर हम चाहें

لَحْنِ الْقَوْلِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٠﴾ وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ

मुजाहिदों	हम मालूम कर लें	यहां तक कि	और हम ज़रूर आज़माएंगे तुम्हें	30	तुम्हारे आमाल	जानता है	और अल्लाह	तरज़े कलाम

مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَاَخْبَارَكُمْ ﴿٣١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	31	तुम्हारी ख़बरें (हालात)	और हम जाँच लें	और सब्र करने वाले	तुम में से

وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ

उस के बाद	रसूल	और उन्हों ने मुख़ालिफ़त की	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्हों ने रोका

مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ ﴿٣٢﴾

32	उन के आमाल	और वह जल्द अकारत कर देगा	कुछ भी	और वह हरगिज़ न बिगाड़ सकेंगे अल्लाह का	हिदायत	उन पर	जब वाज़ेह हो गई

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْۤا

और बातिल न करो	और इताअ़त करो रसूल की	इताअ़त करो अल्लाह की	जो लोग ईमान लाए (मोमिनो)	ऐ

اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ

फिर	अल्लाह का रास्ता	से	और उन्हों ने रोका	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	33	अपने आमाल

مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾ فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْۤا اِلَى

तरफ़	और न बुलाओ	पस तुम सुस्ती न करो	34	उन को	तो हरगिज़ नहीं बख़्शेगा अल्लाह	काफ़िर (ही)	और वह	मर गए

السَّلْمِ ۖ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖ وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

35	तुम्हारे आमाल	और वह हरगिज़ कमी न करेगा	तुम्हारे साथ	और अल्लाह	ग़ालिब	और तुम ही	सुलह

اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ

वह तुम्हें देगा	और तक़्वा इख़्तियार करो	ईमान ले आओ	और अगर	और कूद	खेल	दुनिया की ज़िन्दगी	इस के सिवा नहीं

اُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْـَٔلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾ اِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا

तुम बुख़्ल करो	फिर तुम से चिमट जाए	वह तुम से (माल) तलब करे	अगर	36	तुम्हारे माल	और न तलब करेगा तुम से	तुम्हारे अजर (जमा)

وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾ هٰۤاَنْتُمْ هٰۤؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِىْ

में	कि तुम ख़र्च करो	तुम्हें पुकारा जाता है	हाँ! वह लोग	यह तुम हो	37	तुम्हारे खोट	और ज़ाहिर हो जाएं

سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ؕ

अपने आप से	तो इस के सिवा नहीं कि वह बुख़्ल करता है	बुख़्ल करता है	और जो	कोई ऐसा है कि बुख़्ल करता है	फिर तुम में से	अल्लाह का रास्ता

وَاللّٰهُ الْغَنِىُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ

वह बदल देगा	तुम रूगर्दानी करोगे	और अगर	मोहताज (जमा)	और तुम	बेनियाज़	और अल्लाह

ع ٤ ١٠ ٨ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْۤا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

38	तुम्हारे जैसे	वह न होंगे	फिर	दूसरी क़ौम तुम्हारे सिवा

और अगर हम चाहें तो तुम्हें उन लोगों को दिखा दें, सो अलबत्ता तुम उन्हें उन के चेहरों से पहचान लोगे, और तुम ज़रूर उन्हें उन के तरज़े कलाम से पहचान लोगे, और अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता है। (30) और हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे यहां तक हम मालूम कर लें कि (कौन हैं) तुम में से मुजाहिद और सब्र करने वाले और हम जाँच लें तुम्हारे हालात। (31) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, और उन्हों ने रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की उस के बाद जब कि उन पर हिदायत वाज़ेह हो गई, वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकेंगे और वह (अल्लाह) जल्द उन के आमाल अकारत कर देगा। (32) ऐ मोमिनो! अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल (स) की इताअ़त करो, और अपने आमाल बातिल न करलो। (33) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, फिर वह काफ़िर (कुफ़्र की हालत में) मर गए तो अल्लाह हरगिज़ न बख़्शेगा उन को। (34) पस तुम सुस्ती (कम हिम्मती) न करो और (ख़ुद) सुलह की तरफ़ न बुलाओ, और तुम ही ग़ालिब रहोगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह हरगिज़ कमी न करेगा तुम्हारे आमाल में। (35) इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़) खेल कूद है, और तुम अगर ईमान ले आओ और तक़्वा इख़्तियार करो तो वह तुम्हें तुम्हारे अजर देगा, और तुम से तुम्हारे माल तलब न करेगा। (36) अगर वह तुम से माल तलब करे और तुम से चिमट जाए (तलब ही करता रहे) तो तुम बुख़्ल करो, और ज़ाहिर हो जाएं तुम्हारे खोट। (37) हाँ! तुम ही वह लोग हो जिन्हें पुकारा जाता है कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो, फिर तुम में से कोई ऐसा है जो बुख़्ल करता है, और जो बुख़्ल करता है तो इस के सिवा नहीं कि वह अपने आप से बुख़्ल करता है, और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम (उस के) मोहताज हो और अगर तुम रूगर्दानी करोगे तो वह तुम्हारे सिवा (तुम्हारी जगह) कोई दूसरी क़ौम बदल देगा और वह तुम्हारे जैसे न होंगे। (38)

آيَاتُهَا ٢٩ ❀ (٤٨) سُوْرَةُ الْفَتْحِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकुआत 4 | (48) सूरतुल फ़त्ह — जीत | आयात 29

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ۙ﴿١﴾ لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ

आप (स) के क़ुसूर	से	जो पहले गुज़रे	अल्लाह	आप के लिए	ताकि बख़्शदे	1	खुली	फ़तह	आप (स) को	बेशक हम ने फ़तह दी

وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ﴿٢﴾

2	सीधा	रास्ता	और आप (स) की रहनुमाई करे	आप (स) पर	अपनी नेमत	और वह मुकम्मल करदे	और जो पीछे हुए

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿٣﴾ هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ

में	सकीना (तसल्ली)	उतारी	वह जिस	वही	3	ज़बरदस्त	नुस्रत	और आप (स) को नुस्रत दे अल्लाह

قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ؕ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ

और अल्लाह के लिए लशकर (जमा)	उन का ईमान	साथ	ईमान	ताकि वह बढ़ाए	मोमिनों	दिल (जमा)

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ﴿٤﴾ لِّيُدْخِلَ

ताकि वह दाख़िल करे	4	हिक्मत वाला	जानने वाला	अल्लाह	और है	और ज़मीन	आस्मानों

الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

वह हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	जारी हैं	जन्नत	और मोमिन औरतें	मोमिन मर्दों

فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۙ﴿٥﴾

5	बड़ी कामयाबी	अल्लाह के नज़्दीक	यह	और है	उन की बुराइयां	उन से	और दूर कर देगा	उन में

وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ

और मुश्रिक औरतों	और मुश्रिक मर्दों	और मुनाफ़िक़ औरतों	मुनाफ़िक़ मर्दों	और वह अज़ाब देगा

الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ؕ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ

बुरी	दायरा (गर्दिश)	उन पर	गुमान बुरे	अल्लाह के साथ	गुमान करने वाले

وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ۙ﴿٦﴾

6	ठिकाना	और बुरा है	जहन्नम	और तैयार किया उन के लिए	और उन पर लानत की	उन पर	और अल्लाह का ग़ज़ब

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۙ﴿٧﴾

7	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	और ज़मीन	और अल्लाह के लिए लशकर आस्मानों के

اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ﴿٨﴾ لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	ताकि तुम ईमान लाओ	8	और डराने वाला	और ख़ुशख़बरी देने वाला	गवाही देने वाला	बेशक हम ने आप (स) को भेजा

وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ۙ﴿٩﴾

9	और शाम	सुबह	और उस (अल्लाह) की तस्बीह करो	और उस की ताज़ीम करो	और उस की मदद करो	और उस का रसूल (स)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बेशक हम ने आप (स) को खुली फ़तह दी, (1)

ताकि अल्लाह आप (स) की अगली पिछली कोताहियों को बख़्शदे, और आप (स) पर अपनी नेमत मुकम्मल कर दे, और आप (स) को सीधे रास्ते की रहनुमाई करे। (2)

और अल्लाह आप (स) को नुस्रत दे, एक नुस्रत (मदद) ज़बरदस्त। (3)

वही है जिस ने मोमिनों के दिल में तसल्ली उतारी, ताकि वह (उन का) ईमान बढ़ाए उन के (पहले) ईमान के साथ, और आस्मानों और ज़मीन के लशकर अल्लाह ही के हैं, और है अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला। (4)

ताकि वह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को उन बाग़ात में दाख़िल कर दे जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे और उन से उन की बुराइयां दूर कर देगा, और यह अल्लाह के नज़्दीक बड़ी कामयाबी है। (5)

और वह अ़ज़ाब देगा मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों को, और अल्लाह के साथ बुरे गुमान करने वाले मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को, उन पर बुरी गर्दिश है। और अल्लाह ने उन पर ग़ज़ब किया, और उन पर लानत की (रहमत से महरूम कर दिया) और उन के लिए जहन्नम तैयार किया, और वह बुरा ठिकाना है। (6)

और अल्लाह ही के लिए हैं आस्मानों और ज़मीन के लशकर, और अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (7)

बेशक हम ने आप (स) को भेजा है गवाही देने वाला, और ख़ुशख़बरी देने वाला, और डराने वाला। (8)

ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ, और उस की मदद करो और उस की ताज़ीम करो, और अल्लाह की तस्बीह (पाकीज़गी बयान) करो सुब्ह ओ शाम। (9)

اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللّٰهَ ؕ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ

उन के हाथों के ऊपर	अल्लाह का हाथ	वह अल्लाह से बैअ़त कर रहे हैं	इस के सिवा नहीं कि	आप से बैअ़त कर रहे हैं	बेशक जो लोग

فَمَنْ نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ

अल्लाह पर-से	जो उस ने अ़हद किया	पूरा किया	और जिस	अपनी ज़ात पर	उस ने तौड़ दिया	तो इस के सिवा नहीं	फिर जिस ने तौड़ दिया अ़हद

ع ١٠ ٩ فَسَيُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١٠﴾ سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ

से	पीछे रह जाने वाले	आप (स) से	अब कहेंगे	10	अजरे अ़ज़ीम	तो वह अ़नक़रीब उसे देगा

الْاَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ

वह कहते हैं	और बख़्शिश मांगिए हमारे लिए	और हमारे घर वाले	हमारे मालों	हमें मशग़ूल रखा	देहाती

بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ

अल्लाह के सामने	तुम्हारे लिए	इख़्तियार रखता है	तो कौन	फ़रमा दें	उन के दिलों में	जो नहीं	अपनी ज़बानों से

شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللّٰهُ

है अल्लाह	बल्कि	कोई फ़ाइदा	चाहे तुम्हें	या	कोई नुक़्सान	तुम्हें	अगर वह चाहे	किसी चीज़ का

بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١١﴾ بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ

और मोमिन (जमा)	रसूल (स)	हरगिज़ वापस न लौटेंगे	कि	तुम ने गुमान किया	बल्कि	11	ख़बरदार	उस से जो तुम करते हो

اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۖۚ

बुरा गुमान	और तुम ने गुमान किया	तुम्हारे दिलों में-को	यह	और भली लगी	कभी	अपने अहले ख़ाना	तरफ़

وَكُنْتُمْ قَوْمًا ۢ بُوْرًا ﴿١٢﴾ وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ ۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस का रसूल	अल्लाह पर	ईमान नहीं लाता	और जो	12	हलाक होने वाली क़ौम	और तुम थे-हो गए

فَاِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ﴿١٣﴾ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ

और ज़मीन	और अल्लाह के लिए आस्मानों की बादशाहत	13	दहकती आग	काफ़िरों के लिए	तो बेशक हम ने तैयार की

يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٤﴾

14	मेहरबान	बख़्शने वाला	अल्लाह	और है	जिस को वह चाहे	और अ़ज़ाब दे	जिस को वह चाहे	वह बख़्शदे

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى مَغَانِمَ لِتَاْخُذُوْهَا

कि तुम उन्हें ले लो	ग़नीमतों की तरफ़	तुम चलोगे	जब	पीछे बैठ रहने वाले	अ़नक़रीब कहेंगे

ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ

फ़रमा दें	अल्लाह का फ़रमान	कि वह बदल डालें	वह चाहते हैं	हम तुम्हारे पीछे चलें	हमें छोड़ दो (इजाज़त दो)

لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُوْلُوْنَ

फिर अब वह कहेंगे	इस से क़ब्ल	कहा अल्लाह ने	इसी तरह	तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ

بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥﴾

15	मगर थोड़ा	वह समझते नहीं हैं	बल्कि-जबकि	तुम हसद करते हो हम से	बल्कि

बेशक (हुदैबिया में) जो लोग आप (स) से बैअ़त कर रहे हैं इस के सिवा नहीं कि वह अल्लाह से बैअ़त कर रहे हैं, उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है, फिर जिस ने अ़हद तोड़ दिया तो इस के सिवा नहीं कि उस ने अपनी ज़ात (के बुरे) को तोड़ा, और जिस ने वह अ़हद पूरा किया जो उस ने अल्लाह से किया था तो वह (अल्लाह) उसे अ़नक़रीब देगा अजरे अ़ज़ीम। (10)

अब पीछे रह जाने वाले देहाती आप (स) से कहेंगे कि हमें हमारे मालों और हमारे घर वालों ने मशग़ूल रखा (रुख़सत न दी) सो आप (स) हमारे लिए बख़्शिश मांगिए, वह अपनी ज़बानों से वह कहते हैं जो उन के दिलों में नहीं, आप (स) फ़रमा दें तुम्हारे लिए अल्लाह के सामने कौन इख़्तियार रखता है किसी चीज़ का? अगर वह तुम्हें नुक़्सान (पहुँचाना) चाहे या तुम्हें नफ़ा (पहुँचाना) चाहे, बल्कि तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उस से ख़बरदार है। (11)

बल्कि तुम ने गुमान (बातिल) किया कि रसूल (स) और मोमिन हरगिज़ अपने अहले ख़ाना की तरफ़ कभी वापस न लौटेंगे, और यह बात भली लगी तुम्हारे दिलों को, और तुम ने गुमान किया एक बुरा गुमान, और तुम हलाक होने वाली क़ौम हो गए। (12)

और जो ईमान नहीं लाता अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर, तो बेशक हम ने काफ़िरों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है। (13)

और अल्लाह (ही) के लिए है आस्मानों की और ज़मीन की बादशाहत, वह जिस को चाहे बख़्श दे और जिस को चाहे अ़ज़ाब दे, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (14)

अ़नक़रीब कहेंगे पीछे बैठ रहने वाले: जब तुम चलोगे (ख़ैबर की) ग़नीमतों की तरफ़ कि तुम उन्हें लेलो, हमें इजाज़त दो कि हम तुम्हारे पीछे चलें, वह चाहते हैं कि अल्लाह का फ़रमान बदल डालें, आप (स) फ़रमा दें: तुम हरगिज़ हमारे पीछे न आओ, इसी तरह कहा अल्लाह ने इस से क़ब्ल, फिर अब वह कहेंगे: बल्कि तुम हम से हसद करते हो जबकि (हक़ीक़त यह है) कि वह बहुत थोड़ा समझते हैं। (15)

आप (स) देहातियों में से पीछे रह जाने वालों से फ़रमा दें: अनक़रीब तुम एक सख़्त जंगजू क़ौम की तरफ़ बुलाए जाओगे कि तुम उन से लड़ते रहो या वह इस्लाम क़ुबूल कर लें, सो अगर तुम इताअ़त करोगे तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अजर देगा, और अगर तुम फिर गए जैसे तुम इस से क़ब्ल फिर गए थे तो वह तुम्हें अ़ज़ाब देगा अ़ज़ाब दर्दनाक। (16) नहीं है अँधे पर कोई गुनाह, और नहीं है लंगड़े पर कोई गुनाह, और न बीमार पर कोई गुनाह, और जो अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करेगा वह उसे उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, और जो फिर जाएगा वह उसे दर्दनाक अ़ज़ाब देगा। (17) तहक़ीक़ अल्लाह मोमिनों से राज़ी हुआ जब वह आप (स) से बैअ़त कर रहे थे दरख़्त के नीचे, सो उस ने मालूम कर लिया जो उन के दिलों में (ख़ुलूस था) तो उस ने उन पर तसल्ली उतारी, और बदले में उन्हें क़रीब ही एक फ़तह अ़ता की। (18) और बहुत सी ग़नीमतें उन्हों ने हासिल कीं, और है अल्लाह ग़ालिब, हिक्मत वाला। (19) और अल्लाह ने तुम से वादा किया नेमतों का, कस्रत से जिन्हें तुम लोगे, पस उस ने यह तुम्हें जल्द दे दी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए, और ताकि (यह) हो मोमिनों के लिए एक निशानी, और तुम्हें सीधे रास्ते की हिदायत दे। (20) और एक और फ़तह भी, तुम ने (अभी) उस पर क़ाबू नहीं पाया। घेर रखा है अल्लाह ने उस को, और अल्लाह है हर शै पर क़ुदरत रखने वाला। (21) और अगर तुम से काफ़िर लड़ते तो वह पीठ फेरते, फिर वह न कोई दोस्त पाते और न कोई मददगार। (22) अल्लाह का दस्तूर है जो इस से क़ब्ल गुज़र चुका है (चला आ रहा है) और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे। (23)

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ

सख़्त लड़ने वाली (जंगजू)	एक क़ौम की तरफ़	अनक़रीब तुम बुलाए जाओगे	देहातियों	से	पीछे बैठ रहने वालों को	फ़रमा दें

تُقَاتِلُوْنَهُمْ اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ اَجْرًا

अजर	तुम्हें देगा अल्लाह	तुम इताअ़त करोगे	अगर	या वह इस्लाम क़ुबूल कर लें	तुम उन से लड़ते रहो

حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦﴾

16	दर्दनाक	अ़ज़ाब	वह तुम्हें अ़ज़ाब देगा	इस से क़ब्ल	जैसे तुम फिर गए थे	तुम फिर गए	और अगर	अच्छा

لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ

मरीज़ पर	और न	कोई गुनाह	लंगड़े पर	और नहीं	कोई तंगी (गुनाह)	अँधे पर	नहीं

حَرَجٌ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	वह दाख़िल करेगा उसे	और उस के रसूल की	इताअ़त करेगा अल्लाह की	और जो	कोई गुनाह

الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٧﴾ ع لَقَدْ رَضِىَ اللّٰهُ ع ٢ النصف ١٠

तहक़ीक़ राज़ी हुआ अल्लाह	17	अ़ज़ाब दर्दनाक	वह अ़ज़ाब देगा उसे	फिर जाएगा	और जो	नहरें

عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِىْ قُلُوْبِهِمْ

जो उन के दिलों में	सो उस ने मालूम कर लिया	दरख़्त	नीचे	वह आप (स) से बैअ़त कर रहे थे	जब	मोमिनों से

فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿١٨﴾ لا وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً

बहुत सी	और ग़नीमतें	18	एक फ़तह क़रीब	और बदले में दी उन्हें	उन पर	सकीना (तसल्ली)	तो उस ने उतारी

يَّاْخُذُوْنَهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٩﴾ وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ

ग़नीमतें	वादा किया अल्लाह ने	19	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और है अल्लाह	उन्हों ने वह हासिल कीं

كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِىَ النَّاسِ

लोग	हाथ	और रोक दिए	यह	तुम्हें	तो जल्द दे दी उस ने	तुम लोगे उन्हें	कस्रत से

عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢٠﴾ لا

20	सीधा	रास्ता	और वह हिदायत दे तुम्हें	मोमिनों के लिए	एक निशानी	और ताकि हो	तुम से

وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ اللّٰهُ بِهَا ۗ وَكَانَ اللّٰهُ

और है अल्लाह	उस को	घेर रखा है अल्लाह	उस पर	तुम ने क़ाबू नहीं पाया	और एक और (फ़तह)

عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢١﴾ وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا

अलबत्ता वह फेरते	वह जिन्हों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	तुम से लड़ते	और अगर	21	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर

الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٢٢﴾ سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِىْ

वह जो	अल्लाह का दस्तूर	22	और न कोई मददगार	कोई दोस्त	वह न पाते	फिर	पीठ (जमा)

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٢٣﴾

23	कोई तबदीली	अल्लाह के दस्तूर में	और तुम हरगिज़ न पाओगे	इस से क़ब्ल	गुज़र चुका

وَهُوَ الَّذِىْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ

दरमियान (वादी-ए) मक्का में	उन से	और तुम्हारे हाथ	तुम से	उन के हाथ	जिस ने रोका	और वह

مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ﴿٢٤﴾

24	देखने वाला	तुम जो कुछ करते हो उसे	और है अल्लाह	उन पर	कि फ़तह मन्द किया तुम्हें	उस के बाद

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْىَ

और क़ुर्बानी के जानवर	मस्जिदे हराम	से	और तुम्हें रोका	जिन्हों ने कुफ़्र किया	वह-यह

مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْ لَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ

और मोमिन औरतें	मोमिन (जमा)	मर्द	और अगर न	अपना मुक़ाम	कि वह पहुँचे	रुके हुए

لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ

नादानिस्ता	सदमा-नुक़सान	उन से	पस तुम्हें पहुँच जाता	तुम उनको पामाल करदेते	कि	तुम नहीं जानते उन्हें

لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِىْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ

उन लोगों को	अलबत्ता हम अज़ाब देते	अगर वह जुदा हो जाते	जिसे वह चाहे	अपनी रहमत में	ताकि दाख़िल करे अल्लाह

كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	की	जब	25	दर्दनाक	अज़ाब	उन में से	जो काफ़िर हुए

فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ

अपनी तसल्ली	तो अल्लाह ने उतारी	ज़मानाए जाहिलियत	ज़िद	ज़िद	अपने दिलों में

عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى

तक़्वे की बात	और उन पर लाज़िम फ़रमा दिया	और मोमिनों पर	अपने रसूल (स) पर

ع ٣ ٩ ١١ وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمًا ﴿٢٦﴾

26	जानने वाला	हर शै का	और है अल्लाह	और उस के अहल	ज़ियादा हक़दार उस के	और वह थे

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ

मस्जिदे हराम	अलबत्ता तुम ज़रूर दाख़िल होगे	हक़ीक़त के मुताबिक़	ख़्वाब	अपने रसूल (स) को	सच्चा दिखाया अल्लाह ने	यक़ीनन

اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ

और (बाल) कटवाओगे	अपने सर	मुंडवाओगे	अम्न ओ अमान के साथ	अल्लाह ने चाहा	अगर

لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ

इस	उस से वरे (पहले)	पस कर दी उस ने	जो तुम नहीं जानते	पस उस ने मालूम कर लिया	तुम्हें कोई ख़ौफ़ न होगा

فَتْحًا قَرِيْبًا ﴿٢٧﴾ هُوَ الَّذِىْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ

हक़	और दीन	हिदायत के साथ	अपना रसूल (स)	जिस ने भेजा	वह	27	एक क़रीबी फ़तह

لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ﴿٢٨﴾

28	गवाह	अल्लाह	और काफ़ी है	तमाम	दीन	पर	ताकि उसे ग़ालिब कर दे

और वही है जिस ने वादीए मक्का में उन के हाथ तुम से रोके और तुम्हारे हाथ उन से, उस के बाद कि तुम्हें उन पर फ़तह मन्द किया, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे है देखने वाला। (24) यह वह लोग हैं जिन्हों ने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका, और रुके हुए क़ुरबानी के जानवरों को उन के मुक़ाम पर पहुँचने से रोका, और (हम तुम्हें क़िताल की इजाज़त देते) अगर (शह्रे मक्का में) ऐसे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें न होते जिन्हें तुम नहीं जानते कि तुम उन्हें पामाल कर देते, पस उन से तुम्हें पहुँच जाता सदमा (नुक़्सान) नादानिस्ता। (ताख़ीर इस लिए हुई) ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करे, अगर वह जुदा हो जाते तो हम अज़ाब देते उन में से काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब। (25) जब काफ़िरों ने अपने दिलों में ज़िद की, ज़िद (हट) ज़मानाए जाहिलियत की तो अल्लाह ने अपने रसूल (स) पर और मोमिनों पर अपनी तसल्ली उतारी और उन्हें लाज़िम फ़रमाया (क़ाइम रखा) तक़्वे की बात पर, और वही उस के ज़ियादा हक़दार और उस के अहल थे, और अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (26) यक़ीनन अल्लाह ने अपने रसूल (स) को सच्चा ख़्वाब हक़ीक़त के मुताबिक़ दिखाया कि अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर मस्जिदे हराम में दाख़िल होगे अम्न ओ अमान के साथ, अपने सर मुंडवाओगे और बाल कटवाओगे, तुम्हें कोई ख़ौफ़ न होगा, पस उस ने मालूम कर लिया जो तुम नहीं जानते थे, पस उस ने कर दी उस (फ़त्हे मक्का) से पहले ही एक क़रीबी फ़तह। (27) वही है जिस ने अपने रसूल (स) को भेजा हिदायत और दीने हक़ के साथ ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे, और अल्लाह की गवाही काफ़ी है। (28)

मुहम्मद (स) अल्लाह के रसूल हैं, और जो लोग उन के साथ हैं वह काफ़िरों पर बड़े सख़्त हैं, आपस में रहम दिल हैं, तू उन्हें देखेगा रुकूअ़ करते, सिज्दा रेज़ होते, वह तलाश करते हैं अल्लाह का फ़ज़्ल और (उस की) रज़ा मन्दी, उन की अ़लामत उन के चेहरों पर सिज्दों के असर (निशानात) हैं, यह उन की सिफ़त तौरेत में (मज़्कूर) है और उन की यह सिफ़त इन्जील में है, जैसे एक खेती, उस ने अपनी सुई निकाली, फिर उसे क़व्वी किया, फिर वह मोटी हुई, फिर वह अपनी नाल पर खड़ी हो गई, वह किसानों को भली लगती है ताकि उन काफ़िरों को गुस्से में लाए (उन के दिल जलाए), अल्लाह ने वादा किया है उन से जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, मग़्फ़िरत और अजरे अ़ज़ीम का। **(29)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ मोमिनो! अल्लाह और उस के रसूल (स) के आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। **(1)** ऐ मोमिनो! नबी (स) की आवाज़ पर तुम अपनी आवाज़ें ऊँची न करो, और उन के सामने ज़ोर से न बोलो, जैसे तुम एक दूसरे से बुलन्द आवाज़ में गुफ़्तगू करते हो, कहीं तुम्हारे अ़मल अकारत (न) हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो। **(2)** बेशक जो लोग अल्लाह के रसूल (स) के नज़्दीक (सामने) अपनी आवाज़ें पस्त रखते हैं, यह वह लोग हैं जिन के दिलों को अल्लाह ने परहेज़गारी के लिए आज़माया है, उन के लिए मग़्फ़िरत और अजरे अ़ज़ीम है। **(3)** बेशक जो लोग आप (स) को पुकारते हैं हुजरों के बाहर से, उन में से अक्सर अ़क़्ल नहीं रखते। **(4)**

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗۤ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ

आपस में	रहम दिल	काफ़िरों पर	बड़े सख़्त	उन के साथ	और जो लोग	अल्लाह के रसूल	मुहम्मद (स)

تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ۫ سِيْمَاهُمْ

उन की अ़लामत	और रज़ा मन्दी	अल्लाह से-का	फ़ज़्ल	वह तलाश करते हैं	सिज्दा रेज़ होते	रुकूअ़ करते	तू उन्हें देखेगा

فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ۛۖ وَمَثَلُهُمْ

معانقة ١٥ عند المتأخرين ١٢

और उन की मिसाल (सिफ़त)	तौरेत में	उन की मिसाल (सिफ़त)	यह	सिज्दों का असर	से	उन के चेहरों में-पर

فِي الْاِنْجِيْلِ ۛۚ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى

फिर वह खड़ी हो गई	फिर वह मोटी हुई	फिर उसे क़व्वी किया	अपनी सुई	उस ने निकाली	जैसे एक खेती	इन्जील में

عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ

उन से जो	वादा किया अल्लाह ने	काफ़िरों	उन से	ताकि गुस्से में लाए	किसान (जमा)	वह भली लगती है	अपनी जड़ (नाल) पर

اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾ ع ٣ ١٢

29	अ़ज़ीम	और अजर	मग़्फ़िरत	उन में से	और उन्हों ने आमाल किए अच्छे	ईमान लाए

آيَاتُهَا ١٨ ❀ سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ (٤٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआ़त 2 — (49) सूरतुल हुजुरात — आयात 18

कमरे

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस का रसूल (स)	अल्लाह के सामने-आगे	न आगे बढ़ो तुम	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا

न ऊँची करो	मोमिनो	ऐ	1	जानने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	और डरो अल्लाह से

اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ

जैसे बुलन्द आवाज़	गुफ़्तगू में	उस के सामने	और न ज़ोर से बोलो	नबी (स) की आवाज़	ऊपर-पर	अपनी आवाज़ें

بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿٢﴾ اِنَّ

बेशक	2	न जानते (ख़बर भी न) हो	और तुम	तुम्हारे अ़मल	अकारत हो जाएं	कहीं	बाज़ (दूसरे) से	तुम्हारे बाज़ (एक)

الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ

जो-जिन	यह वह लोग	अल्लाह का रसूल (स)	नज़्दीक	अपनी आवाज़ें	पस्त रखते हैं	जो लोग

امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٣﴾ اِنَّ

बेशक	3	अ़ज़ीम	और अजर	मग़्फ़िरत	उन के लिए	परहेज़गारी के लिए	उन के दिल	आज़माया है अल्लाह ने

الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤﴾

4	अ़क़्ल नहीं रखते	उन में से अक्सर	हुजरों	बाहर से	आप (स) को पुकारते हैं	जो लोग

وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	और अल्लाह	उन के लिए	बेहतर	अलबत्ता होता	उन के पास	आप (स) निकल आते	यहां तक कि	सब्र करते	अलबत्ता वह	और अगर

رَّحِيْمٌ ۝٥ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَاٍ فَتَبَيَّنُوْٓا اَنْ

कहीं	तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो	ख़बर ले कर	कोई फ़ासिक़ बद किर्दार	आए तुम्हारे पास	अगर	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	5	मेहरबान

تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ۝٦ وَاعْلَمُوْٓا

और जान रखो	6	नादिम (जमा)	जो तुम ने किया (अपना किया)	पर	फिर हो तुम	नादानी से	किसी क़ौम को	तुम ज़रर पहुँचाओ

اَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْاَمْرِ لَعَنِتُّمْ

अलबत्ता तुम मुशकिल में पड़ो	कामों से-में	अक्सर	में	अगर वह तुम्हारा कहा मानें	अल्लाह का रसूल (स)	तुम्हारे दरमियान	कि

وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ اِلَيْكُمُ الْاِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ اِلَيْكُمُ

तुम्हारे सामने	और नापसंदीदा कर दिया	तुम्हारे दिलों में	और उसे आरास्ता कर दिया	ईमान की	तुम्हें	मुहब्बत दी	और लेकिन अल्लाह

الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۝٧ فَضْلًا

फ़ज़्ल	7	हिदायत पाने वाले	वह	यही लोग	और नाफ़रमानी	और गुनाह	कुफ़्र

مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٨ وَاِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ

से-के	दो गिरोह	और अगर	8	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	और नेमत	अल्लाह से-के

الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَاِنْۢ بَغَتْ اِحْدٰىهُمَا

उन दोनों में से एक	फिर अगर ज़ियादती करे	उन दोनों के दरमियान	तो सुलह करा दो तुम	बाहम लड़ पड़ें	मोमिन (जमा)

عَلَى الْاُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ اِلٰٓى اَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ فَآءَتْ

फिर अगर जब वह रुजूअ कर ले	हुक्मे इलाही	तरफ़	रुजूअ करे	यहां तक कि	ज़ियादती करता है	उस से जो	तो तुम लड़ो	दूसरे पर

فَاَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَاَقْسِطُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٩

9	इंसाफ़ करने वाले	दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	और तुम इंसाफ़ किया करो	अ़दल के साथ	उन दोनों के दरमियान	तो सुलह करा दो तुम

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ اِخْوَةٌ فَاَصْلِحُوْا بَيْنَ اَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ

ताकि तुम पर	और डरो अल्लाह से	अपने भाई	दरमियान	पस सुलह करा दो	भाई	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं

ع ١٠ الثلثة ١٣

تُرْحَمُوْنَ ۝١٠ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى

क्या अ़जब	(दूसरे) गिरोह का	एक गिरोह	न मज़ाक़ उड़ाए	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ	10	रहम किया जाए

اَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى اَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا

बेहतर	कि वह हों	क्या अ़जब	औरतों से-का	और न औरतें	उन से	बेहतर	कि वह हों

مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِ ؕ بِئْسَ الْاِسْمُ

बुरा नाम	बुरे अल्क़ाब से	और बाहम न चिड़ाओ	बाहम (एक दूसरे)	और न ऐब लगाओ	उन से

الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْاِيْمَانِ ۚ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝١١

11	वह ज़ालिम (जमा)	तो यही लोग	तौबा न की (बाज़ न आया)	और जो-जिस	ईमान के बाद	फ़िस्क़

और अगर वह सब्र करते यहां तक कि आप (स) (ख़ुद) उन के पास निकल आते तो उन के लिए अल्बत्ता बेहतर होता, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (5)
ऐ मोमिनो! अगर तुम्हारे पास कोई बदकार आए ख़बर ले कर तो ख़ूब तहक़ीक़ कर लिया करो, कहीं नादानी से तुम किसी क़ौम को ज़रर पहुँचा बैठो, फिर तुम्हें अपने किए पर नादिम होना पड़े। (6)
और जान रखो कि तुम्हारे दरमियान अल्लाह के रसूल (स) हैं, अगर वह अक्सर कामों में तुम्हारा कहा मानें तो तुम (ख़ुद ही) मुश्किलात में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह ने तुम्हें ईमान की मुहब्बत दी और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता (पसंदीदा) कर दिया और उस ने तुम्हारे सामने (दिलों में) नापसंदीदा कर दिया कुफ़्र ओ फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को, यही लोग (राहे) हिदायत पाने वाले हैं। (7)
अल्लाह के तरफ़ से फ़ज़्ल और नेमत, और अल्लाह है जानने वाला, हिक्मत वाला। (8)
और अगर मोमिनों के दो गिरोह बाहम लड़ पड़ें तो तुम उन दोनो के दरमियान सुलह करा दो, फिर अगर ज़ियादती करे उन दोनों में से एक दूसरे पर, तो तुम उस से लड़ो जो ज़ियादती करता है, यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ रुजूअ़ कर ले, फिर जब वह रुजूअ़ कर ले तो तुम उन दोनों के दरमियान अ़दल के साथ सुलह करा दो और तुम इंसाफ़ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को दोस्त रखता है। (9)
इस के सिवा नहीं कि सब मोमिन भाई (भाई) हैं, पस तुम अपने दो भाइयों के दरमियान सुलह करा दो, अल्लाह से डरो ताकि तुम पर रहम किया जाए। (10)
ऐ मोमिनो! (तुम से) एक गिरोह (मर्द) दूसरे गिरोह (मर्दों) का मज़ाक़ न उड़ाएं, क्या अ़जब कि वह उन से बेहतर हों और न औरतें औरतों का (मज़ाक़) उड़ाएं, क्या अ़जब कि वह उन से बेहतर हों, और एक दूसरे पर ऐब न लगाओ, और बाहम बुरे अल्क़ाब से न चिड़ाओ (नाम न बिगाड़ो), ईमान के बाद फ़िस्क़ में नाम कमाना बुरा है, और जो बाज़ न आया तो यही लोग ज़ालिम हैं। (11)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ

बाज़ गुमान	बेशक	गुमानों से	बहुत से	बचो	जो लोग ईमान लाए (मोमिन)	ऐ

اِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ؕ اَيُحِبُّ اَحَدُكُمْ اَنْ يَّاْكُلَ

कि वह खाए	तुम में से कोई	क्या पसंद करता है?	बाज़ (दूसरे) की	तुम में से (एक)	और ग़ीबत न करे	और टटोल में न रहा करो एक दूसरे की	गुनाह

لَحْمَ اَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾

12	निहायत मेहरबान	तौबा क़ुबूल करने वाला	बेशक अल्लाह	और अल्लाह से डरो तुम	तो उस से तुम घिन करोगे	मुर्दा	अपने भाई का गोश्त

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّاُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ

और क़बीले	ज़ातें	और बनाया तुम्हें	और एक औरत	एक मर्द से	बेशक हम ने पैदा किया तुम्हें	ऐ लोगो!

لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ﴿١٣﴾

13	बाख़बर	जानने वाला	बेशक अल्लाह	तुम में सब से बड़ा परहेज़गार	अल्लाह के नज़्दीक	बेशक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला	ताकि तुम एक दूसरे की शनाख़्त करो

قَالَتِ الْاَعْرَابُ اٰمَنَّا ؕ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا اَسْلَمْنَا وَلَمَّا

और अभी नहीं	हम इस्लाम लाए है	तुम कहो	और लेकिन	तुम ईमान नहीं लाए	फ़रमा दें	हम ईमान लाए	देहाती	कहते हैं

يَدْخُلِ الْاِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ

तुम्हें कमी न करेगा	अल्लाह और उस का रसूल (स)	तुम इताअ़त करोगे	और अगर	तुम्हारे दिलों में	ईमान	दाख़िल हुआ

مِّنْ اَعْمَالِكُمْ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٤﴾ اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ

वह लोग जो	मोमिन (जमा)	इस के सिवा नहीं	14	मेहरबान	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	कुछ भी	तुम्हारे आमाल	से

اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ

अपने मालों से	और उन्हों ने जिहाद किया	न पड़े शक में वह	फिर	और उस का रसूल (स)	अल्लाह पर	ईमान लाए

وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿١٥﴾ قُلْ

फ़रमा दें	15	सच्चे	वह	यही लोग	अल्लाह की राह	में	और अपनी जानों से

اَتُعَلِّمُوْنَ اللّٰهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا

और जो	आस्मानों में	जो	जानता है	और अल्लाह	अपना दीन	क्या तुम जतलाते हो अल्लाह को?

فِي الْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿١٦﴾ يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ اَنْ اَسْلَمُوْا ؕ

वह इस्लाम लाए	कि	आप (स) पर	वह एहसान रखते हैं	16	जानने वाला	चीज़	हर एक	और अल्लाह	ज़मीन में

قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ اِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللّٰهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ

तुम पर	एहसान रखता है	बल्कि अल्लाह	अपने इस्लाम लाने का	मुझ पर	न एहसान रखो तुम	फ़रमा दें

اَنْ هَدٰىكُمْ لِلْاِيْمَانِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿١٧﴾ اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ

वह जानता है	बेशक अल्लाह	17	सच्चे	तुम हो	अगर	ईमान की तरफ़	कि उस ने हिदायत दी तुम्हें

غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ ع ٢ ٨ ١٣

18	तुम करते हो	वह जो	देखने वाला	और अल्लाह	और ज़मीन	पोशीदा बातें आस्मानों की

ऐ मोमिनो! बहुत से गुमानों से बचो, बेशक बाज़ गुमान गुनाह होते हैं और एक दूसरे की टटोल में न रहा करो, और तुम में से कोई एक दूसरे की ग़ीबत न करे, क्या पसंद करता है तुम में से कोई कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए? तो तुम उस से घिन करोगे, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तौबा क़ुबूल करने वाला, निहायत मेहरबान है। (12)

ऐ लोगो! बेशक हम ने तुम्हें एक मर्द और एक औ़रत से पैदा किया, और हम ने तुम्हें बनाया ज़ातें और क़बीले ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो, बेशक अल्लाह के नज़्दीक तुम में सब से ज़ियादा इज़्ज़त वाला वह है जो सब से ज़ियादा परहेज़गार है, अल्लाह बेशक जानने वाला, ख़बरदार है। (13)

देहाती कहते हैं कि हम ईमान ले आए, आप (स) फ़रमा दें: तुम ईमान नहीं लाए हो, बल्कि तुम कहो कि हम झुक गए हैं, और अभी दाख़िल नहीं हुआ तुम्हारे दिलों में ईमान, और अगर तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करोगे तो अल्लाह तुम्हारे आमाल से कमी न करेगा कुछ भी, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है। (14)

इस के सिवा नहीं कि मोमिन वह लोग हैं जो अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाए, फिर वह शक में न पड़े और उन्हों ने अपने मालों और जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, यही लोग हैं सच्चे। (15)

आप (स) फ़रमा दें: क्या तुम अल्लाह को अपना दीन (दीनदारी) जतलाते हो? और अल्लाह जानता है जो आस्मानों में और जो ज़मीन में है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (16)

वह आप (स) पर एहसान रखते हैं कि वह इस्लाम लाए, आप (स) फ़रमा दें कि तुम मुझ पर अपने इस्लाम लाने का एहसान न रखो, बल्कि अल्लाह तुम पर एहसान रखता है कि उस ने तुम्हें ईमान की तरफ़ हिदायत दी, अगर तुम सच्चे हो। (17)

बेशक अल्लाह आस्मानों और ज़मीन की पोशीदा बातें जानता है, और अल्लाह वह (सब कुछ) देखने वाला है जो तुम करते हो। (18)

المنزل ٧

آيَاتُهَا ٤٥ ❀ سُوْرَةُ قٓ (٥٠) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकुआत 3 | (50) सूरह क़ाफ़ | आयात 45

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قٓ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ﴿١﴾ بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ

उन में से	एक डर सुनाने वाला	उन के पास आया	कि	उन्हों ने तअ़ज्जुब किया	बल्कि	1	मजीद	क़सम है क़ुरआन	क़ाफ़

فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٢﴾ ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا

मिट्टी	और हो गए	क्या जब हम मर गए	2	अ़जीब	शै	यह	काफ़िरों	तो कहा

ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ﴿٣﴾ قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا

और हमारे पास	उन में से	ज़मीन	जो कुछ कम करती है	तहक़ीक़ हम जानते हैं	3	दूर	दोबारा लौटना	यह

كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ﴿٤﴾ بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ﴿٥﴾

5	उलझी हुई	एक बात में	पस वह	जब वह आया उन के पास	हक़ को	बल्कि उन्हों ने झुटलाया	4	महफ़ूज़ रखने वाली किताब

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا

और उस में नहीं	और उस को आरास्ता किया	बनाया उस को	कैसे	उन के ऊपर	आस्मान की तरफ़	तो क्या वह नहीं देखते?

مِنْ فُرُوْجٍ ﴿٦﴾ وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا

और उगाए	पहाड़ (जमा)	उस में	और डाले (जमाए)	हम ने फैलाया	और ज़मीन	6	शिगाफ़	कोई

فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ﴿٧﴾ تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ﴿٨﴾

8	रुजूअ़ करने वाला बन्दा	लिए-हर	और नसीहत	ज़रीआए बीनाई	7	ख़ुशनुमा	हर क़िस्म	से-के	उस में

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ﴿٩﴾

9	काटने (खेती)	और दाना (ग़ल्ला)	बाग़ात	उस से	फिर हम ने उगाए	बाबरकत	पानी	आस्मान से	और हम ने उतारा

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ﴿١٠﴾ رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ

उस से	और हम ने ज़िन्दा किया	बन्दों के लिए	रिज़्क़	10	तह ब तह	ख़ोशे	जिन के	बुलन्द ओ बाला	और खजूर के दरख़्त

بَلْدَةً مَّيْتًا ؕ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ﴿١١﴾ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ

नूह (अ) की क़ौम	इन से क़ब्ल	झुटलाया	11	निकलना	इसी तरह	मुर्दा	शहर (ज़मीन)

وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ﴿١٢﴾ وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ﴿١٣﴾

13	लूत (अ)	और भाई (जमा)	और फ़िरऔ़न	और आद	12	और समूद	और अहले रस

وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ؕ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ﴿١٤﴾

14	वादाए अ़ज़ाब	पस साबित हो गया	रसूलों	सब ने झुटलाया	और क़ौमे तुब्बअ़	और अहले अयका (बन के रहने वाले)

ع ١٥ اَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْاَوَّلِ ؕ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ﴿١٥﴾

15	पैदा करना अज़ सरे नौ	से	शक में	बल्कि वह	पहली बार	पैदा करने से	तो क्या हम थक गए

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़ाफ़ - क़सम है क़ुरआन मजीद की। (1)
बल्कि उन्हों ने तअ़ज्जुब किया कि उन के पास उन में से एक डर सुनाने वाला आया, तो काफ़िरों ने कहा कि यह अ़जीब शै है। (2)
क्या जब हम मर गए और मिट्टी हो गए (फिर जी उठेंगे?), यह दोबारा लौटना दूर (अज़ अ़क़्ल) है। (3)
तहक़ीक़ हम जानते हैं जो कुछ कम करती है उन (के अज्साम) में से ज़मीन और हमारे पास महफ़ूज़ रखने वाली किताब है। (4)
बल्कि उन्हों ने हक़ को झुटलाया जब वह उन के पास आया, पस वह एक उलझी हुई बात में (पड़े हैं)। (5)
तो क्या वह अपने ऊपर आस्मान की तरफ़ नहीं देखते? कि हम ने उस को कैसे बनाया! और हम ने उसको (सितारों से) आरास्ता किया और उस में कोई शिगाफ़ तक नहीं। (6)
और ज़मीन को हम ने फैलाया और उस में पहाड़ जमाए, और हम ने उस में उगाईं हर क़िस्म की ख़ुशनुमा (चीज़ें)। (7)
हर रुजूअ़ करने वाले बन्दे के लिए ज़रीआए बीनाई ओ नसीहत। (8)
और हम ने आस्मान से बाबरकत पानी उतारा, फिर हम ने उस से बाग़ात उगाए और खेती का ग़ल्ला। (9)
और बुलन्द ओ बाला खजूर के दरख़्त, जिन के तह ब तह (ख़ूब गुंधे हुए) ख़ोशे हैं। (10)
रिज़्क़ बन्दों के लिए और हम ने उस से मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा किया, इसी तरह (क़ब्र से) निकलना होगा। (11)
इन से क़ब्ल झुटलाया नूह (अ) की क़ौम और अहले रस और समूद ने। (12)
आद और फ़िरऔ़न और लूत (अ) के भाइयों ने। (13)
और बन के रहने वालों ने और क़ौमे तुब्बअ़ ने, सब ने रसूलों को झुटलाया, पस वादाए अ़ज़ाब साबित हो गया। (14)
तो क्या हम पहली बार पैदा करने से थक गए हैं? बल्कि वह दोबारा पैदा करने की (तरफ़) से शक में हैं। (15)

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ اَقْرَبُ

बहुत क़रीब	और हम	उस का जी	उस के	जो वस्वसे गुज़रते हैं	और हम जानते हैं	इन्सान	और तहक़ीक़ हम ने पैदा किया

اِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ ﴿١٦﴾ اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ

दाएं से	दो (2) लेने (लिख लेने) वाले	जब लेते (लिख लेते) हैं	16	रगे गर्दन (शह रग)	से	उस के

وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ﴿١٧﴾ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ﴿١٨﴾

18	तैयार बैठा हुआ	एक निगहबान	उस के पास	मगर	कोई बात	और नहीं निकालता	17	बैठा हुआ	और बाएं से

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ﴿١٩﴾ وَنُفِخَ

और फूंका गया	19	भागता (बिदकता)	उस से	जिस से तू था	यह	हक़ के साथ	मौत की बेहोशी	और आ गई

فِي الصُّوْرِ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ﴿٢٠﴾ وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ

एक चलाने वाला	उस के साथ	हर शख़्स	और आएगा (हाज़िर होगा)	20	वईद का दिन	यह	सूर में

وَّشَهِيْدٌ ﴿٢١﴾ لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ

तेरा पर्दा	तुझ से	तो हम ने हटा दिया	इस से	ग़फ़्लत में	तहक़ीक़ तू था	21	और गवाही देने वाला

فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ﴿٢٢﴾ وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ﴿٢٣﴾

23	हाज़िर	जो मेरे पास	यह	उस का हम नशीन	और कहेगा	22	बड़ी तेज़	आज	पस तेरी नज़र

اَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ﴿٢٤﴾ مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبِ ﴿٢٥﴾

25	शुबहात डालने वाला	हद से गुज़रने वाला	माल के लिए	मना करने वाला	24	सरकश	हर नाशुक्रा	जहन्नम में	तुम दोनों डाल दो

اِلَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَاَلْقِيٰهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ﴿٢٦﴾

26	सख़्त	अज़ाब में	पस उसे डाल दो तुम	दूसरा	माबूद	अल्लाह के साथ	ठहराया	वह जिस

قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ اَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿٢٧﴾ قَالَ

फ़रमाएगा	27	परले दरजे की	गुमराही में	था	और लेकिन वह	मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया	ऐ हमारे रब	उस का हम नशीन	कहेगा

لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ اِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ﴿٢٨﴾ مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ

बात	नहीं बदली जाती	28	वादा-ए-अज़ाब	तुम्हारी तरफ़	और मैं पहले भेज चुका हूँ	मेरे पास-सामने	तुम न झगड़ो

لَدَيَّ وَمَآ اَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ﴿٢٩﴾ يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَاْتِ ٢ ع ١٤ ١٦

क्या तू भर गई?	जहन्नम से	हम कहेंगे	जिस दिन	29	बन्दों पर	ज़ुल्म करने वाला	और नहीं मैं	मेरे पास (हाँ)

وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ﴿٣٠﴾ وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ ﴿٣١﴾

31	दूर	न	परहेज़गारों के लिए	जन्नत	और नज़दीक कर दी जाएगी	30	मज़ीद है	से-कुछ	क्या	और वह कहेगी

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ اَوَّابٍ حَفِيْظٍ ﴿٣٢﴾ مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ

बिन देखे	रहमान (अल्लाह)	डरा	जो	32	निगहदाश्त करने वाला	हर रुजूअ करने वाले के लिए	यह जो तुम से वादा किया जाता था

وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبِ ﴿٣٣﴾ اِدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ ﴿٣٤﴾

34	हमेशा रहने का दिन	यह	सलामती के साथ	तुम उस में दाख़िल हो जाओ	33	रुजूअ करने वाले दिल के साथ	और आया

और तहक़ीक़ हम ने इन्सान को पैदा किया और हम जानते हैं जो वस्वसे गुज़रते हैं उस के जी में, और हम उस की शह रग से (भी) ज़ियादा क़रीब हैं। (16)

जब (वह कोई काम करता है) तो लिखने वाले लिख लेते हैं (एक) दाएं से और (एक) बाएं से बैठा हुआ। (17)

और वह कोई बात (ज़बान से) नहीं निकालता मगर उस के पास (लिखने के लिए) एक निगहबान तैयार बैठा है। (18)

और हक़ के साथ मौत की बेहोशी आ गई, यह वह है जिस से तू बिदकता था। (19)

और सूर फूंका गया, यह वईद का दिन है। (20)

और हर शख़्स (हमारे हुज़ूर) हाज़िर होगा, उस के साथ एक चलाने वाला और एक गवाही देने वाला होगा। (21)

तहक़ीक़ तू इस से ग़फ़्लत में था, तो हम ने तुझ से तेरा (ग़फ़्लत का) पर्दा हटा दिया। पस तेरी नज़र आज बड़ी तेज़ है। (22)

और कहेगा उस का हम नशीन (फ़रिश्ता) जो मेरे पास (आमाल नामा था) यह हाज़िर है। (23)

(हुक्म होगा) तुम दोनों जहन्नम में डाल दो हर नाशुक्रे सरकश को, (24)

भलाई को रोकने वाला, हद से गुज़रने वाला, शुबहात डालने वाला। (25)

जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद ठहराया, पस तुम उसे डाल दो सख़्त अज़ाब में। (26)

उस का हम नशीन (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे रब! मैं ने उसे सरकश नहीं बनाया, बल्कि वह परले दरजे की गुमराही में था। (27)

(अल्लाह) फ़रमाएगाः तुम मेरे सामने न झगड़ो, और मैं तुम्हारी तरफ़ पहले वादाए अज़ाब भेज चुका हूँ। (28)

मेरे पास बात नहीं बदली जाती और नहीं मैं ज़ुल्म करने वाला बन्दों पर। (29)

जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे कि क्या तू भर गई? और वह कहेगीः क्या कुछ (और) मज़ीद है? (30)

और जन्नत परहेज़गारों के नज़दीक कर दी जाएगी, न होगी दूर। (31)

यह है जो तुम से वादा किया जाता था, हर रुजूअ करने वाले, निगहदाश्त करने वाले के लिए। (32)

जो अल्लाह रहमान से बिन देखे डरा, और रुजूअ करने वाले दिल के साथ आया। (33)

(हम फ़रमाएंगे) उस में सलामती के साथ दाख़िल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन है। (34)

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ ﴿٣٥﴾ وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ

इन से क़ब्ल	और कितनी हलाक कीं हम ने	35	और भी ज़ियादा	और हमारे पास	उस में	जो वह चाहेंगे	उन के लिए

مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِى الْبِلَادِ ؕ هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٦﴾

36	भागने की जगह	से (कहीं)	क्या	पस कुरेदने (छान मारने) लगे शहरों में	पकड़ में	इन से	वह ज़ियादा सख़्त	उम्मतें

اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ اَوْ اَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ

और वह	डाले (लगाए) कान	या	दिल	उस का	हो	उस के लिए जो	नसीहत	इस	में	बेशक

شَهِيْدٌ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ۖ

छः (6) दिन में	और जो उन दोनों के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	हम ने पैदा किया	और तहक़ीक़	37	मुतवज्जेह

وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ ﴿٣٨﴾ فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ

और पाकीज़गी बयान करो	जो वह कहते हैं	पर	पस सब्र करो तुम	38	किसी तकान ने	और नहीं छुआ हमें

بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ﴿٣٩﴾ وَمِنَ الَّيْلِ

और रात में	39	और ग़ुरूब होने से क़ब्ल	सूरज का तुलूअ़	क़ब्ल	अपने रब की तारीफ़ के साथ

فَسَبِّحْهُ وَاَدْبَارَ السُّجُوْدِ ﴿٤٠﴾ وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ

से	पुकारने वाला पुकारेगा	जिस दिन	और सुनो तुम	40	सिज्दों (नमाज़)	और बाद	पस उसकी पाकीज़गी बयान करो

مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ﴿٤١﴾ يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُرُوْجِ ﴿٤٢﴾

42	बाहर निकलने का दिन	यह	हक़ के साथ	चीख़	वह सुनेंगे	जिस दिन	41	जगह क़रीब

اِنَّا نَحْنُ نُحْىٖ وَنُمِيْتُ وَاِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﴿٤٣﴾ يَوْمَ تَشَقَّقُ الْاَرْضُ عَنْهُمْ

उन से	ज़मीन	जिस दिन शक़ हो जाएगी	43	फिर लौट कर आना है	और हमारी तरफ़	और मारते हैं	ज़िन्दगी देते हैं	बेशक हम

سِرَاعًا ؕ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ ﴿٤٤﴾ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ

वह कहते हैं	वह जो	हम ख़ूब जानते हैं	44	आसान	हमारे लिए	हश्र	यह	जल्दी करते हुए

ع ٣ ١٦ ١٧ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۛ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ﴿٤٥﴾

45	मेरी वईद	वह डरता है	जो	क़ुरआन से	पस नसीहत करें	जब्र करने वाले	उन पर	और नहीं आप (स)

آيَاتُهَا ٦٠ ❀ سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ (٥١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआ़त 3 — (51) सूरतुज़ ज़ारियात — बिखेरने वालियाँ — आयात 60

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﴿١﴾ فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﴿٢﴾ فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﴿٣﴾ فَالْمُقَسِّمٰتِ

फिर तक़सीम करने वाले	3	नर्मी से	फिर चलने वाली	2	बोझ	फिर उठाने वाली	1	उड़ा कर	क़सम है परागन्दा करने वाली (हवाओं)

اَمْرًا ﴿٤﴾ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﴿٥﴾ وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٦﴾

6	अलबत्ता वाक़े होने वाली	जज़ा ओ सज़ा	और बेशक	5	अलबत्ता सच है	तुम्हें वादा दिया जाता है	इस के सिवा नहीं	4	हुक्म से

उस में उन के लिए है जो वह चाहेंगे और हमारे पास और भी ज़ियादा है। (35)
और हम ने इन (अहले मक्का) से क़ब्ल कितनी (ही) हलाक कीं उम्मतें, वह पकड़ (क़ुव्वत) में इन से ज़ियादा सख़्त थीं, पस उन्हों ने शहरों को छान मारा था, क्या कहीं भागने की जगह पा सके? (36)
बेशक उस में नसीहत (बड़ी इब्रत) है उस के लिए जिस का दिल (बेदार) हो, या कान लगाए, और वह मुतवज्जेह हो। (37)
और तहक़ीक़ हम ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया और जो उन के दरमियान है, छः (6) दिन में, और हमें किसी तकान ने नहीं छुआ। (38)
पस जो वह कहते हैं तुम उस पर सब्र करो, और अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करो, सूरज के तुलूअ़ और ग़ुरूब से क़ब्ल। (39)
और रात में पस उस की पाकीज़गी बयान करो और नमाज़ों के बाद (भी)। (40)
और सुनो, जिस दिन पुकराने वाला क़रीब जगह से पुकारेगा। (41)
जिस दिन वह ठीक ठीक चीख़ सुनेंगे, यह (क़ब्रों से) बाहर निकलने का दिन होगा। (42)
बेशक हम ज़िन्दगी देते हैं और हम ही मारते हैं और हमारी तरफ़ (ही) लौट कर आना है। (43)
जिस दिन ज़मीन शक़ हो जाएगी वह जल्दी करते हुए निकलेंगे, यह हश्र हमारे लिए आसान है। (44)
जो वह कहते हैं हम ख़ूब जानते हैं, और तुम उन पर जब्र करने वाले नहीं, पस आप (स) (उस को) क़ुरआन से नसीहत करें, जो मेरी वईद (वादाए अ़ज़ाब) से डरता है। (45)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है (ख़ाक) उड़ा कर परागन्दा करने वाली हवाओं की, (1)
फिर (बारिश का) बोझ उठाने वाली हवाओं की, (2)
फिर नर्मी से चलने वाली (कश्तियों) की, (3)
फिर हुक्म से तक़सीम करने वाले (फ़रिश्तों) की, (4)
इस के सिवा नहीं कि तुम्हें वादा जो दिया जाता है अलबत्ता सच है। (5)
और बेशक जज़ा ओ सज़ा अलबत्ता वाक़े होने वाली है। (6)

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۝٧ اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۝٨ يُّؤْفَكُ عَنْهُ

उस से	फेरा जाता है	8	मुख़्तलिफ़	बात	अलबत्ता में	बेशक तुम	7	रास्तों वाले	और क़सम है आस्मान की

مَنْ اُفِكَ ۝٩ قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۝١٠ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۝١١

11	भूले हुए हैं	ग़फ़्लत में	वह	वह जो	10	अटकल दौड़ाने वाले	मारे गए	9	जो फेरा जाता है

يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ۝١٢ يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ ۝١٣ ذُوْقُوْا

तुम चखो	13	उलटे सीधे पड़ेंगे	आग पर	वह	उस दिन	12	जज़ा औ सज़ा का दिन	कब?	वह पूछते हैं

فِتْنَتَكُمْ ۭ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝١٤ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ

बाग़ात में	मुत्तक़ी (नेक चलन)	बेशक	14	जल्दी करते	तुम थे उस की	वह जो	यह	अपनी शरारत

وَّعُيُوْنٍ ۝١٥ اٰخِذِيْنَ مَآ اٰتٰىهُمْ رَبُّهُمْ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ

इस	क़ब्ल	थे	बेशक वह	उन का रब	जो दिया उन्हें	लेने वाले	15	और चश्मे

مُحْسِنِيْنَ ۝١٦ كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ ۝١٧ وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ

वह	और वक़्ते सुबह	17	वह सोते	रात से-में	थोड़ा	वह थे	16	नेकोकार

يَسْتَغْفِرُوْنَ ۝١٨ وَفِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّاۗىِٕلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝١٩

19	और तंगदस्त (ग़ैर सवाली)	सवाली के लिए	हक़	उन के माल (जमा)	और में	18	असतग़फ़ार करते

وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۝٢٠ وَفِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۭ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝٢١ وَفِي

और में	21	तो क्या तुम देखते नहीं?	और तुम्हारी ज़ात में	20	यक़ीन करने वालों के लिए	निशानियां	और ज़मीन में

السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ ۝٢٢ فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ

हक़ है	बेशक यह	और ज़मीन	आस्मानों	क़सम है रब की	22	और जो तुम से वादा किया जाता है	तुम्हारा रिज़्क़	आस्मानों

مِّثْلَ مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۝٢٣ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ع ١ ٢٣ ١٨

इब्राहीम (अ)	मेहमान	बात (ख़बर)	आई तुम्हारे पास	क्या	23	बोलते हो	जो तुम	जैसे

الْمُكْرَمِيْنَ ۝٢٤ اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ سَلٰمٌ ۚ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝٢٥ وقف لازم

25	नाशनासा	लोग	सलाम	उस ने कहा	सलाम	तो उन्हों ने कहा	उस के पास	वह आए	जब	24	इज़्ज़तदार

فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَاۗءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۝٢٦ فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ

कहा	उन के	फिर वह सामने रखा	26	मोटा ताज़ा बछड़ा	पस लाया	अपने अहले ख़ाना की तरफ़	फिर वह मुतवज्जेह हुआ

اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝٢٧ فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ۭ قَالُوْا لَا تَخَفْ ۭ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ

एक बेटे की	और उन्हों ने बशारत दी	तुम डरो नहीं	वह बोले	कुछ डर	उन से	तो उस ने महसूस किया	27	क्या तुम खाते नहीं?

عَلِيْمٍ ۝٢٨ فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ

बुढ़िया	और बोली	अपना चेहरा	उस ने हाथ मारा	हैरत से बोलती हुई	उस की बीवी	फिर आगे आई	28	दानिशमन्द

عَقِيْمٌ ۝٢٩ قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ ۝٣٠

30	जानने वाला	हिक्मत वाला	वह	बेशक	तेरा रब	फ़रमाया	यूँ ही	उन्हों ने कहा	29	बांझ

और क़सम है रास्तों वाले आस्मान की। (7)
बेशक तुम अलबत्ता मुख़्तलिफ़ बात में हो। (8)
उस (क़ुरआन) से वही फेरा जाता है जो (अल्लाह की तरफ़ से) फेरा जाता है। (9)
अटकल दौड़ाने वाले मारे गए। (10)
जो वह ग़फ़्लत में भूले हुए हैं। (11)
वह पूछते हैं कि जज़ा ओ सज़ा का दिन कब होगा? (12)
(हाँ) उस दिन वह आग पर उलटे सीधे पड़ेंगे। (13)
(अब) तुम अपनी शरारत (का मज़ा) चखो, यह है वह जिस की तुम जल्दी करते थे। (14)
बेशक मुत्तक़ी बाग़ात और चश्मों में होंगे। (15)
लेने वाले जो दिया उन्हें उन का रब, बेशक वह इस से क़ब्ल नेकोकार थे। (16)
वह रात में थोड़ा सोते थे। (17)
और वक़्ते सुबह वह असतग़फ़ार करते (बख़्शिश मांगते) थे। (18)
और उन के मालों में हक़ है सवाली और ग़ैर सवाली (तंगदस्त) के लिए। (19)
और ज़मीन में यक़ीन करने वालों के लिए निशानियां हैं। (20)
और तुम्हारी ज़ात में (भी), तो क्या तुम देखते नहीं? (21)
और आस्मानों में तुम्हारा रिज़्क़ है और जो तुम से वादा किया जाता है। (22)
क़सम है रब की आस्मानों और ज़मीन के, बेशक यह (क़ुरआन) हक़ है जैसे तुम बोलते हो। (23)
क्या आप (स) के पास ख़बर आई इब्राहीम (अ) के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों की? (24)
जब वह उस के पास आए तो उन्हों ने "सलाम" कहा, उस (इब्राहीम अ) ने (भी) सलाम कहा, वह लोग नाशनासा थे। (25)
फिर वह अपने अहले ख़ाना की तरफ़ मुतवज्जेह हुए, फिर एक मोटा ताज़ा बछड़ा (के कबाब) ले आए। (26)
फिर उन के सामने रखा (और) कहाः क्या तुम खाते नहीं? (27)
तो उस (इब्राहीम अ) ने उन से (दिल में) डर महसूस किया, वह बोले कि तुम डरो नहीं, और उन्हों ने उसे एक दाशिमन्द बेटे की बशारत दी। (28)
फिर उस की बीवी आगे आई हैरत से बोलती हुई, उस ने अपने चेहरे पर (हाथ) मारा और बोलीः (मैं) बुढ़िया (और ऊपर से) बांझ। (29)
उन्हों ने कहाः ऐसे ही फ़रमाया है तेरे रब ने, बेशक वह है हिक्मत वाला, जानने वाला। (30)

الجزء ٢٧

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣١﴾ قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ

उस ने कहा	तो क्या	मक़सद तुम्हारा	ऐ	भेजे हुए (फ़रिश्तो)	31	उन्हों ने जवाब दिया	बेशक हम भेजे गए हैं

اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾ لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ﴿٣٣﴾ مُّسَوَّمَةً

तरफ़	मुज्रिम क़ौम (मुज्रिमों की क़ौम)	32	ताकि हम भेजें (बरसाएं)	उन पर	पत्थर	पकी हुई मिट्टी से	33	निशान किए हुए

عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣٤﴾ فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٥﴾

तुम्हारे रब के हां	हद से गुज़र जाने वालों के लिए	34	पस हम ने निकाल लिया	जो था	उस में	से	ईमान वाले	35

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٣٦﴾ وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً

पस हम ने न पाया	उस में	एक घर के सिवा	से-का	मुसलमानों	36	और हम ने छोड़ दी	उस में	एक निशानी

لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ﴿٣٧﴾ وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ

उन लोगों के लिए	जो डरते हैं	दर्दनाक अ़ज़ाब	37	और मूसा (अ) में	जब हम ने उसे भेजा

اِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٨﴾ فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ﴿٣٩﴾

फ़िरऔ़न की तरफ़	रोशन दलील (मोजिज़े) के साथ	38	तो उस ने सरताबी की	अपनी कुव्वत के साथ	और कहा	जादूगर	या दीवाना	39

فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿٤٠﴾ وَفِيْ عَادٍ

पस हम ने उसे पकड़ा	और उस का लशकर	फिर हम ने उन्हें फेंक दिया	दर्या में	और वह	मलामत ज़दा	40	और आ़द में

اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ﴿٤١﴾ مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ اَتَتْ

जब हम ने भेजी	उन पर	नामुबारक आन्धी	41	वह न छोड़ती थी	किसी शै को	आती

عَلَيْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ﴿٤٢﴾ وَفِيْ ثَمُوْدَ اِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا

जिस पर	मगर उसे कर देती	गली सड़ी हड्डी की तरह	42	और समूद में	जब कहा गया	उन को	फ़ाइदा उठा लो

حَتّٰى حِيْنٍ ﴿٤٣﴾ فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ

एक मुद्दत तक	43	तो उन्हों ने सरकशी की	से	अपने रब का हुक्म	पस उन्हें पकड़ा	बिजली की कड़क

وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿٤٤﴾ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ ﴿٤٥﴾

और वह	देखते थे	44	पस उन में सकत न रही	खड़ा होने की	और वह न थे	खुद अपनी मदद करने वाले	45

ع ٢ ٢٣ ١ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٤٦﴾

और नूह (अ) की क़ौम	उस से क़ब्ल	बेशक वह	थे	लोग नाफ़रमान	46

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِاَيْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ﴿٤٧﴾ وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا

और आस्मान	हम ने उसे बनाया	हाथ (कुव्वत) से	और बेशक हम	वसीउ़ल कुदरत हैं	47	और ज़मीन	हम ने फ़र्श बनाया उसे

فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ﴿٤٨﴾ وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ

पस हम कैसा अच्छा बिछाने वाले हैं	48	और से	हर शै	हम ने पैदा किए	दो जोड़े (क़िस्म)	ताकि तुम

تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٩﴾ فَفِرُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ اِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٥٠﴾

नसीहत पकड़ो	49	पस तुम दौड़ो	अल्लाह की तरफ़	बेशक मैं	तुम्हारे लिए	उस से	डर सुनाने वाला	वाज़ेह	50

उस (इब्राहीम अ) ने कहा ऐ फ़रिश्तो!
तुम्हारा मक़सद क्या है? (31)
उन्हों ने जवाब दियाः बेशक हम मुज्रिमों
की क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं। (32)
ताकि हम उन पर पकी हुई मिट्टी
के पत्थर (संगरेज़े) बरसाएं। (33)
तुम्हारे रब के हां हद से गुज़र जाने
वालों के लिए निशान किए हुए। (34)
पस हम ने निकाल लिया (उन्हें) जो
उस (शहर) में ईमान वाले थे। (35)
पस हम ने उस (शहर) में (लूत अ) के
सिवा मुसलमानों का घर न पाया। (36)
और हम ने छोड़ दी दर्दनाक अ़ज़ाब
से डरने वालों के लिए उस शहर
में एक निशानी। (37)
और मूसा (अ) में (भी एक निशानी) है,
जब हम ने उसे फ़िरऔ़न की तरफ़
भेजा रोशन मोजिज़े के साथ। (38)
तो उस (फ़िरऔ़न) ने अपनी
कुव्वत (अरकाने सलतनत) के साथ
सरताबी की और कहा कि यह
जादूगर या दीवाना है। (39)
पस हम ने उसे और उस के
लशकर को पकड़ा, फिर हम ने
उन्हें फेंक दिया दर्या में और वह
मलामत ज़दा (रह गया)। (40)
और (तुम्हारे लिए निशानी है) आ़द
में, जब हम ने उन पर नामुबारक
आन्धी भेजी। (41)
वह किसी शै को न छोड़ती थी जिस
पर वह आती मगर उसे एक गली
सड़ी हड्डी की तरह कर देती। (42)
और समूद में (भी एक निशानी है)
जब उन्हें कहा गया कि एक (थोड़ी)
मुद्दत और फ़ाइदा उठा लो। (43)
तो उन्हों ने अपने रब के हुक्म से
सरकशी की, पस उन्हें बिजली की कड़क
ने आ पकड़ा उन के देखते देखते। (44)
पस उन में खड़ा होने की सकत न
रही और न खुद अपनी मदद
कर सकते थे। (45)
और नूह (अ) की क़ौम को उस से
क़ब्ल (हम ने हलाक किया), बेशक
वह नाफ़रमान लोग थे। (46)
और हम ने आस्मान को बनाया
अपने ज़ोर से और बेशक हम उस
की कुदरत रखते हैं। (47)
और हम ने ज़मीन को (बतौर)
फ़र्श बनाया, और हम कैसा अच्छा
बिछाने वाले हैं। (48)
और हर शै से हम ने दो क़िस्म पैदा
कीं ताकि तुम नसीहत पकड़ो। (49)
पस तुम अल्लाह की तरफ़ दौड़ो,
बेशक मैं तुम्हारे लिए उस (की तरफ़)
से वाज़ेह डराने वाला हूँ। (50)

وَلَا تَجۡعَلُوۡا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ؕ اِنِّیۡ لَکُمۡ مِّنۡهُ نَذِیۡرٌ مُّبِیۡنٌ ﴿۵۱﴾ کَذٰلِکَ

इसी तरह	51	वाज़ेह डर सुनाने वाला	उस से	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	कोई दूसरा माबूद	अल्लाह के साथ	और तुम न ठहराओ

مَاۤ اَتَی الَّذِیۡنَ مِنۡ قَبۡلِهِمۡ مِّنۡ رَّسُوۡلٍ اِلَّا قَالُوۡا سَاحِرٌ اَوۡ مَجۡنُوۡنٌ ﴿۵۲﴾

52	या दीवाना	जादूगर	उन्हों ने कहा	मगर	कोई रसूल	इन से पहले	वह जो	नहीं आया

اَتَوَاصَوۡا بِهٖ ۚ بَلۡ هُمۡ قَوۡمٌ طَاغُوۡنَ ﴿۵۳﴾ فَتَوَلَّ عَنۡهُمۡ فَمَاۤ اَنۡتَ بِمَلُوۡمٍ ﴿۵۴﴾

54	कोई इल्ज़ाम	तो नहीं आप (स)	पस आप (स) मुँह मोड़ लें उन से	53	सरकश	लोग	बल्कि वह	क्या उन्हों ने एक दूसरे को वसीयत की उस की

وَّذَکِّرۡ فَاِنَّ الذِّکۡرٰی تَنۡفَعُ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ﴿۵۵﴾ وَمَا خَلَقۡتُ الۡجِنَّ وَالۡاِنۡسَ

और इन्सान	जिन्न	और नहीं पैदा किया मैं ने	55	ईमान लाने वाले	नफ़ा देता है	समझाना	तो बेशक	आप (स) समझाएं

اِلَّا لِیَعۡبُدُوۡنِ ﴿۵۶﴾ مَاۤ اُرِیۡدُ مِنۡهُمۡ مِّنۡ رِّزۡقٍ وَّمَاۤ اُرِیۡدُ اَنۡ

कि	और मैं नहीं चाहता	कोई रिज़्क़	उन से	मैं नहीं मांगता	56	इस लिए कि वह मेरी इबादत करें	मगर-सिर्फ़

یُّطۡعِمُوۡنِ ﴿۵۷﴾ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الۡقُوَّةِ الۡمَتِیۡنُ ﴿۵۸﴾ فَاِنَّ

पस बेशक	58	निहायत कुदरत वाला	कुव्वत वाला	राज़िक़	वह	बेशक अल्लाह	57	वह मुझे खिलाएं

لِلَّذِیۡنَ ظَلَمُوۡا ذَنُوۡبًا مِّثۡلَ ذَنُوۡبِ اَصۡحٰبِهِمۡ فَلَا یَسۡتَعۡجِلُوۡنِ ﴿۵۹﴾

59	पस वह जल्दी न करें	उन के साथी	पैमाने	जैसे	डोल (पैमाने)	उन लोगों के लिए जिन्हों ने ज़ुल्म किया

فَوَیۡلٌ لِّلَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا مِنۡ یَّوۡمِهِمُ الَّذِیۡ یُوۡعَدُوۡنَ ﴿۶۰﴾ ع ١٤ ٣ ٢

60	उन से वादा किया जाता है	वह जिस	उन का दिन	से-का	उन लोगों के लिए जिन्हों ने इन्कार किया	सो बरबादी

اٰیَاتُهَا ۴۹ ❀ سُوۡرَةُ الطُّوۡرِ (۵۲) ❀ رُکُوۡعَاتُهَا ۲

आयात 49 — (52) सूरतुत तूर पहाड़ — रुकूआत 2

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالطُّوۡرِ ۙ﴿۱﴾ وَکِتٰبٍ مَّسۡطُوۡرٍ ۙ﴿۲﴾ فِیۡ رَقٍّ مَّنۡشُوۡرٍ ۙ﴿۳﴾ وَّالۡبَیۡتِ الۡمَعۡمُوۡرِ ۙ﴿۴﴾

4	और बैते मअ़मूर	3	खुले	औराक़ में	2	लिखी हुई	और किताब	1	क़सम तूरे (सीना)

وَالسَّقۡفِ الۡمَرۡفُوۡعِ ۙ﴿۵﴾ وَالۡبَحۡرِ الۡمَسۡجُوۡرِ ۙ﴿۶﴾ اِنَّ عَذَابَ رَبِّکَ لَوَاقِعٌ ۙ﴿۷﴾

7	ज़रूर वाक़े होने वाला	तेरे रब का अ़ज़ाब	बेशक	6	और दर्या जोश मारता	5	बुलन्द	और छत

مَّا لَهٗ مِنۡ دَافِعٍ ۙ﴿۸﴾ یَّوۡمَ تَمُوۡرُ السَّمَآءُ مَوۡرًا ۙ﴿۹﴾ وَّتَسِیۡرُ الۡجِبَالُ سَیۡرًا ؕ﴿۱۰﴾

10	चलने की तरह	पहाड़	और चलेंगे	9	थरथरा कर	आस्मान	जिस दिन थरथराएगा	8	कोई टालने वाला	नहीं उस को

فَوَیۡلٌ یَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُکَذِّبِیۡنَ ﴿۱۱﴾ الَّذِیۡنَ هُمۡ فِیۡ خَوۡضٍ یَّلۡعَبُوۡنَ ﴿۱۲﴾ یَوۡمَ وقف لازم

जिस दिन	12	खेलते हैं	मशग़ला में	वह	वह जो	11	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	सो बरबादी

یُدَعُّوۡنَ اِلٰی نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ؕ﴿۱۳﴾ هٰذِهِ النَّارُ الَّتِیۡ کُنۡتُمۡ بِهَا تُکَذِّبُوۡنَ ﴿۱۴﴾

14	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह आग जो	यह है	13	धक्के दे कर	जहन्नम की आग	तरफ़	वह धकेले जाएंगे

और अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद न ठहराओ, मैं बेशक तुम्हारे लिए उस (की तरफ़) से वाज़ेह डर सुनाने वाला हूँ। (51)
इसी तरह नहीं आया कोई रसूल (उन के पास) जो इन से पहले थे मगर उन्हों ने (उसे) जादूगर या दीवाना कहा। (52)
क्या उन्हों ने एक दूसरे को उस की वसीयत की है? बल्कि वह सरकश लोग हैं। (53)
पस आप (स) उन से मुँह मोड़ लें तो आप (स) पर कोई इल्ज़ाम नहीं। (54)
और आप (स) समझाएं, बेशक समझाना ईमान लाने वालों को नफ़ा देता है। (55)
और मैं ने पैदा किए जिन्न और इन्सान सिर्फ़ इस लिए कि वह मेरी इबादत (बन्दगी और फ़रमांबरदारी) करें। (56)
मैं उन से कोई रिज़्क़ नहीं मांगता और मैं नहीं चाहता कि वह मुझे खिलाएं। (57)
बेशक अल्लाह ही राज़िक़ है, कुव्वत वाला, निहायत कुदरत वाला। (58)
पस बेशक जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन के लिए (अ़ज़ाब के) पैमाने हैं, जैसे पैमाने उन के साथियों के लिए थे, पस वह जल्दी न करें। (59)
सो उन लोगों के लिए बरबादी है जिन्हों ने उस दिन का इन्कार किया जिस का उन से वादा किया जाता है। (60)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है तूरे सीना की। (1)
और लिखी हुई किताब की, (2)
खुले औराक़ में। (3)
और बैते मअ़मूर (फ़रिश्तों के कअ़बाए आस्मानी) की। (4)
और बुलन्द छत की। (5)
और जोश मारते दर्या की। (6)
बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब ज़रूर वाक़े होने वाला है। (7)
उसे कोई टालने वाला नहीं। (8)
जिस दिन थरथराएगा आस्मान (बुरी तरह) थरथरा कर, (9)
और चलेंगे पहाड़ चलने की तरह (उड़े फिरेंगे)। (10)
सो उस दिन झुटलाने वालों के लिए बरबादी है। (11)
वह जो मशग़ले में (बेहूदगी से) खेलते हैं। (12)
जिस दिन वह जहन्नम की आग की तरफ़ धक्के दे कर धकेले जाएंगे। (13)
यह है वह आग जिस को तुम झुटलाते थे। (14)

اَفَسِحۡرٌ هٰذَاۤ اَمۡ اَنۡتُمۡ لَا تُبۡصِرُوۡنَ ﴿۱۵﴾ اِصۡلَوۡهَا فَاصۡبِرُوۡۤا اَوۡ لَا تَصۡبِرُوۡا ۚ

न सब्र करो	या	फिर तुम सब्र करो	उस में दाख़िल हो जाओ	15	दिखाई नहीं देता तुम्हें	या तुम	यह	तो क्या जादू

سَوَآءٌ عَلَيۡكُمۡ ؕ اِنَّمَا تُجۡزَوۡنَ مَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۶﴾ اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ

बेशक मुत्तक़ी (जमा)	16	जो तुम करते थे	सो इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा	तुम पर	बराबर

فِىۡ جَنّٰتٍ وَّنَعِيۡمٍ ۙ﴿۱۷﴾ فٰكِهِيۡنَ بِمَاۤ اٰتٰٮهُمۡ رَبُّهُمۡ ۚ وَوَقٰٮهُمۡ

और बचाया उन्हें	उन के रब ने	उस के साथ जो दिया उन्हें	ख़ुश होंगे	17	और नेमतों	बाग़ों में

رَبُّهُمۡ عَذَابَ الۡجَحِيۡمِ ﴿۱۸﴾ كُلُوۡا وَاشۡرَبُوۡا هَنِيۡٓــًٔا ۢ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۙ﴿۱۹﴾

19	जो तुम करते थे	उस के बदले में	रचते पचते	और तुम पियो	तुम खाओ	18	दोज़ख़	अ़ज़ाब	उन के रब ने

مُتَّكِـِٕيۡنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصۡفُوۡفَةٍ ۚ وَزَوَّجۡنٰهُمۡ بِحُوۡرٍ عِيۡنٍ ﴿۲۰﴾ وَالَّذِيۡنَ

और जो लोग	20	बड़ी आँखों वाली हूरें	और उन की ज़ौजियत में दिया हम ने	सफ़ बस्ता	तख़्तों पर	तकिया लगाए हुए

اٰمَنُوۡا وَاتَّبَعَتۡهُمۡ ذُرِّيَّتُهُمۡ بِاِيۡمَانٍ اَلۡحَقۡنَا بِهِمۡ ذُرِّيَّتَهُمۡ وَمَاۤ

और	उन की औलाद	उन के साथ	हम ने मिला दिया	ईमान के साथ	उन की औलाद	और उन्हों ने पैरवी की	ईमान लाए

اَلَتۡنٰهُمۡ مِّنۡ عَمَلِهِمۡ مِّنۡ شَىۡءٍ ؕ كُلُّ امۡرِیًٔۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيۡنٌ ﴿۲۱﴾

21	रहन	उस ने कमाया (आमाल)	उस में जो	हर आदमी	कोई चीज़ (कुछ)	उन के अ़मल से	कमी नहीं की हम ने

وَاَمۡدَدۡنٰهُمۡ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحۡمٍ مِّمَّا يَشۡتَهُوۡنَ ﴿۲۲﴾ يَتَنَازَعُوۡنَ فِيۡهَا

उस में	लपक लपक कर ले रहे होंगे	22	जो उन का जी चाहेगा	उस से	और गोश्त	फलों के साथ	और हम उन की मदद करेंगे

كَاۡسًا لَّا لَغۡوٌ فِيۡهَا وَلَا تَاۡثِيۡمٌ ﴿۲۳﴾ وَيَطُوۡفُ عَلَيۡهِمۡ غِلۡمَانٌ لَّهُمۡ

उन के लिए	ख़िदमतगार लड़के	उन पर-के	और इर्द गिर्द फिरेंगे	23	और न गुनाह की बात	उस में	न बकवास	प्याला

كَاَنَّهُمۡ لُـؤۡلُـؤٌ مَّكۡنُوۡنٌ ﴿۲۴﴾ وَاَقۡبَلَ بَعۡضُهُمۡ عَلٰى بَعۡضٍ

बाज़ पर (दूसरे की तरफ़)	उन में से बाज़ (एक)	और मुतवज्जेह होगा	24	छुपा कर रखे हुए	मोती	गोया वह

يَّتَسَآءَلُوۡنَ ﴿۲۵﴾ قَالُوۡۤا اِنَّا كُنَّا قَبۡلُ فِىۡۤ اَهۡلِنَا مُشۡفِقِيۡنَ ﴿۲۶﴾

26	डरते थे	अपने अहले ख़ाना में	पहले	बेशक हम थे	वह कहेंगे	25	आपस में पूछते हुए

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيۡنَا وَوَقٰٮنَا عَذَابَ السَّمُوۡمِ ﴿۲۷﴾ اِنَّا كُنَّا مِنۡ قَبۡلُ

इस से क़ब्ल	बेशक हम थे	27	गर्म हवा (लू)	अ़ज़ाब	और हमें बचा लिया	हम पर	तो एहसान किया अल्लाह ने

ع ١ ٢٨ ٣ نَدۡعُوۡهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡبَـرُّ الرَّحِيۡمُ ﴿۲۸﴾ فَذَكِّرۡ فَمَاۤ اَنۡتَ بِنِعۡمَتِ رَبِّكَ

अपना रब	फ़ज़्ल से	तो आप (स) नहीं	पस आप (स) नसीहत करें	28	रहम करने वाला	एहसान करने वाला	वही	बेशक वह	हम उस को पुकारते

بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجۡنُوۡنٍ ؕ﴿۲۹﴾ اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ

उस के साथ	हम मुन्तज़िर हैं	शायर	वह कहते हैं	क्या	29	दीवाना	और न	काहिन

رَيۡبَ الۡمَنُوۡنِ ﴿۳۰﴾ قُلۡ تَرَبَّصُوۡا فَاِنِّىۡ مَعَكُمۡ مِّنَ الۡمُتَرَبِّصِيۡنَ ؕ﴿۳۱﴾

31	इन्तिज़ार करने वाले	से	तुम्हारे साथ	बेशक मैं	तुम इन्तिज़ार करो	फ़रमा दें	30	ज़माना	हवादिस

तो क्या यह जादू है? या तुम को दिखाई नहीं देता? (15) उस में दाख़िल हो जाओ, फिर तुम सब्र करो या न सब्र करो, तुम्हारे लिए बराबर है, इस के सिवा नहीं कि जो तुम करते थे तुम्हें (उस का) बदला दिया जाएगा। (16) बेशक मुत्तक़ी (बहिश्त के) बाग़ों और नेमतों में होंगे। (17) उस के साथ ख़ुश होंगे जो उन के रब ने उन्हें दिया, और उन के रब ने उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा लिया। (18) तुम खाओ और पियो मज़े से (जी भर कर) उस के बदले में जो तुम करते थे। (19) तख़्तों पर सफ़ बस्ता तकिये लगाए हुए। और हम उन की शादी कर देंगे बड़ी आँखों वाली हूरों से। (20) और जो लोग ईमान लाए और उन की औलाद ने ईमान के साथ उन की पैरवी की, हम ने उन की औलाद को उन के साथ मिला दिया और हम ने उन के अ़मल से कुछ कमी नहीं की, हर आदमी अपने आमाल में रहन है। (21) और हम उन की मदद करेंगे फलों और गोश्त से, जो उन का जी चाहेगा। (22) वह एक दोसरे से प्याले लपक लपक कर ले रहे होंगे जिस में न बकवास होगी न गुनाह की बात। (23) और उन के इर्द गिर्द फिरेंगे ख़िदमतगार लड़के। गोया वह छुपा कर रखे हुए मोती हैं। (24) और उन में से एक दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह होगा आपस में पूछते हुए। (25) वह कहेंगे बेशक हम इस से पहले अहले ख़ाना में डरते थे। (26) तो अल्लाह ने हम पर एहसान किया और हमें बचा लिया लू के अ़ज़ाब से। (27) बेशक इस से क़ब्ल हम उस को पुकारते थे, बेशक वही एहसान करने वाला, रहम करने वाला है। (28) पस आप (स) नसीहत करते रहें, पस आप (स) अपने रब के फ़ज़्ल से न काहिन हैं न दीवाने। (29) क्या वह कहते हैं कि यह शायर है, हम उस के साथ हवादिसे ज़माने के मुन्तज़िर हैं। (30) आप (स) फ़रमा दें तुम इन्तिज़ार करो, बेशक मैं (भी) तुम्हारे साथ इन्तिज़ार करने वालों में से हूँ। (31)

क्या उन की अ़क़्लें उन्हें यही सिखाती हैं? या वह सरकश लोग हैं। (32)
क्या वह कहते हैं कि उस ने उसे (क़ुरआन) को घड़ लिया है (नहीं) बल्कि वह ईमान नहीं लाते। (33)
तो चाहिए कि वह उस जैसी एक बात ले आएं अगर वह सच्चे हैं। (34)
क्या वह पैदा किए गए हैं बग़ैर किसी शै (बनाने वाले) के, या वह (ख़ुद) पैदा करने वाले हैं। (35)
क्या उन्हों ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को? (नहीं) बल्कि वह यक़ीन नहीं रखते। (36)
क्या उन के पास तेरे रब (की रहमत) के ख़ज़ाने हैं? या वह दारोग़े हैं? (37)
क्या उन के पास कोई सीढ़ी है? जिस पर (चढ़ कर) वह सुनते हैं, तो चाहिए कि उन का सुनने वाला कोई खुली सनद लाए। (38)
क्या उस के बेटियां और तुम्हारे लिए बेटे? (39)
क्या आप (स) उन से मांगते हैं कोई अजर? कि वह तावान (के बोझ) से दबे जाते हैं। (40)
क्या उन के पास (इल्मे) ग़ैब है? कि वह लिख लेते हैं। (41)
क्या वह इरादा रखते हैं किसी दाओ का? तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया वही दाओ में गिरफ़्तार होंगे। (42)
क्या उन के लिए अल्लाह के सिवा कोई माबूद है? अल्लाह उस से पाक है जो वह शिर्क करते हैं। (43)
और अगर वह आस्मान से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वह कहते हैं: बादल जमा हुआ एक के ऊपर एक। (44)
पस तुम उन को छोड़ दो यहां तक कि वह मिलें (देख लें) अपना वह दिन जिस में वह बेहोश कर दिए जाएंगे। (45)
जिस दिन उन का दाओ कुछ भी उन के काम न आएगा और न उन की मदद की जाएगी। (46)
और बेशक जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उन के लिए उस के अ़लावा अ़ज़ाब है। लेकिन उन में अक्सर नहीं जानते। (47)
और आप (स) अपने रब के हुक्म पर सब्र करें, बेशक आप (स) हमारी हिफ़ाज़त में हैं और आप (स) अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकीज़गी बयान करें जिस वक़्त आप (स) उठें। (48)
और रात में (भी), पस उस की पाकीज़गी बयान करें और सितारों के पीठ फेरते (ग़ाइब होते) वक़्त (भी)। (49)

اَمۡ تَاۡمُرُهُمۡ اَحۡلَامُهُمۡ بِهٰذَاۤ اَمۡ هُمۡ قَوۡمٌ طَاغُوۡنَ ﴿٣٢﴾ اَمۡ يَقُوۡلُوۡنَ تَقَوَّلَهٗ

इस ने उसे घड़ लिया है	क्या वह कहते हैं?	32	सरकश लोग	या वह	यही	उन की अ़क़्लें	क्या हुक्म देती (सिखाती) हैं उन्हें

بَلۡ لَّا يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٣٣﴾ فَلۡيَاۡتُوۡا بِحَدِيۡثٍ مِّثۡلِهٖۤ اِنۡ كَانُوۡا صٰدِقِيۡنَ ﴿٣٤﴾

34	सच्चे	अगर वह हैं	इस जैसी	एक बात	तो चाहिए कि वह ले आएं	33	वह ईमान नहीं लाते	बल्कि

اَمۡ خُلِقُوۡا مِنۡ غَيۡرِ شَىۡءٍ اَمۡ هُمُ الۡخٰلِقُوۡنَ ﴿٣٥﴾ اَمۡ خَلَقُوا

क्या उन्हों ने पैदा किए?	35	पैदा करने वाले	या वह	बग़ैर किसी शै	से	क्या वह पैदा किए गए हैं

السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ ۚ بَلۡ لَّا يُوۡقِنُوۡنَ ﴿٣٦﴾ اَمۡ عِنۡدَهُمۡ خَزَآئِنُ رَبِّكَ

तेरा रब	ख़ज़ाने	क्या उन के पास	36	वह यक़ीन नहीं रखते	बल्कि	और ज़मीन	आस्मान (जमा)

اَمۡ هُمُ الۡمُصَۜيۡطِرُوۡنَ ﴿٣٧﴾ اَمۡ لَهُمۡ سُلَّمٌ يَّسۡتَمِعُوۡنَ فِيۡهِ ۚ فَلۡيَاۡتِ

तो चाहिए कि लाए	उस में-पर	वह सुनते हैं	कोई सीढ़ी	क्या उन के लिए-पास	37	दारोग़े	या वह

مُسۡتَمِعُهُمۡ بِسُلۡطٰنٍ مُّبِيۡنٍ ﴿٣٨﴾ اَمۡ لَهُ الۡبَنٰتُ وَلَكُمُ الۡبَنُوۡنَ ﴿٣٩﴾

39	बेटे	और तुम्हारे लिए	बेटियां	क्या उस के लिए	38	खुली	कोई सनद	उन का सुनने वाला

اَمۡ تَسۡـَٔـلُهُمۡ اَجۡرًا فَهُمۡ مِّنۡ مَّغۡرَمٍ مُّثۡقَلُوۡنَ ﴿٤٠﴾ اَمۡ عِنۡدَهُمُ الۡغَيۡبُ

ग़ैब	क्या उन के पास	40	दबे जाते हैं	तावान से	तो वह	कोई अजर	क्या तुम उन से मांगते हो

فَهُمۡ يَكۡتُبُوۡنَ ﴿٤١﴾ اَمۡ يُرِيۡدُوۡنَ كَيۡدًا ؕ فَالَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا هُمُ

वही	तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया	किसी दाओ	क्या वह इरादा रखते हैं	41	पस वह लिख लेते हैं

الۡمَكِيۡدُوۡنَ ﴿٤٢﴾ اَمۡ لَهُمۡ اِلٰهٌ غَيۡرُ اللّٰهِ ؕ سُبۡحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشۡرِكُوۡنَ ﴿٤٣﴾

43	उस से जो शिर्क करते हैं	पाक है अल्लाह	अल्लाह के सिवा	कोई माबूद	क्या उन के लिए	42	दाओ में गिरफ़्तार होंगे

وَاِنۡ يَّرَوۡا كِسۡفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوۡلُوۡا سَحَابٌ مَّرۡكُوۡمٌ ﴿٤٤﴾

44	तह ब तह (जमा हुआ)	बादल	वह कहते हैं	गिरता हुआ	आस्मान से	कोई टुकड़ा	वह देखें	और अगर

فَذَرۡهُمۡ حَتّٰى يُلٰقُوۡا يَوۡمَهُمُ الَّذِىۡ فِيۡهِ يُصۡعَقُوۡنَ ﴿٤٥﴾ يَوۡمَ

जिस दिन	45	बेहोश कर दिए जाएंगे	उस में	वह जो	अपना दिन	वह मिलें	यहां तक कि	पस छोड़ दो उन को

لَا يُغۡنِىۡ عَنۡهُمۡ كَيۡدُهُمۡ شَيۡـًٔا وَّلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ﴿٤٦﴾ وَاِنَّ

और बेशक	46	मदद किए जाएंगे	और न वह	कुछ भी	उन का दाओ	उन से-का	न काम आएगा

لِلَّذِيۡنَ ظَلَمُوۡا عَذَابًا دُوۡنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ﴿٤٧﴾

47	नहीं जानते	उन में से अक्सर	और लेकिन	वरे-अ़लावा उस	अ़ज़ाब	उन लोगों के लिए जिन्हों ने ज़ुल्म किया

وَاصۡبِرۡ لِحُكۡمِ رَبِّكَ فَاِنَّكَ بِاَعۡيُنِنَا وَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ

और आप (स) पाकीज़गी बयान करें अपने रब की तारीफ़ के साथ	हमारी आँखों (हिफ़ाज़त) में	बेशक आप (स)	अपने रब के हुक्म पर	और आप (स) सब्र करें

حِيۡنَ تَقُوۡمُ ﴿٤٨﴾ وَمِنَ الَّيۡلِ فَسَبِّحۡهُ وَاِدۡبَارَ النُّجُوۡمِ ﴿٤٩﴾ ع ٢ / ٢١

49	सितारों	और पीठ फेरते	पस उस की पाकीज़गी बयान करें	रात	और से (में)	48	आप (स) उठें	जिस वक़्त

آيَاتُهَا ٦٢ ❀ سُوْرَةُ النَّجْمِ (٥٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3	(53) सूरतुन नज्म सितारा	आयात 62

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالنَّجْمِ اِذَا هَوٰى ۝١ مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۝٢ وَمَا يَنْطِقُ عَنِ

से	और वह नहीं बात करते	2	वह भटके	और न	तुम्हारे रफ़ीक़	न बहके	1	वह ग़ाइब होने लगे	जब	सितारे की क़सम

الْهَوٰى ۝٣ اِنْ هُوَ اِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۝٤ عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۝٥

5	सख़्त कुव्वतों वाला	उस ने उसे सिखाया	4	भेजी जाती है	वहि	वह सिर्फ़	नहीं	3	ख़्वाहिश

ذُوْ مِرَّةٍ ؕ فَاسْتَوٰى ۝٦ وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۝٧ ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۝٨

8	फिर और नज़्दीक हुआ	फिर वह नज़्दीक हुआ	7	सब से बुलन्द	किनारे पर	और वह	6	फिर सामने आया	ताक़तों वाला

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝٩ فَاَوْحٰٓى اِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ۝١٠

10	जो उस ने वहि की	अपना बन्दा	तरफ़	तो उस ने वहि की	9	या उस से कम	दो किनारे	कमान	तो वह था (रह गई)

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ۝١١ اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ۝١٢ وَلَقَدْ رَاٰهُ

और तहक़ीक़ उस ने देखा उसे	12	जो उस ने देखा	पर	तो क्या तुम झगड़ते हो उस से	11	जो उस ने देखा	दिल	न झूट कहा

نَزْلَةً اُخْرٰى ۝١٣ عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ۝١٤ عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۝١٥

15	जन्नतुल मावा	उस के नज़्दीक	14	सिदरतुल मुन्तहा	नज़्दीक	13	दूसरी मरतबा

اِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۝١٦ مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ۝١٧

17	और न हद से बढ़ी	आँख	न कजी की	16	जो छा रहा था	सिदरह	जब छा रहा था

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ۝١٨ اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ۝١٩

19	और उज़्ज़ा	लात	तो क्या तुम ने देखा?	18	बड़ी	अपना रब	निशानियां	से	तहक़ीक़ उस ने देखी

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ۝٢٠ اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ۝٢١

21	औरतें	और उस के लिए	मर्द	क्या तुम्हारे लिए	20	तीसरी एक और	और मनात

تِلْكَ اِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ۝٢٢ اِنْ هِيَ اِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ

तुम	तुम ने वह नाम रख लिए हैं	मगर-सिर्फ़ नाम	यह	नहीं	22	बेढंगी	यह बांट तक़्सीम	यह

وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ

वह नहीं पैरवी करते	सनद	कोई	उस की	नहीं उतारी अल्लाह ने	और तुम्हारे बाप दादा

اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ

उन के रब से	और (हालांकि) पहुँच चुकी उन के पास	नफ़्स (जमा)	और जो ख़्वाहिश	मगर-सिर्फ़ गुमान

ع ١ ٢٥ ٥ الْهُدٰى ۝٢٣ اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ۝٢٤ فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ۝٢٥

25	और दुनिया	पस अल्लाह ही के लिए आख़िरत	24	जिस की वह तमन्ना करे	इन्सान के लिए	क्या	23	हिदायत

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

सितारे की क़सम! जब वह ग़ाइब होने लगे। (1) तुम्हारे रफ़ीक़ (मुहम्मद स) न बहके और न वह भटके। (2) और वह अपनी ख़्वाहिश से बात नहीं करते। (3) वह सिर्फ़ वहि है जो भेजी जाती है। (4) उस को सिखाया उस सख़्त कुव्वत वाले, ताक़तों वाले (फ़रिश्ते) ने। (5) फिर उस ने क़स्द किया (रसूल स के सामने आया)। (6) और वह बुलन्द किनारे पर था। (7) फिर वह नज़्दीक हुआ, फिर और नज़्दीक हुआ। (8) तो वह कमान के दो किनारों के (फ़ासिले के) बराबर रह गया या उस से भी कम। (9) तो उस ने वहि की अपने बन्दे की तरफ़ जो वहि की। (10) जो उस ने (आँखों से) देखा (उस के) दिल ने तस्दीक़ की। (11) क्या जो उस ने देखा तुम उस से उस पर झगड़ते हो? (12) और तहक़ीक़ उस ने उसे दूसरी मरतबा देखा। (13) सिदरतुल मुन्तहा के नज़्दीक। (14) उस के नज़्दीक जन्नतुल मावा (आरामगाहे बहिश्त) है। (15) जब सिदरह पर छा रहा था जो छा रहा था। (16) आँख ने न कजी की और न वह हद से बढ़ी। (17) तहक़ीक़ उस ने अपने रब की बड़ी निशानियां देखीं। (18) क्या तुम ने देखा है लात और उज़्ज़ा, (19) और तीसरी एक और मनात को? (20) क्या तुम्हारे लिए मर्द (बेटे) हैं और उस के लिए औरतें (बेटियां)? (21) यह बांट तक़्सीम बेढंगी है। (22) यह (कुछ) नहीं सिर्फ़ नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं, अल्लाह ने नहीं उतारी उस की कोई सनद, वह नहीं पैरवी करते मगर सिर्फ़ गुमान और ख़्वाहिशें नफ़्स की, हालांकि उन के रब की तरफ़ से उन के पास हिदायत पहुँच चुकी है। (23) क्या इन्सान के लिए वह जो तमन्ना करे? (24) पस अल्लाह ही के लिए आख़िरत और दुनिया। (25)

और आस्मानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं जिन की सिफ़ारिश कुछ भी नफ़ा नहीं देती मगर उस के बाद कि इजाज़त दे अल्लाह जिस के लिए चाहे और पसंद फ़रमाए। (26) बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वह अलबत्ता फ़रिश्तों के नाम औ़रतों जैसे रखते हैं। (27) और उन्हें उस का कोई इल्म नहीं, वह सिर्फ़ गुमान की पैरवी करते हैं, और गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में कुछ नफ़ा नहीं देता। (28) पस आप (स) उस से मुँह फेर लें जो हमारी याद से रूगर्दां हुआ, और वह न चाहता हो सिवाए दुनिया की ज़िन्दगी। (29) यह उन के इल्म की रसाई (हद) है, बेशक तेरा रब उसे ख़ूब जानता है जो उस के रास्ते से गुमराह हुआ और वह उसे ख़ूब जानता है जिस ने हिदायत पाई। (30) और अल्लाह ही के लिए है जो कुछ आस्मानों और जो ज़मीन में है ताकि जिन लोगों ने बुराई की उन्हें उन के आमाल का बदला दे, और उन्हें जज़ा दे जिन लोगों ने भलाई के साथ नेकी की। (31) जो छोटे गुनाहों के सिवा बड़े गुनाहों और बेहयाइयों से बचते हैं, बेशक तुम्हारा रब वसीअ़ मग़्फ़िरत वाला है, वह तुम्हें ख़ूब जानता है जब उस ने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया और जब तुम अपनी माँओं के पेटों में बच्चे थे, पस तुम अपने आप को पाकीज़ा न समझो, वह उसे ख़ूब जानता है जिस ने परहेज़गारी की। (32) तो क्या तू ने देखा उस को जिस ने रूगर्दानी की। (33) और थोड़ा (माल) दिया और (फिर) बन्द कर दिया। (34) क्या उस के पास इल्मे ग़ैब है? तो वह देख रहा है। (35) क्या वह ख़बर नहीं दिया गया (क्या उसे ख़बर नहीं) जो मूसा (अ) के सहीफ़ों में है। (36) और इब्राहीम (अ) जिस ने (अपना क़ौल) पूरा किया। (37) कोई बोझ उठाने वाला नहीं उठाता किसी दूसरे का बोझ। (38) और यह कि किसी इन्सान के लिए नहीं (किसी को नहीं मिलता) मगर उसी क़द्र जितनी उस ने कोशिश की, (39)

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا

मगर	कुछ	उन की सिफ़ारिश	नफ़ा नहीं देती	आस्मानों में	फ़रिश्तों से	और कितने

مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ

ईमान नहीं रखते	जो लोग	बेशक	26	और वह पसंद फ़रमाए	जिस के लिए चाहे वह	इजाज़त दे अल्लाह	कि	उस के बाद

بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾ وَمَا لَهُمْ بِهٖ

उस का	और नहीं उन्हें	27	औरतों जैसा	नाम	फ़रिश्तों	अलबत्ता वह रखते हैं नाम	आख़िरत पर

مِنْ عِلْمٍ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ

यक़ीन से-मुक़ाबला	नफ़ा नहीं देता	और बेशक गुमान	मगर-सिर्फ़ गुमान	वह पैरवी करते	नहीं	कोई इल्म

شَيْـًٔا ۚ ﴿٢٨﴾ فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۙ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا

सिवाए	और वह न चाहता हो	हमारी याद से	रूगर्दां हुआ	जो	से	पस मुँह फेर लें	28	कुछ

الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ؕ ﴿٢٩﴾ ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ

वह ख़ूब जानता है	तेरा रब	बेशक	इल्म की	उन की रसाई	यह	29	दुनिया की ज़िन्दगी

بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾ وَلِلّٰهِ مَا فِي

में	और अल्लाह के लिए जो	30	हिदायत पाई	उसे-जिस	ख़ूब जानता है	और वह	उस के रास्ते से	गुमराह हुआ	उसे जो

السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا

उस की जो उन्हों ने किए (आमाल)	बुराई की	उन्हें जिन्हों ने	ताकि वह बदला दे	ज़मीन में	और जो	आस्मानों

وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۚ ﴿٣١﴾ اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ

कबीरा (बड़े) गुनाहों से	वह बचते हैं	जो लोग	31	भलाई के साथ	नेकी की	उन लोगों को जिन्हों ने	और जज़ा दे

وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ

जब	तुम्हें	और ख़ूब जानता है वह	वसीअ़ मग़्फ़िरत वाला	तुम्हारा रब	बेशक	छोटे गुनाह	मगर-सिवाए	और बेहयाइयों

اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْٓا

पस पाकीज़ा न समझो	अपनी माँएं	पेट (जमा)	में	बच्चे	तुम	और जब	ज़मीन से	उस ने पैदा किया तुम्हें

اَنْفُسَكُمْ ؕ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۚ ﴿٣٢﴾ اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ﴿٣٣﴾ وَاَعْطٰى

और उस ने दिया	33	जिस ने रूगर्दानी की	तो क्या तू ने देखा	32	परहेज़गारी की	उसे जो-जिस	वह ख़ूब जानता है	अपने आप

قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ﴿٣٤﴾ اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ﴿٣٥﴾ اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ

वह ख़बर नहीं दिया गया	क्या	35	तो वह देख रहा है	इल्मे ग़ैब	क्या उस के पास	34	और उस ने बन्द कर दिया	थोड़ा सा

بِمَا فِيْ صُحُفِ مُوْسٰى ﴿٣٦﴾ وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى ﴿٣٧﴾ اَلَّا تَزِرُ

कि नहीं उठाता	37	वफ़ा किया	वह जो-जिस	और इब्राहीम (अ)	36	मूसा (अ)	सहीफ़े	में	वह जो

وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ﴿٣٨﴾ وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ﴿٣٩﴾

39	जो उस ने कोशिश की	मगर	किसी इन्सान के लिए	नहीं	और यह कि	38	किसी दूसरे का बोझ	कोई बोझ उठाने वाला

وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ﴿٤٠﴾ ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ﴿٤١﴾ وَاَنَّ اِلٰى

और यह कि तरफ़	41	बदला पूरा पूरा	उसे बदला दिया जाएगा	फिर	40	अनक़रीब देखी जाएगी	उस की कोशिश	और यह कि

رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ﴿٤٢﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ﴿٤٣﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ

वही मारता है	और बेशक वह	43	और वह रुलाता है	वही हँसाता है	और बेशक	42	इन्तिहा	तुम्हारा रब

وَاَحْيَا ﴿٤٤﴾ وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٤٥﴾ مِنْ نُّطْفَةٍ

नुत्फ़े से	45	और औरत	मर्द	जोड़े	उस ने पैदा किए	और बेशक वह	44	और जिलाता है

اِذَا تُمْنٰى ﴿٤٦﴾ وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ﴿٤٧﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى

उस ने ग़नी किया	वही	और बेशक वह	47	दोबारा	(जी) उठाना	उसी पर	और यह कि	46	जब वह डाला जाता

وَاَقْنٰى ﴿٤٨﴾ وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ﴿٤٩﴾ وَاَنَّهٗۤ اَهْلَكَ عَادَا ۨالْاُوْلٰى ﴿٥٠﴾

50	आद पहली (क़दीम)	उस ने हलाक किया	और बेशक वह	49	शिअ़रा (सितारे) का रब	और बेशक वही	48	और सरमायादार किया

وَثَمُوْدَاۡ فَمَآ اَبْقٰى ﴿٥١﴾ وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ اَظْلَمَ

बड़े ज़ालिम	वह	वह थे	बेशक वह	उस से क़ब्ल	और क़ौमे नूह (अ)	51	पस उस ने बाक़ी न छोड़ा	और समूद

وَاَطْغٰى ﴿٥٢﴾ وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ﴿٥٣﴾ فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

नेमत	पस किस	54	जिस ने ढांप लिया	तो उस को ढांप लिया	53	दे मारा	और उलटने वाली बस्तियां	52	और बहुत सरकश

رَبِّكَ تَتَمَارٰى ﴿٥٥﴾ هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ﴿٥٦﴾ اَزِفَتِ

क़रीब आ गई	56	पहले डराने वाले	से	एक डराने वाला	यह	55	तू शक करेगा	अपना रब

الْاٰزِفَةُ ﴿٥٧﴾ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ﴿٥٨﴾ اَفَمِنْ

तो क्या-से	58	कोई खोलने वाला	अल्लाह के सिवा	उस के लिए उस का	नहीं	57	क़रीब आने वाली

هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ﴿٥٩﴾ وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ﴿٦٠﴾

60	और तुम नहीं रोते	और तुम हँसते हो	59	तुम तअ़ज्जुब करते हो	इस बात

وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ﴿٦١﴾ فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۩ ﴿٦٢﴾

62	अल्लाह के आगे और उस की इबादत करो	पस तुम सिजदा करो	61	ग़फ़लत करते (ग़ाफ़िल) हो	और तुम

ع ٣/٢٠ ٧ — السجدة ١٢

آيَاتُهَا ٥٥ ❀ سُوْرَةُ الْقَمَرِ (٥٤) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 — (54) सूरतुल क़मर — चाँद — आयात 55

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ﴿١﴾ وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا

और वह कहते हैं	वह मुँह फेर लेते हैं	कोई निशानी	और अगर वह देखते हैं	1	चाँद	और शक़ हो गया	क़ियामत	क़रीब आ गई

سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ﴿٢﴾ وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣﴾

3	वक़्ते मुक़र्रर	और हर काम	अपनी ख़्वाहिशात	और पैरवी की	और उन्हों ने झुटलाया	2	(हमेशा) से होता चला आया	जादू

और यह कि उस की कोशिश
अ़नक़रीब देखी जाएगी। (40)
फिर उसे पूरा पूरा बदला दिया
जाएगा। (41)
और यह कि तुम्हारे रब (ही) की
तरफ़ इन्तिहा है। (42)
और बेशक वही हँसाता और
रुलाता है। (43)
और बेशक वही मारता और
जिलाता है। (44)
और बेशक वही जिस ने मर्द और
औ़रत के जोड़े पैदा किए। (45)
नुत्फ़े से, जब वह (रहम में) डाला
जाता है, (46)
और यह कि उसी पर (उसी के
ज़िम्मे है) दोबारा जी उठाना। (47)
और बेशक उस ने ग़नी किया और
सरमायादार किया। (48)
और बेशक वही शिअ़रा सितारे का
रब है। (49)
और बेशक उस ने क़दीम आ़द को
हलाक किया, (50)
और समूद को, पस उस ने बाक़ी
न छोड़ा। (51)
और क़ौमे नूह (अ) को उस से
क़ब्ल, बेशक वह बड़े ज़ालिम और
बहुत सरकश थे। (52)
और (क़ौमे लूत अ की) उलटने
वाली बस्तियों को दे मारा। (53)
तो उस को ढांप लिया जिस ने
ढांप लिया। (54)
पस तू अपने रब की किस किस
नेमत में शक करेगा! (55)
यह पहले डराने वालों में से एक
डराने वाला। (56)
क़रीब आने वाली (क़ियामत) क़रीब
आ गई। (57)
अल्लाह के सिवा उस का कोई
खोलने वाला नहीं। (58)
तो क्या तुम उस बात से तअ़ज्जुब
करते हो? (59)
और तुम हँसते हो और तुम रोते
नहीं। (60)
और गा बजा कर टालते हो। (61)
पस तुम अल्लाह के आगे सिज्दा करो
और तुम उस की इबादत करो। (62)
अल्लाह के नाम से जो बहुत
मेहरबान, रहम करने वाला है
क़ियामत क़रीब आ गई और चाँद
शक़ हो गया। (1)
और अगर वह कोई निशानी देखते हैं तो
मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं कि (यह)
हमेशा से होता चला आया जादू है। (2)
और उन्हों ने झुटलाया और अपनी
ख़्वाहिशात की पैरवी की, और हर काम
के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है। (3)

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ مُزْدَجَرٌ ۙ﴿٤﴾ حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ

हिक्मते वालिग़ा (कामिल दानिशमन्दी)	4	डांट (इब्रत)	जिस में	ख़बरें (जमा)	से	और तहक़ीक़ आ गई उन के पास

فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۙ﴿٥﴾ فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۙ﴿٦﴾

6	शै नागवार	तरफ़	बुलाएगा एक बुलाने वाला	जिस दिन	उन से	सो तुम मुँह फेर लो	5	डराने वाले	तो न फ़ाइदा दिया

وقف لازم

خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۙ﴿٧﴾

7	परागन्दा	टिड्डियां	गोया कि वह	क़ब्रों से	वह निकलेंगे	उन की आँखें	झुकी हुई

مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ؕ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ﴿٨﴾ كَذَّبَتْ

झुटलाया	8	बड़ा सख़्त दिन	यह	काफ़िर (जमा)	कहेंगे	पुकारने वाले की तरफ़	लपकते हुए

قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ﴿٩﴾

9	और डराया धमकाया गया	दीवाना	और उन्हों ने कहा	हमारे बन्दे	तो उन्हों ने झुटलाया	क़ौमे नूह	इन से क़ब्ल

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ﴿١٠﴾ فَفَتَحْنَاۤ اَبْوَابَ السَّمَآءِ

आस्मान के दरवाज़े	तो हम ने खोल दिए	10	पस मेरी मदद कर	मग़लूब	कि मैं	अपना रब	पस उस ने पुकारा

بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۖ﴿١١﴾ وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰۤى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۚ﴿١٢﴾

12	(जो) मुक़र्रर हो चुका था	उस काम पर	पानी	पस मिल गया	चश्मे	ज़मीन	और हम ने जारी कर दिए	11	कस्रत से बरसने वाले पानी से

وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۙ﴿١٣﴾ تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ

उस के लिए जिस	बदला	हमारी आँखों के सामने	चलती थी	13	और कीलों वाली	तख़्तों वाली	पर	और हम ने सवार किया उसे

كَانَ كُفِرَ ﴿١٤﴾ وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَاۤ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٥﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ

मेरा अ़ज़ाब	पस कैसा हुआ	15	कोई नसीहत पकड़ने वाला	तो क्या है	एक निशानी	और तहक़ीक़ हम ने उसे रहने दिया	14	नाक़द्री की गई

وَنُذُرِ ﴿١٦﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿١٧﴾ كَذَّبَتْ

झुटलाया	17	कोई नसीहत पकड़ने वाला?	तो क्या है	नसीहत के लिए	क़ुरआन	और तहक़ीक़ हम ने आसान किया	16	और मेरा डराना

عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿١٨﴾ اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا

तेज़	हवा	उन पर	बेशक हम ने भेजी	18	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	तो कैसा	आद

فِيْ يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۙ﴿١٩﴾ تَنْزِعُ النَّاسَ ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ

तने	गोया कि वह	लोग	वह उखाड़ देती (फेंकती)	19	चलती ही गई	नहूसत के दिन	में

نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ﴿٢٠﴾ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٢١﴾ وَلَقَدْ

और अलबत्ता तहक़ीक़	21	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	सो कैसा	20	जड़ से उखड़ी हुई खजूर के पेड़

يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۚ﴿٢٢﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ﴿٢٣﴾

ع ١ ٢٢ ٨

23	डराने वालों को	झुटलाया समूद ने	22	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	नसीहत के लिए	हम ने आसान कर दिया क़ुरआन

فَقَالُوْۤا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗۤ ۙ اِنَّاۤ اِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٢٤﴾

24	और दीवानगी	अलबत्ता गुमराही में	बेशक हम उस सूरत में	हम पैरवी करें उस की	एक	अपने में से	क्या एक बशर	पस उन्हों ने कहा

और तहक़ीक़ उन के पास आ गई (वह) ख़बरें जिन में इब्रत है। (4)
कामिल दानिशमन्दी की बातें, पस उन्हें डराने वालों ने फ़ाइदा न दिया। (5)
सो तुम उन से मुँह फेर लो, जिस दिन बुलाएगा एक बुलाने वाला (फ़रिश्ता) नागवार शै की तरफ़। (6)
उन की आँखें झुकी हुई (होंगी), वह क़ब्रों से (इस तरह) निकलेंगे गोया कि वह परागन्दा टिड्डियां हैं। (7)
पुकारने वाले की तरफ़ लपकते हुए काफ़िर कहेंगेः यह बड़ा सख़्त दिन है। (8)
झुटलाया इन से क़ब्ल क़ौमे नूह (अ) ने, पस उन्हों ने हमारे बन्दे (नूह अ) को झुटलाया और उन्हों ने कहाः दीवाना, और उसे डराया धमकाया। (9)
पस उस ने अपने रब को पुकारा कि मैं मग़लूब हो चुका, पस तू मेरी मदद कर। (10)
तो हम ने कस्रत से बरसने वाले पानी से आस्मान के दरवाज़े खोल दिए। (11)
और ज़मीन से चश्मे जारी कर दिए, पस (ज़मीन आस्मान का) पानी उस काम पर मिल गया जो (इल्मे इलाही में) मुक़र्रर हो चुका था (क़ौमे नूह अ की ग़रक़ाबी के लिए)। (12)
और हम ने उसे तख़्तों और कीलों वाली (कश्ती पर) सवार किया। (13)
हमारी आँखों के सामने (हमारी निगरानी में) चलती थी उस के बदले के लिए जिस की नाक़द्री की गई। (14)
और तहक़ीक़ हम ने उसे (बतौर) निशानी रहने दिया। तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (15)
पस (देखो कि) कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना। (16)
और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए क़ुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत पकड़ने वाला? (17)
आद ने झुटलाया तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना? (18)
हम ने नहूसत के दिन में उन पर तुन्द ओ तेज़ हवा भेजी (जो) चलती ही गई। (19)
वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी गोया कि वह जड़ से उखड़े हुए खजूर के तने हैं। (20)
सो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना? (21)
और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए क़ुरआन को आसान कर दिया तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (22)
समूद ने डराने वालों (रसूलों) को झुटलाया। (23)
पस उन्हों ने कहाः क्या हम अपने में से एक बशर की पैरवी करें? बेशक उस सूरत में हम अलबत्ता गुमराही और दीवानगी में होंगे। (24)

ءَاُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ اَشِرٌ ﴿٢٥﴾ سَيَعْلَمُوْنَ

वह जल्द जान लेंगे	25	ख़ुद पसंद	बड़ा झूटा	बल्कि वह	हमारे दरमियान (हम में से)	उस पर	क्या डाला (नाज़िल किया) गया ज़िक्र (वहि)

غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ﴿٢٦﴾ اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ

उन के लिए	आज़माइश	ऊँटनी	भेजने वाले	बेशक हम	26	ख़ुद पसंद	बड़ा झूटा	कौन	कल

فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ﴿٢٧﴾ وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ

उन के दरमियान	तक़सीम कर दिया गया	कि पानी	और उन्हें ख़बर दे	27	और सब्र कर	सो तू इन्तिज़ार कर उन का

كُلُّ شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ﴿٢٨﴾ فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ﴿٢٩﴾

29	और कूंचें काट दीं	सो उस ने दस्त दराज़ी की	अपने साथी को	तो उन्हों ने पुकारा	28	हाज़िर किया गया (हाज़िर होना)	पीने की बारी	हर

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٠﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً

चिंघाड़	उन पर	बेशक हम ने भेजी	30	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	तो कैसा

وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ﴿٣١﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ

नसीहत के लिए	हम ने आसान किया क़ुरआन	और अलबत्ता तहक़ीक़	31	तरह सूखी रौन्दी हुई बाड़, बाड़ लगाने वाला	सो वह हो गए	एक

فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٣٢﴾ كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍۭ بِالنُّذُرِ ﴿٣٣﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَا

हम ने भेजी	बेशक हम	33	डराने वाले (रसूल)	लूत (अ) की क़ौम ने	झुटलाया	32	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है

عَلَيْهِمْ حَاصِبًا اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ۭ نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ﴿٣٤﴾ نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ۭ

अपनी तरफ़ से	फ़ज़्ल फ़रमा कर	34	सुबह सवेरे	हम ने बचा लिया उन्हें	सिवाए लूत के अहले ख़ाना	पत्थर बरसाने वाली आन्धी	उन पर

كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ ﴿٣٥﴾ وَلَقَدْ اَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا

तो वह झगड़ने लगे	हमारी पकड़ से	और तहक़ीक़ (लूत अ ने) उन्हें डराया	35	जो शुक्र करे	हम जज़ा देते हैं	इसी तरह

بِالنُّذُرِ ﴿٣٦﴾ وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ اَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا

पस चखो तुम	उन की आँखें	तो हम ने मिटा दीं	उस के मेहमान	से	और अलबत्ता तहक़ीक़ उन्हों ने (लूत अ से) लेना चाहा	36	डराने में

عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٧﴾ وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾ فَذُوْقُوْا

पस चखो तुम	38	ठहरने वाली (दाइमी)	अ़ज़ाब	सवेरे	सुबह आन पड़ा उन पर	और तहक़ीक़	37	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब

ع ٢ ١٨ ٩ عَذَابِيْ وَنُذُرِ ﴿٣٩﴾ وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٤٠﴾

40	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	नसीहत के लिए	क़ुरआन	और अलबत्ता तहक़ीक़ हम ने आसान किया	39	और मेरा डराना	मेरा अ़ज़ाब

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ﴿٤١﴾ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا

तमाम	हमारी आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	41	डराने वाले (रसूल)	फ़िरऔन वाले	और तहक़ीक़ आए

فَاَخَذْنٰهُمْ اَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾ اَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ

उन से	बेहतर	क्या तुम्हारे काफ़िर	42	साहिबे क़ुदरत	ग़ालिब	पकड़	पस हम ने उन्हें आ पकड़ा

اَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾ اَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

44	अपना बचाव कर लेने वाले	जमाअ़त	हम	वह कहते हैं	क्या	43	सहीफ़ों में	या तुम्हारे लिए नजात (माफ़ी नामा)

क्या हमारे दरमियान उस पर वहि नाज़िल की गई? (नहीं) बल्कि वह बड़ा झूटा, ख़ुद पसंद है। (25)
वह कल (जल्द ही) जान लेंगे कि कौन बड़ा झूटा, ख़ुद पसंद है। (26)
(ऐ सालेह अ) बेशक हम भेजने वाले हैं ऊँटनी उनकी आज़माइश के लिए, सो तू उन का (अनजाम देखने के लिए) इन्तिज़ार कर और सब्र कर। (27)
और उन्हें ख़बर दे कि पानी उन के दरमियान तक़सीम कर दिया गया है और हर एक को (अपनी) पीने की बारी पर हाज़िर होना है। (28)
तो उन्हों ने अपने साथी को पुकारा, सो उस ने दस्त दराज़ी की और (ऊँटनी) की कूंचें काट दीं। (29)
तो कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब और मेरा डराना? (30)
बेशक हम ने उन पर एक ही चिंघाड़ भेजी, सो वह हो गए बाड़े वाले की सूखी रौन्दी हुई बाड़ की तरह। (31)
और तहक़ीक़ हम ने नसीहत के लिए क़ुरआन को आसान कर दिया, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (32)
लूत (अ) की क़ौम ने रसूलों को झुटलाया। (33)
(तो) बेशक हम ने उन पर पत्थर बरसाने वाली आन्धी भेजी, लूत (अ) के अहले ख़ाना के सिवा कि हम ने बचा लिया उन्हें सुबह सवेरे, (34)
अपनी तरफ़ से फ़ज़्ल फ़रमा कर, इसी तरह हम जज़ा देते हैं (उस को) जो शुक्र करे। (35)
और तहक़ीक़ (लूत अ) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया तो वह डराने में झगड़ने (शक करने) लगे। (36)
और तहक़ीक़ उन्हों ने लूत (अ) से उन के मेहमानों को (बुरे इरादे से) लेना चाहा तो हम ने उन की आँखें मिटा दीं (चौपट कर दीं), पस मेरे अ़ज़ाब और मेरे डराने (का मज़ा) चखो। (37)
और तहक़ीक़ सुबह सवेरे उन पर दाइमी अ़ज़ाब आ पड़ा। (38)
पस मेरे अ़ज़ाब और डराने (का मज़ा) चखो। (39)
और तहक़ीक़ हम ने क़ुरआन को आसान किया है नसीहत के लिए, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला। (40)
और तहक़ीक़ क़ौमे फ़िरऔन के पास रसूल आए। (41)
उन्हों ने हमारी आयतों (अहकाम और निशानियों) को झुटलाया तमाम (की तमाम) तो हम ने उन्हें आ पकड़ा एक ग़ालिब और साहिबे क़ुदरत की पकड़ (की सूरत में)। (42)
क्या उन से तुम्हारे काफ़िर बेहतर हैं? या तुम्हारे लिए माफ़ी नामा है (क़दीम) सहीफ़ों में? (43)
क्या वह कहते हैं कि हम एक जमाअ़त अपना बचाव कर लेने वाले। (44)

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾ بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ

और क़ियामत	वादागाह उन की	बल्कि क़ियामत	45	पीठ	और वह फेर लेंगे (भागें गे)	जमाअ़त	अ़नक़रीब शिकस्त खाएगी

اَدْهٰى وَاَمَرُّ ﴿٤٦﴾ اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ﴿٤٧﴾ يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ وقف لازم

वह घसीटे जाएंगे	जिस दिन	47	और जहालत	गुमराही में	बेशक मुज्रिम (जमा)	46	और बड़ी तल्ख़	वह सख़्त

فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾ اِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ

हम ने उसे पैदा किया	शै	बेशक हम हर	48	जहन्नम	लगना	तुम चखो	अपने मुँह (जमा)	पर-बल	जहन्नम में

بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾ وَمَآ اَمْرُنَآ اِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ﴿٥٠﴾ وَلَقَدْ اَهْلَكْنَآ

और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं	50	आँख का	जैसे झपकना	एक	मगर-सिर्फ़	और नहीं हमारा हुक्म	49	एक अन्दाज़े के मुताबिक़

اَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿٥١﴾ وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

52	सहीफ़ों में	जो उन्हों ने की	और हर बात	51	कोई नसीहत हासिल करने वाला	तो क्या है	तुम जैसे

وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾ اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿٥٤﴾

54	और नहरें	बाग़ात में	बेशक मुत्तक़ी (जमा)	53	लिखी हुई	और बड़ी	छोटी	और हर

فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾ ع ١٥ ٣ ١٠

55	साहिबे क़ुदरत	बादशाह	नज़्दीक	सच्चाई का मुक़ाम	में

آيَاتُهَا ٧٨ ❀ (٥٥) سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3 | (55) सूरतुर रहमान
बेहद मेहरबान | आयात 78

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلرَّحْمٰنُ ﴿١﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿٢﴾ خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿٣﴾ عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿٤﴾

4	उस ने उसे सिखाया बात करना	3	उस ने पैदा किया इन्सान	2	उस ने सिखाया क़ुरआन	1	रहमान (अल्लाह)

اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿٥﴾ وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿٦﴾ وَالسَّمَآءَ

और आस्मान	6	वह सिज्दा में (सर बसजूद हैं)	और दरख़्त	और झाड़ियां-तारे	5	एक हिसाब से	और चाँद	सूरज

رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ﴿٧﴾ اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿٨﴾ وَاَقِيْمُوا

और क़ाइम करो	8	तराज़ू (तोल) में	हद से तजावुज़ करो	कि न	7	तराज़ू	और रखी	उस ने उसे बुलन्द किया

الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿٩﴾ وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا

उस ने उस को रखा (बिछाया)	और ज़मीन	9	तोल	और न घटाओ	इंसाफ़ से	वज़न (तोल)

لِلْاَنَامِ ﴿١٠﴾ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿١١﴾ وَالْحَبُّ

और ग़ल्ला	11	ग़िलाफ़ वाले	और खजूरें	मेवे	उस में	10	मख़्लूक़ के लिए

ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٣﴾

13	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	12	और ख़ुशबू के फूल	भूसे वाला

अ़नक़रीब यह जमाअ़त शिकस्त खाएगी और वह भागेंगे पीठ (फेर कर)। (45)
बल्कि क़ियामत उन की वादागाह है, और क़ियामत (की घड़ी) बहुत सख़्त और बड़ी तल्ख़ होगी। (46)
बेशक मुज्रिम गुमराही और जहालत में हैं। (47)
उस दिन वह अपने चेहरों के बल जहन्नम में घसीटे जाएंगे, (उन से कहा जाएगाः) तुम जहन्नम (की आग) लगने का मज़ा चखो। (48)
बेशक हम ने हर शै को एक अन्दाज़े के मुताबिक़ पैदा किया। (49)
और हमारा हुक्म सिर्फ़ एक (इशारा होता है) जैसे आँख का झपकना। (50)
और अलबत्ता हम हलाक कर चुके हैं तुम जैसे बहुत सों को, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला? (51)
और जो कुछ उन्हों ने किया सहीफ़ों में है। (52)
और हर छोटी बड़ी (बात) लिखी हुई है। (53)
बेशक मुत्तक़ी बाग़ात और नहरों में होंगे। (54)
साहिबे क़ुदरत बादशाह के नज़्दीक सच्चाई के मुक़ाम में। (55)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

रहमान (अल्लाह)। (1)
उस ने क़ुरआन सिखाया। (2)
उस ने इन्सान को पैदा किया। (3)
उस ने उसे बात करना सिखाया। (4)
सूरज और चाँद एक हिसाब से (गर्दिश में हैं)। (5)
और तारे और दरख़्त सर बसजूद हैं। (6)
और उस ने आस्मान को बुलन्द किया और तराज़ू रखी। (7)
कि तुम तोल में हद से तजावुज़ न करो। (8)
और तोल इंसाफ़ से क़ाइम करो, और तोल न घटाओ (कम न तोलो)। (9)
और उस ने ज़मीन को मख़्लूक़ के लिए बिछाया। (10)
उस में मेवे हैं और ग़िलाफ़ वाली खजूरें हैं। (11)
और ग़ल्ला भूसे वाला, और ख़ुशबू के फूल। (12)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (13)

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ﴿١٤﴾ وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ

शोला मारने वाली	जिन्नात	और उस ने पैदा किया	14	ठिकरी जैसी	खंखाती मिट्टी	से	उस ने पैदा किया इन्सान

مِّنْ نَّارٍ ۚ﴿١٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٦﴾ رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ

दोनों मश्रिक़ों	रब	16	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	15	आग से

وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ۚ﴿١٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ

दो दर्या	उस ने बहाए	18	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	17	दोनों मग़्रिब	और रब

يَلْتَقِيٰنِ ۙ﴿١٩﴾ بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ۚ﴿٢٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾

21	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	20	वह ज़ियादती नहीं करते (नहीं मिलते)	एक आड़	उन दोनों के दरमियान	19	एक दूसरे से मिले हुए

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۚ﴿٢٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٣﴾

23	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	22	और मूंगे	मोती	उन दोनों से	निकलते हैं

النصف

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَاٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۚ﴿٢٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतों	24	पहाड़ों की तरह	दर्या में	चलने वाली	कश्तियां	और उस के लिए

ع ۲۵ / ۱۱

تُكَذِّبٰنِ ۚ﴿٢٥﴾ كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۚ﴿٢٦﴾ وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ

साहिबे अ़ज़मत	तेरा रब	चेहरा (ज़ात)	और बाक़ी रहेगा	26	फ़ना होने वाला	जो इस (ज़मीन) पर	हर कोई	25	तुम झुटलाओगे

وَالْاِكْرَامِ ۚ﴿٢٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢٨﴾ يَسْئَلُهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ

आस्मानों में	जो कोई	उस से मांगता है	28	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	27	एहसान करने वाला

وَالْاَرْضِ ؕ كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِيْ شَاْنٍ ۚ﴿٢٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٠﴾

30	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	29	किसी न किसी काम में	वह	हर रोज़	और ज़मीन में

سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ۚ﴿٣١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٢﴾ يٰمَعْشَرَ

ऐ गिरोह	32	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	31	ऐ जिन ओ इन्स	तुम्हारी तरफ़	हम जल्द फ़ारिग़ (मुतवज्जुह) होते हैं

الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों के किनारे	से	तुम निकल भागो	कि	तुम से हो सके	अगर	और इन्स	जिन्न

وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۚ﴿٣٣﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो कौन सी नेमतों	33	लेकिन ज़ोर से	तुम नहीं निकल सकोगे	तो निकल भागो	और ज़मीन

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٤﴾ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ

और धुआँ	आग से	एक शोला	तुम पर	भेज दिया जाएगा	34	तुम झुटलाओगे	अपने रब

فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۚ﴿٣٥﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٦﴾ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ

आस्मान	फट जाएगा	फिर जब	36	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	35	तो मुक़ाबला न कर सकोगे

فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ۚ﴿٣٧﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾

38	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	37	जैसे सुर्ख़ चमड़ा	गुलाबी	तो वह होगा

उस ने इन्सान को पैदा किया खंखनाती मिट्टी से ठिकरी जैसी। (14)
और जिन्नात को शोले वाली आग से पैदा किया। (15)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (16)
रब है दोनों मश्रिक़ों और दोनों मग़्रिबों का। (17)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (18)
उस ने दो दर्या बहाए एक दूसरे से मिले हुए। (19)
उन दोनों के दरमियान एक आड़ है, वह (एक दूसरे से) नहीं मिलते। (20)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (21)
उन दोनों से निकलते हैं मोती और मूंगे। (22)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (23)
और उसी के लिए हैं चलने वाली कश्तियां दर्या में पहाड़ों की तरह। (24)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (25)
ज़मीन पर जो कोई है फ़ना होने वाला है। (26)
और बाक़ी रहेगी साहिबे अ़ज़मत एहसान करने वाले तेरे रब की ज़ात। (27)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (28)
जो कोई आस्मानों और ज़मीन में है, वह उसी से मांगता है, वह हर रोज़ किसी न किसी काम (नए हाल) में है। (29)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (30)
ऐ जिन्न ओ इन्स! (सब से फ़ारिग़ हो कर) हम जल्द तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जुह होते हैं। (31)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (32)
ऐ गिरोहे जिन्न और इन्स, अगर तुम से हो सके निकल भागने आस्मानों और ज़मीन के किनारों से तो निकल भागो, तुम नहीं निकल सकोगे, उस के लिए बड़ा ज़ोर चाहिए। (33)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (34)
तुम पर भेज दिया जाएगा एक शोला आग से, और धुआँ, तो मुक़ाबला न कर सकोगे। (35)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (36)
फिर जब फट जाएगा आस्मान, तो वह सुर्ख़ चमड़े जैसा गुलाबी हो जाएगा। (37)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (38)

पस उस दिन न पूछा जाएगा उस के (अपने) गुनाहों के बारे में किसी इन्सान से और न जिन्न से। (39) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (40) मुज्रिम पहचाने जाएंगे अपनी पेशानी से, फिर वह पेशानियों के (बालों) से और क़दमों से पकड़े जाएंगे। (41) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (42) यह है वह जहन्नम जिसे गुनाहगार झुटलाते थे। (43) वह उस के और खौलते हुए गर्म पानी के दरमियान फिरेंगे। (44) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (45) और जो अपने रब के हुज़ूर खड़ा होने से डरा, उस के लिए दो बाग़ हैं। (46) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे। (47) बहुत सी शाख़ों वाले। (48) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (49) (उन बाग़ों में) दो चश्मे जारी हैं। (50) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (51) उन दोनों (बाग़ों) में हर मेवे की दो, दो क़िस्में हैं। (52) तो कौन सी नेमतों को अपने रब की तुम झुटलाओगे? (53) फ़र्शों पर तकिया (लगाए होंगे) जिन के असतर रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों के मेवे नज़्दीक होंगे। (54) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (55) उन में निगाहें नीची रखने वालियां हैं, उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने उन से क़ब्ल और न किसी जिन्न ने। (56) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (57) गोया वह याक़ूत और मूंगे हैं। (58) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (59) एहसान का बदला एहसान के सिवा और क्या हो सकता है। (60) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (61) और उन दोनों के अ़लावा दो बाग़ और भी हैं। (62) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (63) निहायत गहरे सब्ज़ रंग के। (64) तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (65) उन दोनों (बाग़ात) में दो चश्मे हैं फ़ौवारों की तरह उबलते हुए। (66)

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतों	39	और न जिन्न	किसी इन्सान	उस के गुनाहों के मुतअ़ल्लिक़	न पूछा जाएगा	पस उस दिन

تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾ يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ

पेशानियों से	फिर वह पकड़े जाएंगे	अपनी पेशानी से	मुज्रिम (जमा)	पहचाने जाएंगे	40	तुम झुटलाओगे

وَالْاَقْدَامِ ﴿٤١﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٢﴾ هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ

झुटलाते हैं	वह जिसे	जहन्नम	यह	42	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	41	और क़दमों

بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो कौन सी नेमतों	44	खौलते हुए	गर्म पानी	और दरमियान	उस के दरमियान	वह फिरेंगे	43	उसे मुज्रिम (जमा) गुनाहगार

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾ وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो कौन सी नेमतों	46	दो बाग़	अपने रब के हुज़ूर खड़ा होना	जो डरा	और उस के लिए	45	तुम झुटलाओगे	अपने रब

وقف لازم

ع ٢
١٢

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾ ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾ فِيْهِمَا

उन दोनों में	49	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	48	बहुत सी शाख़ों वाले	47	तुम झुटलाओगे	अपने रब

عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾ فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ

हर	से-की	उन दोनों में	51	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	50	जारी हैं	दो चश्मे

فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ

फ़र्शों पर	तकिया लगाए हुए	53	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	52	दो क़िस्में	मेवे

بَطَآئِنُهَا مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ۭ وَجَنَا الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतों	54	नज़्दीक	दोनों बाग़	और मेवे	रेशम के	उन के असतर

تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾ فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ

उन से क़ब्ल	इन्सान ने	उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी	निगाहें	बन्द (नीचे) रखने वाली	उन में	55	तुम झुटलाओगे

وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾ كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾

58	और मूंगे	याकूत	गोया कि	57	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	56	और न किसी जिन्न

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾ هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا

सिवा	एहसान	क्या बदला	59	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾ وَمِنْ دُوْنِهِمَا

और उन दोनों के अ़लावा	61	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	60	एहसान

جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾ مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾

64	निहायत गहरे सब्ज़ रंग के	63	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों	62	दो बाग़

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾ فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾

66	बशिद्दत जोश मारने वाले	दो चश्मे	उन दोनों में	65	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾ فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

68	और अनार	खजूर के दरख़्त	मेवे	उन दोनों में	67	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतों

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾ فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ

तो कौन सी नेमतें	70	ख़ूबसूरत	ख़ूब सीरत	उन में	69	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतें

رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾ حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतें	72	ख़ेमों में	रुकी रहने वाली (पर्दा नशीन)	हूरें	71	तुम झुटलाओगे	अपने रब

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا

अपने रब	तो कौन सी नेमतें	74	और न किसी जिन्न	उन से क़ब्ल	किसी इन्सान	उन्हें हाथ नहीं लगाया	73	तुम झुटलाओगे

تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾ مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ﴿٧٦﴾

76	नफ़ीस	और ख़ूबसूरत	सब्ज़	मसनदों पर	तकिया लगाए हुए	75	तुम झुटलाओगे

ع ٣ ٢٤ ١٣

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٧﴾ تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ﴿٧٨﴾

78	और एहसान करने वाला	साहिबे जलाल	तुम्हारा रब	नाम	बरकत वाला	77	तुम झुटलाओगे	अपने रब	तो कौन सी नेमतें

آيَاتُهَا ٩٦ ❀ سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ (٥٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकुआत 3 — (56) सूरतुल वाक़िआ वाक़े होनेवाली — आयात 96

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وقف لازم

اِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ﴿١﴾ لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ﴿٢﴾ خَافِضَةٌ

पस्त करने वाली	2	कुछ झूट	उस के वाक़े होने में	नहीं	1	वाक़े होने वाली	वाक़े हो जाएगी	जब

رَّافِعَةٌ ﴿٣﴾ اِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا ﴿٤﴾ وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ﴿٥﴾

5	और रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे पहाड़, रेज़ा रेज़ा हो कर	4	सख़्त ज़लज़ला	ज़मीन	लरज़ने लगेगी	जब	3	बुलन्द करने वाली

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْۢبَثًّا ﴿٦﴾ وَّكُنْتُمْ اَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ﴿٧﴾ فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ

तो दाएं हाथ वाले	7	तीन	जोड़े (गिरोह)	और तुम हो जाओगे	6	परागन्दा	ग़ुबार	फिर हो जाएंगे

مَآ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿٨﴾ وَاَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ مَآ اَصْحٰبُ الْمَشْـَٔمَةِ ﴿٩﴾

9	बाएं हाथ वाले	क्या	और बाएं हाथ वाले	8	दाएं हाथ वाले	क्या

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ﴿١٠﴾ اُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿١١﴾ فِيْ جَنّٰتِ

बाग़ात	में	11	मुक़र्रब (जमा)	यही हैं	10	सबक़त ले जाने वाले हैं	और सबक़त ले जाने वाले

النَّعِيْمِ ﴿١٢﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٤﴾

14	पिछलों से-में	और थोड़े	13	पहलों से-में	बड़ी जमाअत	12	नेमत

عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ ﴿١٥﴾ مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ ﴿١٦﴾

16	आमने सामने	उस पर	तकिया लगाए हुए	15	सोने के तारों से बुने हुए	तख़्तों पर

तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (67)
उन दोनों (बाग़ात) में मेवे औ खजूर के दरख़्त और अनार होंगे। (68)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (69)
उन में ख़ूब सीरत, ख़ूबसूरत (बीवियां) होंगी। (70)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (71)
ख़ेमों में पर्दा नशीन हूरें। (72)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (73)
और उन से क़ब्ल उन्हें हाथ नहीं लगाया किसी इन्सान ने और न किसी जिन्न ने। (74)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (75)
सब्ज़, ख़ूबसूरत, नफ़ीस मसनदों पर तकिया लगाए हुए। (76)
तो अपने रब की कौन सी नेमतों को तुम झुटलाओगे? (77)
तुम्हारे साहिबे जलाल, एहसान करने वाले रब का नाम बरकत वाला है। (78)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब वाक़े हो जाएगी वाक़े होने वाली (क़ियामत)। (1)
उस के वाक़े होने में कुछ झूट नहीं। (2)
(किसी को) पस्त करने वाली (किसी को) बुलन्द करने वाली। (3)
जब ज़मीन सख़्त ज़लज़ले से लरज़ने लगेगी। (4)
और पहाड़ टूट फूट कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे। (5)
फिर परागन्दा ग़ुबार हो जाएंगे। (6)
और तुम हो जाओगे तीन गिरोह। (7)
तो दाएं हाथ वाले (सुबहानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (8)
और बाएं हाथ वाले (अफ़्सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (9)
और सबक़त ले जाने वाले (माशा अल्लाह) सबक़त ले जाने वाले हैं! (10)
यही हैं (अल्लाह के) मुक़र्रब। (11)
नेमतों वाले बाग़ात में। (12)
बड़ी जमाअत पहलों में से। (13)
और थोड़े पिछलों में से। (14)
सोने के तारों से बुने हुए तख़्तों पर। (15)
तकिया लगाए हुए उस पर आमने सामने (बैठे हुए)। (16)

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ﴿١٧﴾ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ ۙ وَكَاْسٍ

और प्याले	और सुराहियां	कटोरों के साथ	17	हमेशा रहने वाले	लड़के	उन के	इर्द गिर्द फिरेंगे

مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿١٨﴾ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ﴿١٩﴾ وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا

उस से जो	और मेवे	19	और न उन की अक़्ल में फ़ुतूर आएगा	उस से	न उन्हें दर्द सर होगा	18	साफ़ शराब	से-के

يَتَخَيَّرُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ﴿٢١﴾ وَحُوْرٌ عِيْنٌ ﴿٢٢﴾ كَاَمْثَالِ

जैसे	22	और बड़ी आँखों वाली हूरें	21	वह चाहेंगे	वह जो	और परिन्दों का गोश्त	20	वह पसंद करेंगे

اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ﴿٢٣﴾ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٤﴾ لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا

उस में	वह न सुनेंगे	24	जो वह करते थे	उस की	जज़ा	23	(सीपी में) छुपे हुए	मोती

لَغْوًا وَّلَا تَاْثِيْمًا ﴿٢٥﴾ اِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا ﴿٢٦﴾ وَاَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ مَآ

क्या	और दाएं हाथ वाले	26	सलाम सलाम	कलाम	मगर	25	और न गुनाह की बात	बेहूदा बात

اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿٢٧﴾ فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ﴿٢٨﴾ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ﴿٢٩﴾ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ﴿٣٠﴾

30	लमबा-दराज़	और साया	29	तह दर तह	और केले	28	बेख़ार वाली	बेरियों में	27	दाएं हाथ वाले

وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ﴿٣١﴾ وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ﴿٣٢﴾ لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ﴿٣٣﴾

33	और न कोई रोक टोक	न ख़तम होने वाला	32	कसीर	और मेवे	31	गिरता हुआ	और पानी

وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ﴿٣٤﴾ اِنَّآ اَنْشَاْنٰهُنَّ اِنْشَآءً ﴿٣٥﴾ فَجَعَلْنٰهُنَّ اَبْكَارًا ﴿٣٦﴾

36	कुंवारी (जमा)	पस हम ने उन्हें बनाया	35	खूब उठान	उन्हें उठान दी	बेशक हम	34	ऊँचे	और फ़र्श (जमा)

ع ١ ٣٨ ١٣

عُرُبًا اَتْرَابًا ﴿٣٧﴾ لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٣٨﴾ ثُلَّةٌ مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٩﴾ وَثُلَّةٌ

और बहुत से	39	अगलों में से	बहुत से	38	दाएं हाथ वालों के लिए	37	महबूब हम उम्र

مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٠﴾ وَاَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ مَآ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ فِيْ سَمُوْمٍ ﴿٤١﴾

गर्म हवा	में	41	बाएं हाथ वाले	क्या	और बाएं हाथ वाले	40	पिछलों में से

وَّحَمِيْمٍ ﴿٤٢﴾ وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿٤٣﴾ لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ ﴿٤٤﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ

इस से क़ब्ल	थे	बेशक वह	44	और न फ़र्हत	न कोई ठंडक	43	धुआँ	से-के	और साया	42	और खौलता हुआ पानी

مُتْرَفِيْنَ ﴿٤٥﴾ وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ﴿٤٦﴾

46	गुनाह भारी	पर	अड़े हुए	और वह थे	45	नेमत में पले हुए

وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۙ اَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿٤٧﴾ اَوَ اٰبَآؤُنَا

ओर क्या हमारे बाप दादा	47	ज़रूर दोबारा उठाए जाएंगे	क्या हम	और हड्डियां	मिट्टी	और हो गए	हम मर गए	क्या जब	और वह कहते थे

الْاَوَّلُوْنَ ﴿٤٨﴾ قُلْ اِنَّ الْاَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿٤٩﴾ لَمَجْمُوْعُوْنَ ۙ اِلٰى

तरफ़-पर	ज़रूर जमा किए जाएंगे	49	और पिछले	पहले	बेशक	आप (स) कह दें	48	पहले

مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٥٠﴾ ثُمَّ اِنَّكُمْ اَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿٥١﴾

51	झुटलाने वाले	गुमराह लोग	ऐ	बेशक तुम	फिर	50	एक मुक़र्ररा दिन	वक़्त

उन के इर्द गिर्द लड़के फिरेंगे हमेशा (लड़के ही) रहने वाले। (17)
आबख़ोरों और सुराहियों के साथ और साफ़ शराब के पियालों (के साथ)। (18)
न उस से उन्हें दर्द सर होगा और न उन की अ़क़्लों में फ़ुतूर आएगा। (19)
और मेवे जो वह पसंद करेंगे। (20)
और परिन्दों का गोश्त जो वह चाहेंगे। (21)
और बड़ी बड़ी आँखों वाली हूरें, (22)
जैसे मोती (के दाने) सीपी में छुपे हुए। (23)
उस की जज़ा जो वह करते थे। (24)
वह उस में न बेहूदा बात सुनेंगे और न गुनाह की बात। (25)
मगर "सलाम सलाम", मतलब कि ठीक ठीक बात होगी। (26)
और दाएं हाथ वाले (सुबहानल्लाह) क्या हैं दाएं हाथ वाले! (27)
बेरियों में बेख़ार वाली। (28)
और तह दर तह केले। (29)
और दराज़ साया। (30)
और गिरता हुआ पानी (झरने)। (31)
और कसीर मेवे। (32)
न (वह) ख़तम होंगे और न (उन्हें) कोई रोक टोक (होगी)। (33)
और ऊँचे ऊँचे फ़र्श। (34)
बेशक हम ने उन्हें खूब उठान दी। (35)
पस हम उन्हें कुंवारी बना देंगे, (36)
महबूब, हम उम्र। (37)
दाएं हाथ वालों के लिए। (38)
बहुत से अगलों मे से, (39)
और बहुत से पिछलों में से। (40)
और बाएं हाथ वाले (अफ़्सोस) क्या हैं बाएं हाथ वाले! (41)
गर्म हवा और खौलते हुए पानी में। (42)
और धुएँ के साए में। (43)
न कोई ठंडक और न कोई फ़र्हत। (44)
बेशक वह उस से क़ब्ल नेमत में पले हुए थे। (45)
और वह भारी गुनाह पर अड़े हुए थे। (46)
और वह कहते थेः क्या जब हम मर गए और (मिट्टी में मिल कर) मिट्टी हो गए और हड्डियां (हो गए) क्या हम दोबारा ज़रूर उठाए जाएंगे? (47)
क्या हमारे बाप दादा भी? (48)
आप (स) कह देंः बेशक पहले और पिछले। (49)
ज़रूर जमा किए जाएंगे एक दिन जिस का वक़्त मुक़र्रर है। (50)
फिर बेशक तुम ऐ झुटलाने वाले गुमराह लोगो! (51)

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿٥٢﴾ فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ﴿٥٣﴾

53	पेट (जमा)	उस से	फिर भरना होगा	52	थोहर का	दरख़्त	से	अलबत्ता खाने वाले

فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿٥٤﴾ فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ﴿٥٥﴾

55	पयासे ऊँट की तरह पीना	सो पीना होगा	54	खौलता हुआ पानी	से	उस पर	सो पीना होगा

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٥٦﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ ﴿٥٧﴾

57	तुम तस्दीक़ करते	सो क्यों नहीं	हम ने पैदा किया	56	रोज़े जज़ा	उन की मेहमानी	यह

اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ﴿٥٨﴾ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ﴿٥٩﴾

59	पैदा करने वाले	हम	या	तुम उसे पैदा करते हो	क्या तुम	58	जो तुम डालते हो	भला तुम देखो तो

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٦٠﴾ عَلٰٓى

पर	60	उस से आजिज़	और नहीं हम	मौत	तुम्हारे दरमियान	हम ने मुक़र्रर किया	हम

اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦١﴾ وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ

और यक़ीनन तुम जान चुके हो	61	तुम नहीं जानते	जो	में	और हम पैदा कर दें तुम्हें	तुम जैसे	कि हम बदल दें

النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٦٢﴾ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ﴿٦٣﴾ ءَاَنْتُمْ

क्या तुम	63	जो तुम बोते हो	भला तुम देखो तो	62	तुम ग़ौर करते	तो क्यों नहीं	पैदाइश पहली

تَزْرَعُوْنَهٗٓ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ﴿٦٤﴾ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطٰمًا

रेज़ा रेज़ा	अलबत्ता हम उसे कर दें	अगर हम चाहें	64	काश्त करने वाले	हम	या	उस की काश्त करते हो

فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ﴿٦٥﴾ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ﴿٦٦﴾ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ﴿٦٧﴾

67	महरूम रह जाने वाले	हम	बल्कि	66	तावान पड़ जाने वाले	बेशक हम	65	बातें बनाते	फिर तुम हो जाओ

اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ﴿٦٨﴾ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ

से	तुम ने उसे उतारा	क्या तुम	68	तुम पीते हो	जो	पानी	भला तुम देखो तो

الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ﴿٦٩﴾ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا

कड़वा	हम कर दें उसे	हम चाहें	अगर	69	उतारने वाले	या हम	बादल

فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ﴿٧٠﴾ اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ﴿٧١﴾ ءَاَنْتُمْ

क्या तुम	71	तुम सुलगाते हो	जो	आग	भला तुम देखो तो	70	तो क्यों तुम शुक्र नहीं करते

اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَآ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿٧٢﴾ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً

नसीहत	हम ने उसे बनाया	हम	72	पैदा करने वाले	या हम	उस के दरख़्त	तुम ने पैदा किए

ع ٢ ٣٦ ١٥ وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿٧٣﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٧٤﴾

74	अ़ज़मत वाला	अपने रब	नाम से-की	पस तू पाकीज़गी बयान कर	73	हाजत मंदों के लिए	और सामान

فَلَآ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ﴿٧٥﴾ وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ﴿٧٦﴾

76	बड़ी	अगर तुम जानो (ग़ौर करो)	एक क़सम है	और बेशक यह	75	सितारे (जमा)	मुक़ाम की	सो मैं क़सम खाता हूँ

अलबत्ता तुम थोहर के दरख़्त से खाने वाले हो। (52)
पस उस से पेट भरना होगा। (53)
सो उस पर पीना होगा खौलता हुआ पानी। (54)
सो पीना होगा पयासे ऊँट की तरह। (55)
रोज़े जज़ा उन की यह मेहमानी होगी। (56)
हम ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम क्यों तस्दीक़ नहीं करते? (57)
भला देखो तो! जो (नुत्फ़ा) तुम (औरतों के रहम में) डालते हो। (58)
क्या तुम उसे पैदा करते हो या हम हैं पैदा करने वाले? (59)
हम ने तुम्हारे दरमियान मौत (का वक़्त) मुक़र्रर किया है, और हम उस से आजिज़ नहीं। (60)
कि हम बदल दें तुम्हारी शक्लें और हम पैदा करदें तुम्हें (ऐसे आ़लम) में जिस को तुम नहीं जानते। (61)
और यक़ीनन तुम जान चुके हो पहली पैदाइश तो तुम क्यों ग़ौर नहीं करते? (62)
भला तुम देखो तो जो तुम बोते हो। (63)
क्या तुम उस की काश्त करते हो या हम हैं काश्त करने वाले? (64)
अगर हम चाहें तो अलबत्ता हम उसे कर दें रेज़ा रेज़ा, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। (65)
(कि) बेशक हम तावान पड़ जाने वाले हो गए। (66)
बल्कि हम महरूम रह जाने वाले हैं। (67)
भला तुम देखो तो पानी जो तुम पीते हो। (68)
क्या तुम ने उसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले? (69)
अगर हम चाहें तो हम उसे कड़वा (खारी) कर दें, तो तुम क्यों शुक्र नहीं करते? (70)
भला तुम देखो तो जो आग तुम सुलगाते हो, (71)
क्या तुम ने उस के दरख़्त पैदा किए या हम हैं पैदा करने वाले? (72)
हम ने उसे याद दिलाने वाली बनाया और मुसाफ़िरों के लिए सामाने ज़िन्दगी। (73)
पस तू अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की पाकीज़गी बयान कर। (74)
सो मैं सितारों के मुक़ाम की क़सम खाता हूँ। (75)
और बेशक यह एक बड़ी क़सम है अगर तुम ग़ौर करो। (76)

بेशक यह क़ुरआन है गिरामी क़द्र। (77)
यह एक पोशीदा किताब (लौहे महफ़ूज़) में है। (78)
उसे हाथ नहीं लगाते सिवाए पाक लोग। (79)
तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से उतारा हुआ। (80)
पस क्या तुम इस बात को यूँ ही टालने वाले? (81)
और तुम बनाते हो झुटलाने को अपना वज़ीफ़ा। (82)
फिर क्यों नहीं जब (किसी की जान) पहुँचती है हलक़ को, (83)
और उस वक़्त तुम तकते हो। (84)
और हम तुम से भी ज़ियादा उस के क़रीब (होते हैं) लेकिन तुम नहीं देखते। (85)
अगर तुम खुद मुख़्तार हो तो क्यों नहीं? (86)
तुम उसे (निकलती जान को) लौटा लेते अगर तुम सच्चे हो। (87)
पस जो (मरने वाला) अगर मुक़र्रब लोगों में से हो। (88)
तो (उस के लिए) राहत और ख़ुशबूदार फूल और नेमतों के बाग़ हैं। (89)
और अलबत्ता अगर वह दाएं हाथ वालों में से हो। (90)
पस तेरे लिए सलामती कि तू दाएं हाथ वालों से है। (91)
और अगर गुमराह, झुटलाने वालों में से हो। (92)
तो (उस की) मेहमानी खौलता हुआ पानी है, (93)
और दोज़ख़ में झोंका जाना। (94)
बेशक यह अलबत्ता यक़ीनी बात है। (95)
पस आप (स) पाकीज़गी बयान करें अपने अज़मत वाले रब के नाम की। (96)

اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ﴿٧٧﴾ فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ﴿٧٨﴾ لَّا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿٧٩﴾

79	सिवाए पाक	उसे हाथ नहीं लगाते	78	पोशीदा	एक किताब	में	77	क़ुरआन है गिरामी क़द्र	बेशक यह

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٠﴾ اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ﴿٨١﴾

81	यूँ ही टालने वाले	तुम	बात	तो क्या इस	80	तमाम जहानों	रब	से	उतारा हुआ

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ﴿٨٢﴾ فَلَوْلَآ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ﴿٨٣﴾

83	हलक़ को	पहुँचती है	जब	फिर क्यों नहीं	82	झुटलाते हो	कि तुम	अपना रिज़्क़ (वज़ीफ़ा)	और तुम बनाते हो

وَاَنْتُمْ حِيْنَىِٕذٍ تَنْظُرُوْنَ ﴿٨٤﴾ وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ

और लेकिन	तुम से	उस के	ज़ियादा क़रीब	और हम	84	तकते हो	उस वक़्त	और तुम

لَّا تُبْصِرُوْنَ ﴿٨٥﴾ فَلَوْلَآ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿٨٦﴾ تَرْجِعُوْنَهَآ

तुम उसे लौटा लो	86	किसी के क़हर में न आने वाले (खुद मुख़्तार)	अगर तुम	तो क्यों नहीं	85	तुम नहीं देखते

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٨٧﴾ فَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٨٨﴾ فَرَوْحٌ

तो राहत	88	मुक़र्रब लोग	से	अगर हो	पस जो	87	सच्चे (जमा)	अगर तुम

وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ﴿٨٩﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩٠﴾

90	दाएं हाथ वाले	से	अगर वह हो	और अलबत्ता	89	नेमतों के	और बाग़	और ख़ुशबूदार फूल

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿٩١﴾ وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ

झुटलाने वालों	से	अगर वह हो	और अलबत्ता	91	दाएं हाथ वालों	से	तेरे लिए	तो सलामती

الضَّآلِّيْنَ ﴿٩٢﴾ فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿٩٣﴾ وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ ﴿٩٤﴾ اِنَّ

बेशक	94	दोज़ख़	और उसे डाल देना	93	खौलता हुआ पानी	से	तो मेहमानी	92	गुमराह (जमा)

هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٩٥﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٩٦﴾

ع ٣ ٢٢ ١٦

96	अज़मत वाला	अपने रब	पस आप (स) पाकीज़गी बयान करें नाम की	95	यक़ीनी बात	अलबत्ता यह	यह

آيَاتُهَا ٢٩ ❀ سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ (٥٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٤

रुकुआत 4 — (57) सूरतुल हदीद / लोहा — आयात 29

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾ لَهٗ مُلْكُ

उस के लिए बादशाहत	1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी से याद करता है अल्लाह को

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢﴾

2	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	और मौत देता है	वह ज़िन्दगी देता है	और ज़मीन	आस्मानों

هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٣﴾

3	खूब जानने वाला	हर शै को	और वह	और बातिन	और ज़ाहिर	और आख़िर	अव्वल	वही

هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى

फिर उस ने क़रार पकड़ा	दिन	छः (6)	में	और ज़मीन	आस्मानों	पैदा किया	जिस ने	वही

عَلَى الْعَرْشِ ۭ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ

और जो उतरता है	उस से	और जो निकलता है	ज़मीन	में	जो दाख़िल होता है	वह जानता है	अ़र्श पर

مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ۭ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا

उसे जो	और अल्लाह	तुम हो	जहां कहीं	तुम्हारे साथ	और वह	उस में	और जो चढ़ता है	आस्मानों से

تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (٤) لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ

लौटना	और अल्लाह की तरफ़	और ज़मीन	बादशाहत आस्मानों	उसी के लिए	4	देखने वाला	तुम करते हो

الْاُمُوْرُ (٥) يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ۭ وَهُوَ

और वह	रात में	दिन	और दाख़िल करता है	दिन में	रात	वह दाख़िल करता है	5	तमाम काम

عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (٦) اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا

उस से जो	और ख़र्च करो	और उस के रसूल	अल्लाह पर	तुम ईमान लाओ	6	दिलों की बात को	जानने वाला

جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا

और उन्हों ने ख़र्च किया	तुम में से	वह ईमान लाए	पस जो लोग	उस में	जांनशीन	उस ने तुम्हें बनाया

لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ (٧) وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ

वह तुम्हें बुलाते हैं	और रसूल	अल्लाह पर	तुम ईमान नहीं लाते	और क्या (हो गया है) तुम्हें	7	बड़ा अजर	उन के लिए

لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (٨)

8	ईमान वाले	अगर तुम हो	तुम से अ़हद	और यक़ीनन वह ले चुका है	अपने रब पर	कि तुम ईमान लाओ

هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ

से	ताकि वह तुम्हें निकाले	वाज़ेह आयात	अपना बन्दा	पर	नाज़िल फ़रमाता है	वही है जो

الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (٩)

9	निहायत मेह्रबान	शफ़क़त करने वाला	तुम पर	और बेशक अल्लाह	रोशनी की तरफ़	अन्धेरों से

وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	और अल्लाह के लिए मीरास	अल्लाह का रास्ता	में	तुम ख़र्च नहीं करते	और क्या (हो गया है) तुम्हें

وَالْاَرْضِ ۭ لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۭ

और क़िताल किया	फ़तह	पहले	जिस ने ख़र्च किया	तुम में से	बराबर नहीं	और ज़मीन

اُولٰۗىِٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ۭ

और उन्हों ने क़िताल किया	बाद में	जिन्हों ने ख़र्च किया	से	दरजे	बड़े	यह लोग

ع ١٠ ١ ١٧ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (١٠)

10	बाख़बर	उस से जो तुम करते हो	और अल्लाह	अच्छा	वादा किया अल्लाह ने	और हर एक

वही जिस ने पैदा किया आस्मानों को और ज़मीन को छः दिन में, फिर उस ने अ़र्श पर क़रार पकड़ा, वह जानता है जो ज़मीन में दाख़िल होता है और जो उस से निकलता है, और जो आस्मानों से उतरता है और जो उस में चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहां कहीं (भी) तुम हो, और जो तुम करते हो अल्लाह है उसे देखने वाला। (4)
उसी के लिए है आस्मानों और ज़मीन की बादशाहत, और अल्लाह की तरफ़ है तमाम कामों का लौटना। (5)
वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वह है ख़ूब जानने वाला दिलों की बात (तक) को। (6)
तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान लाओ और उस (माल) में से ख़र्च करो जिस में उस ने तुम्हें जांनशीन बनाया है, पस तुम में से जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने ख़र्च किया, उन के लिए बड़ा अजर है। (7)
और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम ईमान नहीं लाते अल्लाह और उस के रसूल (स) पर, जबकि वह तुम्हें बुलाते हैं कि तुम अपने रब पर ईमान ले आओ, और वह यक़ीनन तुम से अ़हद ले चुका है अगर तुम ईमान वाले हो। (8)
वही है जो अपने बन्दे पर वाज़ेह आयात नाज़िल फ़रमाता है, ताकि वह तुम्हें निकाले अन्धेरों से रोशनी की तरफ़, और बेशक अल्लाह तुम पर शफ़क़त करने वाला मेह्रबान है। (9)
और तुम्हें क्या हो गया? कि तुम ख़र्च नहीं करते अल्लाह के रास्ते में, और अल्लाह के लिए है आस्मानों और ज़मीन की मीरास (बाक़ी रह जाने वाला सब), तुम में से बराबर नहीं वह जिस ने ख़र्च किया और क़िताल किया फ़त्हे (मक्का) से पहले, यह लोग दरजे में (उन) से बड़े हैं जिन्हों ने बाद में ख़र्च किया और उन्हों ने क़िताल किया, और अल्लाह ने हर एक से अच्छा वादा किया है और जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (10)

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗۤ

और उस के लिए	उस को	पस बढ़ादे वह उस को दोगुना	क़र्ज़ हसना	क़र्ज़ दे अल्लाह को	कौन है जो

اَجْرٌ كَرِیْمٌ ﴿۱۱﴾ یَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ یَسْعٰى نُوْرُهُمْ

उन का नूर	दौड़ता होगा	और मोमिन औरतों	मोमिन मर्दों	तुम देखोगे	जिस दिन	11	अजर बड़ा उम्दा

بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَبِاَیْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْیَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे	बहती हैं	बाग़ात	आज	ख़ुशख़बरी तुम्हें	और उन के दाएं	उन के सामने

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِیْمُ ﴿۱۲﴾ یَوْمَ یَقُوْلُ

जिस दिन कहेंगे	12	कामयाबी बड़ी	वह-यह	यह	उस में	वह हमेशा रहेंगे	नहरें

الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ

से	हम हासिल कर लें	हमारी तरफ़ निगाह करो	वह ईमान लाए	उन लोगों को जो	और मुनाफ़िक़ औरतें	मुनाफ़िक़ मर्द (जमा)

نُّوْرِكُمْ ۚ قِیْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَیْنَهُمْ

उन के दरमियान	फिर मारी (खड़ी कर दी) जाएगी	नूर	फिर तुम तलाश करो	अपने पीछे	लौट जाओ तुम	कहा जाएगा	तुम्हारा नूर

بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِیْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿۱۳﴾

13	अज़ाब	उस की तरफ़ से	और उस के बाहर	रहमत	उस में	उस के अन्दर	एक दरवाज़ा	उस का	एक दीवार

یُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ

अपनी जानों को	तुम ने फ़ित्ने में डाला	और लेकिन तुम	हाँ	वह कहेंगे	तुम्हारे साथ	क्या हम न थे	वह उन्हें पुकारेंगे

وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِیُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ

अल्लाह का हुक्म	आ गया	यहां तक कि	तुम्हारी झूटी आर्ज़ूएं	और तुम्हें धोके में डाला	और तुम शक करते थे	और तुम इन्तिज़ार करते

وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ﴿۱۴﴾ فَالْیَوْمَ لَا یُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْیَةٌ وَّلَا مِنَ

से	और न	कोई फ़िदया	तुम से	न लिया जाएगा	सो आज	14	धोका देने वाला	अल्लाह के बारे में	और तुम्हें धोके में डाला

الَّذِیْنَ كَفَرُوْا ؕ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِیَ مَوْلٰىكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِیْرُ ﴿۱۵﴾

15	लौटने की जगह	और बुरी	तुम्हारी मौला	यह	जहन्नम	ठिकाना तुम्हारा	कुफ़्र किया	वह लोग जिन्हों ने

اَلَمْ یَاْنِ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ

और जो नाज़िल हुआ	अल्लाह की याद के लिए	उन के दिल	झुक जाएं	कि	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए (मोमिन)	क्या नज़दीक (वक़्त) नहीं आया

مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا یَكُوْنُوْا كَالَّذِیْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ

तो दराज़ हो गई	इस से क़ब्ल	जिन्हें किताब दी गई	उन लोगों की तरह	और वह न हो जाएं	हक़	से

عَلَیْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِیْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ

कि अल्लाह	तुम जान लो	16	फ़ासिक़ (नाफ़रमान)	उन में से	और कसीर	उन के दिल	फिर सख़्त हो गए	मुद्दत	उन पर

یُحْیِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَیَّنَّا لَكُمُ الْاٰیٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۷﴾

17	समझो	ताकि तुम	निशानियां	तुम्हारे लिए	तहक़ीक़ हम ने बयान कर दी	उस के मरने के बाद	ज़मीन	ज़िन्दा करता है

कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे? क़र्ज़े हसना (अच्छा क़र्ज़), पस वह उस को दोगुना बढ़ादे और उस के लिए बड़ा अम्दा अजर है। (11)
जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उन का नूर उन के सामने और उन के दाएं दौड़ता होगा, तुम्हें आज ख़ुशख़बरी है बाग़ात की जिन के नीचे बहती हैं नहरें, वह उन में हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (12)
जिस दिन कहेंगे मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें उन लोगों को जो ईमान लाए, हमारी तरफ़ निगाह करो, हम तुम्हारे नूर से (कुछ) हासिल कर लें, कहा जाएगाः अपने पीछे लौट जाओ, पस (वहां) नूर तलाश करो। फिर उन के दरमियान एक दीवार खड़ी कर दी जाएगी, उस का एक दरवाज़ा होगा, उस के अन्दर रहमत और उस के बाहर की तरफ़ अ़ज़ाब होगा। (13)
वह (मुनाफ़िक़) उन (मुसलमानों) को पुकारेंगेः क्या हम तुम्हारे साथ न थे? वह कहेंगेः हाँ (क्यों नहीं!) लेकिन तुम ने अपनी जानों को फ़ित्ने में डाला, और तुम इन्तिज़ार करते और शक करते थे और तुम्हें तुम्हारी झूटी आर्ज़ूओं ने धोके में डाला यहां तक कि अल्लाह का हुक्म आ गया और अल्लाह के बारे में तुम्हें धोका देने वाले (शैतान) ने धोके में डाला। (14)
सो आज न तुम से कोई फ़िदया लिया जाएगा और न उन लोगों से जिन्हों ने कुफ़्र किया, तुम्हारा ठिकाना जहन्नम है, यह तुम्हारी ख़बर गीरी करने वाली और बुरी लौटने की जगह है। (15)
क्या मोमिनों के लिए अभी वक़्त नहीं आया? कि उन के दिल अल्लाह की याद के लिए झुक जाएं और (उस के लिए) जो हक़ तआ़ला की तरफ़ से नाज़िल हुआ है, और वह उन लोगों की तरह न हो जाएं जिन्हें इस से क़ब्ल किताब दी गई, फिर एक लम्बी मुद्दत उन पर गुज़र गई तो उन के दिल सख़्त हो गए, और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (16)
(ख़ूब) जान लो कि अल्लाह ज़मीन को उस के मरने के बाद ज़िन्दा करता है। तहक़ीक़ हम ने तुम्हारे लिए निशानियां बयान कर दी हैं ताकि तुम समझो। (17)

اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ

वह दो चन्द कर दिया जाएगा उन के लिए	हसना (अच्छा)	क़र्ज़	और जिन्हों ने क़र्ज़ दिया अल्लाह को	और ख़ैरात करने वाली औरतें	ख़ैरात करने वाले मर्द	बेशक

وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ﴿١٨﴾ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰٓئِكَ هُمُ

वही	यही लोग	और उस के रसूल (जमा)	अल्लाह पर	ईमान लाए	और जो लोग	18	बड़ा उम्दा	अजर	और उन के लिए

الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۭ

और उन का नूर	उन का अजर	उन के लिए	नज़्दीक अपने रब के	और शहीद (जमा)	सिद्दीक़ (जमा)

ع ٢ ٩ ١٨ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿١٩﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا

इस के सिवा नहीं	तुम जान लो	19	दोज़ख़ वाले	यही लोग	हमारी आयतों को	और झुटलाया	और जिन्हों ने कुफ़्र किया

الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ

और कस्रत की ख़ाहिश	बाहम	और फ़ख़्र करना	और ज़ीनत	और कूद	खेल	दुनिया की ज़िन्दगी

فِى الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ

फिर वह ज़ोर पकड़ती है	उस की पैदावार	काश्तकार	भली लगी	बारिश की तरह	और औलाद	मालों में

فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ۭ وَفِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ

और मग़्फ़िरत	सख़्त अज़ाब	और आख़िरत में	चूरा चूरा	वह हो जाती है	फिर	ज़र्द	सो तू उस को देखता है

مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ﴿٢٠﴾

20	धोके का सामान	मगर-सिर्फ़	दुनिया की ज़िन्दगी	और नहीं	और रज़ा मन्दी	अल्लाह की तरफ़ से

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ

आस्मान	जैसी चौड़ाई (वुसअ़त)	उस की चौड़ाई (वुसअ़त)	और जन्नत	अपने रब की तरफ़ से	मग़्फ़िरत	तरफ़	तुम दौड़ो

وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۭ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ

अल्लाह का फ़ज़्ल	यह	और उस के रसूलों	अल्लाह पर	ईमान लाए	उन लोगों के लिए जो	वह तैयार की गई	और ज़मीन

يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢١﴾ مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ

कोई मुसीबत	नहीं पहुँचती	21	बड़े	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	जिसे वह चाहे	वह उस को देता है

فِى الْاَرْضِ وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ۭ اِنَّ

बेशक	कि हम पैदा करें उस को	उस से क़ब्ल	किताब में	मगर	तुम्हारी जानों में	और न	ज़मीन में

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ﴿٢٢﴾ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا

और न तुम ख़ुश हो	जो तुम से जाती रहे	पर	ताकि तुम ग़म न खाओ	22	आसान	अल्लाह पर	यह

بِمَآ اٰتٰىكُمْ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ﴿٢٣﴾ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ

बुख़्ल करते हैं	जो लोग	23	फ़ख़्र करने वाले	इतराने वाले	हर एक (किसी)	पसंद नहीं करता	और अल्लाह	उस पर जो उस ने तुम्हें दिया

وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٤﴾

24	सज़ावारे हम्द	वह बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	मुँह फेर ले	और जो	बुख़्ल का	लोग	और हुक्म (तरग़ीब) देते हैं

बेशक ख़ैरात करने वाले मर्द और ख़ैरात करने वाली औरतें, और जिन्हों ने अल्लाह को क़र्ज़ हसना (अच्छा क़र्ज़) दिया, वह उन के लिए दो चन्द कर दिया जाएगा, और उन के लिए बड़ा उम्दा अजर है। (18)

और जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर ईमान लाए, यही लोग हैं अपने रब के नज़्दीक सिद्दीक़ (सच्चे) और शहीद, उन के लिए उन का अजर है और उन का नूर, और जिन्हों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया, यही लोग दोज़ख़ वाले हैं। (19)

तुम (ख़ूब) जान लो, इस के सिवा नहीं कि दुनिया की ज़िन्दगी (महज़) खेल कूद है, और एक ज़ीनत और बाहम फ़ख़्र (ख़ुद सताई) करना और कस्रत की ख़ाहिश करना मालों में और औलाद में, बारिश की तरह कि काश्तकार को उस की पैदावार भली लगी, फिर वह ज़ोर पकड़ती है, पस तू उस को देखता है ज़र्द, फिर वह चूरा चूरा हो जाती है, और आख़िरत में सख़्त अज़ाब भी है और मग़्फ़िरत भी है अल्लाह की तरफ़ से और रज़ा मन्दी, और दुनिया की ज़िन्दगी धोके के सामान के सिवा कुछ भी नहीं। (20)

तुम दौड़ो मग़्फ़िरत की तरफ़ अपने रब की, और उस जन्नत की तरफ़ जिस की वुसअ़त आस्मानों और ज़मीन की वुसअ़त जैसी (बराबर) है, उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो ईमान लाए अल्लाह और उस के रसूलों पर, यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, वह उस को देता है जिसे वह चाहता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (21)

कोई मुसीबत नहीं पहुँचती ज़मीन में और न तुम्हारी जानों में मगर किताब में (दर्ज) है, इस से पहले कि हम उस को पैदा करें, बेशक यह अल्लाह पर आसान है। (22)

ताकि तुम उस पर ग़म न खाओ जो तुम से जाती रहे और न ख़ुश हो जाओ उस पर जो उस ने तुम्हें दिया, और अल्लाह किसी इतराने वाले, फ़ख़्र करने वाले को पसंद नहीं करता। (23)

जो लोग बुख़्ल करते हैं और तरग़ीब देते हैं लोगों को बुख़्ल की, और जो मुँह फेर ले तो बेशक अल्लाह बेनियाज़, सज़ावारे हम्द (सतोदा सिफ़ात) है। (24)

لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ

तहक़ीक़ हम ने भेजा	अपने रसूलों	वाज़ेह दलाइल के साथ	और हम ने उतारी	उन के साथ	किताब

وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ

और मीज़ाने (अ़दल)	ताकि क़ाइम रहें	लोग	इंसाफ़ पर	और हम ने उतारा	लोहा	उस में

بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ

लड़ाई (ख़तरा) सख़्त	और फ़ायदा	लोगों के लिए	और ताकि मालूम कर ले अल्लाह	कौन	मदद करता है उस की

ع ٣ ٦ ١٩

وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢٥﴾ وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا

और उस के रसूल	बिन देखे	बेशक अल्लाह	क़व्वी	ग़ालिब	25	और तहक़ीक़ हम ने भेजा	नूह (अ)

وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ۚ

और इब्राहीम (अ)	और हम ने रखी	उन की औलाद में	नुबूव्वत	और किताब	सो उन में से कुछ	हिदायत याफ़्ता

وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٦﴾ ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا

और अक्सर	उन में से	नाफ़रमान	26	फिर	हम उन के पीछे लाए	उन के क़दमों के निशानात पर	अपने रसूल	और हम उन के पीछे लाए

بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ

ईसा (अ)	इब्ने मरयम (अ)	और हम ने उसे दी	इंजील	और हम ने डाल दी	दिलों में	वह लोग जिन्हों ने

اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً وَّرَحْمَةً ۭ وَرَهْبَانِيَّةَ ۨ اِبْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا

उस की पैरवी की	नर्मी	और रहमत	और तरके दुनिया	जो उन्हों ने ख़ुद निकाली	हम ने वाजिब नहीं की

عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَاۗءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ

उन पर	मगर	चाहना	अल्लाह की रज़ा	तो न	उस को निबाहा	उस को निबाहने का हक़

فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾

तो हम ने दिया	उन लोगों के लिए जो ईमान लाए	उन में से	उन का अजर	और अक्सर	उन में से	नाफ़रमान	27

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ

ऐ	जो लोग ईमान लाए	डरो अल्लाह से तुम	और ईमान लाओ	उस के रसूलों पर	वह तुम्हें अ़ता करेगा

كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ

दो हिस्से	से	अपनी रहमत	और कर देगा	तुम्हारे लिए	ऐसा नूर	तुम चलोगे	उस के साथ	और वह बख़्शदेगा	तुम्हें

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾ لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ

और अल्लाह	बख़्शने वाला	मेहरबान	28	ताकि जान लें	अहले किताब	कि वह क़ुदरत नहीं रखते

عَلٰي شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ

किसी शै पर	से	अल्लाह का फ़ज़्ल	और यह कि	फ़ज़्ल	अल्लाह के हाथ में	वह देता है उसे

ع ٤ ٢٠

مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

जिस को वह चाहता है	और अल्लाह	फ़ज़्ल वाला	बड़ा	29

तहक़ीक़ हम ने अपने रसूलों को भेजा वाज़ेह दलाइल के साथ और हम ने उन के साथ उतारी किताब और मीज़ाने अ़दल ताकि लोग इंसाफ़ पर क़ाइम रहें, और हम ने लोहा उतारा, उस में सख़्त ख़तरा (बला की सख़्ती) है और लोगों के लिए कई फ़ायदे हैं, और ताकि अल्लाह मालूम कर ले कि कौन उस की मदद करता है और उस के रसूलों की, बिन देखे, बेशक अल्लाह क़व्वी, ग़ालिब है। (25)

और तहक़ीक़ हम ने नूह (अ) और इब्राहीम (अ) को भेजा और हम ने उन की औलाद में नुबूव्वत और किताब रखी। सो उन में से कुछ हिदायत याफ़्ता हैं, और उन में से अक्सर नाफ़रमान हैं। (26)

फिर हम ने उन के क़दमों के निशानात पर (उन के पीछे) अपने रसूल लाए, और उन के पीछे हम ईसा (अ) इब्ने मरयम (अ) को लाए और हम ने उसे इंजील दी, और जिन लोगों ने उस की पैरवी की उन के दिलों में नर्मी और मुहब्बत डाल दी। और तरके दुनिया (जिस की रस्म) ख़ुद उन्हों ने निकाली हम ने उन पर वाजिब न की थी, मगर (उन्हों ने) अल्लाह की रज़ा चाहने के लिए (इख़्तियार की) तो उस को न निबाहा (जैसे) उस के निबाहने का हक़ था, तो उन में से जो लोग ईमान लाए हम ने उन्हें उन का अजर दिया, और अक्सर उन में से नाफ़रमान हैं। (27)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और उस के रसूलों पर ईमान लाओ, वह अपनी रहमत से (सवाब के) दो हिस्से अ़ता करेगा और तुम्हारे लिए एसा नूर कर देगा कि तुम उस के साथ चलोगे और वह बख़्श देगा तुम्हें, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (28)

ताकि अहले किताब जान लें कि वह अल्लाह के फ़ज़्ल में से किसी शै पर क़ुदरत नहीं रखते, और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है, वह उसे देता है जिस को वह चाहे और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (29)

آيَاتُهَا ٢٢ ❀ سُوْرَةُ الْمُجَادِلَةِ (٥٨) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआ़त 3 — (58) सूरतुल मुजादिला — इख़्तिलाफ़ करने वाली — आयात 22

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا

अपने ख़ावन्द के बारे में	आप (स) से बहस करती थी	वह औ़रत जो	बात	सुन ली अल्लाह ने	यक़ीनन

وَتَشْتَكِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ (١)

1	देखने वाला	सुनने वाला	बेशक अल्लाह	तुम दोनों की गुफ़्तगू	सुनता था	और अल्लाह	अल्लाह	के पास	और शिकायत करती थी

اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۭ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ

उन की माँएं	नहीं	उन की माँएं	वह नहीं	अपनी बीवियों से	तुम में से	ज़िहार करते हैं	जो लोग

اِلَّا الّٰۗئِيْ وَلَدْنَهُمْ ۭ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۭ

और झूट	बात से	नामाकूल	अलबत्ता कहते हैं	और बेशक वह	जिन्हों ने जना है उन्हें	सिर्फ़ वह औरतें

وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ (٢) وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَاۗىِٕهِمْ ثُمَّ

फिर	अपनी बीवियों से	ज़िहार करते हैं	और जो लोग	2	बख़्शने वाला	अलबत्ता माफ़ करने वाला	और बेशक अल्लाह

يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۭ ذٰلِكُمْ

यह	कि एक दूसरे को हाथ लगाएं	इस से क़ब्ल	एक गुलाम	तो आज़ाद करना लाज़िम है	उस से जो उन्हों ने कहा (क़ौल)	वह रुजूअ़ करलें

تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (٣) فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ

तो रोज़े	न पाए	तो जो कोई	3	बाख़बर	उस से जो तुम करते हो	और अल्लाह	उस से- की	तुम्हें नसीहत की जाती है

شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَاۗسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَاِطْعَامُ

तो खाना खिलाए	उसे मक्दूर न हो	फिर- जिस	कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं	इस से क़ब्ल	लगातार	दो महीने

سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۭ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह की हदें	और यह	और उस का रसूल	अल्लाह पर	यह इस लिए कि तुम ईमान रखो	मसाकीन को	साठ (60)

وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (٤) اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَاۗدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

अल्लाह और उस का रसूल	वह मुख़ालिफ़त करते हैं	जो लोग	बेशक	4	दर्दनाक अ़ज़ाब	और न मानने वालों के लिए

كُبِتُوْا كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۭ

वाज़ेह आयतें	और यक़ीनन हम ने नाज़िल कीं	उन से पहले	वह लोग जो	जैसे ज़लील किए गए	वह ज़लील किए जाएंगे

وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ (٥) يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ

तो वह उन्हें आगाह करेगा	सब	उन्हें उठाएगा अल्लाह	जिस दिन	5	ज़िल्लत का	अ़ज़ाब	और काफ़िरों के लिए

بِمَا عَمِلُوْا ۭ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ (٦)

6	निगरान	हर शै पर	और अल्लाह	और वह उसे भूल गए थे	उसे गिन रखा था अल्लाह ने	वह जो उन्हों ने किया

ع ١

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

यक़ीनन अल्लाह ने उस औ़रत (ख़ौलह[*]) की बात सुन ली जो आप (स) से अपने शौहर के बारे में बहस करती थी और अल्लाह के पास शिकायत करती थी, और अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुनता था। बेशक अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (1)

तुम में से जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं (उन्हें माँ कह देते हैं) तो वह उन की माँएं नहीं (हो जातीं), उन की माँएं वही हैं जिन्हों ने उन्हें जना है, और बेशक वह एक नामाकूल बात और झूट कहते हैं, और बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है। (2)

और जो लोग अपनी बीवियों से ज़िहार करते हैं (उन्हें माँ कह देते हैं) फिर वह अपने क़ौल से रुजूअ़ कर लें तो (उन पर) लाज़िम है आज़ाद करना एक गुलाम, इस से क़ब्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं (बाहम इख़्तिलात करें), यह है जिस की तुम्हें नसीहत की जाती है, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (3)

जो कोई (गुलाम) न पाए तो वह लगातार दो महीने रोज़े (रखे) इस से क़ब्ल कि वह एक दूसरे को हाथ लगाएं (इख़्तिलात करें), फिर जिस को (उस का भी) मक़्दूर न हो तो साठ (60) मिस्कीनों को खाना खिलाए, यह इस लिए है कि तुम अल्लाह और उस के रसूल (स) पर ईमान रखो, और यह अल्लाह की (मुक़र्रर कर्दा) हदें हैं, और न मानने वालों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (4)

बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं वह ज़लील किए जाएंगे जैसे ज़लील किए गए वह लोग जो उन से पहले थे, और यक़ीनन हम ने वाज़ेह आयतें नाज़िल की हैं, और काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब है। (5)

जिस दिन (जिला) उठाएगा अल्लाह उन सब को, तो जो कुछ उन्हों ने किया वह उन्हें आगाह करेगा, उसे अल्लाह ने गिन (महफ़ूज़) रखा था और वह उसे भूल गए थे, और अल्लाह हर शै पर निगरान है। (6)

اَلَمۡ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعۡلَمُ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الۡاَرۡضِ ؕ مَا يَكُوۡنُ مِنۡ

कोई	नहीं होती	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	वह जानता है	कि अल्लाह	क्या आप ने नहीं देखा

نَّجۡوٰى ثَلٰثَةٍ اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمۡ وَلَا خَمۡسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمۡ وَلَاۤ اَدۡنٰى

और न (ख़ाह) कम	उन में छटा	मगर वह	पाँच की	और न	उन में चौथा	मगर वह	तीन लोगों में	सरगोशी

مِنۡ ذٰلِكَ وَلَاۤ اَكۡثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمۡ اَيۡنَ مَا كَانُوۡا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمۡ بِمَا عَمِلُوۡا

जो कुछ उन्हों ने किया	वह उन्हें बतला देगा	फिर	वह हों	जहां कहीं	उन के साथ	मगर वह	और न ज़ियादा	उस	से

يَوۡمَ الۡقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عَلِيۡمٌ ۝٧ اَلَمۡ تَرَ اِلَى الَّذِيۡنَ نُهُوۡا

वह जिन्हें मना किया गया	तरफ़-को	क्या तुम ने नहीं देखा	7	जानने वाला	तमाम-हर शै का	बेशक अल्लाह	क़ियामत के दिन

عَنِ النَّجۡوٰى ثُمَّ يَعُوۡدُوۡنَ لِمَا نُهُوۡا عَنۡهُ وَيَتَنٰجَوۡنَ بِالۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ

और सरकशी	गुनाह से-की	वह बाहम सरगोशी करते हैं	उस से	जिस से मना किया गया उन्हें	वह (वही) करते हैं	फिर	सरगोशी से

وَمَعۡصِيَتِ الرَّسُوۡلِ ۖ وَاِذَا جَآءُوۡكَ حَيَّوۡكَ بِمَا لَمۡ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ

उस (लफ़्ज़) से अल्लाह ने	आप को दुआ नहीं दी	जिस से	आप को सलाम दुआ देते हैं	वह आते है आप (स) के पास	और जब	रसूल	और नाफ़रमानी

وَيَقُوۡلُوۡنَ فِىۡۤ اَنۡفُسِهِمۡ لَوۡلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ بِمَا نَقُوۡلُ ؕ حَسۡبُهُمۡ جَهَنَّمُ ۚ

जहन्नम	उन के लिए काफ़ी है	उस की जो हम कहते हैं	हमें अ़ज़ाब देता अल्लाह	क्यों नहीं	अपने दिलों में	वह कहते है

يَصۡلَوۡنَهَا ۚ فَبِئۡسَ الۡمَصِيۡرُ ۝٨ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِذَا تَنَاجَيۡتُمۡ

तुम बाहम सरगोशी करो	जब	ईमान वालो	ऐ	8	ठिकाना	सो बुरा	वह डाले जाएंगे उस में

فَلَا تَتَنَاجَوۡا بِالۡاِثۡمِ وَالۡعُدۡوَانِ وَمَعۡصِيَتِ الرَّسُوۡلِ وَتَنَاجَوۡا

और सरगोशी करो	रसूल (स)	और नाफ़रमानी	और सरकशी	गुनाह की	तो सरगोशी न करो

بِالۡبِرِّ وَالتَّقۡوٰى ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِىۡۤ اِلَيۡهِ تُحۡشَرُوۡنَ ۝٩ اِنَّمَا النَّجۡوٰى

सरगोशी	इस के सिवा नहीं	9	तुम जमा किए जाओगे	उस की तरफ़-पास	वह जो	और अल्लाह से डरो	और परहेज़गारी	नेकी की

مِنَ الشَّيۡطٰنِ لِيَحۡزُنَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَلَيۡسَ بِضَآرِّهِمۡ شَيۡـًٔا اِلَّا

बग़ैर	कुछ	वह उन का बिगाड़ सकता	और नहीं	ईमान लाए	उन लोगों को जो	ताकि वह ग़मगीन करे	शैतान से

بِاِذۡنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلۡيَتَوَكَّلِ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۝١٠ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا

मोमिनों!	ऐ	10	मोमिन (जमा)	तो भरोसा करना चाहिए	और अल्लाह पर	अल्लाह के हुक्म के

اِذَا قِيۡلَ لَكُمۡ تَفَسَّحُوۡا فِى الۡمَجٰلِسِ فَافۡسَحُوۡا يَفۡسَحِ اللّٰهُ

कुशादगी बख़्शेगा अल्लाह	तो तुम खुल कर बैठ जाया करो	मज्लिसों में	तुम खुल कर बैठो	तुम्हें	जब कहा जाए

لَكُمۡ ۚ وَاِذَا قِيۡلَ انۡشُزُوۡا فَانۡشُزُوۡا يَرۡفَعِ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا

जो लोग ईमान लाए	बुलन्द कर देगा अल्लाह	तो उठ जाया करो	तुम उठ खड़े हो	और जब कहा जाए	तुम्हें

مِنۡكُمۡ ۙ وَالَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ دَرَجٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرٌ ۝١١

11	बाख़बर	तुम करते हो	उस से	और अल्लाह	दरजे	इल्म अ़ता किया गया	और जिन लोगों को	तुम में से

क्या आप (स) ने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो आस्मानों में है और जो ज़मीन में है। तीन लोगों में कोई सरगोशी नहीं होती मगर वह उन में चौथा होता है और न पाँच (की सरगोशी) मगर वह उन में छटा होता है, और ख़ाह उस से कम हों या ज़ियादा मगर जहां कहीं वह हों वह (अल्लाह) उन के साथ होता है, फिर वह उन्हें बतला देगा क़ियामत के दिन जो कुछ उन्हों ने किया, बेशक अल्लाह हर शै का जानने वाला है। (7)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें सरगोशी से मना किया गया (मगर) वह फिर वही करते हैं जिस से उन्हें मना किया गया और वह गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफ़रमानी (के बारे में) बाहम सरगोशी करते हैं, और जब वह आप (स) के पास आते हैं तो आप (स) को सलाम दुआ देते हैं उस लफ़्ज़ से जिस से अल्लाह ने आप को दुआ नहीं दी, और वह अपने दिलों में कहते हैं कि अल्लाह हमें उस की क्यों सज़ा नहीं देता जो हम कहते हैं। उन के लिए काफ़ी है जहन्नम, वह उस में डाले जाएंगे, सो (यह कैसा) बुरा ठिकाना है! (8)

ऐ ईमान वालो! जब तुम बाहम सरगोशी करो तो गुनाह और सरकशी की और रसूल (स) की नाफ़रमानी (के बारे में) सरगोशी न करो, और (बल्कि) नेकी और परहेज़गारी की सरगोशी करो, और अल्लाह से डरो जिस के पास तुम जमा किए जाओगे। (9)

इस के सिवा नहीं कि सरगोशी शैतान (की तरफ़) से है, ताकि वह उन लोगों को ग़मगीन कर दे जो ईमान लाए, और वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर उन का कुछ नहीं बिगाड़ सकता, और मोमिनों को अल्लाह पर (ही) भरोसा करना चाहिए। (10)

ऐ मोमिनों! जब तुम्हें कहा जाए कि तुम मज्लिसों में खुल कर बैठो तो तुम खुल कर बैठ जाया करो, अल्लाह तुम्हें कुशादगी बख़्शेगा, और जब कहा जाए कि तुम उठ खड़े हो तो उठ जाया करो, तुम में से जो लोग ईमान लाए और जिन लोगों को इल्म अ़ता किया गया अल्लाह बुलन्द कर देगा उन के दरजे, और तुम जो करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (11)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ

पहले	तो तुम दे दो	रसूल (स)	तुम कान में बात करो	जब	मोमिनो	ऐ

نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ۭ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	तुम न पाओ	फिर अगर	और ज़ियादा पाकीज़ा	बेहतर तुम्हारे लिए	यह	कुछ सदक़ा	अपनी सरगोशी

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ

अपनी सरगोशी	पहले	कि तुम दे दो	क्या तुम डर गए	12	रहम करने वाला	बख़्शने वाला

صَدَقٰتٍ ۭ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	तो क़ाइम करो तुम	तुम पर	और दरगुज़र फ़रमाया अल्लाह ने	तुम न कर सके	सो जब	सदक़ात

ع ٢ ٢ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٣﴾

13	उस से जो तुम करते हो	बाख़बर	और अल्लाह	अल्लाह और उसका रसूल (स)	और तुम इताअ़त करो	और अदा करो ज़कात

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۭ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا

और न	तुम में से	न वह	उन पर	अल्लाह ने ग़ज़ब किया	उन लोगों से	जो लोग दोस्ती करते हैं	तरफ़-को	क्या तुम ने नहीं देखा

مِنْهُمْ ۙ وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ﴿١٤﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا

अ़ज़ाब	उनके लिए	तैयार किया अल्लाह ने	14	जानते हैं	हालांकि वह	झूट पर	और वह क़सम खा जाते हैं	उन में से

شَدِيْدًا ۭ اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٥﴾ اِتَّخَذُوْٓا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً

ढाल	अपनी क़समें	उन्हों ने बना लिया	15	वह करते थे	जो कुछ	बुरा	बेशक वह	सख़्त

فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٦﴾ لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ

उन से-को	हरगिज़ न बचा सकेंगे	16	ज़िल्लत का	अ़ज़ाब	तो उन के लिए	अल्लाह का रास्ता	से	पस उन्हों ने रोक दिया

اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۭ

दोज़ख़ वाले - जहन्नमी	यही लोग	कुछ-ज़रा	अल्लाह से	उन की औलाद	और न	उन के माल

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٧﴾ يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ

उस के लिए	तो वह क़समें खाएंगे	सब	उन्हें उठाएगा अल्लाह	जिस दिन	17	हमेशा रहेंगे	उस में	वह

كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ عَلٰي شَيْءٍ ۭ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ

वही	बेशक वह	याद रखो	किसी शै पर	कि वह	और वह गुमान करते हैं	तुम्हारे लिए-सामने	वह क़समें खाते हैं	जैसे

الْكٰذِبُوْنَ ﴿١٨﴾ اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۭ

अल्लाह की याद	तो उस ने उन्हें भुलादी	शैतान	उन पर	ग़ालिब आ गया	18	झूटे

اُولٰۗىِٕكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۭ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

19	घाटा पाने वाले	वही	शैतान का गिरोह	बेशक	याद रखो	शैतान का गिरोह	यही लोग

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَاۗدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰۗىِٕكَ فِي الْاَذَلِّيْنَ ﴿٢٠﴾

20	ज़लील तरीन लोग	में	यही लोग	और उस के रसूल की	मुख़ालिफ़त करते हैं अल्लाह की	जो लोग	बेशक

ऐ मोमिनो! जब तुम रसूल (स) से कान में (निजी) बात करो तो तुम अपनी सरगोशी से पहले कुछ सदक़ा दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर और ज़ियादा पाकीज़ा है, फिर अगर तुम (मक़दूर) न पाओ तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (12)

क्या तुम उस से डर गए कि अपनी सरगोशी से पहले सदक़ा दो, सो जब तुम न कर सके और अल्लाह ने तुम पर दरगुज़र फ़रमाया तो तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करो और अल्लाह और उस के रसूल (स) की इताअ़त करो, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (13)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जो उन लोगों से दोस्ती करते हैं जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया, वह न तुम में से हैं और न उन में से हैं, और वह जान बूझ कर झूट पर क़सम खा जाते हैं। (14)

अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार किया है, बेशक वह बुरे काम करते थे। (15)

उन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया, पस उन्हों ने (लोगों को) अल्लाह के रास्ते से रोका तो उन के लिए ज़िल्लत का अ़ज़ाब है। (16)

उन्हें उन के माल और न उन की औलाद अल्लाह से हरगिज़ ज़रा भी न बचा सकेंगे। यही लोग जहन्नमी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (17)

जिस दिन अल्लाह उन सब को (दोबारा) उठाएगा तो उस के लिए (उस के हुज़ूर) क़समें खाएंगे जैसे वह तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं, और वह गुमान करते हैं कि वह किसी शै (भली राह) पर हैं, याद रखो! बेशक वही झूटे हैं। (18)

ग़ालिब आगया है उन पर शैतान, तो उस ने उन्हें अल्लाह की याद भुला दी, यही लोग शैतान की गिरोह हैं, खूब याद रखो, बेशक शैतान के गिरोह ही घाटा पाने वाले हैं। (19)

बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त करते हैं, यही लोग ज़लील तरीन लोगों में से हैं। (20)

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ﴿٢١﴾ لَا تَجِدُ قَوْمًا

कौम (लोग)	तुम न पाओगे	21	ग़ालिब	क़वी	बेशक अल्लाह	और मेरे रसूल	मैं	मैं ज़रूर ग़ालिब आऊँगा	लिख दिया (फ़ैसला कर दिया) अल्लाह

يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ

और उस के रसूल की	मुख़ालिफ़त की अल्लाह की	जो-जिस	और दोस्ती रखते हों	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	वह ईमान रखते हैं

وَلَوْ كَانُوْٓا اٰبَآءَهُمْ اَوْ اَبْنَآءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ

यही लोग	उन का घराना	या	उन के भाई	या	उन के बेटे	या	उन के बाप दादा	वह हों	ख़्वाह

كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ؕ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ

बाग़ात	और वह दाख़िल करेगा उन्हें	अपने से	रूह (अपने ग़ैबी फ़ैज़ से)	और उन की मदद की	ईमान	लिख दिया (सबत कर दिया) उन के दिलों में

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا

और वह राज़ी	उन से	राज़ी हुआ अल्लाह	उन में	हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे	बहती हैं

عَنْهُ ؕ اُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللّٰهِ ؕ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٢٢﴾ ع ٣ / ٣

22	कामयाब होने वाले	वही	अल्लाह का गिरोह	ख़ूब याद रखो कि बेशक	अल्लाह का गिरोह	यही लोग	उस से

آيَاتُهَا ٢٤ ❀ (٥٩) سُوْرَةُ الْحَشْرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٣

रुकूआत 3	(59) सूरतुल हश्र जमा करना या होना	आयात 24

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾

1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ

उन के घरों	से	अहले किताब	से-के	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	निकाला	वही है जिस ने

لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ؕ مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ وقف النبي ﷺ

उन के क़िले	उन्हें बचा लेंगे	कि वह	और वह ख़याल करते थे	कि वह निकलेंगे	तुम्हें गुमान न था	पहले इज्तिमाए (लशकर) पर

مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۗ وَقَذَفَ

और उस ने डाला	उन्हें गुमान न था	जहां से	तो उन पर आया अल्लाह	अल्लाह से

فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۗ

मोमिनों	और हाथों	अपने हाथों से	अपने घर	वह बरबाद करने लगे	रोब	उन के दिलों में

فَاعْتَبِرُوْا يٰٓاُولِي الْاَبْصَارِ ﴿٢﴾ وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ

उन पर	अल्लाह ने लिख रखा होता	यह कि	और अगर न	2	ऐ आँखों वालो	तो तुम इब्रत पकड़ो

الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ؕ وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ﴿٣﴾

3	जहन्नम का अज़ाब	आख़िरत में	और उन के लिए	दुनिया में	तो वह उन्हें अज़ाब देता	जिला वतन होना

फ़ैसला कर दिया अल्लाह ने कि मैं और मेरे रसूल (स) ज़रूर ग़ालिब आएंगे, बेशक अल्लाह क़वी (तवाना) ग़ालिब है। **(21)**

तुम न पाओगे उन लोगों को जो ईमान रखते हैं अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर कि वह उन से दोस्ती रखते हों जिन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की, ख़्वाह वह उन के बाप दादा हों या उन के बेटे हों, या उन के भाई हों या उन के कुंबे वाले हों, यही लोग हैं जिन के दिलों में अल्लाह ने ईमान सबत कर दिया और उन की मदद की अपने ग़ैबी फ़ैज़ से, और वह उन्हें (उन) बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, राज़ी हुआ अल्लाह उन से, और वह उस से राज़ी, यही लोग हैं अल्लाह का गिरोह, ख़ूब याद रखो! अल्लाह के गिरोह वाले ही (दो जहान में) कामयाब होने वाले हैं। **(22)**

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। **(1)**

वही है जिस ने निकाला अहले किताब के काफ़िरों को उन के घरों से पहले ही इज्तिमाए लशकर पर, तुम्हें गुमान (भी) न था कि वह निकलेंगे और वह ख़याल करते थे कि उन के क़िले उन्हें अल्लाह से बचा लेंगे, तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब (ऐसी जगह से आया) जिस का उन्हें गुमान (भी) न था, और अल्लाह ने उन के दिलों में रोब डाला, और वह अपने हाथों से और मोमिनों के हाथों से अपने घर बरबाद करने लगे, तो ऐ (बसीरत की) आँखों वालो इब्रत पकड़ो। **(2)**

और अगर अल्लाह ने उन पर जिला वतन होना लिख रखा न होता तो वह उन्हें दुनिया में अज़ाब देता, और उन के लिए आख़िरत में जहन्नम का अज़ाब है। **(3)**

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	मुख़ालिफ़त करे अल्लाह की	और जो	और उस का रसूल (स)	उन्हों ने मुख़ालिफ़त की अल्लाह की	इस लिए कि वह	यह

شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٤﴾ مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً

खड़ा	तुम ने उस को छोड़ दिया	या	दरख़्त के तने	से	जो तुम ने काट डाले	4	सज़ा देने वाला	सख़्त

عَلٰٓى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِىَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٥﴾ وَمَآ اَفَآءَ اللّٰهُ

दिलवाया अल्लाह ने	और जो	5	नाफ़रमानों	और ताकि वह रुस्वा करे	तो अल्लाह के हुक्म से	उस की जड़ों पर

عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ

और लेकिन (बल्कि) अल्लाह	ऊंट	और न	घोड़े	उन पर	तुम ने दौड़ाए थे	तो न	उन से	अपने रसूल (स) को

يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٦﴾

6	कुदरत रखता है	हर शै	पर	और अल्लाह	जिस पर वह चाहता है	पर	अपने रसूलों	मुसल्लत फ़रमा देता है

مَآ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ

तो अल्लाह के लिए और रसूल (स) के लिए	बस्तियों वाले	से	अपने रसूल (स) को	जो दिलवादे अल्लाह

وَلِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَىْ

ताकि	और मुसाफ़िरों	और मिस्कीनों	और यतीमों	और क़राबतदारों के लिए

لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ

तो वह ले लो	रसूल (स)	तुम्हें अ़ता फ़रमाए	और जो	तुम में से - तुम्हारे	मालदारों	दरमियान	हाथों हाथ लेना (गर्दिश)	न रहे

وقف لازم

وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٧﴾

7	सख़्त सज़ा देने वाला	बेशक अल्लाह	और तुम डरो अल्लाह से	तो तुम बाज़ रहो	उस से	तुम्हें मना करे	और जिस

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ

और अपने मालों	अपने घरों से	वह जो निकाले गए	मुहाजिरों	मोहताजों के लिए

يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ

और उस का रसूल	और वह मदद करते हैं अल्लाह की	और रज़ा	अल्लाह का - से	फ़ज़्ल	वह चाहते हैं

اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ﴿٨﴾ ۚ وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ

और ईमान	इस घर	मुक़ीम रहे	और जो लोग	8	सच्चे	वह	और यही लोग

مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِىْ صُدُوْرِهِمْ

अपने सीनों (दिलों)	में	और वह नहीं पाते	उन की तरफ़	हिज्रत की	जिस	वह मुहब्बत करते हैं	उन से क़ब्ल

حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ

उन्हें	और ख़्वाह हो	अपनी जानों	पर	और वह तरजीह देते हैं	दिया गया उन्हें	उस की	कोई हाजत

خَصَاصَةٌ ۛ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٩﴾ ۚ

9	फ़लाह पाने वाले	वह	तो यही लोग	अपनी ज़ात	बुख़्ल	बचाया	और जो-जिस	तंगी

यह इस लिए कि उन्हों ने अल्लाह और उस के रसूल (स) की मुख़ालिफ़त की, और जो अल्लाह की मुख़ालिफ़त करे तो बेशक अल्लाह (उस को) सख़्त सज़ा देने वाला है। (4)

जो तुम ने दरख़्तों के तने काट डाले या उन्हें उन की जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया तो (यह) अल्लाह के हुक्म से था और ताकि वह नाफ़रमानों को रुस्वा कर दे। (5)

और अल्लाह ने अपने रसूल (स) को उन (बनू नज़ीर) से जो (माल) दिलवाया तो न तुम ने उन पर घोड़े दौड़ाए थे और न ऊंट, बल्कि अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है मुसल्लत फ़रमा देता है, और अल्लाह हर शै पर कुदरत रखता है। (6)

अल्लाह ने बस्तियों वालों से जो (माल) अपने रसूल (स) को दिलवाए तो वह अल्लाह के लिए है और रसूल (स) के लिए और (रसूल स के) क़राबतदारों के लिए, और यतीमो और मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए ताकि (दौलत) न रहे तुम्हारे मालदारों के दरमियान (ही) गर्दिश करती, और तुम्हें रसूल (स) जो अ़ता फ़रमाएं वह ले लो, और वह तुम्हें जिस से मना करें उस से तुम बाज़ रहो, और तुम अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है। (7)

मोहताज मुहाजिरों के लिए (ख़ास तौर पर) जो निकाले गए अपने घरों से और अपने मालों से (महरुम किए गए) वह अल्लाह का फ़ज़्ल और (उस की) रज़ा चाहते हैं और वह मदद करते है अल्लाह और उस के रसूल (स) की, यही लोग सच्चे हैं। (8)

और जो लोग (अन्सार) ईमान ला कर इस घर (दारुलहिज्रत मदीना) में उन से क़ब्ल मुक़ीम हैं वह (उन से) मुहब्बत करते हैं जिन्हों ने उनकी तरफ़ हिज्रत की, और जो उन्हें (मुहाजिरीन को) दिया गया अपने दिलों में उस की कोई हाजत नहीं पाते। और वह उन्हें तरजीह देते हैं अपनी जानों पर ख़्वाह (ख़ुद) उन्हें तंगी (ज़रूरत) हो, और जिस ने अपनी ज़ात को बुख़्ल से बचाया तो यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। (9)

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا

और हमारे भाइयों को	हमें बख़्शदे	ऐ हमारे रब	वह कहते हैं	उन के बाद	वह आए	और जो लोग

الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ

उन लोगों के लिए जो	कोई कीना	हमारे दिलों में	और न होने दे	ईमान में	हम से सबक़त की	वह जिन्हों ने

اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٠﴾ اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ع ١٠

वह लोग जिन्हों ने निफ़ाक़ किया (मुनाफ़िक़)	तरफ़-को	क्या आप ने नहीं देखा	10	रहम करने वाला	शफ़क़त करने वाला	बेशक तू	ऐ हमारे रब	वह ईमान लाए

يَقُوْلُوْنَ لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ

अलबत्ता अगर	अहले किताब	से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)	अपने भाइयों को	वह कहते हैं

اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ

और अगर	कभी	किसी का	तुम्हारे बारे में	और हम न मानेंगे	तुम्हारे साथ	तो हम ज़रूर निकल जाएंगे	तुम निकाले गए

قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿١١﴾ لَئِنْ اُخْرِجُوْا

वह जिला वतन किए गए	अगर	11	अलबत्ता झूटे हैं	बेशक वह	गवाही देता है	और अल्लाह	तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे	तुम से लड़ाई हुई

لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ

वह उन की मदद करेंगे	और अगर	वह उन की मदद न करेंगे	उन से लड़ाई हुई	और अगर	उन के साथ	वह न निकलेंगे

لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١٢﴾ لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً

डर	बहुत ज़ियादा	यक़ीनन तुम-तुम्हारा	12	वह मदद न किए जाएंगे	फिर	पीठ (जमा)	तो वह यक़ीनन फेरेंगे

فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٣﴾

13	कि वह समझते नहीं	ऐसे लोग	इस लिए कि वह	यह	अल्लाह से	उन के सीनों (दिलों) में

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ اَوْ مِنْ وَّرَآءِ

पीछे से	या	क़िला बन्द	बस्तियों में	मगर	इकटठे सब मिल कर	वह तुम से न लड़ेंगे

جُدُرٍ ؕ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ؕ تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ

हालांकि उन के दिल	तुम गुमान करते हो उन्हें इकटठे	बहुत सख़्त	उन के आपस में	उन की लड़ाई	दीवारें

شَتّٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿١٤﴾ كَمَثَلِ الَّذِيْنَ

जो लोग	हाल जैसा	14	वह अक़्ल नहीं रखते	ऐसे लोग	इस लिए कि वह	यह	अलग अलग

مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ

अज़ाब	और उन के लिए	अपने काम	वबाल	उन्हों ने चख लिया	क़रीबी ज़माना	इन से क़ब्ल

اَلِيْمٌ ﴿١٥﴾ كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ

तो जब उस ने कुफ़्र किया	तू कुफ़्र इख़्तियार कर	इन्सान से	उस ने कहा	जब	शैतान	हाल जैसा	15	दर्दनाक

قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾

16	तमाम जहानों	रब	अल्लाह	तहक़ीक़ मैं डरता हूँ	तुझ से	लातअ़ल्लुक़	बेशक मैं	उस ने कहा

और जो लोग उन के बाद आए, वह कहते हैं: ऐ हमारे रब! हमें और हमारे भाइयों को बख़्श दे वह जिन्हों ने ईमान लाने में हम से सबक़त की और हमारे दिलों में कोई कीना न होने दे उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, ऐ हमारे रब! बेशक तू शफ़क़त करने वाला, रहम करने वाला। (10)

क्या आप (स) ने मुनाफ़िक़ों को नहीं देखा? वह अपने भाइयों को कहते हैं जो काफ़िर हुए अहले किताब में से: अलबत्ता अगर तुम निकाले (जिला वतन किए) गए तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकल जाएंगे और तुम्हारे बारे में कभी हम किसी का कहा नहीं मानेंगे और अगर तुम से लड़ाई हुई तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे, और अल्लाह गवाही देता है कि बेशक वह झूटे हैं। (11)

और अगर वह जिला वतन किए गए तो यह न निकलेंगे उन के साथ, और अगर उन से लड़ाई हुई तो यह उन की मदद न करेंगे और अगर मदद करेंगे (भी) तो वह यक़ीनन पीठ फेरेंगे (भाग जाएंगे), फिर (कहीं भी) वह मदद न किए जाएंगे। (12)

यक़ीनन उन के दिलों में अल्लाह से बढ़ कर तुम्हारा डर है, यह इस लिए कि वह ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं। (13)

वह इकट्ठे हो कर तुम से न लड़ेंगे मगर बस्तियों में क़िला बन्द हो कर या दीवारों (फ़सील) के पीछे से, आपस में उन की लड़ाई बहुत सख़्त है, तुम उन्हें इकट्ठे गुमान करते हो हालांकि उन के दिल अलग अलग हैं, यह इस लिए है कि वह ऐसे लोग हैं जो अ़क़्ल नहीं रखते। (14)

इन का हाल उन लोगों जैसा है जो क़रीबी ज़माने में इन से क़ब्ल हुए, उन्हों ने अपने काम का वबाल चख लिया और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (15)

शैतान के हाल जैसा, जब उस ने इन्सान से कहा कि तू कुफ़्र इख़्तियार कर, फिर जब उस ने कुफ़्र किया तो उस ने कहा: बेशक मैं तुझ से लातअ़ल्लुक़ हूँ, तहक़ीक़ मैं तमाम जहानों के रब अल्लाह से डरता हूँ। (16)

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِى النَّارِ خَالِدَيْنِ فِيْهَا ؕ وَذٰلِكَ

और यह	उस में	वह हमेशा रहेंगे	आग में	बेशक वह दोनों	उन दोनों का अन्जाम	पस हुआ

ع ٢ ٧ ٥ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٧﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ

और चाहिए कि देखे	तुम अल्लाह से डरो	ईमान वालो	ऐ	17	ज़ालिमों	जज़ा-सज़ा

نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ

बाख़बर	बेशक अल्लाह	और तुम डरो अल्लाह से	कल के लिए	क्या उस ने आगे भेजा	हर शख़्स

بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١٨﴾ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ

तो (अल्लाह ने) भुला दिया उन्हें	जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया	उन लोगों की तरह	और न हो जाओ तुम	18	उस से जो तुम करते हो

اَنْفُسَهُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿١٩﴾ لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ

दोज़ख़ वाले	बराबर नहीं	19	नाफ़रमान (जमा)	वह	यही लोग	खुद उन्हें

وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ؕ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٢٠﴾

20	मुराद को पहुँचने वाले	वही हैं	जन्नत वाले	और जन्नत वाले

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا

दबा हुआ	तो तुम देखते उस को	पहाड़ पर	क़ुरआन	यह	अगर हम नाज़िल करते

مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا

हम बयान करते हैं	मिसालें	और यह	अल्लाह का ख़ौफ़	से	टुकड़े टुकड़े हुआ

لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾ هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ

नहीं कोई माबूद	वह जिस	वह अल्लाह	21	ग़ौर ओ फ़िक्र करें	ताकि वह	लोगों के लिए

اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾

22	रहम करने वाला	वह बड़ा मेहरबान	और आशकारा	जानने वाला पोशीदा का	उस के सिवा

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ

सलामती वाला	निहायत पाक	बादशाह	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	वह जिस	वह अल्लाह

الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ

पाक है अल्लाह	बड़ाई वाला	जब्बार	ग़ालिब	निगहबान	अम्न देने वाला

عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ

ईजाद करने वाला	ख़ालिक़	वह अल्लाह	23	वह शरीक करते हैं	उस से जो

الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ

उस की	पाकीज़गी बयान करता है	अच्छे	नाम (जमा)	उस के लिए	सूरतें बनाने वाला

ع ٣ ٧ ٦ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾

24	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	और वह	और ज़मीन	आस्मानों में	जो

पस दोनों का अन्जाम (यह है) कि वह दोनों आग में होंगे, वह हमेशा उस में रहेंगे, और यह सज़ा है ज़ालिमों की। (17)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह से डरो और चाहिए कि देखे (सोचे) हर शख़्स कि उस ने कल के लिए क्या आगे भेजा है! और तुम अल्लाह से डरो, बेशक जो तुम करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (18)

और तुम न हो जाओ उन लोगों की तरह जिन्हों ने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने (ऐसा कर दिया) कि उन्हों ने खुद अपने आप को भुला दिया, यही नाफ़रमान लोग हैं। (19)

बराबर नहीं दोज़ख़ वाले और जन्नत वाले, जन्नत वाले ही मुराद को पहुँचने वाले हैं। (20)

अगर हम नाज़िल करते यह क़ुरआन किसी पहाड़ पर तो तुम उस को अल्लाह के ख़ौफ़ से दबा (झुका) फटा पड़ता देखते, और यह मिसालें हम लोगों के लिए बयान करते हैं ताकि वह ग़ौर ओ फ़िक्र करें। (21)

वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं, जानने वाला पोशीदा का और आशकारा का, वह बड़ा मेहरबान, रहम करने वाला है। (22)

वह अल्लाह है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं (वह हक़ीक़ी) बादशाह है, (हर ऐब से) निहायत पाक है। सलामती, अम्न देने वाला, निगहबान, ग़ालिब, ज़बरदस्त, बड़ाई वाला, अल्लाह पाक है उस से जो वह शरीक करते हैं। (23)

वह अल्लाह है - ख़ालिक़, इजाद करने वाला, सूरतें बनाने वाला, उस के लिए अच्छे नाम हैं, उस की पाकीज़गी बयान करता है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (24)

آيَاتُهَا ١٣ ❀ سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ (٦٠) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (60) सूरतुल मुमतहिना — आयात 13

जिस (औरत) की जाँच करनी है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ

तुम पैग़ाम भेजते हो	दोस्त	और अपने दुश्मन	मेरा दुश्मन	तुम न बनाओ	ईमान वालो	ऐ

اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ

वह निकालते (जिला वतन करते) हैं रसूल (स) को	हक़ से	उस के जो तुम्हारे पास आया	और वह मुन्किर हो चुके हैं	दोस्ती से-का	उन की तरफ़

وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ۭ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ

मेरे रास्ते में	जिहाद के लिए	तुम निकलते हो	अगर	तुम्हारा रब	अल्लाह पर	कि तुम ईमान लाते हो	और तुम्हें भी

وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ ۗ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۗ وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَيْتُمْ وَمَآ

और जो	तुम छुपाते हो	वह जो	और मैं खूब जानता हूँ	दोस्ती का पैग़ाम	उन की तरफ़	तुम छुपा कर (भेजते हो)	मेरी रज़ा	और चाहने के लिए

اَعْلَنْتُمْ ۭ وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ① اِنْ

अगर	1	रास्ता	सीधा	वह भटक गया	तो तहक़ीक़	तुम में से	यह करेगा	और जो	तुम ज़ाहिर करते हो

يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ اَيْدِيَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ

और अपनी ज़बानें	अपने हाथ	तुम पर	और वह खोलें	दुश्मन	तुम्हारे	वह हो जाएं	वह तुम्हें पाएं

بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ۭ ② لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۚ

तुम्हारी औलाद	और न	तुम्हारे रिश्ते	तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे	2	काश तुम काफ़िर हो जाओ	और वह चाहते हैं	बुराई के साथ

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ③ قَدْ كَانَتْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	बेशक है	3	देखता है	जो तुम करते हो	और अल्लाह	वह (अल्लाह) फ़ैसला कर देगा तुम्हारे दरमियान	क़ियामत के दिन

اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ

अपनी क़ौम को	जब उन्हों ने कहा	उस के साथ	और जो	इब्राहीम (अ)	में	चाल (नमूना) बेहतरीन

اِنَّا بُرَءٰۗؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۡ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا

हमारे दरमियान	और ज़ाहिर हो गई	तुम्हारे	हम मुन्किर हैं	अल्लाह के सिवा	तुम बन्दगी करते हो	और उन से जिन की	तुम से	बेशक हम लातअल्लुक़

وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗٓ

वाहिद	अल्लाह पर	तुम ईमान ले आओ	यहां तक कि	हमेशा के लिए	और बुग़्ज़ (दुश्मनी)	अदावत	और तुम्हारे दरमियान

اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِيْمَ لِاَبِيْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ

अल्लाह से-के आगे	तुम्हारे लिए	मैं इख़्तियार रखता	और नहीं	तुम्हारे लिए	अलबत्ता मैं ज़रूर मग़्फ़िरत मांगूँगा	अपने बाप से	इब्राहीम (अ)	मगर कहना

مِنْ شَيْءٍ ۭ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ④

4	वापसी	और तेरी तरफ़	हम ने रुजूअ किया	और तेरी तरफ़	हम ने भरोसा किया	तुझ पर	ऐ हमारे रब	कुछ भी

معانقة ١٦ عند المتاخرين ١٢ السماع الوقف على القيمة ١٢

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ ईमान वालो! तुम मेरे और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ, तुम उन की तरफ़ दोस्ती का पैग़ाम भेजते हो जब कि तुम्हारे पास जो हक़ आया है वह उस के मुन्किर हो चुके हैं, वह रसूल (स) को और तुम्हें भी जिला वतन करते हैं (महज़ इस लिए) कि तुम अल्लाह अपने रब पर ईमान लाते हो, अगर तुम निकलते हो मेरे रास्ते में जिहाद के लिए और मेरी रज़ा चाहने के लिए (तो ऐसा मत करो), तुम उन की तरफ़ छुपा कर भेजते हो दोस्ती (का पैग़ाम), और मैं खूब जानता हूँ वह जो तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और तुम में से जो कोई यह करेगा तो (जान लो) कि तहक़ीक़ वह सीधे रास्ते से भटक गया। (1)

अगर वह तुम्हें पाएं (तुम पर दस्तरस पा लें) तो वह तुम्हारे दुश्मन हो जाएं और तुम पर खोलें बुराई के साथ अपने हाथ और अपनी ज़बानें (दस्तदराज़ी और ज़बान दराज़ी करें) और वह चाहते हैं कि काश तुम काफ़िर हो जाओ। (2)

तुम्हें हरगिज़ नफ़ा न देंगे तुम्हारे रिश्ते और न तुम्हारी औलाद क़ियामत के दिन, अल्लाह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर देगा, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह देखता है। (3)

बेशक तुम्हारे लिए बेहतरीन नमूना इब्राहीम (अ) और उन लोगों में है जो उन के साथ थे, जब उन्हों ने अपनी क़ौम को कहा: बेशक हम तुम से बेज़ार हैं और उन से जिन की तुम अल्लाह के सिवा बन्दगी करते हो, हम तुम्हें नहीं मानते, और ज़ाहिर हो गई हमारे और तुम्हारे दरमियान अदावत और दुश्मनी हमेशा के लिए, यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान ले आओ सिवाए इब्राहीम (अ) का अपने बाप से यह कहना कि मैं ज़रूर मग़्फ़िरत मांगूँगा तुम्हारे लिए, और अल्लाह के आगे मैं तुम्हारे लिए कुछ भी इख़्तियार नहीं रखता, ऐ हमारे रब! हम ने तुझ पर भरोसा किया और तेरी तरफ़ हम ने रुजूअ किया और तेरी तरफ़ वापसी है। (4)

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ

तू ही	बेशक तू	ऐ हमारे रब	हमें	और बख़्श दे	कुफ़्र किया (काफ़िर)	उन के लिए जिन्हों ने	आज़माइश (तख़्तए मश्क़)	हमें न बना	ऐ हमारे रब

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٥ لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا

उम्मीद रखता है	उस के लिए जो	बेहतरीन	चाल (नमूना)	उन में	तुम्हारे लिए	तहक़ीक़ (यक़ीनन) है	5	हिक्मत वाला	ग़ालिब

ع ١ ٦ ٧ اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۭ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٦

6	सतौदा सिफ़ात	वह बेनियाज़	तो बेशक अल्लाह	रूगर्दानी करेगा	और जो-जिस	और आख़िरत का दिन	अल्लाह

عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۭ

दोस्ती	उन से	तुम अ़दावत रखते हो	उन लोगों के	और दरमियान	तुम्हारे दरमियान	वह कर दे	कि	क़रीब है कि अल्लाह

وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۭ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧ لَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ

जो लोग	से	तहक़ीक़ मना नहीं करता अल्लाह	7	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	और अल्लाह	क़ुदरत रखने वाला	और अल्लाह

لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْهُمْ

कि तुम दोस्ती करो उन से	तुम्हारे घर (जमा)	से	और उन्हों ने तुम्हें नहीं निकाला	दीन में	तुम से नहीं लड़ते

وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۝٨ اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ

से	तुम्हें मना करता है अल्लाह	इस के सिवा नहीं	8	इंसाफ़ करने वाले	महबूब रखता है	बेशक अल्लाह	उन से	और तुम इंसाफ़ करो

الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا

और उन्हों ने मदद की	तुम्हारे घर	से	और उन्हों ने तुम्हें निकाला	दीन में	तुम से लड़ें	जो लोग

عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٩

9	ज़ालिम (जमा)	वह	तो वही लोग	और जो उन से दोस्ती रखेगा	कि तुम दोस्ती करो उन से	तुम्हारे निकालने पर

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَاۗءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ

तो उन का इम्तिहान कर लिया करो	मुहाजिर औरतें	मोमिन औरतें	जब तुम्हारे पास आएं	ईमान वालो	ऐ

اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ

तो तुम उन्हें वापस न करो	मोमिन औरतें	तुम उन्हें जान लो	पस अगर	उन के ईमान को	अल्लाह ख़ूब जानता है

اِلَى الْكُفَّارِ ۭ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۭ وَاٰتُوْهُمْ

तुम उन को देदो	उन औरतों के लिए	वह हलाल हैं	और न वह मर्द	उन के लिए	हलाल	वह औरतें नहीं	काफ़िरों	तरफ़

مَّآ اَنْفَقُوْا ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ ۭ

उन के मेहर	तुम उन्हें देदो	जब	कि तुम उन औरतों से निकाह कर लो	तुम पर	और कोई गुनाह नहीं	जो उन्हों ने ख़र्च किया

وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسْـَٔـلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔـلُوْا

और चाहिए कि वह मांग लें	जो तुम ने ख़र्च किया	और तुम मांग लो	काफ़िर औरतें	शादी की रिश्ता	और तुम न क़ब्ज़ा रखो

مَآ اَنْفَقُوْا ۭ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۭ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝١٠

10	हिक्मत वाला	जानने वाला	और अल्लाह	तुम्हारे दरमियान	वह फ़ैसला करता है	अल्लाह का हुक्म	यह	जो उन्हों ने ख़र्च किया

ऐ हमारे रब! हमें न बना फ़ित्ना काफ़िरों के लिए और हमें बख़्श दे ऐ हमारे रब! बेशक तू ही ग़ालिब हिक्मत वाला है। (5)
यक़ीनन तुम्हारे लिए उन में बेहतरीन नमूना है (यानि) उस के लिए जो उम्मीद रखता है अल्लाह (से मुलाक़ात) की और आख़िरत के दिन की, और जिस ने रूगर्दानी की तो बेशक अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात है। (6)
क़रीब है कि अल्लाह तुम्हारे दरमियान और उन लोगों के दरमियान दोस्ती कर दे जिन से तुम अ़दावत रखते हो, और अल्लाह क़ुदरत रखने वाला है, और अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (7)
अल्लाह तुम्हें मना नहीं करता उन लोगों से जो तुम से दीन (के बारे में) नहीं लड़े और उन्हों ने तुम्हें नहीं निकाला तुम्हारे घरों से, कि तुम उन से दोस्ती करो और उन से इंसाफ़ करो, बेशक अल्लाह इंसाफ़ करने वालों को महबूब रखता है। (8)
इस के सिवा नहीं कि अल्लाह तुम्हें मना करता है कि जो लोग तुम से (दीन के बारे) में लड़े और उन्हों ने तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में (निकालने वालों की) मदद की, तुम उन से दोस्ती करो, और जो उन से दोस्ती रखेगा तो वही लोग ज़ालिम हैं। (9)
ऐ ईमान वालो! तुम्हारे पास मोमिन मुहाजिर औरतें आएं तो उन का इम्तिहान कर लिया करो, अल्लाह ख़ूब जानता है उन के ईमान को, पस अगर तुम उन्हें जान लो कि मोमिन हैं तो तुम उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो, वह (मोमिन मुहाजिरात) हलाल नहीं हैं उन (काफ़िरों) के लिए और वह (काफ़िर) उन औरतों के लिए हलाल नहीं, और तुम उन (काफ़िर शोहरों) को देदो जो उन्हों ने ख़र्च किया हो और तुम पर कोई गुनाह नहीं कि तुम उन मुहाजिर औरतों से निकाह कर लो जब तुम उन्हें उन के मेहर देदो, और तुम काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रोके रहो और तुम (कुफ़्फ़ार से) मांग लो जो तुम ने ख़र्च किया हो, और चाहिए कि वह (काफ़िर) तुम से मांग लें जो उन्हों ने ख़र्च किया हो, यह अल्लाह का हुक्म है, वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करता है, और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (10)

وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا

पस दो	तो उन (कुफ़्फ़ार) को सज़ा दो	कुफ़्फ़ार की तरफ़	तुम्हारी बीवियां	से	कोई	तुम्हारे हाथ से निकल जाए	और अगर

الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ

वह जिस	और डरो अल्लाह से	जो उन्हों ने ख़र्च किया	उस क़द्र	उन की औरतें	जाती रहीं	उन को जिन की

اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ﴿١١﴾ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ

आप से बैअ़त करने के लिए	मोमिन औरतें	आप के पास आएं	जब	ऐ नबी (स)	11	ईमान रखते हो	उस पर	तुम

عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ

और न ज़िना करेंगी	और न चोरी करेंगी	किसी शै को	अल्लाह के साथ	वह शरीक न करेंगी	इस पर कि

وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ

जो उन्हों ने गढ़ा हो	बुहतान से	और न लाएंगी	अपनी औलाद	और न वह क़त्ल करेंगी

بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ

तो आप (स) उन से बैअ़त ले लें	नेक कामों में	और न आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी	और अपने पाऊँ	अपने हाथों के दरमियान

وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

ईमान वालो	ऐ	12	रहम करने वाला	बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	उन के लिए अल्लाह से	और मग़्फ़िरत मांगें

لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَىِٕسُوْا مِنَ

से	वह ना उम्मीद हो चुके	उन पर	अल्लाह ने ग़ज़ब किया	वह लोग	तुम दोस्ती न रखो

الْاٰخِرَةِ كَمَا يَىِٕسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ﴿١٣﴾ ع النصف ع ٢ ٨

13	क़ब्रों वाले (मुर्दे)	से	काफ़िर (जमा)	मायूस हैं	जैसे	आख़िरत

آيَاتُهَا ١٤ ❀ سُوْرَةُ الصَّفِّ (٦١) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (61) सूरतुस सफ़ / सफ़ (मोरचा बंदी) — आयात 14

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١﴾

1	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٢﴾ كَبُرَ مَقْتًا

नापसंदीदा	बड़ी	2	तुम करते नहीं	जो	तुम कहते हो	क्यों	ईमान वालो	ऐ

عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ﴿٣﴾ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ

दोस्त रखता है	बेशक अल्लाह	3	तुम करते नहीं	जो	तुम कहो	कि	अल्लाह के नज़दीक

الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ﴿٤﴾

4	सीसा पिलाई हुई	एक इमारत	गोया कि वह	सफ़ बस्ता हो कर	उस के रास्ते में	जो लोग लड़ते हैं

और अगर कुफ़्फ़ार की तरफ़ (रह जाने से) तुम्हारी बीवियों में से कोई तुम्हारे हाथ से निकल जाए तो कुफ़्फ़ार को (इस तरह से) सज़ा दो (कि जो औरतें मदीना आगईं उन के मेहर वापस देने के बजाए अपने पास रख कर) उन को दो जिन की औरतें जाती रहीं, जिस क़द्र उन्हों ने ख़र्च किया हो, और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो। (11)

ऐ नबी (स)! जब आप (स) के पास आएं मोमिन औरतें इस पर बैअ़त करने के लिए कि वह अल्लाह के साथ किसी शै को शरीक न करेंगी और न चोरी करेंगी, और न ज़िना करेंगी, और न वह क़त्ल करेंगी अपनी औलाद को, और न बुहतान लाएंगी जो उन्हों ने अपने हाथों और अपने पाऊँ के दरमियान गढ़ा हो, और न वह आप (स) की नाफ़रमानी करेंगी नेक कामों में तो आप (स) उन से बैअ़त ले लें, और उन के लिए अल्लाह से मग़्फ़िरत मांगें, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (12)

ऐ ईमान वालो! तुम उन लोगों से दोस्ती न रखो जिन पर अल्लाह ने ग़ज़ब किया, वह आख़िरत से ना उम्मीद हो चुके हैं जैसे क़बरों में पड़े हुए काफ़िर मायूस हैं। (13)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है, और वह ग़ालिब हिक्मत वाला है। (1)

ऐ ईमान वालो! तुम क्यों कहते हो वह जो तुम करते नहीं? (2)

अल्लाह के नज़्दीक बड़ी नापसंदीदा बात है कि तुम वह कहो जो तुम करते नहीं। (3)

बेशक अल्लाह उन लोगों को दोस्त रखता है जो उस के रास्ते में सफ़ बस्ता हो कर लड़ते हैं गोया कि वह एक इमारत हैं सीसा पिलाई हुई। (4)

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّيْ

कि मैं	और यक़ीनन तुम जान चुके हो	तुम मुझे ईज़ा पहुँचाते हो	क्यों	ऐ मेरी क़ौम	अपनी क़ौम से	मूसा (अ)	कहा	और जब

رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ؕ فَلَمَّا زَاغُوْٓا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي

हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	उन के दिल	अल्लाह ने कज कर दिए	उन्हों ने कज रवी की	पस जब	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल

الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥ وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اِنِّيْ

बेशक मैं	ऐ बनी इस्राईल	मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	कहा	और जब	5	नाफ़रमान (जमा)	लोग

رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًۢا

और ख़ुशख़बरी देने वाला	तौरेत	से	मुझ से पहले	उस की जो	तस्दीक़ करने वाला	तुम्हारी तरफ़	अल्लाह का रसूल

بِرَسُوْلٍ يَّاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ اَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا

उन्हों ने कहा	वाज़ेह दलाइल के साथ	वह आए उन के पास	फिर जब	अहमद	उस का नाम	मेरे बाद	वह आएगा	एक रसूल की

هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ وَهُوَ

और वह	झूट	अल्लाह पर	वह बुहतान बान्धे	उस से जो	बड़ा ज़ालिम	और कौन	6	खुला जादू	यह

يُدْعٰٓى اِلَى الْاِسْلَامِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝ۚ٧ يُرِيْدُوْنَ

वह चाहते हैं	7	ज़ालिम लोगों	हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	इस्लाम की तरफ़	बुलाया जाता है

لِيُطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝٨

8	काफ़िर नाख़ुश हों	और ख़ाह	अपना नूर	पूरा करने वाला	और अल्लाह	अपने फूंकों से	अल्लाह का नूर	कि बुझादें

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ

दीन पर	ताकि वह उसे ग़ालिब करदे	और दीने हक़	हिदायत के साथ	अपना रसूल (स)	वही जिस ने भेजा

ع ١ ٩ ٩ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝ۧ٩ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰى تِجَارَةٍ

तिजारत पर	मैं तुम्हें बतलाऊँ	क्या	ईमान वालो	ऐ	9	मुश्रिक (जमा)	और ख़ाह नाख़ुश हों	तमाम

تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝١٠ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ

और तुम जिहाद करो	और उसका रसूल (स)	अल्लाह पर	तुम ईमान लाओ	10	दर्दनाक अ़ज़ाब	से	तुम्हें नजात दे

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ

अगर	तुम्हारे लिए बेहतर	यह	और अपनी जानों	अपने मालों से	अल्लाह का रास्ता	में

كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝ۙ١١ يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

उन के नीचे से	जारी हैं	बाग़ात	और वह तुम्हें दाख़िल करेगा	तुम्हारे गुनाह	तुम्हें	वह बख़्श देगा	11	तुम जानते हो

الْاَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝ۙ١٢

12	बड़ी	कामयाबी	यह	हमेशा	बाग़ात	में	पाकीज़ा	और मकानात	नहरें

وَاُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللّٰهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٣

13	और मोमिनों को ख़ुशख़बरी दें	क़रीब	और फ़तह	अल्लाह से	मदद	तुम उसे बहुत चाहते हो	और एक और

और (याद करो) जब मूसा (अ) ने अपनी क़ौम से कहाः ऐ मेरी क़ौम! तुम मुझे क्यों ईज़ा पहुँचाते हो? और यक़ीनन तुम जान चुके हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ, पस जब उन्हों ने कज रवी की तो अल्लाह ने उन के दिलों को कज कर दिया, और अल्लाह हिदायत नहीं देता नाफ़रमान लोगों को। (5)

और (याद करो) जब मरयम (अ) के बेटे ईसा (अ) ने कहाः ऐ बनी इस्राईल! बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूँ तुम्हारी तरफ़, उस की तस्दीक़ करने वाला जो मुझ से पहले तौरेत (आई) और एक रसूल (स) की ख़ुशख़बरी देने वाला जो मेरे बाद आएगा जिस का नाम अहमद (स) होगा, फिर जब वह उन के पास वाज़ेह दलाइल के साथ आए तो उन्हों ने कहा यह तो खुला जादू है। (6)

और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो अल्लाह पर झूट बुहतान बान्धे जबकि वह इस्लाम की तरफ़ बुलाया जाता है, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (7)

वह चाहते हैं कि अल्लाह का नूर अपने फूंकों से बुझादें, और अल्लाह अपना नूर पूरा करने वाला है ख़ाह काफ़िर नाख़ुश हों। (8)

वही है जिस ने अपने रसूल (स) को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा ताकि उसे तमाम दीनों पर ग़ालिब कर दे और ख़ाह मुश्रिक नाख़ुश हों। (9)

ऐ ईमान वालो! क्या मैं तुम्हें ऐसी तिजारत बतलाऊँ? जो तुम्हें दर्दनाक अ़ज़ाब से नजात दे। (10)

तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल (स) पर और तुम अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानते हो। (11)

वह तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और तुम्हें बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे से नहरें बहती हैं। और हमेशा के बाग़ात में पाकीज़ा मकानात हैं, यह बड़ी कामयाबी है। (12)

और वह दूसरी जिसे तुम बहुत चाहते हो (यानि) अल्लाह से मदद और क़रीबी फ़तह, और आप (स) मोमिनों को ख़ुशख़बरी दीजिए। (13)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ

मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	कहा	जैसे	अल्लाह के मददगार	तुम हो जाओ	ईमान वालो	ऐ

لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ اَنْصَارِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ

अल्लाह के मददगार	हम	हवारिय्यों	कहा	अल्लाह की तरफ़	मेरा मददगार	कौन	हवारिय्यों को

فَاٰمَنَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّاۗىِٕفَةٌ ۚ

एक गिरोह	और कुफ़्र किया	बनी इस्राईल	से-का	एक गिरोह	तो ईमान लाया

فَاَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰي عَدُوِّهِمْ فَاَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ۝١٤ ع ٢ ٥ ١٠

14	ग़ालिब	सो वह हो गए	उन के दुश्मनों पर	ईमान वाले	तो हम ने मदद की

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ (٦٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 — (62) सूरतुल जुमुअ़ह जुमा — आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ

ग़ालिब	कमाल पाक	बादशाह हक़ीक़ी	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो कुछ	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

الْحَكِيْمِ ۝١ هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ

उस की आयतें	उन्हें	पढ़ कर सुनाता है	उन में से	एक रसूल (स)	अनपढ़ों में	उठाया (भेजा)	वही जिस ने	1	हिक्मत वाला

وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۤ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ

अलबत्ता गुमराही में	इस से क़ब्ल	और तहक़ीक़ वह थे	हिक्मत (दानिश्मन्दी की बातें)	किताब	और उन्हें सिखाता है	और वह उन्हें पाक करता है

مُّبِيْنٍ ۝٢ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣ ذٰلِكَ

यह	3	हिक्मत वाला	ग़ालिब	और वह	उन से	कि वह अभी नहीं मिले	उन के	और अ़लावा	2	खुली

فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٤ مَثَلُ

मिसाल	4	बड़े	फ़ज़्ल वाला	और अल्लाह	वह चाहता है	जिस को	वह देता है उसे	अल्लाह का फ़ज़्ल

الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ اَسْفَارًا ۭ

किताबें	वह लादे हुए है	गधा	मिसाल की तरह	उन्हों ने न उठाया उसे	फिर	तौरात	उन पर लादी गई	जिन लोगों पर

بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي

हिदायत नहीं देता	और अल्लाह	अल्लाह की आयतों को	उन्हों ने झुटलाया	जिन्हों ने	वह लोग	मिसाल (हालत)	बुरी

الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥ قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ اَنَّكُمْ

कि तुम	तुम्हें ज़अ़म (घमंड) है	अगर	यहूदियो	ऐ	आप (स) फ़रमा दें	5	ज़ालिम लोगों

اَوْلِيَاۗءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٦

6	सच्चे	तुम हो	अगर	मौत	तो तुम तमन्ना करो	दूसरे लोगों के अ़लावा	से	अल्लाह के लिए	दोस्त

ऐ ईमान वालो! तुम हो जाओ अल्लाह के मददगार जैसे मरयम (अ) के बेटे इसा (अ) ने हवारिय्यों को कहा कि कौन है अल्लाह की तरफ़ मेरा मददगार? तो कहा हवारिय्यों ने कि हम अल्लाह के मददगार हैं, पस बनी इस्राईल का एक गिरोह ईमान ले आया और कुफ़्र किया एक गिरोह ने, तो हम ने उन के दुश्मनों पर ईमान वालों की मदद की, सो वह ग़ालिब हो गए। (14)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है, जो बादशाह हक़ीक़ी, कमाल दरजा पाक, ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (1)

वही है जिस ने अनपढ़ों में एक रसूल (स) उन ही में से भेजा, वह उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाता है और उन्हें (बुराइयों से) पाक करता है और उन्हें सिखाता है किताब और दानिश्मन्दी की बातें, और बेशक यह लोग उस से पहले खुली गुमराही में थे। (2)

और उन के अ़लावा (उन को भी) जो अभी उन से नहीं मिले, वह ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (3)

यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, वह जिस को चाहता है उसे देता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है। (4)

उन लोगों की मिसाल जिन पर तौरेत लादी (उतारी) गई, फिर उन्हों ने उसे उठाया गधे की तरह जो किताबें लादे हुए है (उस पर कारबन्द न हुए), उन लोगों की हालत बुरी है जिन्हों ने अल्लाह की आयतों को झुटलाया, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (5)

आप (स) फ़रमा दें: ऐ यहूदियो! अगर तुम्हें घमंड है कि तुम दूसरे लोगों के अ़लावा (सिर्फ़ और सिर्फ़ तुम) अल्लाह के दोस्त हो तो मौत की तमन्ना करो अगर तुम सच्चे हो। (6)

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًا ۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٧

7	ज़ालिमों को	ख़ूब जानता है	और अल्लाह	उन के हाथों ने	भेजा आगे	उसके सबब जो	कभी भी	और वह उस की तमन्ना न करेंगे

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ

तुम लौटाए जाओगे	फिर	तुम्हें मिलने वाली	तो बेशक वह	उस से	तुम भागते हो	जिस से	बेशक मौत	आप (स) फ़रमादें

ع ١ ١١ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٨ۧ يٰٓاَيُّهَا

ऐ	8	तुम करते थे	उस से जो	फिर वह तुम्हें आगाह कर देगा	और ज़ाहिर	तरफ़ (सामने) जानने वाला पोशीदा

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى

तरफ़	तो तुम लपको	जुमा का दिन	से-की	नमाज़ के लिए	पुकारा जाए	जब	ईमान वालो

ذِكْرِ اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ۭ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩ فَاِذَا

फिर जब	9	तुम जानते हो	अगर	तुम्हारे लिए	बेहतर	यह	ख़रीद ओ फ़रोख़्त	और तुम छोड़ दो	अल्लाह की याद

قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ

अल्लाह का फ़ज़्ल	से	और तुम तलाश करो	ज़मीन में	तो तुम फैल जाओ	नमाज़	पूरी हो चुके

وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠ وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً

तिजारत	वह देखते हैं	और जब	10	फ़लाह पाओ	ताकि तुम	बकस्रत	और तुम याद करो अल्लाह को

اَوْ لَهْوَا نِ انْفَضُّوْٓا اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَاۗىِٕمًا ۭ قُلْ مَا عِنْدَ اللّٰهِ

अल्लाह के पास	जो	फ़रमा दें	खड़ा	और आप (स) को छोड़ जाते हैं	उस की तरफ़	वह दौड़ जाते हैं	खेल तमाशा	या

ع ٢ ٣ ١٢ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١ۧ

11	रिज़्क़ देने वाला	बेहतर	और अल्लाह	तिजारत	और से	खेल तमाशा	से	बेहतर

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ (٦٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 — (63) सूरतुल मुनाफ़िक़ून — आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وقف لازم اِذَا جَاۗءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ

वह जानता है	और अल्लाह	अलबत्ता अल्लाह के रसूल	बेशक आप (स)	हम गवाही देते हैं	वह कहते हैं	मुनाफ़िक़	जब आप (स) के पास आते हैं

اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ۭ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۝١ۚ اِتَّخَذُوْٓا

उन्हों ने पकड़ा (बना लिया)	1	अलबत्ता झूटे	मुनाफ़िक़ (जमा)	बेशक	गवाही देता है	और अल्लाह	अलबत्ता उसके रसूल (स)	यक़ीनन आप (स)

اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ اِنَّهُمْ سَاۗءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢

2	वह करते हैं	बुरा जो	बेशक वह	अल्लाह का रास्ता	से	पस वह रोकते हैं	ढाल	अपनी क़समों को

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰي قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٣

3	नहीं समझते	पस वह	उन के दिल	पर	तो मुहर लगादी गई	फिर उन्हों ने कुफ़्र किया	ईमान लाए	इस लिए कि वह	यह

और उस के सबब जो उन के हाथों ने आगे भेजा है वह कभी भी मौत की तमन्ना न करेंगे, और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है। (7)

आप (स) फ़रमा दें: बेशक जिस मौत से तुम भागते हो वह यक़ीनन तुम्हें मिलने वाली है (आ पकड़ेगी) फिर तुम उस के सामने लौटाए जाओगे जो जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, फिर वह तुम्हें उस से आगाह कर देगा जो तुम करते थे। (8)

ऐ ईमान वालो! जब पुकारा जाए (अज़ान दी जाए) जुमा के दिन नमाज़े (जुमा) के लिए तो तुम (फ़ौरन) अल्लाह की याद के लिए लपको और ख़रीद ओ फ़रोख़्त छोड़ दो, यह बेहतर है तुम्हारे लिए अगर तुम जानते हो। (9)

फिर जब नमाज़ पूरी हो चुके तो तुम ज़मीन में फैल जाओ और तलाश करो अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी) और तुम अल्लाह को बकस्रत याद करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (10)

और जब वह देखते हैं तिजारत या खेल तमाशा तो वह उस की तरफ़ दौड़ जाते हैं और आप (स) को खड़ा छोड़ जाते हैं, आप (स) फ़रमा दें कि जो अल्लाह के पास है वह बेहतर है खेल तमाशे से और तिजारत से, और अल्लाह सब से बेहतर रिज़्क़ देने वाला। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब मुनाफ़िक़ आप (स) के पास आते हैं तो कहते हैं: हम गवाही देते हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल (स) हैं और अल्लाह जानता है कि यक़ीनन आप (स) उस के रसूल हैं, और अल्लाह गवाही देता है कि बेशक मुनाफ़िक़ झूटे हैं। (1)

उन्हों ने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है, पस वह (दूसरों को भी) रोकते हैं अल्लाह के रास्ते से, बेशक बुरा है जो वह करते हैं। (2)

यह इस लिए है कि वह ईमान लाए, फिर उन्हों ने कुफ़्र किया तो मुहर लगा दी गई उन के दिलों पर, पस वह नहीं समझते। (3)

وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ

गोया कि वह	उन की बातें	आप सुनें	और अगर वह बात करें	उन के जिस्म	तो आप को ख़ुशनुमा मालूम हों	आप (स) उन्हें देखें	और जब

خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ

पस आप (स) उन से बचें	दुश्मन	वह	अपने ऊपर	हर बुलन्द आवाज़	वह गुमान करते हैं	दीवार से लगाई हुई	लकड़ियां

قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ﴿٤﴾ وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	बख़्शिश की दुआ करें	तुम आओ	कहा जाए उन से	और जब	4	वह फिरे जाते हैं	कहां	उन्हें मारे (ग़ारत करे) अल्लाह

رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٥﴾

5	बड़ा ही तकब्बुर करने वाले हैं	और वह	वह रुकते हैं	और आप (स) उन्हें देखें	अपने सरों को	वह फेर लेते हैं	अल्लाह के रसूल

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ

उन को	हरगिज़ नहीं बख़्शेगा अल्लाह	उन के लिए	आप (स) न बख़्शिश मांगें	या	उन के लिए	आप (स) बख़्शिश मांगें	उन पर	बराबर

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿٦﴾ هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا

न ख़र्च करो तुम	वह कहते हैं	वह लोग जो	वही	6	नाफ़रमान लोग	हिदायत नहीं देता	बेशक अल्लाह

عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ

आस्मानों	और अल्लाह के लिए ख़ज़ाने	वह मुन्तशिर हो जाएं	यहां तक कि	अल्लाह के रसूल	पास	जो	पर

وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ﴿٧﴾ يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَاۤ

अगर हम लौट कर गए	वह कहते हैं	7	वह नहीं समझते	मुनाफ़िक़ (जमा)	और लेकिन	और ज़मीन

اِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ

और उसके रसूल (स) के लिए	और अल्लाह के लिए इज़्ज़त	निहायत ज़लील	वहां से	इज़्ज़तदार	ज़रूर निकाल देगा	मदीने की तरफ़

وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ع ١ ١٣

ईमान वालो	ऐ	8	नहीं जानते	मुनाफ़िक़ (जमा)	और लेकिन	और मोमिनों के लिए

لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ

यह	करेगा	और जो	अल्लाह की याद	से	और न तुम्हारी औलाद	तुम्हारे माल	तुम्हें ग़ाफ़िल न कर दें

فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٩﴾ وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ

उस से क़ब्ल	जो हम ने तुम्हें दिया	से	और तुम ख़र्च करो	9	ख़सारा पाने वाले	वह	तो वही लोग

اَنْ يَّاْتِىَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِىْۤ اِلٰۤى

तक	तू ने मुझे मोहलत दी	क्यों न	ऐ मेरे रब	तो वह कहे	मौत	तुम में से किसी को	कि आजाए

اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠﴾ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ

और हरगिज़ ढील न देगा अल्लाह	10	नेकोकारों	से	और मैं होता	तो मैं सदक़ा करता	एक क़रीब की मुद्दत

نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿١١﴾ ع ٢ ٣ ١٤

11	तुम करते हो	उस से जो	बाख़बर	और अल्लाह	उस की अजल	जब आगई	किसी को

और जब आप (स) उन्हें देखें तो उन के जिस्म आप (स) को ख़ुशनुमा मालूम हों, और अगर वह बात करें तो आप (स) उन की बातों को (ग़ौर से) सुनें, गोया कि वह लकड़ियां हैं दीवार (के सहारे) लगाई हुई, वह हर बुलन्द आवाज़ को अपने ऊपर गुमान करते हैं, वह दुश्मन हैं, पस आप (स) उन से बचें, अल्लाह उन्हें ग़ारत करे, वह कहां फिरे जाते हैं। (4)

और जब उन से कहा जाए कि आओ, बख़्शिश की दुआ करें अल्लाह के रसूल (स) तुम्हारे लिए तो वह अपने सरों को फेर लेते हैं और आप (स) उन्हें देखें तो वह मुँह फेर लेते हैं और वह बड़ा ही तकब्बुर करने वाले हैं। (5)

उन पर (उन के हक़ में) बराबर है कि आप (स) उन के लिए बख़्शीश मांगें या न मांगें, अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा, बेशक अल्लाह नाफ़रमान लोगों को हिदायत नहीं देता। (6)

वही लोग हैं जो कहते हैं कि तुम उन लोगों पर ख़र्च न करो जो अल्लाह के रसूल (स) के पास हैं यहां तक कि वह मुन्तशिर हो जाएं, और आस्मानों और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह के लिए हैं और लेकिन मुनाफ़िक़ समझते नहीं। (7)

वह कहते हैं: अगर हम मदीने की तरफ़ लौट कर गए तो इज़्ज़तदार (मुनाफ़िक़) निहायत ज़लील को वहां से निकाल देगा, और इज़्ज़त तो अल्लाह और उस के रसूल (स) और मोमिनों के लिए है और लेकिन मुनाफ़िक़ नहीं जानते। (8)

ऐ ईमान वालो! तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें, और जो यह करेंगे तो वही लोग ख़सारे में पड़ने वाले हैं। (9)

और हम ने तुम्हें जो दिया है उस में से ख़र्च करो उस से क़ब्ल कि आजाए तुम में से किसी को मौत तो वह कहे कि ऐ मेरे रब! तू ने मुझे क्यों एक क़रीबी मुद्दत तक मोहलत न दी? तो मैं सदक़ा करता और मैं नेकोकारों में से होता। (10)

और जब उस की अजल आगई तो अल्लाह हरगिज़ किसी को ढील न देगा, और अल्लाह उस से बाख़बर है जो तुम करते हो। (11)

آيَاتُهَا ١٨ ❀ سُوْرَةُ التَّغَابُنِ (٦٤) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (64) सूरतुत तग़ाबुन — हार जीत | आयात 18

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ

और उसी के लिए	बादशाही	उसी के लिए	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में	जो	पाकीज़गी बयान करता है अल्लाह की

الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝١ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ

तुम्हें पैदा किया	वही जिस ने	1	क़ुदरत रखने वाला	हर शै	पर	और वह	तमाम तारीफ़ें

فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٢

2	देखने वाला	तुम करते हो	उस को जो	और अल्लाह	कोई मोमिन	और तुम में से	कोई काफ़िर	तो तुम में से

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ

तुम्हें सूरतें दीं	तो बहुत अच्छी	और तुम्हें सूरतें दीं	हक़ के साथ	और ज़मीन	आस्मानों	उस ने पैदा किया

وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ

और जानता है	और ज़मीन	आस्मानो में	जो	वह जानता है	3	वापसी	और उसी की तरफ़

مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤

4	दिलों के भेद	जानने वाला	और अल्लाह	और जो तुम ज़ाहिर करते हो	जो तुम छुपाते हो

اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۡ فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ

अपने काम	वबाल	तो उन्हों ने चख लिया	इस से क़ब्ल	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	ख़बर	क्या नहीं आई तुम्हारे पास

وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٥ ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ

उन के रसूल	आते थे उनके पास	इस लिए कि वह	यह	5	अ़ज़ाब दर्दनाक	और उन के लिए

بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۡ فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى

और बेनियाज़ी फ़रमाई	और वह फिर गए	तो उन्हों ने कुफ़्र किया	वह हिदायत देते हैं हमें	क्या बशर	तो वह कहते	वाज़ेह निशानियों के साथ

اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦ زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۭ

वह हरगिज़ न उठाए जाएंगे	कि	वह काफ़िर हुए	उन लोगों ने जो	दावा किया	6	सतौदा सिफ़ात	बेनियाज़	और अल्लाह	अल्लाह

قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ۭ

जो तुम करते थे	फिर अलबत्ता तुम्हें ज़रूर जतलाया जाएगा	अलबत्ता तुम ज़रूर उठाए जाओगे	मेरे रब की क़सम	हाँ	फ़रमा दें

وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

और उस के रसूल (स)	अल्लाह पर	पस तुम ईमान लाओ	7	आसान	अल्लाह पर	और यह

وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ اَنْزَلْنَا ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨

8	बाख़बर	जो तुम करते हो उस से	और अल्लाह	हम ने नाज़िल किया	वह जो	और नूर

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

अल्लाह की पाकीज़गी बयान करता है जो भी आस्मानों में और जो भी ज़मीन में है, उसी के लिए है बादशाही और उसी के लिए हैं तमाम तारीफ़ें, और वह हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (1)

वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया, सो तुम में से कोई काफ़िर है और तुम में से कोई मोमिन है, और अल्लाह जो तुम करते हो उस का है देखने वाला। (2)

उस ने आस्मानों और ज़मीन को हक़ (दुरुस्त तदबीर) के साथ पैदा किया और तुम्हें सूरतें दीं तो तुम्हें बहुत ही अच्छी सूरतें दीं, और उसी की तरफ़ वापसी है। (3)

वह जानता है जो कुछ आस्मानो में और ज़मीन में है और वह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम ज़ाहिर करते हो, और अल्लाह दिलों के भेद जानने वाला है। (4)

क्या तुम्हारे पास उन लोगों की ख़बर नहीं आई जिन्हों ने इस से पहले कुफ़्र किया, तो उन्हों ने वबाल चख लिया अपने काम का, और उन के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब है। (5)

यह इस लिए हुआ कि उन के पास रसूल वाज़ेह निशानियों के साथ आते थे तो वह कहते थे: क्या बशर हिदायत देते हैं हमें? तो उन्हों ने कुफ़्र किया और फिर गए, और अल्लाह ने बेनियाज़ी फ़रमाई और अल्लाह बेनियाज़ सतौदा सिफ़ात (सज़ावारे हम्द) है। (6)

उन लोगों ने दावा किया जो काफ़िर हुए कि वह हरगिज़ (दोबारा) नहीं उठाए जाएंगे। आप (स) फ़रमा दें, हाँ! क्यों नहीं! मेरे रब की क़सम! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर तुम्हें जतला दिया जाएगा जो तुम करते थे, और यह अल्लाह पर आसान है। (7)

पस तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान ले आओ और उस नूर पर जो हम ने नाज़िल किया है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उस से बाख़बर है। (8)

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ

जिस दिन	वह जमा करेगा तुम्हें	जमा होने (क़ियामत) के दिन	यह	खोने या पाने (हार जीत) का दिन	और जो	वह ईमान लाए	अल्लाह पर

وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

और वह काम करे	अच्छे	वह दूर कर देगा	उस से	उस की बुराइयां	और वह उसे दाख़िल करेगा	बाग़ात	जारी हैं

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ٩

उन के नीचे	नहरें	हमेशा रहेंगे	उन में	हमेशा	यह	बड़ी कामयाबी	9

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया	और उन्हों ने झुटलाया	हमारी आयतों को	यही लोग	दोज़ख़ वाले	हमेशा रहेंगे	उस में

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ١٠ ع مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ ع ١٠ / ١٥

और बुरी	पलटने की जगह (ठिकाना)	10	नहीं पहुँची	कोई मुसीबत	मगर	अल्लाह के इज़्न से	और जो

يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۭ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ١١ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ

वह ईमान लाता है	अल्लाह पर	हिदायत देता है	उस का दिल	और अल्लाह	हर शै को	जानने वाला	11	और तुम इताअ़त करो अल्लाह की

وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰي رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ١٢

और इताअ़त करो रसूल (स) की	फिर अगर	फिर गए तुम	तो इस के सिवा नहीं	हमारे रसूल (स) पर-ज़िम्मे	साफ़ साफ़ पहुँचा देना	12

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَعَلَي اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ١٣ يٰٓاَيُّهَا

अल्लाह	नहीं कोई माबूद	उस के सिवा	और अल्लाह पर	पस भरोसा करना चाहिए	ईमान वाले	13	ऐ

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ

ईमान वालो	बेशक	से	तुम्हारी बीवियां	और तुम्हारी औलाद	दुश्मन	तुम्हारे लिए	पस तुम उन से बचो

وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ١٤ اِنَّمَآ

और अगर	तुम माफ़ कर दो	और तुम दरगुज़र करो	और तुम बख़्श दो	तो बेशक अल्लाह	बख़्शने वाला	मेहरबान	14	इस के सिवा नहीं

اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ١٥ فَاتَّقُوا اللّٰهَ

तुम्हारे माल	और तुम्हारी औलाद	आज़माइश	और अल्लाह	उस के पास	बड़ा अजर	15	पस तुम डरो अल्लाह से

مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۭ

जहां तक तुम से हो सके	और तुम सुनो	और तुम इताअ़त करो	और तुम ख़र्च करो	बेहतर	तुम्हारे हक़ में

وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ١٦ اِنْ

और जो	बचा लिया गया	बख़ीली	अपनी जान	तो यही लोग	वह	फ़लाह पाने वाले	16	अगर

تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ

तुम क़र्ज़ दोगे अल्लाह को	क़र्ज़ हस्ना	वह उसे दो चन्द करेगा	तुम्हारे लिए	और वह तुम्हें बख़्श देगा	और अल्लाह

شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ١٧ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ١٨ ع ٢ / ٨ / ١٦

क़द्र शनास	बुर्दबार	17	ग़ैब का जानने वाला	और ज़ाहिर	ग़ालिब	हिक्मत वाला	18

जिस दिन वह तुम्हें जमा करेगा (यानि) क़ियामत के दिन, यह हार जीत का दिन है, और जो अल्लाह पर ईमान लाए और अच्छे काम करे तो वह (अल्लाह) उस से उस की बुराइयां दूर कर देगा और उसे (उन) बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है। (9)
और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया यही लोग दोज़ख़ वाले हैं, उस में हमेशा रहेंगे और यह है बुरी पलटने की जगह। (10)
कोई मुसीबत नहीं पहुँचती मगर अल्लाह के इज़्न से, और जो शख़्स अल्लाह पर ईमान लाता है वह उस के दिल को हिदायत देता है, और अल्लाह हर शै को जानने वाला है। (11)
और तुम अल्लाह की इताअ़त करो और रसूल (स) की इताअ़त करो, फिर अगर तुम फिर गए तो इस के सिवा नहीं कि हमारे रसूल (स) के ज़िम्मे साफ़ साफ़ पहुँचा देना है। (12)
अल्लाह - उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस मोमिनों को अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए। (13)
ऐ ईमान वालो! बेशक तुम्हारी बाज़ बीवियां और तुम्हारी बाज़ औलाद तुम्हारे (दीन के) दुश्मन हैं, पस तुम उन से बचो, और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र करो और तुम बख़्श दो तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, मेहरबान है। (14)
इस के सिवा नहीं कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद आज़माइश हैं, और अल्लाह के पास बड़ा अजर है। (15)
पस जहां तक हो सके तुम अल्लाह से डरो और सुनो और इताअ़त करो और ख़र्च करो (यह) तुम्हारे हक़ में बेहतर है, और जो अपने नफ़्स की बख़ीली से बचा लिया गया तो यही लोग फ़लाह (दो जहान में कामयाबी) पाने वाले हैं। (16)
अगर तुम अल्लाह को क़र्ज़ हस्ना दोगे तो वह तुम्हारे लिए उसे दो चन्द कर देगा और तुम्हें बख़्शदेगा, और अल्लाह क़द्र शनास, बुर्दबार है। (17)
(वह) जानने वाला है पोशीदा और ज़ाहिर का, ग़ालिब, हिक्मत वाला। (18)

آيَاتُهَا ١٢ ❀ سُوْرَةُ الطَّلَاقِ (٦٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (65) सूरतुत तलाक़ | आयात 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا

और तुम शुमार रखो	उन की इद्दत के लिए	तो उन्हें तलाक़ दो	औरतों	तुम तलाक़ दो	जब	ऐ नबी (स)

الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ

और न वह (ख़ुद) निकलें	उन के घरों	से	तुम न निकालो उन्हें	तुम्हारा रब	और तुम डरो अल्लाह से	इद्दत

اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّتَعَدَّ

आगे निकलेगा	और जो	अल्लाह की हुदूद	और यह	खुली	बेहयाई	यह कि वह करें	मगर

حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۭ لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ

उस के बाद	वह पैदा कर दे	मुम्किन है कि अल्लाह	तुम्हें ख़बर नहीं	अपनी जान	तो तहक़ीक़ उस ने ज़ुल्म किया	अल्लाह की हुदूद

اَمْـرًا ١ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ اَوْ فَارِقُوْهُنَّ

तुम उन्हें जुदा कर दो	या	अच्छे तरीक़े से	तो उन को रोक लो	अपनी मीआ़द	वह पहुँच जाएं	फिर जब	1	कोई और बात

بِمَعْرُوْفٍ وَّاَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَاَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ۭ ذٰلِكُمْ

यही है	गवाही अल्लाह के लिए	और तुम क़ाइम करो	अपने में से	दो (2) इंसाफ़ पसंद	और तुम गवाह कर लो	अच्छे तरीक़े से

يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ڛ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ

वह अल्लाह से डरता है	और जो	और आख़िरत का दिन	अल्लाह पर	जो ईमान रखता है	जिस की नसीहत की जाती है

يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ٢ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۭ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ

वह भरोसा करता है	और जो	उसे गुमान नहीं होता	जहां से	और वह उसे रिज़्क़ देता है	2	नजात की राह	वह उस के लिए निकाल देता है

عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ اَمْرِهٖ ۭ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ٣

3	अन्दाज़ा	हर बात के लिए	बेशक कर रखा है अल्लाह	अपना काम	पहुँचने (पूरा करने) वाला	बेशक अल्लाह	उस के लिए काफ़ी है	तो वह	अल्लाह पर

وَالّٰۗـِٔيْ يَىِٕسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآىِٕكُمْ اِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ

तो उन की इद्दत	अगर तुम्हें शुबाह हो	तुम्हारी बीवियां	से	हैज़	से	ना उम्मीद हो गईं हों	और जो औरतें

ثَلٰثَةُ اَشْهُرٍ وَّالّٰۗـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ۭ وَاُولَاتُ الْاَحْمَالِ اَجَلُهُنَّ اَنْ يَّضَعْنَ

कि वज़अ़ हो जाएं	उन की इद्दत	और हम्ल वालियां	उन्हें हैज़ नहीं आया	और जो	महीने	तीन

حَمْلَهُنَّ ۭ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ اَمْرِهٖ يُسْرًا ٤ ذٰلِكَ اَمْرُ اللّٰهِ

अल्लाह के हुक्म	यह	4	आसानी	उस के काम में	उस के लिए	वह कर देगा	अल्लाह से डरेगा	और जो	उन के हम्ल

اَنْزَلَهٗٓ اِلَيْكُمْ ۭ وَمَنْ يَّتَّقِ اللّٰهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُعْظِمْ لَهٗٓ اَجْرًا ٥

5	अजर	उस को	और बड़ा देगा	उस की बुराइयां	उस से	वह दूर कर देगा	अल्लाह से डरेगा	और जो	तुम्हारी तरफ़	उस ने यह उतारा है

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ नबी (स)! जब तुम औरतों को तलाक़ दो तो उन्हें उन की इद्दत के लिए तलाक़ दो और तुम इद्दत का शुमार रखो, और तुम डरो अल्लाह से जो तुम्हारा रब है, तुम उन्हें उन के घरों से न निकालो और न वह ख़ुद निकलें, मगर यह कि वह खुली बेहयाई की मुरतकिब हों, और यह अल्लाह की हुदूद हैं, और जो अल्लाह की हदों से आगे निकलेगा (तजावुज़ करेगा) तो तहक़ीक़ उस ने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, तुम्हें ख़बर नहीं कि शायद अल्लाह उस के बाद (रुजूअ़ की) कोई और बात (सबील) पैदा कर दे। (1)
फिर जब वह पहुँच जाएं अपनी मीआ़द तो उन्हें अच्छे तरीक़े से रोक लो या उन्हें अच्छे तरीक़े से जुदा (रुख़्सत) कर दो, और अपने में से दो (2) इंसाफ़ पसंद गवाह कर लो और तुम (सिर्फ़) अल्लाह के लिए गवाही दो, यही है जिस की (हर उस शख़्स को) नसीहत की जाती है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है, और जो अल्लाह से डरता है तो वह उस के लिए नजात (मुख़्लिसी) की राह निकाल देता है। (2)
और वह उसे रिज़्क़ देता है जहां से उसे गुमान (भी) नहीं होता, और जो अल्लाह पर भरोसा करता है तो वह उस के लिए काफ़ी है, बेशक अल्लाह अपने काम पूरे करने वाला है, बेशक अल्लाह ने हर बात के लिए अन्दाज़ा मुक़र्रर किया है। (3)
और जो हैज़ से ना उम्मीद हो गईं हों तुम्हारी बीवियों में से, अगर तुम्हें शुब्हा हो तो उन की इद्दत तीन महीने है और (यही हुक्म कमसिन के लिए भी है) जिन्हें हैज़ नहीं आया। और हम्ल वालियों की इद्दत उन के वज़अ़ हम्ल (बच्चा जनने) तक है और जो अल्लाह से डरेगा तो वह उस के लिए उस के काम में आसानी कर देगा। (4)
यह अल्लाह के हुक्म हैं, उस ने तुम्हारी तरफ़ उतारे हैं और जो अल्लाह से डरेगा वह उस की बुराइयां उस से दूर फ़रमा देगा और उस को बड़ा अजर देगा। (5)

اَسۡكِنُوۡهُنَّ مِنۡ حَيۡثُ سَكَنۡتُمۡ مِّنۡ وُّجۡدِكُمۡ وَلَا تُضَآرُّوۡهُنَّ لِتُضَيِّقُوۡا

कि तुम तंग करो	और तुम उन्हें ज़रर न पहुँचाओ	अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़	तुम रहते हो	जहां	तुम उन्हें रखो

عَلَيۡهِنَّ ؕ وَاِنۡ كُنَّ اُولَاتِ حَمۡلٍ فَاَنۡفِقُوۡا عَلَيۡهِنَّ حَتّٰى يَضَعۡنَ حَمۡلَهُنَّ ۚ

उन के हम्ल	यहां तक कि वज़अ़ हो जाएं	उन पर	तो ख़र्च करो तुम	हम्ल वालियां (हम्ल से)	वह हों	और अगर	उन्हें

فَاِنۡ اَرۡضَعۡنَ لَـكُمۡ فَاٰتُوۡهُنَّ اُجُوۡرَهُنَّ ۚ وَاۡتَمِرُوۡا بَيۡنَكُمۡ بِمَعۡرُوۡفٍ ۚ وَاِنۡ

और अगर	माकूल तरीक़े से	और तुम बाहम मश्वरा कर लिया करो आपस में	उन की उजरत	तो तुम उन्हें दो	तुम्हारे लिए	वह दूध पिलाएं	फिर अगर

تَعَاسَرۡتُمۡ فَسَتُرۡضِعُ لَهٗۤ اُخۡرٰى ﴿٦﴾ لِيُنۡفِقۡ ذُوۡ سَعَةٍ مِّنۡ سَعَتِهٖ ؕ وَمَنۡ

और जो	अपनी वसअ़त	से- मुताबिक़	वसअ़त वाला	चाहिए कि ख़र्च करे	6	कोई दूसरी	उस को	तो दूध पिलादेगी	तुम बाहम कशमकश करोगे

قُدِرَ عَلَيۡهِ رِزۡقُهٗ فَلۡيُنۡفِقۡ مِمَّاۤ اٰتٰٮهُ اللّٰهُ ؕ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفۡسًا اِلَّا مَاۤ اٰتٰٮهَا ؕ

जिस क़द्र उस ने उसे दिया	मगर	किसी को	तकलीफ़ नहीं देता अल्लाह	उसे अल्लाह ने दिया	उस में से जो	तो उसे ख़र्च करना चाहिए	उस का रिज़्क़	उस पर	तंग कर दिया गया

سَيَجۡعَلُ اللّٰهُ بَعۡدَ عُسۡرٍ يُّسۡرًا ﴿٧﴾ وَكَاَيِّنۡ مِّنۡ قَرۡيَةٍ عَتَتۡ عَنۡ ع ۱ ۱۷

से	उन्हों ने सरकशी की	बस्तियां	और कई	7	आसानी	तंगी के बदले	जल्द कर देगा अल्लाह

اَمۡرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبۡنٰهَا حِسَابًا شَدِيۡدًا ۙ وَّعَذَّبۡنٰهَا عَذَابًا نُّكۡرًا ﴿٨﴾

8	बहुत बड़ी	अ़ज़ाब	और हम ने उन्हें अ़ज़ाब दिया	सख़्ती से	हिसाब	तो हम ने उन का हिसाब लिया	और उस के रसूलों	अपने रब के हुक्म

فَذَاقَتۡ وَبَالَ اَمۡرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمۡرِهَا خُسۡرًا ﴿٩﴾ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمۡ

उन के लिए	अल्लाह ने तैयार किया है	9	ख़सारा	उन का काम	अन्जाम	और हुआ	अपना काम	वबाल	फिर उन्हों ने चखा

عَذَابًا شَدِيۡدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِى الۡاَلۡبَابِ ۛۚ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا ۛ صح ۱۴ عند المتقدمين ۱۲

ईमान वालो	ऐ अ़क़्ल वालो	पस तुम डरो अल्लाह से	सख़्त	अ़ज़ाब

قَدۡ اَنۡزَلَ اللّٰهُ اِلَيۡكُمۡ ذِكۡرًا ﴿١٠﴾ رَّسُوۡلًا يَّتۡلُوۡا عَلَيۡكُمۡ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ

रोशन	अल्लाह की आयतें	तुम पर	वह पढ़ता है	रसूल	10	नसीहत (किताब)	तुम्हारी तरफ़	तहक़ीक़ नाज़िल की अल्लाह ने

لِّيُخۡرِجَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوۡرِ ؕ وَمَنۡ

और जो	नूर की तरफ़	तारीकियों से	और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए	जो ईमान लाए	ताकि वह निकाले

يُّؤۡمِنۡۢ بِاللّٰهِ وَيَعۡمَلۡ صَالِحًا يُّدۡخِلۡهُ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ

नहरें	उन के नीचे से	बहती हैं	बाग़ात	वह उसे दाख़िल करेगा	अच्छे	और वह अ़मल करेगा	अल्लाह पर	ईमान लाएगा

خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَاۤ اَبَدًا ؕ قَدۡ اَحۡسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزۡقًا ﴿١١﴾ اَللّٰهُ الَّذِىۡ خَلَقَ

पैदा किए	अल्लाह वह जिस ने	11	रोज़ी	उस के लिए	बेशक बहुत अच्छी रखी अल्लाह ने	हमेशा हमेशा	उन में	वह हमेशा रहेंगे

سَبۡعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الۡاَرۡضِ مِثۡلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الۡاَمۡرُ بَيۡنَهُنَّ لِتَعۡلَمُوۡۤا

ताकि वह जान लें	उन के दरमियान	हुक्म	उतरता है	उन की तरह	और ज़मीन से (भी)	सात आस्मान

اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىۡءٍ قَدِيۡرٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدۡ اَحَاطَ بِكُلِّ شَىۡءٍ عِلۡمًا ﴿١٢﴾ ع ۲ ۱۸

12	इल्म से	हर शै	अहाता किया हुआ है	और यह कि अल्लाह	क़ुदरत रखता है	हर शै पर	कि अल्लाह

तुम जहां रहते हो उन्हें तुम अपनी इस्तिताअ़त के मुताबिक़ (वहां) रखो, और तुम उन्हें तंग करने के लिए ज़रर (तक्लीफ़) न पहुँचाओ, और अगर वह हम्ल से हों तो उन पर ख़र्च करो यहां तक कि वज़अ़ हम्ल हो जाए (बच्चा पैदा हो जाए), फिर अगर वह तुम्हारे लिए (तुम्हारी ख़ातिर) दूध पिलाएं तो उन्हें उन की उज्रत दो, और तुम आपस में माकूल तरीक़े से मश्वरा कर लिया करो। और अगर तुम बाहम कशमकश करोगे तो उस को कोई दूसरी दूध पिला देगी। **(6)** चाहिए कि वस्अ़त वाला अपनी वस्अ़त के मुताबिक़ ख़र्च करे और जिस पर तंग कर दिया गया हो उस का रिज़्क़ (आमदनी) तो अल्लाह ने जो उसे दिया है उस में से ख़र्च करना चाहिए, अल्लाह किसी को तक्लीफ़ नहीं देता (मुकल्लफ़ नहीं ठहराता) मगर (उसी क़द्र) जितना उस ने उसे दिया है, जल्द कर देगा अल्लाह तंगी के बाद आसानी। **(7)** और कित्नी ही बस्तियां हैं जिन्हों ने अपने रब के हुक्म से और उस के रसूलों से सरकशी की और हम ने सख़्ती से उन का हिसाब लिया और हम ने उन्हें बहुत बड़ा अ़ज़ाब दिया। **(8)** फिर उन्हों ने अपने काम का वबाल चखा और उन के काम का अन्जाम ख़सारा (घाटा) हुआ। **(9)** अल्लाह ने उन के लिए सख़्त अ़ज़ाब तैयार किया है, पस तुम अल्लाह से डरो ऐ अ़क़्ल वालो - ईमान वालो! तहक़ीक़ अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की है। **(10)** और रसूल (स) (भेजा) जो तुम पर पढ़ता है अल्लाह की रोशन आयतें ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए वह उन्हें निकाले तारीकियों से नूर की तरफ़, और जो अल्लाह पर ईमान लाएगा और अच्छे अ़मल करेगा तो वह उसे उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें बहती हैं, वह रहेंगे उन में हमेशा हमेशा, बेशक अल्लाह ने उस के लिए बहुत अच्छी रोज़ी रखी है। **(11)** अल्लाह वह है जिस ने सात (7) आस्मान पैदा किए और ज़मीन भी उन की तरह, उन के दरमियान हुक्म उतरता है ताकि वह जान लें कि अल्लाह हर शै पर क़ुदरत रखता है और यह कि अल्लाह ने हर शै का इल्म से अहाता किया हुआ है। **(12)**

آيَاتُهَا ١٢ ❀ سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ (٦٦) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (66) सूरतुत तहरीम — हराम करना | आयात 12

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ

खुशनूदी	चाहते हुए	तुम्हारे लिए	जो अल्लाह ने हलाल किया	तुम क्यों हराम ठहराते हो?	ऐ नबी (स)

اَزْوَاجِكَ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ① قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ

खोलना (कफ़्फ़ारा)	तुम्हारे लिए	तहक़ीक़ मुक़र्रर कर दिया अल्लाह ने	1	मेहरबान	बख़्शने वाला	और अल्लाह	अपनी बीवियों

اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ② وَاِذْ

और जब	2	हिक्मत वाला	जानने वाला	और वह	तुम्हारा कारसाज़	और अल्लाह	तुम्हारी क़समें

اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ

और उस को ज़ाहिर कर दिया	उस ने ख़बर कर दी उस बात की	फिर जब	एक बात	अपनी बीवी	बाज़ (एक)	तक-से	नबी (स) ने राज़ की बात कही

اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ

वह बात	उस (बीवी) को जतलाई	फिर जब	बाज़ से	और एराज़ किया	उस का कुछ	उस (नबी) ने ख़बर दी	उस पर	अल्लाह

قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۭ قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ③ اِنْ تَتُوْبَآ

अगर तुम दोनों तौबा करो	3	ख़बर रखने वाला	इल्म वाला	मुझे ख़बर दी	फ़रमाया	इस	किस ने आप (स) को ख़बर दी	वह बोली

اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ

तो बेशक अल्लाह	उस पर	तुम एक दूसरी की मदद करोगी	और अगर	तुम्हारे दिल	तो यक़ीनन कज हो गए	अल्लाह के सामने

هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ

उस के बाद (उन के अ़लावा)	और फ़रिश्ते	मोमिन (जमा)	और नेक	और जिब्राईल (अ)	उस का रफ़ीक़	वह

ظَهِيْرٌ ④ عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ اَزْوَاجًا خَيْرًا

बेहतर	बीवियां	कि उन के लिए बदल दे	अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दें	उन का रब	क़रीब है	4	मददगार

مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰۗىِٕبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰۗىِٕحٰتٍ

रोज़ेदार	इबादत गुज़ार	तौबा करने वालियां	फ़रमांबरदारी करने वालियां	ईमान वालियां	इताअ़त गुज़ार	तुम से

ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ⑤ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ

और अपने घर वालों को	अपने आप को	तुम बचाओ	ईमान वालो	ऐ	5	और कुंवारियां	शौहर दीदा

نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلٰۗىِٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ

ज़ोर आवर	दुरुश्त ख़ू	फ़रिश्ते	उस पर	और पत्थर	आदमी	उस का ईंधन	आग

لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ⑥

6	उन्हें हुक्म दिया जाता है	जो	और वह करते हैं	वह हुक्म देता है उन्हें	जो	वह नाफ़रमानी नहीं करते अल्लाह की

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ नबी (स)! जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल किया है तुम उसे क्यों हराम ठहराते हो? अपनी बीवियों की ख़ुशनूदी चाहते हुए, और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (1) तहक़ीक़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा कारसाज़ है, और वह जानने वाला हिक्मत वाला है। (2) और जब नबी (स) ने अपनी एक बीवी से एक राज़ की बात कही, फिर जब उस (बीवी) ने उस बात की (किसी और को) ख़बर कर दी और अल्लाह ने ज़ाहिर कर दिया उस (नबी स) पर, उस ने उस का कुछ (हिस्सा बीवी को) बताया और बाज़ से एराज़ किया, फिर उस बीवी को वह बात जतलाई तो वह पूछी कि आप (स) को किस ने ख़बर दी इस (बात) की? आप (स) ने फ़रमायाः मुझे इल्म वाले, ख़बर रखने वाले ने ख़बर दी। (3) (ऐ बीवियों!) अगर तुम दोनों अल्लाह के सामने तौबा करो (तो बेहतर है क्योंकि) तुम्हारे दिल यक़ीनन कज हो गए, अगर उस (नबी स) की (ईज़ा रसानी) पर तुम एक दूसरी की मदद करोगी तो बेशक अल्लाह उस का रफ़ीक़ है और जिब्राईल (अ) और नेक मोमिनीन, और फ़रिश्ते (भी) उन के अ़लावा मददगार हैं। (4) अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दें तो क़रीब है कि उस का रब उस के लिए बीवियां बदल दे तुम से बेहतर इताअ़त गुज़ार, ईमान वालियां, फ़रमांबरदारी करने वालियां, तौबा करने वालियां, इबादत गुज़ार, रोज़ेदार, शौहर दीदा और कुंवारियां। (5) ऐ ईमान वालो! तुम अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस का ईंधन आदमी और पत्थर हैं, उस पर दुरुश्त ख़ू, ज़ोर आवर फ़रिश्ते (मुअ़य्यन) हैं, अल्लाह जो उन्हें हुक्म देता है उस की नाफ़रमानी नहीं करते और वह करते हैं जो उन्हें हुक्म दिया जाता है। (6)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۭ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا

ऐ	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	तुम उज़्र न करो	आज	इस के सिवा नहीं कि तुम्हें बदला दिया जाएगा जो

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٧ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ۭ ع ١ ٧ ١٩

तुम करते थे	7	ऐ	ईमान वालो	तुम तौबा करो	अल्लाह के आगे	तौबा	ख़ालिस

عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ

उम्मीद है	तुम्हारा रब	कि वह दूर कर देगा	तुम से	तुम्हारी बुराइयां (गुनाह)	और वह दाख़िल करेगा तुम्हें	बाग़ात	जारी हैं

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ

उन के नीचे	नहरें	उस दिन	रुस्वा न करेगा अल्लाह	नबी (स)	और जो लोग ईमान लाए	उस के साथ

نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا

उन का नूर	दौड़ता होगा	उन के सामने	और उन के दाहिने	वह कहते (दुआ करते) होंगे	ऐ हमारे रब	पूरा कर दे हमारे लिए

نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ اِنَّكَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٨ يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ

हमारा नूर	और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमादे	बेशक तू	पर	हर शै	क़ुदरत रखने वाला	8	ऐ नबी (स)	जिहाद कीजिए

الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ۭ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ وَبِئْسَ

काफ़िरों	और मुनाफ़िक़ों	और सख़्ती कीजिए	उन पर	और उन का ठिकाना	जहन्नम	और बुरी

الْمَصِيْرُ ۝٩ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ

जगह	9	बयान की अल्लाह ने	मिसाल	काफ़िरों के लिए	नूह (अ) की बीवी

وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ۭ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ

और लूत (अ) की बीवी	दो सालेह	हमारे बन्दे	से	दो बन्दे	मातहत	दोनों थें

فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـــًٔا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ

सो उन्हों ने उन दोनों से ख़ियानत की	तो उन दोनों के काम न आया	उन के	अल्लाह से-आगे	कुछ	और कहा गया	तुम दोनों दाख़िल हो जाओ जहन्नम

مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠ وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ وقف لازم

साथ	दाख़िल होने वाले	10	और बयान की अल्लाह ने	मिसाल	मोमिनों के लिए	फ़िरऔन की बीवी

اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ

जब	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मेरे लिए बना दे	अपने पास	एक घर	जन्नत में	और मुझे बचा ले	से

فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١ ۙ وَمَرْيَمَ

फ़िरऔन	और उस का अ़मल	मुझे बचा ले	से	ज़ालिमों की क़ौम	11	और मरयम

ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا

इमरान की बेटी	वह जिस ने	हिफ़ाज़त की	अपनी शर्मगाह	सो हम ने फूंकी	उस में	अपनी रूह से

وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢ ۧ ع ٢ ٥ ٢٠

और उस ने तस्दीक़ की	बातों की	अपना रब	और उस की किताबों	और वह थी	से	फ़रमांबरदारी करने वालियां	12

ऐ काफ़िरो! आज तुम उज़्र न करो (बहाने न बनाओ) इस के सिवा नहीं कि तुम्हें उस का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे। (7)

ऐ ईमान वालो! तुम अल्लाह के आगे तौबा करो ख़ालिस (सच्ची) तौबा, उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम से दूर कर देगा तुम्हारे गुनाह और वह तुम्हें उन बाग़ात में दाख़िल करेगा जिन के नीचे नहरें जारी हैं, उस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी (स) को और उन लोगों को जो उस के साथ ईमान लाए, उन का नूर उन के सामने और उन के दाएं दौड़ता होगा, और वह दुआ करते होंगे: ऐ हमारे रब! हमारे लिए हमारा नूर पूरा कर दे और हमारी मग़्फ़िरत फ़रमा दे, बेशक तू हर शै पर क़ुदरत रखने वाला है। (8)

ऐ नबी (स) जिहाद कीजिए काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों से और उन पर सख़्ती कीजिए, और उन का ठिकाना जहन्नम है, और वह (बहुत) बुरी जगह है। (9)

बयान की अल्लाह ने काफ़िरों के लिए नूह (अ) की बीवी और लूत (अ) की बीवी की मिसाल, वह दोनों दो बन्दों के मातहत थीं हमारे सालेह बन्दों में से, सो उन्हों ने अपने शौहरों से ख़ियानत की तो अल्लाह के आगे उन दोनों के कुछ काम न आ सके, और कहा गया तुम दोनों जहन्नम में दाख़िल हो जाओ दाख़िल होने वालों के साथ। (10)

और अल्लाह ने मोमिनों के लिए फ़िरऔन की बीवी की मिसाल पेश की, जब उस (बीवी) ने कहा: ऐ मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बनादे और मुझे फ़िरऔन और उस के अ़मल से बचा ले और मुझे ज़ालिमों की क़ौम से बचा ले। (11)

और (दूसरी मिसाल) इमरान (अ) की बेटी मरयम (अ), जिस ने हिफ़ाज़त की अपनी शर्मगाह की, सो हम ने उस में अपनी रुह फूंकी, और उस ने तस्दीक़ की अपने रब की बातों की और उस की किताबों की और वह फ़रमांबरदारी करने वालियों में से थी। (12)

آيَاتُهَا ٣٠ ❀ سُوْرَةُ الْمُلْكِ (٦٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 | (67) सूरतुल मुल्क / बादशाही | आयात 30

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۡ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ

बड़ी बरकत वाला	वह जिस	उस के हाथ में	बादशाही	और वह	पर	हर शै

قَدِيْرُ ۙ﴿١﴾ الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ

क़ुदरत रखने वाला	1	वह जिस	पैदा किया	मौत	और ज़िन्दगी	ताकि वह आज़माए तुम्हें	तुम में से कौन	सब से बेहतर

عَمَلًا ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ﴿٢﴾ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ؕ

अमल में	और वह	ग़ालिब	बख़्शने वाला	2	जिस ने बनाए	सात आस्मान	एक के ऊपर एक

مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ؕ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ

तू न देखेगा	में	बनाना (तख़लीक़)	रहमान (अल्लाह)	कोई फ़र्क़	फिर लौटा	निगाह

هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ﴿٣﴾ ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ

क्या तू देखता है?	कोई शिगाफ़	3	फिर	तू दोबारा लौटा	निगाह	दोबारा	वह लौट आएगी	तेरी तरफ़

الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ﴿٤﴾ وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا

निगाह	ख़ार हो कर	और वह	थकी मान्दा	4	और यक़ीनन हम ने आरास्ता किया	आस्माने दुनिया

بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ

चिराग़ों से	और हम ने उसे बनाया	मारने का औज़ार	शैतानों के लिए	और हम ने तैयार किया	उन के लिए

عَذَابَ السَّعِيْرِ ﴿٥﴾ وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ؕ

दहकती आग (जहन्नम) का अज़ाब	5	और उन लोगों के लिए	जिन्हों ने कुफ़्र किया	उन के रब की तरफ़ से	जहन्नम का अज़ाब

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٦﴾ اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ

और बुरी	लौटने की जगह	6	जब वह डाले जाएंगे	उस में	वह सुनेंगे	उस का	चीख़ना चिल्लाना	और वह

تَفُوْرُ ۙ﴿٧﴾ تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ اُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَاَلَهُمْ

जोश मार रही होगी	7	क़रीब है कि फट पड़े	ग़ज़ब से	जब भी	डाला जाएगा उस में	कोई गिरोह	वह उन से पूछेंगे

خَزَنَتُهَآ اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَذِيْرٌ ﴿٨﴾ قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا

उस के दारोग़ा	क्या नहीं आया तुम्हारे पास	कोई डराने वाला	8	वह कहेंगे	हाँ	ज़रूर आया हमारे पास	डराने वाला	सो हम ने झुटलाया

وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ﴿٩﴾

और हम ने कहा	नहीं नाज़िल की अल्लाह ने	कुछ	नहीं तुम	मगर (सिर्फ़)	गुमराही में	बड़ी	9

وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ اَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١٠﴾

और वह कहेंगे	अगर	हम सुनते	या हम समझते	हम न होते	में	दोज़ख़ियों	10

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बड़ी बरकत वाला है वह जिस के हाथों में है बादशाही, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला। (1)

वह जिस ने पैदा किया मौत और ज़िन्दगी को, ताकि वह तुम्हें आज़माए कि तुम में से कौन है अमल में सब से बेहतर, और वह ग़ालिब बख़्शने वाला है। (2)

जिस ने सात आस्मान बनाए एक के ऊपर एक, तू अल्लाह की तख़्लीक़ में कोई फ़र्क़ न देखेगा, फिर निगाह लौटा कर (देख) क्या तू कोई शिगाफ़ (दराड़) देखता है। (3)

फिर दोबारा निगाह लौटा कर (देख) वह तेरी तरफ़ ख़ार हो कर थकी मान्दी लौट आएगी। (4)

और यक़ीनन हम ने आरास्ता किया आस्माने दुनिया को चिराग़ों से और हम ने उसे शैतानों के लिए मारने का औज़ार बनाया और हम ने उन के लिए जहन्नम का अज़ाब तैयार किया है। (5)

और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन के लिए उन के रब की तरफ़ से जहन्नम का अज़ाब है, और (यह) बुरी लौटने की जगह है। (6)

जब वह उस में डाले जाएंगे तो वह सुनेंगे उस का चीख़ना चिल्लाना और वह जोश मार रही होगी। (7)

क़रीब है कि ग़ज़ब से फट पड़े, जब भी उस में कोई गिरोह डाला जाएगा, उन से उस के दारोग़ा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था? (8)

वह कहेंगे: हां (क्यों नहीं) हमारे पास ज़रूर डराने वाला आया, सो हम ने झुटलाया और हम ने कहा कि अल्लाह ने कुछ नाज़िल नहीं किया, तुम सिर्फ़ बड़ी गुमराही में हो। (9)

और वह कहेंगे: अगर हम सुनते या हम समझते तो हम दोज़ख़ियों में न होते। (10)

सो उन्हों ने अपने गुनाहों का एतिराफ़ कर लिया, पस लानत है दोज़ख़ियों के लिए। (11) बेशक जो लोग बिन देखे अपने रब से डरते हैं उन के लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है। (12) और तुम अपनी बात छुपाओ या उस को बुलन्द आवाज़ से कहो, वह बेशक जानने वाला है दिलों के भेद को। (13) क्या जिस ने पैदा किया वही न जानेगा? और वह बारीक बीन बड़ा बाख़बर है। (14) वही है जिस ने तुम्हारे लिए ज़मीन को किया मुसख़्ख़र ताकि तुम उस के रास्तों में चलो और उस के रिज़्क़ में से खाओ, और उसी की तरफ़ जी उठ कर जाना है। (15) क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो? जो आस्मान में है कि वह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे तो नागहां वह हिलने लगे। (16) क्या तुम (उस से) बेख़ौफ़ हो जो आस्मानों में है कि वह तुम पर पत्थरों की बारिश भेज दे? सो तुम जल्द जान लोगे कि मेरा डराना कैसा है? (17) और ज़रूर उन लोगों ने झुटलाया जो इन से पहले थे तो (याद करो) कैसा हुआ मेरा अ़ज़ाब! (18) क्या उन्हों ने अपने ऊपर परिन्दों को पर फैलाते और सुकेड़ते नहीं देखा, उन्हें (कोई) नहीं थाम सकता अल्लाह के सिवा, बेशक वह हर चीज़ का देखने वाला। (19) भला तुम्हारा वह कौन सा लशकर है जो तुम्हारी मदद करे अल्लाह के सिवा, काफ़िर नहीं मगर (महज़) धोके में हैं। (20) भला कौन है वह जो तुम्हें रिज़्क़ दे अगर वह अपना रिज़्क़ रोकले? बल्कि वह सरकशी और फ़रार में ढीट बने हुए हैं। (21) पस जो शख़्स अपने मुँह के बल गिरता हुआ (औन्धा) चलता है ज़ियादा हिदायत याफ़्ता है या वह जो सीधे रास्ते पर सीधा चलता है? (22)

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّاَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ﴿١١﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ

जो लोग	बेशक	11	दोज़ख़ियों के लिए	तो दूरी (लानत)	अपने गुनाहों का	सो उन्हों ने एतिराफ़ कर लिया

يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ﴿١٢﴾ وَاَسِرُّوْا

और तुम छुपाओ	12	बड़ा	और अजर	बख़्शिश	उन के लिए	बिन देखे	अपना रब	डरते हैं

قَوْلَكُمْ اَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٣﴾ اَلَا يَعْلَمُ

क्या नहीं जानेगा	13	सीनों (दिलों) के भेद	जानने वाला	बेशक वह	उस को	या बुलन्द आवाज़ से कहो	अपनी बात

مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ﴿١٤﴾ هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ ع ١٤

तुम्हारे लिए	वह जिस ने किया	वही	14	बड़ा बाख़बर	बारीक बीन	और वह	जिस ने पैदा किया

الْاَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ وَاِلَيْهِ

और उसी की तरफ़	उस के रिज़्क़ से	सो तुम खाओ	उस के रास्तों में	ताकि तुम चलो	मुसख़्ख़र	ज़मीन

النُّشُوْرُ ﴿١٥﴾ ءَاَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ

तुम्हें	कि वह धंसा दे	आस्मान में	जो	क्या तुम बेख़ौफ़ हो	15	जी उठ कर जाना

الْاَرْضَ فَاِذَا هِيَ تَمُوْرُ ﴿١٦﴾ اَمْ اَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ اَنْ

कि	आस्मान में	जो	क्या तुम बेख़ौफ़ हो	16	वह जुम्बिश करे	तो नागहां	ज़मीन

يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ﴿١٧﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ

और पक्का झुटलाया	17	मेरा डराना	कैसा	सो तुम जल्द जान लोगे	पत्थरों की बारिश	तुम पर	वह भेजे

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ﴿١٨﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا

क्या नहीं देखा उन्हों ने	18	मेरा अ़ज़ाब	हुआ	तो कैसा	इन से क़ब्ल	से	वह लोग जो

اِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؕۘ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ وقف لازم وقف غفران وقف منزل

रहमान (अल्लाह)	सिवा	नहीं थाम सकता उन्हें	और सुकेड़ते	पर फैलाते	अपने ऊपर	परिन्दों को

اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۢ بَصِيْرٌ ﴿١٩﴾ اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ

तुम्हारा	लशकर	वह	जो	भला कौन है वह?	19	देखने वाला	हर शै को	बेशक वह

يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ۚ ﴿٢٠﴾

20	धोके में	मगर	काफ़िर (जमा)	नहीं	अल्लाह के सिवा	से	वह मदद करे तुम्हारी

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا

बल्कि जमे हुए	अपना रिज़्क़	वह रोक ले	अगर	वह जो रिज़्क़ दे तुम्हें	भला कौन है

فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ ﴿٢١﴾ اَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ

अपने मुँह के बल	गिरता हुआ	वह चलता है	पस क्या जो	21	और भागते हैं	सरकशी

اَهْدٰٓى اَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٢﴾

22	सीधा रास्ता	पर	बराबर (सीधा)	चलता है	या वह जो	ज़ियादा हिदायत याफ़्ता

قُلْ هُوَ الَّذِىْٓ اَنْشَاَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ

फ़रमा दें वही	वह जिस ने पैदा किया तुम्हें	और उस ने बनाए	तुम्हारे लिए	कान	और आँखें

وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ قُلْ هُوَ الَّذِىْ ذَرَاَكُمْ

और दिल (जमा)	बहुत कम	जो तुम शुक्र करते हो	23	फ़रमा दें	वही	वह जिस ने फैलाया तुम्हें

فِى الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ

ज़मीन में	और उसी की तरफ़	तुम उठाए जाओगे	24	और वह कहते हैं	कब	यह वादा

اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۠ وَاِنَّمَآ اَنَا

अगर	तुम हो	सच्चे	25	फ़रमा दें	इस के सिवा नहीं कि इल्म	अल्लाह के पास	और इस के सिवा नहीं	मैं

نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٦﴾ فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِيْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا

डराने वाला	साफ़ साफ़	26	फिर जब	वह उसे देखेंगे	नज़्दीक आता	बुरे (सियाह) हो जाएंगे चेहरे	जिन्हों ने कुफ़्र किया

وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ﴿٢٧﴾ قُلْ اَرَءَيْتُمْ

और कहा जाएगा	यह	वह जो	तुम थे	उस को	तुम मांगते	27	फ़रमा दें	किया तुम ने देखा

اِنْ اَهْلَكَنِىَ اللّٰهُ وَمَنْ مَّعِىَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ

अगर	मुझे हलाक कर दे अल्लाह	और जो	मेरे साथ	या वह रहम फ़रमाए हम पर	तो कौन	पनाह देगा	काफ़िरों

مِنْ عَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٨﴾ قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ

से	दर्दनाक अज़ाब	28	फ़रमा दें	वही रहमान	हम ईमान लाए	उस पर	और उसी पर

تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِىْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢٩﴾ قُلْ

हम ने भरोसा किया	सो तुम जल्द जान लोगे	कौन वह	में	खुली गुमराही	29	फ़रमा दें

اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّاْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ﴿٣٠﴾ ع ٢ ١٦ ٢

क्या तुम ने देखा (भला देखो)	अगर हो जाए	तुम्हारा पानी	नीचे उतरा हुआ	तो कौन	ले आएगा तुम्हारे पास	रवां पानी	30

آيَاتُهَا ٥٢ ❀ (٦٨) سُوْرَةُ الْقَلَمِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 52 (68) सूरतुल क़लम रुकूआत 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ﴿١﴾ مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ

नून क़सम है क़लम की	और जो	वह लिखते हैं	1	नहीं आप (स)	नेमत (फ़ज़्ल) से	अपना रब

بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢﴾ وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ﴿٣﴾ وَاِنَّكَ لَعَلٰى

मजनून	2	और बेशक आप के लिए	अलबत्ता अजर	ख़तम न होने वाला	3	और बेशक आप (स)	यक़ीनन-पर

خُلُقٍ عَظِيْمٍ ﴿٤﴾ فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ﴿٥﴾ بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ﴿٦﴾

अख़्लाक़ का ऊंचा मुक़ाम	4	आप (स) जल्द देख लेंगे	और वह भी देख लेंगे	5	तुम में से कौन?	दीवाना	6

आप (स) फ़रमा दें: वही है जिस ने तुम्हें पैदा किया और उस ने बनाए तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल, तुम बहुत कम शुक्र करते हो। (23)
आप (स) फ़रमा दें: वही है जिस ने तुम्हें ज़मीन में फैलाया और उसी की तरफ़ तुम उठाए जाओगे। (24)
और वह कहते हैं कि यह वादा कब (पूरा होगा?) अगर तुम सच्चे हो। (25)
आप (स) फ़रमा दें: इस के सिवा नहीं कि इल्म अल्लाह के पास है, और इस के सिवा नहीं कि मैं साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (26)
फिर जब वह उसे नज़्दीक आता देखेंगे तो उन लोगों के चेहरे सियाह हो जाएंगे जिन्हों ने कुफ़्र किया और कहा जाएगा कि यह है वह जो तुम मांगते थे। (27)
आप (स) फ़रमा दें: भला देखो तो अगर अल्लाह हलाक कर दे मुझे और (उन्हें) जो मेरे साथ हैं या हम पर रहम फ़रमाए तो काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन बचाएगा? (28)
आप (स) फ़रमा दें: वही रहमान है, हम ईमान लाए उस पर और उसी पर हम ने भरोसा किया, सो तुम जल्द जान लोगे कि कौन खुली गुमराही में है? (29)
आप (स) फ़रमा दें: भला देखो तो अगर हो जाए तुम्हारा पानी नीचे को उतरा हुआ (ख़ुश्क) तो कौन ले आएगा तुम्हारे पास (सूत का) रवां पानी? (30)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

नून। क़सम है क़लम की और जो वह लिखते हैं। (1)
आप (स) अपने रब के फ़ज़्ल से मजनून नहीं हैं। (2)
और बेशक आप (स) के लिए अजर है ख़तम न होने वाला। (3)
और बेशक आप (स) अख़्लाक़ के ऊंचे मुक़ाम पर हैं। (4)
पस आप (स) जल्द देख लेंगे और वह भी देख लेंगे (5)
(कि) तुम में से कौन दीवाना है? (6)

بेशक आप (स) का रब उस को खूब जानता है जो गुमराह हुआ उस की राह से और वह खूब जानता है हिदायत याफ़्ता लोगों को। (7)
पस आप (स) झुटलाने वालों का कहा न मानें। (8)
वह चाहते हैं कि काश आप (स) नर्मी करें तो वह (भी) नर्मी करें। (9)
और आप (स) बेवक़ूअत बात बात पर क़समें खाने वाले का कहा न मानें। (10)
ऐब निकालने वाला चुग़लियां लगाते फिरने वाला। (11)
माल में बुख़्ल करने वाला, हद से बढ़ने वाला गुनाहगार। (12)
सख़्त खू, उस के बाद बद असल। (13)
इस लिए कि वह माल वाला और औलाद वाला है। (14)
जब उसे हमारी आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वह कहता है: यह अगले लोगों की कहानियां है। (15)
हम जल्द दाग़ देंगे उस की नाक पर। (16)
बेशक हम ने उन्हें आज़माया जैसे हम ने आज़माया था बाग़ वालों को, जब उन्हों ने क़सम खाई कि हम सुब्ह होते उस का फल ज़रूर तोड़ लेंगे। (17)
और उन्हों ने "इन्शा अल्लाह" न कहा। (18)
पस उस (बाग़) पर तेरे रब की तरफ़ से एक अ़ज़ाब फिर गया और वह सोए हुए थे। (19)
तो वह (बाग़) सुब्ह को रह गया जैसे एक कटा हुआ खेत। (20)
तो वह सुब्ह होते एक दूसरे को पुकारने लगे। (21)
कि सुब्ह सवेरे अपने खेत पर चलो अगर तुम काटने वाले हो (अगर तुम्हें खेती काटनी है)। (22)
फिर वह चले और वह आपस में चुपके चुपके कहते थे। (23)
कि आज वहां तुम पर कोई मिस्कीन दाख़िल न होने पाए। (24)
और वह सुब्ह सवेरे चले (इस ज़अ़म के साथ) कि वह बख़ीली पर क़ादिर हैं। (25)
फिर जब उन्हों ने उसे देखा तो वह बोले कि बेशक हम राह भूल गए हैं। (26)
बल्कि हम महरूम (बद नसीब) हो गए हैं। (27)
कहा उन के बेहतरीन आदमी ने: क्या मैं ने तुम से नहीं कहा था कि तुम तस्बीह क्यों नहीं करते? (28)
वह बोले: पाक है हमारा रब, बेशक हम ज़ालिम थे। (29)
पस एक दूसरे को अपनाया बाज़ पर बाज़ मलामत करते हुए। (30)
वह बोले हाए हमारी ख़राबी! बेशक हम (ही) सरकश थे। (31)

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ

और वह खूब जानता है	उस की राह से	वह गुमराह हुआ	उस को जो	वह खूब जानता है	बेशक आप (स) का रब

بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٧﴾ فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٨﴾ وَدُّوا لَوْ تُدْهِنُ

काश आप नर्मी करें	वह चाहते हैं	8	झुटलाने वालों	पस आप (स) कहा न मानें	7	हिदायत याफ़्ता लोगों को

فَيُدْهِنُونَ ﴿٩﴾ وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَهِينٍ ﴿١٠﴾ هَمَّازٍ مَشَّاءٍ

फिरने वाला	ऐब निकालने वाला	10	बे वक़ूअ़त	बात बात पर क़समें खाने वाला	और आप (स) कहा न मानें	9	तो वह भी नर्मी करें

بِنَمِيمٍ ﴿١١﴾ مَنَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ﴿١٢﴾ عُتُلٍّ بَعْدَ ذَٰلِكَ زَنِيمٍ ﴿١٣﴾

13	उस के बाद बद असल	सख़्त खू	12	गुनाहगार	हद से बढ़ने वाला	माल में	रोकने (बुख़्ल करने) वाला	11	चुग़्ली लिए

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ﴿١٤﴾ إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ

वह कहता है	हमारी आयतें	पढ़ कर सुनाई जाती हैं उसे	जब	14	और औलाद वाला	माल वाला	इस लिए कि वह है

أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٥﴾ سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرْطُومِ ﴿١٦﴾ إِنَّا بَلَوْنَاهُمْ كَمَا

जैसे	बेशक हम ने आज़माया उन्हें	16	सून्ड (नाक) पर	हम जल्द दाग़ देंगे उस को	15	अगले लोग	कहानियां

بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِينَ ﴿١٧﴾

17	सुबह होते	हम ज़रूर तोड़ लेंगे उस का फल	जब उन्हों ने क़सम खाई	बाग़ वालों को		हम ने आज़माया

وَلَا يَسْتَثْنُونَ ﴿١٨﴾ فَطَافَ عَلَيْهَا طَائِفٌ مِنْ رَبِّكَ وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿١٩﴾

19	सोए हुए थे	और वह	तेरे रब की तरफ़ से	एक फिरने वाला (अ़ज़ाब)	उस पर	पस फिर गया	18	और उन्हों ने इन्शा अल्लाह न कहा

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ﴿٢٠﴾ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِينَ ﴿٢١﴾ أَنِ اغْدُوا عَلَىٰ

पर	सुबह सवेरे चलो	21	सुबह होते	तो एक दूसरे को पुकारने लगे	20	जैसे कटा हुआ खेत	तो वह सुबह को रह गया

حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَارِمِينَ ﴿٢٢﴾ فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَافَتُونَ ﴿٢٣﴾

23	आपस में चुपके चुपके कहते थे	और वह	फिर वह चले	22	काटने वाले	अगर तुम हो	अपने खेत

أَنْ لَا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِسْكِينٌ ﴿٢٤﴾ وَغَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ

बख़ीली पर	और वह सुबह सवेरे चले	24	कोई मिस्कीन	तुम पर	आज	वहां दाख़िल न होने पाए	कि

قَادِرِينَ ﴿٢٥﴾ فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُّونَ ﴿٢٦﴾ بَلْ نَحْنُ

बल्कि हम	26	बेशक हम राह भूल गए हैं	वह बोले	उन्हों ने उसे देखा	फिर जब	25	वह क़ादिर हैं

مَحْرُومُونَ ﴿٢٧﴾ قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ﴿٢٨﴾

28	तुम तस्बीह क्यों नहीं करते	तुम से	क्या मैं ने नहीं कहा था	उन का सब से अच्छा	कहा	27	महरूम हो गए हैं

قَالُوا سُبْحَانَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿٢٩﴾ فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ

उन का बाज़ (एक)	पस अपनाया	29	ज़ालिम (जमा)	बेशक हम थे	हमारा रब	पाक है	वह बोले

عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَاوَمُونَ ﴿٣٠﴾ قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا طَاغِينَ ﴿٣١﴾

31	सरकश (जमा)	बेशक हम थे	हाए हमारी ख़राबी	वह बोले	30	एक दूसरे को मलामत करते हुए	बाज़ (दूसरे) पर

عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾

32	राग़िब (रुजूअ़ करने वाले)	अपने रब की तरफ़	बेशक हम	इस से	बेहतर	हमें बदले में दे	कि	हमारा रब	उम्मीद है

وقف لازم

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ

काश!	सब से बड़ा	अलबत्ता आख़िरत का अ़ज़ाब	अ़ज़ाब	यूँ होता है

ع ٣٣ / ٣

كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٣٤﴾

34	नेमतों के बाग़ात	उन के रब के पास	परहेज़गारों के लिए	बेशक	33	वह जानते होते

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ ۟ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	तुम फ़ैसला करते हो	कैसा	क्या हुआ तुम्हें	35	मुज्रिमों की तरह	मुसलमानों	तो क्या हम करदेंगे

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾

38	अलबत्ता जो तुम पसंद करते हो	उस में	तुम्हारे लिए	बेशक	37	तुम पढ़ते हो	उस में	कोई किताब	क्या तुम्हारे पास

اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ اِنَّ لَكُمْ

तुम्हारे लिए	बेशक	क़ियामत के दिन	तक	पहुँचने वाला	हम पर (हमारे ज़िम्मे)	कोई पुख़्ता अ़हद	क्या तुम्हारे लिए

م ع ١٥ / عدد المتقدمين ١٢

لَمَا تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٩﴾ سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ﴿٤٠﴾ اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ

शरीक (जमा)	या उन के	40	ज़ामिन (ज़िम्मेदार)	इस का	उन में से कौन	तू उन से पूछ	39	तुम फ़ैसला करते हो	अलबत्ता जो

فَلْيَاْتُوْا بِشُرَكَآىِٕهِمْ اِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ﴿٤١﴾ يَوْمَ يُكْشَفُ

खोल दिया जाएगा	जिस दिन	41	सच्चे	वह हैं	अगर	अपने शरीकों	तो चाहिए कि वह लाएं

عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ اِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٤٢﴾

42	तो वह न कर सकेंगे	सिज्दों के लिए	और वह बुलाए जाएंगे	पिंडली	से

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ كَانُوْا يُدْعَوْنَ

बुलाए जाते थे	और तहक़ीक़	ज़िल्लत	उन पर छाई हुई	उन की आँखें	झुकी हुई

اِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾ فَذَرْنِىْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ

और वह जो झुटलाता है	पस मुझे छोड़ दो तुम	43	सही सालिम (जमा)	जब कि वह	सिज्दे के लिए

بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤٤﴾ وَاُمْلِىْ

और मैं ढील देता हूँ	44	वह जानते न होंगे	इस तरह	जल्द हम उन्हें आहिस्ता आहिस्ता खींचेंगे	इस बात को

لَهُمْ ؕ اِنَّ كَيْدِىْ مَتِيْنٌ ﴿٤٥﴾ اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ اَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ

तावान	से	कि वह	कोई अजर	क्या आप (स) मांगते हैं उन से	45	बड़ी क़वी	मेरी ख़ुफ़िया तदबीर	बेशक	उन को

مُّثْقَلُوْنَ ﴿٤٦﴾ اَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿٤٧﴾ فَاصْبِرْ

पस आप (स) सब्र करें	47	लिख लेते हैं	कि वह	इल्मे ग़ैब	उन के पास	या	46	बोझल (दबे जाते) हैं

وقف لازم

لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ اِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ﴿٤٨﴾

48	ग़म से भरा हुआ	और वह	जब उस ने पुकारा	मछली वाले (यूनुस अ) की तरह	और न हों आप (स)	अपना रब	हुक्म के लिए

उम्मीद है कि हमारा रब हमें इस से बेहतर बदले में दे, बेशक हम अपने रब की तरफ़ रुजूअ़ करने वाले हैं। (32)
यूँ होता है अ़ज़ाब! और आख़िरत का अ़ज़ाब अलबत्ता सब से बड़ा है। काश! वह जानते होते। (33)
बेशक परहेज़गारों के लिए उन के रब के हां नेमतों के बाग़ात हैं। (34)
तो क्या हम कर देंगे मुसलमानों को मुज्रिमों की तरह (महरूम)? (35)
तुम्हें क्या हुआ? तुम कैसा फ़ैसला करते हो? (36)
क्या तुम्हारे पास कोई (आस्मानी) किताब है कि उस में से तुम पढ़ते हो। (37)
कि बेशक उस में तुम्हारे लिए (होगा) जो तुम पसंद करते हो। (38)
क्या तुम्हारे लिए हमारे ज़िम्मे कोई पुख़्ता अ़हद है क़ियामत के दिन तक कि बेशक तुम्हारे लिए (होगा) जो तुम फ़ैसला करो। (39)
तू उन से पूछ कि उन में से कौन इस का ज़ामिन है? (40)
या उन के शरीक हैं (जिन्हों ने इस का ज़िम्मा लिया है)? तो चाहिए कि वह अपने शरीकों को लाएं अगर वह सच्चे हैं। (41)
जिस दिन पिंडली से खोल दिया जाएगा और वह सिज्दों के लिए बुलाए जाएंगे तो वह न कर सकेंगे। (42)
उन की आँखें झुकी हुई (होंगी) और उन पर ज़िल्लत छाई हुई होगी, और इस से क़ब्ल वह सिज्दों के लिए बुलाए जाते थे जब कि (सही) सालम थे (और वह इन्कार करते थे)। (43)
पस जो इस बात को झुटलाता है तुम उस को मुझ पर छोड़ दो। हम जल्द उन्हें इस तरह आहिस्ता आहिस्ता खींचेंगे कि वह जानते न होंगे। (44)
और मैं उन्हें ढील देता हूँ, बेशक मेरी ख़ुफ़िया तदबीर बड़ी क़वी है। (45)
क्या आप (स) उन से कोई अजर मांगते हैं? कि वह (उस) तावान (के बोझ) से दबे जाते हैं। (46)
या उन के पास इल्मे ग़ैब है? कि वह लिख लेते हैं। (47)
पस आप (स) अपने रब के हुक्म के लिए सब्र करें और आप (स) यूनुस (अ) की तरह न हो जाएं, जब उस ने (अल्लाह तआ़ला को) पुकारा और वह ग़म से भरा हुआ था। (48)

अगर उस के रब की नेमत ने उस को न संभाला होता तो अलबत्ता वह चटियल मैदान में बदहाल डाला जाता और उस का हाल अब्तर रहता। (49) पस उस के रब ने उसे बरगुज़ीदा किया तो उसे नेकोकारों में से कर लिया। (50) और तहक़ीक़ क़रीब है (ऐसा लगता है) के काफ़िर आप (स) को फुसला देंगे अपनी निगाहों से जब वह किताबे नसीहत को सुनते हैं और वह कहते हैं कि बेशक यह दीवाना है। (51) हालांकि यह नहीं, मगर तमाम जहानों के लिए (सिर्फ़ और सिर्फ़) नसीहत। (52)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

सचमुच होने वाली क़ियामत! (1) क्या है क़ियामत? (2) और तुम क्या समझे कि क्या है क़ियामत? (3) समूद और आद ने खड़खड़ाने वाली (क़ियामत) को झुटलाया। (4) पस जो समूद (थे) वह बड़ी ज़ोर दार आवाज़ से हलाक किए गए। (5) और जो आद (थे) तो वह हलाक किए गए हवा से तुन्द ओ तेज़ हद से ज़ियादा बढ़ी हुई। (6) उस (अल्लाह) ने उस (आन्धी) को उन पर लगातार सात रात और आठ दिन मुसल्लत कर दिया। पस तू उस क़ौम को उस में (यूँ) गिरी हुई देखता गोया कि वह खजूर के खोखले तने हैं। (7) तो क्या तू उन का कोई बक़िया देखता है? (8) और फ़िरऔन आया और उस से पहले के लोग और उलटी हुई बस्तियों वाले ख़ताओं के साथ। (9) सो उन्हों ने अपने रब के रसूल (अ) की नाफ़रमानी की तो उन्हें सख़्त गिरिफ़्त ने आ पकड़ा। (10) बेशक जब पानी तुग़्यानी पर आया हम ने तुम्हें कश्ती में सवार किया, (11) ताकि हम उसे तुम्हारे लिए यादगार बनाएं और याद रखने वाला कान उसे याद रखे। (12)

لَوْلَآ اَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ ﴿٤٩﴾

49	मलामत ज़दा (अब्तर हाल)	और वह	अलबत्ता वह डाला जाता चटियल मैदान में	उस के रब का	नेमत	अगर न उस को पाया (संभाला) होता

فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٥٠﴾ وَاِنْ يَّكَادُ

और तहक़ीक़ क़रीब है	50	नेकोकारों से	पस उस को कर लिया	उस का रब	पस उस को बरगुज़ीदा किया

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ

और वह कहते हैं	(किताब) नसीहत	वह सुनते हैं	जब	अपनी निगाहों से	कि वह आप (स) को फुसला देंगे	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٥١﴾ وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٢﴾ ع ٢ ١٩ الربع وقف لازم

52	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	मगर	हालांकि यह नहीं	51	दीवाना अलबत्ता	बेशक यह

اٰيَاتُهَا ٥٢ ❀ (٦٩) سُوْرَةُ الْحَآقَّةِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

आयात 52 — (69) सूरतुल हाक़्क़ा — ज़रूर होने वाली (क़ियामत) — रुकूआत 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْحَآقَّةُ ﴿١﴾ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٢﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحَآقَّةُ ﴿٣﴾

3	क्या है क़ियामत?	तुम समझे	और क्या	2	क्या है क़ियामत?	1	सचमुच होने वाली (क़ियामत)

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌۢ بِالْقَارِعَةِ ﴿٤﴾ فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا

वह हलाक किए गए	समूद	पस जो	4	खड़खड़ाने वाली को	और आद	समूद	झुटलाया

بِالطَّاغِيَةِ ﴿٥﴾ وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ﴿٦﴾

6	हद से ज़ियादा बढ़ी हुई	तुन्द ओ तेज़	हवा से	तो वह हलाक किए गए	आद	और जो	5	बड़ी ज़ोर की आवाज़ से

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ حُسُوْمًا

लगातार	दिन	और आठ	सात रात	उन पर	उस ने उस को मुसख़्ख़र किया

فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ﴿٧﴾

7	खोखले	खजूर	तने	गोया वह	उस में गिरी हुई	फिर तू देखता उस क़ौम को

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ﴿٨﴾ وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ

और उस के पहले लोग	फ़िरऔन	और आया	8	कोई बक़िया	उन का	तो क्या तू देखता है

وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ﴿٩﴾ فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ

अपने रब के रसूल की	सो उन्हों ने नाफ़रमानी की	9	ख़ताओं के साथ	और उलटी हुई बस्तियों वाले

فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ﴿١٠﴾ اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ

हम ने तुम्हें सवार किया	पानी	तुग़्यानी पर आया	बेशक जब	10	सख़्त	गिरिफ़्त	तो उन्हें पकड़ा

فِي الْجَارِيَةِ ﴿١١﴾ لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ﴿١٢﴾

12	याद रखने वाला	कान	और उसे याद रखे	यादगार	तुम्हारे लिए	ताकि हम उस को बनाएं	11	कश्ती में

فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ ﴿١٣﴾ وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ

ज़मीन	और उठाई जाएगी	13	यकबारगी	फूंक	सूर में	पस जब फूंकी जाएगी

وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً ۙ ﴿١٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۙ ﴿١٥﴾

15	वह होने वाली	हो पड़ेगी	पस उस दिन	14	यकबारगी	रेज़ा रेज़ा	पस रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे	और पहाड़

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ۙ ﴿١٦﴾ وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ۭ

उस के किनारों	पर	और फ़रिश्ते	16	बिलकुल कमज़ोर	उस दिन	पस वह	आस्मान	और फट जाएगा

وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ۭ ﴿١٧﴾ يَوْمَئِذٍ

जिस दिन	17	आठ	उस दिन	अपने ऊपर	तुम्हारे रब का अ़र्श	और वह उठाएंगे

تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ﴿١٨﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ

दिया गया	पस जिस को	18	(कोई चीज़) पोशीदा	तुम से (तुम्हारी)	न पोशीदा रहेगी	तुम पेश किए जाओगे

كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ۚ ﴿١٩﴾ اِنِّيْ ظَنَنْتُ

मैं बेशक समझता था	19	मेरा आमाल नामा	लो पढ़ो	तो वह कहेगा	उस के दाएं हाथ में	उस की किताब (आमाल नामा)

اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۚ ﴿٢٠﴾ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۙ ﴿٢١﴾

21	पसंदीदा ज़िन्दगी	में	पस वह	20	अपने हिसाब से	कि मैं मिलूँगा

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ ﴿٢٢﴾ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ﴿٢٣﴾ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا

और तुम पियो	तुम खाओ	23	क़रीब	जिस के मेवे	22	बहिश्ते बरीं	में

هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ﴿٢٤﴾ وَاَمَّا مَنْ

जो-जिस	और रहा	24	गुज़रे हुए अय्याम	में	उस के बदले जो तुम ने भेजा	मज़े से

اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ۚ ﴿٢٥﴾

25	मेरा आमाल नामा	मुझे न दिया जाता	ऐ काश	तो वह कहेगा	उस के बाएं हाथ में	उस का आमाल नामा दिया गया

وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ۚ ﴿٢٦﴾ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ۚ ﴿٢٧﴾

27	क़िस्सा चुका देने वाली	(मौत) होती	ऐ काश	26	क्या है मेरा हिसाब	और मैं न जानता

مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ۚ ﴿٢٨﴾ هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ۚ ﴿٢٩﴾ خُذُوْهُ

तुम उस को पकड़ो	29	मेरी बादशाही	मुझ से	जाती रही	28	मेरा माल	मेरे	काम न आया

فَغُلُّوْهُ ۙ ﴿٣٠﴾ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۙ ﴿٣١﴾ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا

जिस की पैमाइश	एक ज़न्जीर में	फिर	31	उसे डाल दो	जहन्नम	फिर	30	पस उसे तौक़ पहनाओ

سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ۭ ﴿٣٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ

ईमान नहीं लाता था	बेशक वह	32	पस तुम उस को जकड़ दो	हाथ	सत्तर (70)

بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۙ ﴿٣٣﴾ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۭ ﴿٣٤﴾

34	मोहताज	खिलाना	पर	और वह रग़बत न दिलाता था	33	बुज़ुर्ग ओ बरतर	अल्लाह पर

पस जब फूंकी जाएगी सूर में यकबारगी फूंक। (13)
और उठाए जाएंगे ज़मीन और पहाड़, पस वह यकबारगी रेज़ा रेज़ा कर दिए जाएंगे। (14)
पस उस दिन वह होने वाली हो पड़ेगी, (15)
और आस्मान फट जाएगा, पस वह उस दिन बिलकुल कमज़ोर होगा। (16)
और फ़रिश्ते (होंगे) उस के किनारों पर, और आठ फ़रिश्ते तुम्हारे रब का अ़र्श उठाए हुए होंगे। (17)
जिस दिन तुम पेश किए जाओगे तुम्हारी कोई चीज़ पोशीदा न रहेगी। (18)
पस जिस को उस का आमाल नामा उस के दाएं हाथ में दिया जाएगा वह (दूसरों को) कहेगाः लो पढ़ो मेरा आमाल नामा। (19)
बेशक मैं यक़ीन रखता था कि मैं अपने हिसाब से मिलूँगा। (20)
पस वह पसंदीदा ज़िन्दगी में होगा, (21)
आ़ली मुक़ाम जन्नत में, (22)
जिस के मेवे क़रीब (झुके हुए) हैं। (23)
तुम मज़े से खाओ पियो उस के बदले जो तुम ने (दुनिया के) गुज़रे हुए दिनों में भेजा है। (24)
और रहा वह जिस को उस का आमाल नामा उस के बाएं हाथ में दिया गया तो वह कहेगा ऐ काश! मुझे न दिया जाता मेरा आमाल नामा, (25)
और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है? (26)
ऐ काश! मौत ही क़िस्सा चुका देने वाली होती। (27)
मेरा माल मेरे काम न आया। (28)
मेरी बादशाही मुझ से जाती रही। (29)
(फ़रिश्तों को हुक्म होगा) तुम उस को पकड़ो, उसे तौक़ पहनाओ, (30)
फिर उसे जहन्नम में डाल दो। (31)
फिर एक ज़न्जीर में जिस की पैमाइश सत्तर (70) हाथ है, पस तुम उस को जकड़ दो। (32)
बेशक वह अल्लाह बुज़ुर्ग ओ बरतर पर ईमान नहीं लाता था। (33)
और वह (दूसरों को भी) रग़बत न दिलाता था मिस्कीन को खिलाने की। (34)

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ﴿٣٥﴾ وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ

से	मगर-सिवा	और न खाना	35	कोई दोस्त	यहां	आज	पस नहीं उस का

غِسْلِيْنٍ ﴿٣٦﴾ لَّا يَاْكُلُهٗٓ اِلَّا الْخٰطِـُٔوْنَ ﴿٣٧﴾ فَلَآ اُقْسِمُ ع ١ ٣٧ ٥

पस मैं क़सम खाता हूँ	37	ख़ताकारों	सिवा	उसे न खाएगा	36	पीप

بِمَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٨﴾ وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ

अलबत्ता कलाम	बेशक यह	39	तुम नहीं देखते	और जो	38	उस की जो तुम देखते हो

رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿٤٠﴾ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ۭ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ﴿٤١﴾

41	तुम ईमान लाते हो	बहुत कम	किसी शायर का कलाम	और यह नहीं	40	रसूले करीम

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ

से	उतारा हुआ	42	तुम नसीहत पकड़ते हो	बहुत कम	किसी काहिन का	और न क़ौल है

رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾ وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ﴿٤٤﴾

44	बातें (अक़वाल)	कुछ	हम पर	बना कर लाता	और अगर	43	तमाम जहानों का रब

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ﴿٤٥﴾ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا

सो नहीं	46	रगे (गर्दन)	उस की	हम अलबत्ता काट देते	फिर	45	दायां हाथ	उस का	तो यक़ीनन हम पकड़ लेते

مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾ وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٤٨﴾

48	परहेज़गारों के लिए	अलबत्ता एक नसीहत	और बेशक यह	47	रोकने वाला	उस से	कोई भी	तुम में से

وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ ﴿٤٩﴾ وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٠﴾

50	काफ़िरों पर	हसरत	और बेशक यह	49	झुटलाने वाले	तुम में से	कि	अलबत्ता जानते हैं	और बेशक हम

وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ ﴿٥١﴾ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ﴿٥٢﴾ ع ٢ ١٥ ٦

52	अ़ज़मत वाला	अपना रब	नाम के साथ	पस पाकीज़गी बयान करो	51	यक़ीनी हक़	और बेशक यह

آيَاتُهَا ٤٤ ❀ (٧٠) سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआ़त 2 — (70) सूरतुल मआ़रिज ऊपर चढ़ने की सीढ़ियाँ — आयात 44

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَاَلَ سَاۗىِٕلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ﴿١﴾ لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ

नहीं उसे	काफ़िरों के लिए	1	अ़ज़ाब वाक़े होने वाला	एक मांगने वाला	मांगा

دَافِعٌ ﴿٢﴾ مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾ تَعْرُجُ الْمَلٰۗىِٕكَةُ

फ़रिश्ते	चढ़ते हैं	3	सीढ़ियों (दरजात) का मालिक	अल्लाह की तरफ़ से	2	कोई दफ़ा करने वाला

وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾

4	साल	पचास हज़ार (50000)	जिस की मिक़दार	एक दिन में	उस की तरफ़	और रूहुल अमीन

पस आज यहां उस का कोई दोस्त नहीं। (35)
और पीप के सिवा (उस के लिए) कोई खाना नहीं। (36)
उसे ख़ताकारों के सिवा कोई न खाएगा। (37)
पस मैं उस की क़सम खाता हूँ जो तुम देखते हो। (38)
और जो तुम नहीं देखते। (39)
बेशक यह रसूले करीम का कलाम है। (40)
और यह किसी शायर का कलाम नहीं, तुम बहुत कम ईमान लाते हो। (41)
और न क़ौल है किसी काहिन का, बहुत कम तुम नसीहत पकड़ते हो। (42)
तमाम जहानों के रब (की तरफ़) से उतारा हुआ। (43)
और अगर वह हम पर बना कर लाता कुछ बातें। (44)
तो यक़ीनन हम उस का दायां हाथ पकड़ लेते। (45)
फिर अलबत्ता हम उस की रगे गर्दन काट देते। (46)
सो तुम में से नहीं कोई भी उस से रोकने वाला। (47)
और बेशक यह (क़ुरआन) परहेज़गारों के लिए अलबत्ता नसीहत है। (48)
और बेशक हम ज़रूर जानते हैं कि तुम में कुछ झुटलाने वाले हैं। (49)
और बेशक यह हसरत है काफ़िरों पर। (50)
और बेशक यह यक़ीनी हक़ है। (51)
पस पाकीज़गी बयान करो अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की। (52)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

एक मांगने वाले (मुन्किरे अ़ज़ाब ने) अ़ज़ाब मांगा (जो) वाक़े होने वाला है। (1)
काफ़िरों के लिए, उसे कोई दफ़ा करने वाला नहीं, (2)
दरजात के मालिक अल्लाह की तरफ़ से। (3)
उस की तरफ़ रूहुल अमीन (जिब्राईल अ) और फ़रिश्ते एक दिन में चढ़ते हैं जिस की तादाद पचास हज़ार बरस की है। (4)

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ۝٥ اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۝٦ وَّنَرٰىهُ

और हम उसे देखते हैं	6	दूर	उसे देख रहे हैं	बेशक वह	5	सब्रे जमील	पस आप (स) सब्र करें

قَرِيْبًا ۝٧ يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۝٨ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ

पहाड़	और होंगे	8	पिघले हुए तांबे की तरह	आस्मान	जिस दिन होगा	7	क़रीब

كَالْعِهْنِ ۝٩ وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۝١٠ يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ؕ يَوَدُّ

ख़ाहिश करेगा	वह देख रहे होंगे उन्हें	10	किसी दोस्त	कोई दोस्त	और न पूछेगा	9	जैसे रंगीन ऊन

الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۢ بِبَنِيْهِ ۝١١

11	अपने बेटों को	उस दिन	अ़ज़ाब से	काश वह फ़िदये में देदे	मुज्रिम

وَصَاحِبَتِهٖ وَاَخِيْهِ ۝١٢ وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُـْٔوِيْهِ ۝١٣ وَمَنْ

और जो	13	उस को जगह देता था	वह जो	और अपने कुंबे को	12	और अपने भाई को	और अपनी बीवी को

فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۝١٤ كَلَّا ؕ اِنَّهَا لَظٰى ۝١٥ نَزَّاعَةً

उधेड़ने वाली	15	भड़कती हुई आग	बेशक यह	हरगिज़ नहीं	14	यह उसे बचाले	फिर	सब को	ज़मीन में

لِّلشَّوٰى ۝١٦ تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ۝١٧ وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ۝١٨

18	फिर उसे बन्द रखा	और (माल) जमा किया	17	और मुँह फेर लिया	पीठ फेरी	जिस ने	वह बुलाती है	16	खाल को

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۝١٩ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۝٢٠ وَّاِذَا

और जब	20	घबरा उठने वाला	उसे बुराई पहुँचे	जब	19	पैदा किया गया बड़ा बेसब्रा	बेशक इन्सान

مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۝٢١ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۝٢٢ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ

अपनी नमाज़	पर	वह	वह जो	22	नमाज़ियों	सिवाए	21	बुख़्ल करने वाला	उसे आसाइश पहुँचे

دَآئِمُوْنَ ۝٢٣ وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۝٢٤

24	मालूम (मुक़र्रर)	हक़	उन के मालों में	और वह जो	23	हमेशा (पाबन्दी) करते हैं

لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝٢٥ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝٢٦

26	रोज़े जज़ा को	सच मानते हैं	और वह जो	25	और महरूम (न मांगने वाले)	मांगने वालो के लिए

وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۝٢٧ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ

उन के रब का अ़ज़ाब	बेशक	27	डरने वाले	अपने रब के अ़ज़ाब से	वह	और वह जो

غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ۝٢٨ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝٢٩

29	हिफ़ाज़त करने वाले	अपनी शर्मगाहों की	वह	और वह जो	28	बे ख़ौफ़ होने की बात नहीं

اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝٣٠

30	कोई मलामत नहीं	पस वह बेशक	उन के दाएं हाथ की मिल्क (बान्दीयां)	जो	या	अपनी बीवीयों से	सिवाए

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ۝٣١

31	हद से बढ़ने वाले	वह	तो वही लोग	उस के सिवा	फिर जो चाहे

पस आप (स) (उन बातों पर) सब्र करें सब्रे जमील। (5)
बेशक वह उसे दूर देख (समझ) रहे हैं। (6)
और हम उसे क़रीब देखते हैं। (7)
जिस दिन आस्मान पिघले हुए तांबे की तरह होगा। (8)
और पहाड़ (धुन्की हुई) रंगीन ऊन की तरह होंगे। (9)
और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा। (10)
हालांकि वह उन्हें देख रहे होंगे, मुज्रिम (गुनाहगार) ख़ाहिश करेगा कि काश वह फ़िदये में देदे उस दिन के अ़ज़ाब (से छूटने के लिए) अपने बेटों को, (11)
अपनी बीवी को, और अपने भाई को। (12)
और अपने कुंबे को जो उस को जगह देता था। (13)
और जो ज़मीन में हैं सब (तमाम अहले ज़मीन) को, फिर यह उसे बचाले। (14)
हरगिज़ नहीं, बेशक यह भड़कती हुई आग है। (15)
खाल उधेड़ने वाली। (16)
वह (उसे) बुलाती है जिस ने पीठ फेरी और मुँह फेर लिया, (17)
और माल जमा किया फिर उसे बन्द रखा। (18)
बेशक इन्सान बड़ा बेसब्र (कम हिम्मत) पैदा किया गया है। (19)
जब उसे कोई बुराई पहुँचे तो घबरा उठने वाला है। (20)
और उसे आसाइश पहुँचे तो बुख़्ल करने वाला है। (21)
उन नमाज़ियों के सिवा। (22)
जो अपनी नमाज़ पर पाबन्दी करते हैं। (23)
और जिन के मालों में एक हिस्सा (हक़) मुक़र्रर है। (24)
मांगने वालों और महरूम के लिए। (25)
और वह जो रोज़े जज़ा औ सज़ा को सच मानते हैं। (26)
और वह जो अपने रब के अ़ज़ाब से डरने वाले हैं। (27)
बेशक उन के रब का अ़ज़ाब बेख़ौफ़ होने की चीज़ नहीं। (28)
और वह जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं, (29)
सिवाए अपनी बीवीयों से या अपनी बान्दीयों से, पस बेशक उन के (पास जाने) पर कोई मलामत नहीं। (30)
फिर जो उस के सिवा चाहे तो वही लोग हैं हद से बढ़ने वाले। (31)

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۝٣٢ وَالَّذِيْنَ

और वह जो	32	रिआयत (हिफ़ाज़त) करने वाले	और अपने अहद	अपनी अमानतों	वह और वह जो

هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ۝٣٣ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ

अपनी नमाज़ों की	वह	और वह जो	33	क़ाइम रहने वाले	वह अपनी गवाहियों पर

يُحَافِظُوْنَ ۝٣٤ اُولٰٓئِكَ فِىْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ۝٣٥ فَمَالِ ع ١ ٧

तो क्या हुआ	35	मुकर्रम ओ मुअ़ज़्ज़ज़	बाग़ात में	यही लोग	34	हिफ़ाज़त करने वाले

الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ۝٣٦ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ

और बाएं से	दाएं से	36	दौड़ते आरहे हैं	आप (स) की तरफ़	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर)

عِزِيْنَ ۝٣٧ اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ

बाग़	कि वह दाख़िल किया जाएगा	उन में से	हर कोई	क्या तमअ़ (लालच) रखता है	37	गिरोह दर गिरोह

نَعِيْمٍ ۝٣٨ كَلَّا ۭ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٩ فَلَآ اُقْسِمُ

पस नहीं, मैं क़सम खाता हूँ	39	वह जानते हैं	उस से जो	बेशक हम ने पैदा किया उन्हें	हरगिज़ नहीं	38	नेमतों वाला

بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ۝٤٠ عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ

कि हम बदल दें	पर	40	अलबत्ता क़ादिर हैं	बेशक हम	और मग़्रिबों	मश्रिक़ों के रब की

خَيْرًا مِّنْهُمْ ۙ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝٤١ فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا

बेहूदगियों में पड़े रहें	पस उन्हें छोड़ दें	41	आजिज़ किए जाने वाले	और नहीं हम	उन से	बेहतर

وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِىْ يُوْعَدُوْنَ ۝٤٢ يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ

जिस दिन वह निकलेंगे	42	उन से वादा किया जाता है	वह जिस का	अपने दिन से	यहां तक कि वह मिलें	और वह खेलें

مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ۝٤٣ خَاشِعَةً

झुकी हुई	43	लपक रहे हों	निशाने की तरफ़	गोया कि वह	जल्दी जल्दी	क़ब्रों से

اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۭ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِىْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝٤٤ ع ٢ ٩ ٨

44	उन से वादा किया जा रहा है	वह जिस का	यह है वह दिन	ज़िल्लत	उन पर छा रही होगी	उन की आँखें

آيَاتُهَا ٢٨ ❀ (٧١) سُوْرَةُ نُوْحٍ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआ़त 2	(71) सूरह नूह	आयात 28

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّآ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ اَنْ اَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ

उस से क़ब्ल	अपनी क़ौम को	कि डराओ	उस की क़ौम की तरफ़	नूह (अ)	बेशक हम ने भेजा

اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١ قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّىْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢

2	साफ़ साफ़ डराने वाला	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	ऐ मेरी क़ौम	उस ने कहा	1	दर्दनाक अ़ज़ाब	कि उन पर आए

और वह जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (32)
और वह जो अपनी गवाहियों पर क़ाइम रहने वाले हैं। (33)
और वह जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले हैं। (34)
यही लोग (बहिश्त के) बाग़ात में मुकर्रम ओ मुअ़ज़्ज़ज़ होंगे। (35)
तो काफ़िरों को क्या हुआ कि वह आप (स) की तरफ़ दौड़ते आ रहे हैं। (36)
दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह। (37)
क्या उन में से हर कोई लालच रखता है कि वह (बहिश्त की) नेमतों वाले बाग़ात में दाख़िल किया जाएगा। (38)
हरगिज़ नहीं, बेशक हम ने पैदा किया उन्हें उस चीज़ से जिसे वह ख़ुद जानते हैं। (39)
पस नहीं, मैं मश्रिक़ों और मग़्रिबों के रब की क़सम खाता हूँ। बेशक हम अलबत्ता क़ादिर हैं। (40)
इस पर कि हम बदल दें उन से बेहतर और नहीं हम आजिज़ किए जाने वाले। (41)
पस उन्हें छोड़ दें कि बेहूदगियों में पड़े रहें और वह खेलें कूदें यहां तक कि वह अपने उस दिन से मिलें जिस का उन से वादा किया जाता है। (42)
जिस दिन वह क़ब्रों से जल्दी जल्दी (इस तरह) निकलेंगे गोया के वह निशाने की तरफ़ लपक रहे हैं। (43)
झुकी होंगी उन की आँखें, उन पर ज़िल्लत छा रही होगी, यह है वह दिन जिस का उन से वादा किया जा रहा है। (44)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बेशक हम ने नूह (अ) को उस की क़ौम की तरफ़ भेजा कि डराओ अपनी क़ौम को उस से क़ब्ल कि उन पर दर्दनाक अ़ज़ाब आजाए। (1)
उस ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम! बेशक मैं तुम्हारे लिए साफ़ साफ़ डराने वाला हूँ। (2)

وقف لازم

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ۙ﴿٣﴾ يَغْفِرْ لَكُمْ

तुम्हें	वह बख़्शदेगा	3	और मेरी इताअ़त करो	और उस से डरो	तुम अल्लाह की इबादत करो	कि

مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ

अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा वक़्त	बेशक	वक़्ते मुक़र्ररा	तक	और तुम्हें मोहलत देगा	तुम्हारे गुनाह

اِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ قَالَ رَبِّ

ऐ मेरे रब	उस ने कहा	4	तुम जानते	काश	वह टलेगा नहीं	जब आजाएगा

اِنِّىْ دَعَوْتُ قَوْمِىْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۙ﴿٥﴾ فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِىْٓ

मेरा बुलाना	तो उन में ज़ियादा न किया	5	और दिन	रात	अपनी क़ौम को	बेशक मैं ने बुलाया

اِلَّا فِرَارًا ﴿٦﴾ وَاِنِّىْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا اَصَابِعَهُمْ

अपनी उंगलियां	उन्हों ने दे लीं	उन्हें	ताकि तू बख़्शदे	मैं ने उन को बुलाया	जब भी	और बेशक मैं	6	भागने के सिवा

فِىْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا

और उन्हों ने तकब्बुर किया	और अड़ गए वह	उपने कपड़े	और उन्हों ने लपेट लिए	अपने कानों में

اسْتِكْبَارًا ﴿٧﴾ ثُمَّ اِنِّىْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۙ﴿٨﴾ ثُمَّ اِنِّىْٓ اَعْلَنْتُ

बेशक मैं ने अ़लानिया समझाया	फिर	8	बाआवाज़े बुलन्द	बेशक मैं ने बुलाया उन्हें	फिर	7	बड़ा तकब्बुर

لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۙ﴿٩﴾ فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ

अपना रब	तुम बख़्शिश मांगो	पस मैं ने कहा	9	छुपा कर	उन्हें	और मैं ने पोशीदा समझाया	उन्हें

اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۙ﴿١٠﴾ يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ﴿١١﴾

11	मुसलसल बारिश	तुम पर	आस्मान	वह भेजेगा	10	है बड़ा बख़्शने वाला	बेशक वह

وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ

बाग़ात	तुम्हारे लिए	और वह बनाएगा	और बेटों	मालों के साथ	और मदद देगा तुम्हें

وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ﴿١٢﴾ مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۚ﴿١٣﴾

13	वक़ार	तुम एतिक़ाद नहीं रखते अल्लाह के लिए	क्या हुआ तुम्हें	12	नहरें	तुम्हारे लिए	और वह बनाएगा

وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ﴿١٤﴾ اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ

अल्लाह ने पैदा किए	कैसे	क्या तुम नहीं देखते	14	तरह तरह	उस ने पैदा किया तुम्हें

سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ﴿١٥﴾ وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا

एक नूर	उन में	चाँद	और उस ने बनाया	15	एक के ऊपर एक	सात आस्मान

وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا ﴿١٦﴾ وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ

ज़मीन से	उस ने उगाया तुम्हें	और अल्लाह	16	चिराग़	सूरज	और उस ने बनाया

نَبَاتًا ۙ﴿١٧﴾ ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ۚ﴿١٨﴾

18	निकालना (दोबारा)	और फिर तुम्हें निकालेगा	उस में	वह लौटाएगा तुम्हें	फिर	17	सब्ज़े की तरह

कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उस से डरो और मेरी इताअ़त करो, (3)
वह बख़्शदेगा तुम्हें तुम्हारे गुनाह और (मौत के) वक़्ते मुक़र्ररा तक तुम्हें मोहलत देगा। बेशक अल्लाह का मुक़र्रर कर्दा वक़्त जब आजाएगा तो वह टलेगा नहीं, काश तुम जानते। (4)
उस ने कहा कि ऐ मेरे रब! बेशक मैं ने बुलाया अपनी क़ौम को रात और दिन। (5)
तो उन में ज़ियादा न किया मेरा बुलाना सिवाए भागने के। (6)
और बेशक जब भी मैं ने उन्हें बुलाया ताकि तू उन्हें बख़्शदे, उन्हों ने अपनी उंगलियां अपने कानो में दे लीं और उन्हों ने अपने ऊपर कपड़े लपेट लिए और वह अड़ गए और उन्हों ने बड़ा तकब्बुर किया। (7)
फिर बेशक मैं ने उन्हें बा आवाज़े बुलन्द बुलाया। (8)
फिर बेशक मैं ने उन्हें अ़लानिया (भी) समझाया और उन्हें छुपा कर पोशीदा (भी) समझाया। (9)
पस मैं ने कहा कि तुम अपने रब से बख़्शिश मांगो, बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है। (10)
वह आस्मान से तुम पर मुसलसल बारिश भेजेगा। (11)
और तुम्हें मालों और बेटों से मदद देगा और बनाएगा तुम्हारे लिए बाग़ात और वह बनाएगा तुम्हारे लिए नहरें। (12)
तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह के लिए वक़ार (अ़ज़मत) का एतिक़ाद नहीं रखते? (13)
और यक़ीनन उस ने पैदा किया तुम्हें तरह तरह से। (14)
क्या तुम नहीं देखते कि कैसे अल्लाह ने सात आस्मान ऊपर तले बनाए? (15)
और उस ने उन में चाँद को एक नूर बनाया और उस ने सूरज को चिराग़ (के मानिंद रोशन) बनाया। (16)
और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से सब्ज़े की तरह उगाया (पैदा किया)। (17)
फिर वह तुम्हें उस में लौटाएगा और तुम्हें दोबारा (उस से) निकालेगा। (18)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾ لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا

रास्ते	उस के	ताकि तुम चलो	19	फ़र्श	ज़मीन	तुम्हारे लिए	उस ने बनाया	और अल्लाह

ع ١ ٢٠ ٩ فِجَاجًا ﴿٢٠﴾ قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ

जो-जिस	और उन्हों ने पैरवी की	मेरी नाफ़रमानी की	बेशक उन्हों ने	ऐ मेरे रब	नूह (अ)	कहा	20	कुशादा

لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗٓ اِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾ وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾

22	बड़ी बड़ी	चालें	और उन्हों ने चालें चलीं	21	सिवा ख़सारा	और उस की औलाद	उस का माल	नहीं ज़ियादा किया

وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ

और न सुवाअ़	वद	और हरगिज़ न छोड़ना	अपने माबूद	तुम हरगिज़ न छोड़ना	और उन्हों ने कहा

وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾ وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ

और न ज़ियादा कर	बहुत	और तहक़ीक उन्हों ने गुमराह किया	23	और नस्र	और यउ़क़	और न यगूस

الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا ضَلٰلًا ﴿٢٤﴾ مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا

फिर वह दाख़िल किए गए	वह ग़र्क़ किए गए	अपनी ख़ताएं	ब सबब	24	गुमराही के सिवा	ज़ालिमों

نَارًا ۙ فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿٢٥﴾ وَقَالَ

और कहा	25	कोई मददगार	अल्लाह के सिवा	अपने लिए	उन्हों ने पाया	तो न	आग

نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾

26	कोई बसने वाला	काफ़िरों में से	ज़मीन पर	तू न छोड़	ऐ मेरे रब	नूह (अ)

اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا

बदकार	सिवाए	और न जनेंगे	तेरे बन्दे	वह गुमराह करेंगे	उन्हें छोड़ दिया	अगर	बेशक तू

كَفَّارًا ﴿٢٧﴾ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ

दाख़िल हुआ	और उसे जो	और मेरे माँ बाप को	मुझे बख़्शदे	ऐ मेरे रब	27	नाशुक्रे

بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ

ज़ालिमों	और न बढ़ा	और मोमिन औरतों	और मोमिन मर्दों को	ईमान ला कर	मेरे घर

ع ٢ ٨ ١٠ النّصف اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

	28	हलाकत के सिवा	

آيَاتُهَا ٢٨ ❀ سُوْرَةُ الْجِنِّ (٧٢) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 (72) सूरतुल जिन्न आयात 28

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ﴿١﴾

1	एक अ़जीब	क़ुरआन	बेशक हम ने सुना	तो उन्हों ने कहा	एक जमाअ़त जिन्नात की	कि इसे सुना	मेरी तरफ़	आप कह दें कि मुझे वहि की गई

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया। (19)
ताकि तुम चलो फिरो उस के कुशादा रास्तों में। (20)
नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे रब! बेशक उन्हों ने मेरी नाफ़रमानी की और (उस की) पैरवी की जिस को उस के माल ने ज़ियादा नहीं किया और न उस की औलाद ने ख़सारे के सिवा। (21)
और उन्हों ने बड़ी बड़ी चालें चलीं। (22)
और उन्हों ने कहा कि तुम हरगिज़ न छोड़ना अपने माबूदाने (बातिल) को और हरगिज़ न छोड़ना वद् और न सुवाअ़ और न यगूस और यउ़क़ और नस्र (बुतों) को। (23)
और उन्हों ने गुमराह किया बहुतों को, और ज़ालिमों को न ज़ियादा कर गुमराही के सिवा। (24)
अपनी ख़ताओं के सबब वह ग़र्क़ किए गए, फिर वह आग में दाख़िल किए गए तो उन्हों ने अपने लिए अल्लाह के सिवा न पाया कोई मददगार। (25)
और नूह (अ) ने कहा कि ऐ मेरे रब! तू न छोड़ ज़मीन पर काफ़िरों में से कोई बसने वाला। (26)
बेशक अगर तू ने उन्हें छोड़ दिया तो वह तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और न जनेंगे बदकार नाशुक्र (औलाद) के सिवा। (27)
ऐ मेरे रब! मुझे बख़्शदे और मेरे माँ बाप को और उसे जो दाख़िल हुआ मेरे घर में ईमान ला कर, और मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को, और ज़ालिमों को हलाकत के सिवा न बढ़ा। (28)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
आप (स) फ़रमा दें: मुझे वहि की गई है कि जिन्नात की एक जमाअ़त ने उसे (क़ुरआन को) सुना तो उन्हों ने कहा कि बेशक हम ने एक अ़जीब क़ुरआन सुना है। (1)

يَّهۡدِىۡۤ اِلَى الرُّشۡدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنۡ نُّشۡرِكَ بِرَبِّنَاۤ اَحَدًا ۙ﴿۲﴾

2	किसी को	और हम हरगिज़ शरीक न ठहराएंगे अपने रब के साथ	उस पर	तो हम ईमान लाए	हिदायत की तरफ़	वह रहनुमाई करता है

وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ﴿۳﴾

3	और न औलाद	बीवी	उस ने नहीं बनाया	हमारा रब	शान	बड़ी बुलंद	और यह कि

وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوۡلُ سَفِيۡهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ۙ﴿۴﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ

और यह कि हम ने गुमान किया	4	ख़िलाफ़े हक़ बातें	अल्लाह पर	हम में से बेवकूफ़	कहते थे	और यह कि

اَنۡ لَّنۡ تَقُوۡلَ الۡاِنۡسُ وَالۡجِنُّ عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۙ﴿۵﴾ وَّاَنَّهٗ كَانَ

थे	और यह कि	5	झूट	अल्लाह पर	और जिन्न	इन्सान	हरगिज़ न कहेंगे	कि

رِجَالٌ مِّنَ الۡاِنۡسِ يَعُوۡذُوۡنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الۡجِنِّ فَزَادُوۡهُمۡ

तो उन्हों ने (जिन्नात का) बढ़ा दिया	जिन्नात से	लोगों से	पनाह लेते (थे)	इन्सानों में से	कुछ आदमी

رَهَقًا ۙ﴿۶﴾ وَّاَنَّهُمۡ ظَنُّوۡا كَمَا ظَنَنۡتُمۡ اَنۡ لَّنۡ يَّبۡعَثَ اللّٰهُ اَحَدًا ۙ﴿۷﴾

7	किसी को	रसूल बना कर भेजेगा अल्लाह	कि हरगिज़ न	जैसे तुम ने गुमान किया था	उन्हों ने गुमान किया	और यह कि वह	6	तकब्बुर

وَّاَنَّا لَمَسۡنَا السَّمَآءَ فَوَجَدۡنٰهَا مُلِئَتۡ حَرَسًا شَدِيۡدًا

सख़्त	पहरेदार	भरा हुआ	तो हम ने उसे पाया	आस्मान	और यह कि हम ने छुआ (टटोला)

وَّشُهُبًا ۙ﴿۸﴾ وَّاَنَّا كُنَّا نَقۡعُدُ مِنۡهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمۡعِ ؕ فَمَنۡ

पस जो	सुनने के लिए	ठिकाने	उस के	हम बैठा करते थे	और यह कि	8	और शोले

يَّسۡتَمِعِ الۡاٰنَ يَجِدۡ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ﴿۹﴾ وَّاَنَّا لَا نَدۡرِىۡۤ

नहीं जानते	और यह कि हम	9	घात लगाया हुआ	शोला	वह पाता है अपने लिए	अब	सुनता है

اَشَرٌّ اُرِيۡدَ بِمَنۡ فِى الۡاَرۡضِ اَمۡ اَرَادَ بِهِمۡ رَبُّهُمۡ

उन का रब	उन से	या इरादा फ़रमाया है	जो ज़मीन में	उन के साथ	इरादा किया गया	आया बुराई

رَشَدًا ۙ﴿۱۰﴾ وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوۡنَ وَمِنَّا دُوۡنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا

हम थे	उस के अलावा	और हम में से	नेकोकार (जमा)	हम में से	और यह कि	10	हिदायत

طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّاَنَّا ظَنَنَّاۤ اَنۡ لَّنۡ نُّعۡجِزَ اللّٰهَ فِى الۡاَرۡضِ

ज़मीन में	हरा सकेंगे अल्लाह को	कि हम हरगिज़ न	हम समझते थे	और यह कि	11	मुख़्तलिफ़	राहें

وَلَنۡ نُّعۡجِزَهٗ هَرَبًا ۙ﴿۱۲﴾ وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعۡنَا الۡهُدٰۤى اٰمَنَّا بِهٖ ؕ

हम ईमान ले आए उस पर	हिदायत	जब हम ने सुनी	और यह कि	12	भाग कर	और हम उस को हरगिज़ न हरा सकेंगे

فَمَنۡ يُّؤۡمِنۡۢ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخۡسًا وَّلَا رَهَقًا ۙ﴿۱۳﴾ وَّاَنَّا مِنَّا

हम में से	और यह कि	13	और न किसी ज़ुल्म	किसी नुक़्सान	तो उसे ख़ौफ़ न होगा	अपने रब पर ईमान लाए	सो जो

الۡمُسۡلِمُوۡنَ وَمِنَّا الۡقٰسِطُوۡنَ ؕ فَمَنۡ اَسۡلَمَ فَاُولٰٓئِكَ تَحَرَّوۡا رَشَدًا ۙ﴿۱۴﴾

14	भलाई	उन्हों ने क़स्द किया	तो वही हैं	पस जो इसलाम लाया	गुनाहगार	और हम में से	मुसलमान (जमा)

वह रहनुमाई करता है हिदायत की तरफ़, तो हम उस पर ईमान ले आए, और हम अपने रब के साथ हरगिज़ किसी को शरीक न ठहराएंगे। (2)
और यह कि हमारे रब की शान बड़ी बुलंद है। उस ने नहीं बनाया किसी को अपनी बीवी और न औलाद। (3)
और यह कि हम में से बेवकूफ़ कहते थे अल्लाह पर ख़िलाफ़े हक़ बातें। (4)
और यह कि हम ने गुमान किया कि हरगिज़ इन्सान और जिन्न अल्लाह पर (अल्लाह की शान में) झूट न कहेंगे। (5)
और यह कि इन्सानों में से कुछ आदमी जिन्नात के लोगों से पनाह लेते थे और उन्हों ने जिन्नात का तकब्बुर और बढ़ा दिया। (6)
और उन्हों ने गुमान किया जैसे तुम ने गुमान किया था कि हरगिज़ अल्लाह किसी को रसूल बना कर न भेजेगा। (7)
और यह कि हम ने टटोला आस्मानों को तो हम ने उसे सख़्त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ पाया। (8)
और यह कि हम उस के ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे। पस अब जो सुनता है (सुनना चाहता है) वह (वहां) अपने लिए घात लगाया हुआ शोला पाता है। (9)
और यह कि हम नहीं जानते कि जो ज़मीन में हैं आया उन के साथ बुराई का इरादा किया गया है या उन से (अल्लाह ने) हिदायत का इरादा फ़रमाया है। (10)
और यह कि हम में से (कुछ) नेकोकार हैं और हम में से (कुछ) उस के अलावा हैं, हम मुख़्तलिफ़ राहों पर हैं। (11)
और यह कि हम समझते हैं कि हम अल्लाह को हरगिज़ न हरा सकेंगे ज़मीन में और न हरगिज़ हम उस को भाग कर हरा सकेंगे। (12)
और यह कि हम ने हिदायत सुनी तो हम उस पर ईमान ले आए, सो जो अपने रब पर ईमान लाए तो उसे न किसी नुक़्सान का ख़ौफ़ होगा और न किसी ज़ुल्म का। (13)
और यह कि हम में से (कुछ) मुसलमान (फ़रमांबरदार) हैं और हम में से (कुछ) गुनाहगार हैं। पस जो इसलाम लाया तो वही हैं जिन्हों ने भलाई का क़स्द किया। (14)

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾ وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا

और रहे	गुनाहगार (जमा)	तो वह हुए	जहन्नम का	ईंधन	15	और यह कि अगर	वह क़ाइम रहते

عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ﴿١٦﴾ لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ

(सीधे) रास्ते पर	तो अलबत्ता हम उन्हें पिलाते	पानी	वाफ़िर	16	ताकि हम उन्हें आज़माएं	उस में

وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

और जो	रूगर्दानी करेगा	से	अपने रब की याद	वह उसे दाख़िल करेगा	अज़ाब	सख़्त	17

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾ وَّاَنَّهٗ

और यह कि	मस्जिदें अल्लाह के लिए	तो तुम न पुकारो (बन्दगी न करो)	अल्लाह के साथ	किसी की	18	और यह कि

لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ ع ١ ١٩ ١١

जब खड़ा हुआ	अल्लाह का बन्दा	कि वह उस की इबादत करे	क़रीब था	वह हो जाएं	उस पर	हल्क़ा दर हल्क़ा	19

قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٠﴾ قُلْ اِنِّيْ لَآ اَمْلِكُ

फ़रमा दें इस के सिवा नहीं	सिर्फ़ मैं अपने रब की इबादत करता हूँ	और मैं शरीक नहीं करता	उस के साथ किसी को	20	फ़रमा दें	बेशक मैं	इख़्तियार नहीं रखता

لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾ قُلْ اِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ

तुम्हारे लिए	किसी ज़र्र	और न किसी भलाई	21	फ़रमा दें	बेशक मुझे	मुझे हरगिज़ पनाह न देगा	अल्लाह से

اَحَدٌ ۙ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾ اِلَّا بَلٰغًا

कोई	और मैं हरगिज़ न पाऊँगा	उस के सिवा	कोई जाए पनाह	22	मगर (पैग़ाम) पहुँचाना

مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ

अल्लाह की तरफ़ से	और उस के पैग़ामात	और जो	नाफ़रमानी करे अल्लाह की	और उस के रसूल की	तो बेशक उस के लिए

نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا

जहन्नम की आग	हमेशा रहेंगे	उस में	हमेशा हमेशा	23	यहां तक कि	जब वह देखेंगे

مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

जो उन्हें वादा दिया जाता है	तो वह अनक़रीब जान लेंगे	किस	कमज़ोर तरीन	मददगार	और कम तर	तादाद में	24

قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ

फ़रमा दें	नहीं	मैं जानता	आया क़रीब है	जो तुम्हें वादा दिया जाता है	या कर देगा

لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾ عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ

उस के लिए	मेरा रब	मुद्दत	25	ग़ैब का जानने वाला	वह ज़ाहिर नहीं करता	अपने ग़ैब पर

اَحَدًا ﴿٢٦﴾ اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ

किसी को	26	सिवाए	जिस को	वह पसंद करता है	रसूलों में से	तो बेशक वह

يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

चलाता है	उस के आगे से	और उस के पीछे से	मुहाफ़िज़ (फ़रिश्ते)	27	

और रहे गुनाहगार तो वह जहन्नम का ईंधन हुए। (15)
और (मुझे वहि की गई है) कि अगर वह क़ाइम रहते हैं सीधे रास्ते पर तो हम उन्हें वाफ़िर पानी पिलाते। (16)
ताकि हम उन्हें उस में आज़माएं, और जो अपने रब की याद से मुंह मोड़ेगा वह उसे सख़्त अ़ज़ाब में दाख़िल करेगा। (17)
और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं तो तुम अल्लाह के साथ किसी की बन्दगी न करो। (18)
और यह कि जब खड़ा हुआ अल्लाह का बन्दा कि वह उस (अल्लाह) की इबादत करे तो क़रीब था कि वह उस पर हल्क़ा दर हल्क़ा हो जाएं। (19)
आप (स) फ़रमा दें कि मैं सिर्फ़ अपने रब की इबादत करता हूँ और मैं शरीक नहीं करता किसी को उस के साथ। (20)
आप (स) फ़रमा दें कि बेशक मैं तुम्हारे लिए इख़्तियार नहीं रखता किसी ज़र्र का और न किसी भलाई का। (21)
आप (स) फ़रमा दें कि बेशक मुझे हरगिज़ पनाह न देगा अल्लाह से कोई भी, और मैं उस के सिवा कोई जाए पनाह न पाऊँगा। (22)
मगर (मेरा काम है) अल्लाह की तरफ़ से उस का कहा और पैग़ाम पहुँचाना और जो नाफ़रमानी करेगा अल्लाह की और उस के रसूल (स) की तो बेशक उस के लिए जहन्नम की आग है, ऐसे लोग उस में हमेशा हमेशा रहेंगे। (23)
यहां तक कि जब वह देखेंगे जो उन्हें वादा दिया जाता है तो वह जान लेंगे कि किस का मददगार कमज़ोर तरीन है और तादाद में कम तर है। (24)
आप (स) फ़रमा दें: मैं नहीं जानता कि आया क़रीब है जो तुम्हें वादा दिया जाता है या उस के लिए मेरा रब कोई मुद्दते (दराज़) मुक़र्रर कर देगा। (25)
(वह) ग़ैब का जानने वाला है, अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता, (26)
सिवाए (उस के) जिसे वह पसंद करता है रसूलों में से, फिर बेशक उस के आगे और उस के पीछे मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते चलाता है, (27)

لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ

जो उन के पास	और उस ने अहाता किया हुआ है	अपने रब के	पैग़ामात	उन्हों ने तहक़ीक़ पहुँचा दिए	कि	ता कि वह मालूम कर ले

ع ٢ ٩ ١٢

وَاَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

	28	गिनती में	हर शै	और उस ने शुमार कर रखी है	

آيَاتُهَا ٢٠ ❀ سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ (٧٣) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 — (73) सूरतुल मुज़्ज़म्मिल कपड़ों में लिपटने वाले — आयात 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾ قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢﴾ نِّصْفَهٗٓ اَوِ انْقُصْ

कम कर लें	या	उस का निस्फ़	2	थोड़ा	मगर	रात में क़ियाम करें	1	ऐ कपड़ों में लिपटने वाले (मुहम्मद (स)

مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿٣﴾ اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿٤﴾

4	तरतील के साथ	क़ुरआन	और ठहर ठहर कर पढ़ें	उस पर-से	या ज़ियादा कर लें	3	थोड़ा	उस में से

اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿٥﴾ اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ

रात	उठना	बेशक	5	एक भारी कलाम	आप (स)	बेशक हम अनक़रीब डाल देंगे

هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ قِيْلًا ﴿٦﴾ اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا

शुग़ल	दिन में	बेशक आप (स) के लिए	6	बात/तिलावत	और ज़ियादा दुरुस्त	यह सख़्त (नफ़्स को) रोन्दने वाला

طَوِيْلًا ﴿٧﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ﴿٨﴾

8	(सब से) छूट कर	उस की तरफ़	और छूट जाएं	अपने रब का नाम	और आप (स) याद करें	7	तवील

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿٩﴾

9	कारसाज़	पस पकड़ लो (बना लो) उस को	उस के सिवा	नहीं कोई माबूद	और मग़्रिब	रब मश्रिक़ का

وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿١٠﴾

10	अच्छी तरह	किनारा कश हो कर	और उन्हें छोड़ दें	जो वह कहते हैं	पर	और आप (स) सब्र करें

وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿١١﴾ اِنَّ

बेशक	11	थोड़ी	और उन को मोहलत दें	ख़ुशहाल लोगों	और झुटलाने वालों	और मुझे छोड़ दो

لَدَيْنَآ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿١٢﴾ وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٣﴾ يَوْمَ

जिस दिन	13	दर्दनाक	और अज़ाब	गले में अटक जाने वाला	और खाना	12	और दहकती आग	अज़ाब	हमारे हां

تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿١٤﴾ اِنَّآ اَرْسَلْنَآ

बेशक हम ने भेजा	14	रेज़ा रेज़ा	रेत के तोदे	पहाड़	और हो जाएंगे	और पहाड़	ज़मीन	कांपेगी

اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾

15	एक रसूल	फ़िरऔन की तरफ़	जैसे हम ने भेजा	तुम पर	गवाही देने वाला	एक रसूल	तुम्हारी तरफ़

ता कि वह मालूम कर ले कि उन्हों ने पहुँचा दिए हैं अपने रब के पैग़ामात और उस ने अहाता किया हुआ है जो कुछ उन के पास है और हर चीज़ को गिनती में शुमार कर रखा है। (28)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ऐ मुज़्ज़म्मिल (कपड़ों में लिपटने वाले मुहम्मद (स)! (1)

रात में क़ियाम करें मगर थोड़ा। (2)

उस (रात) का निस्फ़ हिस्सा या उस में से थोड़ा कम कर लें। (3)

या (कुछ) ज़ियादा कर लें उस से, और क़ुरआन तरतील के साथ ठहर ठहर कर पढ़ें। (4)

बेशक हम आप (स) पर अनक़रीब एक भारी कलाम (क़ुरआने करीम) डालेंगे (नाज़िल करेंगे)। (5)

बेशक रात का उठना नफ़्स को रोन्दने वाला है और (क़ुरआन) पढ़ने के लिए ज़ियादा दुरुस्त है। (6)

बेशक आप (स) के लिए दिन में बहुत काम हैं। (7)

और आप (स) अपने रब के नाम का ज़िक्र करें और सब से कट कर (अलग हो कर) उस के हो जाएं। (8)

(वह) मश्रिक़ ओ मग़्रिब का रब है। उस के सिवा कोई माबूद नहीं, पस आप (स) उस को कारसाज़ बनालें। (9)

और आप (स) सब्र करें उस पर जो वह कहते हैं और अच्छी तरह किनारा कश हो कर आप (स) उन्हें छोड़ दें। (10)

और मुझे और झुटलाने वाले ख़ुशहाल लोगों को छोड़ दें (समझ लेने दें) और उन को थोड़ी मोहलत दे दें। (11)

बेशक हमारे हां अज़ाब है और दहकती आग। (12)

और खाना है गले में अटक जाने वाला और अज़ाब है दर्दनाक। (13)

जिस दिन ज़मीन और पहाड़ कांपेंगे और पहाड़ रेज़ा रेज़ा (हो कर) रेत के तोदे हो जाएंगे। (14)

बेशक हम ने भेजा तुम्हारी तरफ़ एक रसूल (मुहम्मद स) गवाही देने वाला तुम पर जैसे हम ने भेजा था फ़िरऔन की तरफ़ एक रसूल (मूसा अ)। (15)

पस फ़िरऔन ने रसूल का कहा न माना तो हम ने उसे (फ़िरऔन को) बड़े वबाल की पकड़ में पकड़ लिया। **(16)**
अगर तुम ने कुफ़्र किया तो उस दिन कैसे बचोगे? जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा। **(17)**
उस से आस्मान फट जाएगा, उस का वादा पूरा हो कर रहने वाला है। **(18)**
बेशक यह (कुरआन) नसीहत है, जो कोई चाहे इख़्तियार कर ले (इस के ज़रीए) अपने रब की तरफ़ राह। **(19)**
बेशक आप (स) का रब जानता है कि आप (स) (कभी) दो तिहाई रात के क़रीब क़ियाम करते हैं और (कभी) आधी रात और (कभी) उस का तिहाई हिस्सा और जो आप (स) के साथी हैं उन में से एक जमाअ़त (भी), और अल्लाह रात और दिन का अन्दाज़ा फ़रमाता है, उस ने जाना कि तुम हरगिज़ निबाह न कर सकोगे तो उस ने तुम पर इनायत फ़रमाई, पस तुम कुरआन में जिस क़द्र आसानी से हो सके पढ़ लिया करो, उस ने जाना कि अलबत्ता तुम में से कोई बीमार होंगे और दूसरे रोज़ी तलाश करते हुए ज़मीन में सफ़र करेंगे और कई दूसरे अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, पस उस में से जिस क़द्र आसानी से हो सके तुम पढ़ लिया करो और तुम नमाज़ क़ाइम करो और ज़कात अदा करते रहो और अल्लाह को इख़्लास से क़र्ज़ हस्ना दो, और कोई नेकी जो तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह के हां बेहतर और अजर में अ़ज़ीम तर पाओगे, और तुम अल्लाह से बख़्शिश मांगो, बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम करने वाला है। **(20)**

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا وَّبِيْلًا ﴿١٦﴾

16	बड़े वबाल	पकड़	तो हम ने उसे पकड़ लिया	रसूल	फ़िरऔन	पस कहा न माना

فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ

बच्चों को	कर देगा	उस दिन	अगर तुम ने कुफ़्र किया	तुم बचोगे	तो कैसे

شِيْبًا ﴿١٧﴾ ۨالسَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ۭ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ﴿١٨﴾

18	पूरा हो कर रहने वाला	उस का वादा	है	उस से	फट जाएगा	आस्मान	17	बूढ़ा

ع ١٩ ١٣ اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿١٩﴾ ع

19	राह	अपने रब की तरफ़	इख़्तियार कर ले	चाहे	तो जो	नसीहत	बेशक यह

اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ الَّيْلِ

दो तिहाई (2/3) रात के	क़रीब	क़ियाम करते हैं	कि आप (स)	वह जानता है	बेशक आप (स) का रब

وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآىِٕفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ۭ وَاللّٰهُ

और अल्लाह	जो आप (स) के साथ	से	और एक जमाअ़त	और उस का तिहाई (1/3)	और आधी (1/2) रात

يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۭ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ

तो उस ने तुम पर इनायत की	कि तुम हरगिज़ (वक़्त का) शुमार न कर सकोगे	उस ने जाना	रात और दिन	अन्दाज़ा फ़रमाता है

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ۭ عَلِمَ اَنْ سَيَكُوْنُ

कि अलबत्ता होंगे	उस ने जाना	कुरआन से	जिस क़द्र आसानी से हो सके	तो तुम पढ़ा करो

مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي الْاَرْضِ

ज़मीन में	वह सफ़र करेंगे	और दूसरे	बीमार	तुम में से कोई

يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ

अल्लाह की राह में	वह जिहाद करेंगे	और कई दूसरे	अल्लाह का फ़ज़्ल (रोज़ी)	से	तलाश करते हुए

فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ

नमाज़	और क़ाइम करो	उस से	जिस क़द्र आसानी से हो सके	पस पढ़ लिया करो

وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ۭ وَمَا تُقَدِّمُوْا

तुम आगे भेजोगे	और जो	क़र्ज़ हस्ना (इख़्लास से)	और अल्लाह को क़र्ज़ दो	और अदा करते रहो ज़कात

لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا

वह बेहतर	अल्लाह के हां	तुम उसे पाओगे	कोई नेकी	अपने लिए

وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ۭ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ

बख़्शने वाला	बेशक अल्लाह	और तुम बख़्शिश मांगो अल्लाह से	अजर में	और अ़ज़ीम तर

ع ٢ ١ ١٤ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾ ع

20	निहायत रहम करने वाला

آيَاتُهَا ٥٦ ❀ سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ (٧٤) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2 | (74) सूरतुल मुद्दस्सिर कपड़े में लिपटे हुए | आयात 56

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

يٰٓاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝١ قُمْ فَاَنْذِرْ ۝٢ وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝٣ وَثِيَابَكَ

और अपने कपड़े	3	और अपने रब की बड़ाई बयान करो	2	फिर डराओ	खड़े हो जाओ	1	ऐ कपड़े में लिपटे हुए (मुहम्मद (स)

فَطَهِّرْ ۝٤ وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝٥ وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝٦

6	ज़ियादा लेने (की ग़रज़ से)	और एहसान न रखो	5	सो दूर रहो	और पलीदी	4	सो पाक करो

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝٧ فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۝٨ فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ

उस दिन	तो वह	8	सूर में	फिर जब फूंका जाएगा	7	सब्र करो	और अपने रब के लिए

يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۝٩ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۝١٠ ذَرْنِيْ وَمَنْ

और जिसे	मुझे छोड़ दो	10	न आसान	काफ़िरों पर	9	बड़ा दुश्वार	दिन

خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۝١١ وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۝١٢ وَّبَنِيْنَ

और बेटे	12	बहुत सारा माल	उसे	और मैं ने दिया	11	अकेला	मैं ने पैदा किया

شُهُوْدًا ۝١٣ وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ۝١٤ ثُمَّ يَطْمَعُ

वह तमअ़ करता है	फिर	14	खूब हमवार	उस के लिए	और हमवार किया	13	सामने हाज़िर रहने वाले

اَنْ اَزِيْدَ ۝١٥ كَلَّا ؕ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ۝١٦ سَاُرْهِقُهٗ

अब उस से चढ़वाऊँगा	16	इनाद रखने वाला (मुख़ालिफ़)	हमारी आयात का	बेशक वह है	हरगिज़ नहीं	15	कि (और) ज़ियादा दूँ

صَعُوْدًا ۝١٧ اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝١٨ فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝١٩

19	उस ने अन्दाज़ा किया	कैसा	सो वह मारा जाए	18	और उस ने अन्दाज़ा किया	बेशक उस ने सोचा	17	बड़ी चढ़ाई

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝٢٠ ثُمَّ نَظَرَ ۝٢١ ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝٢٢

22	और मुँह बिगाड़ लिया	फिर उस ने तेवरी चढ़ाई	21	फिर उस ने देखा	20	कैसा उस ने अन्दाज़ा किया	फिर वह मारा जाए

ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝٢٣ فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ

मगर (सिर्फ़) जादू	नहीं यह	तो उस ने कहा	23	और उस ने तकब्बुर किया	फिर उस ने पीठ फेर ली

يُّؤْثَرُ ۝٢٤ اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝٢٥ سَاُصْلِيْهِ

अ़नक़रीब उसे डाल दूँगा	25	आदमी का कलाम	मगर (सिर्फ़)	नहीं यह	24	अगलों से नक़्ल किया जाता है

سَقَرَ ۝٢٦ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ۝٢٧ لَا تُبْقِيْ

वह न बाक़ी रखेगी	27	सक़र क्या है	और तुम क्या समझे?	26	सक़र (जहन्नम)

وَلَا تَذَرُ ۝٢٨ لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ۝٢٩ عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝٣٠

30	उस पर हैं उन्नीस (19) दारोग़ा	29	आदमी को	झुलस देने वाली	28	और न छोड़ेगी

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ऐ कपड़ों में लिपटे हुए (मुहम्मद (स)! (1)
खड़े हो जाओ, फिर डराओ, (2)
और अपने रब की बड़ाई बयान करो, (3)
और अपने कपड़े पाक रखो, (4)
और पलीदी से दूर रहो। (5)
और ज़ियादा लेने की ग़र्ज़ से एहसान न रखो, (6)
और अपने रब की (रज़ा जूई) के लिए सब्र करो। (7)
फिर जब सूर फूंका जाएगा। (8)
तो वह दिन बड़ा दुश्वार दिन होगा। (9)
काफ़िरों पर आसान न होगा। (10)
मुझे और उसे छोड़ दो जिसे मैं ने अकेला पैदा किया। (11)
और मैं ने उसे दिया बहुत सारा माल, (12)
और सामने हाज़िर रहने वाले बेटे, (13)
और हमवार किया उस के लिए (सरदार बनने का रास्ता) खूब हमवार, (14)
फिर वह लालच करता है कि और ज़ियादा दूँ। (15)
हरगिज़ नहीं, बेशक वह हमारी आयात का मुख़ालिफ़ है। (16)
अब उसे कठिन चढ़ाई चढ़वाऊँगा। (17)
बेशक उस ने सोचा और कुछ बात बनाने की कोशिश की, (18)
सो वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की, (19)
फिर वह मारा जाए कि कैसी बात बनाने की कोशिश की। (20)
फिर उस ने देखा, (21)
फिर उस ने तेवरी चढ़ाई और मुँह बिगाड़ लिया, (22)
फिर उस ने पीठ फेर ली और उस ने तकब्बुर किया। (23)
पस उस ने कहाः यह तो सिर्फ़ एक जादू है (जो) अगलों से चला आता है, (24)
यह तो सिर्फ़ एक आदमी का कलाम है। (25)
अ़नक़रीब मैं उसे सक़र में डाल दूँगा। (26)
और तुम क्या जानो कि सक़र क्या है? (27)
(वह है आग) न बाक़ी रखेगी और न छोड़ेगी, (28)
आदमी को झुलस देने वाली है, (29)
उस पर उन्नीस (19) दारोग़ा (मुक़र्रर) हैं। (30)

وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً ۙ وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ

उन की तादाद	और हम ने नहीं रखी	फ़रिश्ते	मगर (सिर्फ़)	दोज़ख़ के दारोग़े	और हम ने नहीं बनाए

اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۙ لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ

किताब दी गई (अहले किताब)	वह लोग जिन्हें	ताकि वह यक़ीन कर लें	काफ़िर हुए	उन लोगों के लिए जो	मगर (सिर्फ़) आज़माइश

وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ

वह लोग जिन्हें	और शक न करें	ईमान	जो लोग ईमान लाए	और ज़ियादा हो

اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۙ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ

रोग	जिन के दिलों में	वह लोग	और ताकि वह कहें	और मोमिन (जमा)	किताब दी गई

وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ

अल्लाह गुमराह करता है	इसी तरह	मिसाल	इस	इरादा किया अल्लाह ने	क्या	और काफ़िर (जमा)

مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ

लशकरों	और नहीं जानता	जिसे वह चाहता है	और हिदायत देता है	जिसे वह चाहता है

رَبِّكَ اِلَّا هُوَ ۭ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ۝٣١ كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝٣٢ ع ١ ٣١ ١٥

32	क़सम है चाँद की	नहीं नहीं	31	आदमी के लिए	मगर नसीहत	और नहीं यह	सिवाए वह (ख़ुद)	तेरे रब के

وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۝٣٣ وَالصُّبْحِ اِذَآ اَسْفَرَ ۝٣٤ اِنَّهَا لَاِحْدَى

एक है	बेशक यह	34	जब वह रोशन हो	और सुबह	33	जब वह पीठ फेरे	और रात

الْكُبَرِ ۝٣٥ نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ۝٣٦ لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ

कि वह आगे बढ़े	तुम में से	और जो कोई चाहे	36	लोगों को	डराने वाली	35	बड़ी (आफ़त)

اَوْ يَتَاَخَّرَ ۝٣٧ كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۝٣٨ اِلَّآ

मगर	38	गिरवी	उस ने कमाया (आमाल)	उस के बदले जो	हर शख़्स	37	या पीछे रहे

اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ۝٣٩ فِيْ جَنّٰتٍ ۛ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝٤٠ عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٤١

41	गुनाहगारों	से	40	वह पूछेंगे	बाग़ात में	39	दाहिनी तरफ़ वाले

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ۝٤٢ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۝٤٣

43	नमाज़ पढ़ने वाले	से	हम न थे	वह कहेंगे	42	जहन्नम में	क्या (चीज़) तुम्हें ले गई

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۝٤٤ وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَاۗىِٕضِيْنَ ۝٤٥

45	बेहूदा बातों के साथ लगे रहने वाले	और हम धंसते रहते थे (बेहूदा बातों में)	44	मोहताजों	हम खाना खिलाते	और न थे हम

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝٤٦ حَتّٰٓى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ۝٤٧ فَمَا تَنْفَعُهُمْ

और उन्हें नफ़ा न दिया	47	मौत	हमें आ गई	यहां तक कि	46	रोज़े जज़ा ओ सज़ा को	और हम झुटलाते थे

شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ۝٤٨ فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۝٤٩

49	मुँह फेरते हैं	नसीहत	से	तो उन्हें क्या हुआ	48	सिफ़रिश करने वाले	सिफ़ारिश

और हम ने दोज़ख़ के दारोग़े सिर्फ़ फ़रिश्ते बनाए हैं, और हम ने उन की तादाद सिर्फ़ एक फ़ित्ना बनाया उन लोगों के लिए जो काफ़िर हुए ताकि अहले किताब यक़ीन कर लें और ईमान ज़ियादा हो उन का जो ईमान लाए और वह लोग शक न करें जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) और मोमिन, और ताकि वह लोग जिन के दिलों में रोग है और काफ़िर कहें कि क्या इरादा किया है अल्लाह ने इस मिसाल (बात) से? इसी तरह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह जिसे चाहता है हिदायत देता है, (कोई) नहीं जानता तेरे रब के लशकरों को ख़ुद उस के सिवा, और यह नहीं मगर आदमी के लिए नसीहत। (31)

नहीं नहीं! क़सम है चाँद की, (32)

और रात की जब वह पीठ फेरे। (33)

और सुब्ह की जब वह रोशन हो। (34)

बेशक वह (दोज़ख़) बड़ी चीज़ों में एक है, (35)

लोगों को डराने वाली। (36)

तुम में से जो कोई चाहे आगे बढ़े या वह पीछे रहे। (37)

हर शख़्स अपने आमाल के बदले गिरवी है। (38)

मगर दाहिनी हाथ वाले (नेक लोग)। (39)

बाग़ात में (होंगे), वह पूछेंगे। (40)

गुनाहगारों से, (41)

तुम्हें जहन्नम में क्या चीज़ ले गई? (42)

वह कहेंगे कि हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे। (43)

और हम मोहताजों को खाना न खिलाते थे। (44)

और हम बेहूदा बातों में लगे रहने वालों के साथ बेहूदा बातों में धंसते रहते थे, (45)

और हम रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाते थे। (46)

यहां तक कि हमें मौत आ गई। (47)

सो उन्हें सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश ने नफ़ा न दिया। (48)

तो उन्हें क्या हुआ कि वह नसीहत से मुँह फेरते हैं? (49)

عند المتقدمين ١٢ مع ١٦

كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۙ﴿٥٠﴾ فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ؕ﴿٥١﴾ بَلْ يُرِيْدُ

चाहता है	बल्कि	51	शेर से	भागे जाते हैं	50	भागे हुए	गधे	गोया कि वह

كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۙ﴿٥٢﴾ كَلَّا ؕ بَلْ

बल्कि	हरगिज़ नहीं	52	खुले हुए	सहीफ़े	कि वह दिए जाएं	उन में से	हर आदमी

لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ؕ﴿٥٣﴾ كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۚ﴿٥٤﴾ فَمَنْ شَآءَ

सो जो चाहे	54	नसीहत	बेशक यह	हरगिज़ नहीं	53	आख़िरत	वह नहीं डरते

ذَكَرَهٗ ؕ﴿٥٥﴾ وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ

वही	अल्लाह चाहे	मगर यह कि	और वह याद न रखेंगे	55	इसे याद रखे

اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۧ﴿٥٦﴾

	56	और मग़्फ़िरत करने के लाइक़	डरने के लाइक़	

ع ٢ ٢٥ ١٦ الثلثة

آيَاتُهَا ٤٠ ❀ سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ (٧٥) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2	(75) सूरतुल क़ियामह क़ियामत	आयात 40

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ﴿١﴾ وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ﴿٢﴾

2	मलामत करने वाला (ज़मीर)	नफ़्स की	और नहीं, मैं क़सम खाता हूँ	1	क़ियामत के दिन की	नहीं, मैं क़सम खाता हूँ

اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ؕ﴿٣﴾ بَلٰى قٰدِرِيْنَ

क्यों नहीं, हम क़ादिर हैं	3	उस की हड्डियां	कि हम जमा न कर सकेंगे	इन्सान	क्या गुमान करता है

عَلٰٓى اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ﴿٤﴾ بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ

कि गुनाह करता रहे	इन्सान	बल्कि चाहता है	4	उस के पोर पोर	कि हम दुरुस्त करें	पर

اَمَامَهٗ ۚ﴿٥﴾ يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ؕ﴿٦﴾ فَاِذَا

पस जब	6	रोज़े क़ियामत	कब?	और पूछता है	5	अपने आगे को भी

بَرِقَ الْبَصَرُ ۙ﴿٧﴾ وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۙ﴿٨﴾ وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۙ﴿٩﴾

9	सूरज और चाँद	और जमा कर दिए जाएंगे	8	चाँद	और गरहन लग जाएगा	7	चुंधिया जाएंगी आँखें

يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۚ﴿١٠﴾ كَلَّا لَا وَزَرَ ؕ﴿١١﴾

11	नहीं कोई बचाओ	हरगिज़ नहीं	10	कहां भागने की जगह	आज के दिन	इन्सान	कहेगा

اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ٍالْمُسْتَقَرُّ ؕ﴿١٢﴾ يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ ۢ

आज के दिन	इन्सान	वह जतला दिया जाएगा	12	ठिकाना	आज के दिन	तेरे रब की तरफ़

بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ؕ﴿١٣﴾ بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۙ﴿١٤﴾

14	बाख़बर	अपनी जान (हालत) पर	बल्कि इन्सान	13	और उस ने पीछे छोड़ा	वह जो उस ने आगे भेजा

गोया कि वह जंगली गधे हैं, (50) भागे जाते हैं शेर से। (51) बल्कि उन में से हर आदमी चाहता है कि उसे दिए जाएं सहीफ़े खुले हुए। (52) हरगिज़ नहीं, बल्कि वह आख़िरत से नहीं डरते। (53) हरगिज़ नहीं, बेशक यह नसीहत है। (54) सो जो चाहे इसे याद रखे। (55) और वह याद न रखेंगे मगर यह कि अल्लाह चाहे, वही है डरने के लाइक़ और मग़्फ़िरत करने के लाइक़। (56)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

मैं क़ियामत के दिन की क़सम खाता हूँ। (1) और अपने ऊपर मलामत करने वाले नफ़्स की क़सम खाता हूँ। (2) क्या इन्सान गुमान करता है कि हम हरगिज़ जमा न कर सकेंगे उस की हड्डियां। (3) क्यों नहीं? कि हम इस पर क़ादिर हैं कि उस के पोर पोर दुरुस्त कर दें। (4) बल्कि इन्सान चाहता है कि आगे भी गुनाह करता रहे। (5) वह पूछता है कि रोज़े क़ियामत कब होगा? (6) पस जब आँखें चुंधिया जाएंगी, (7) और चाँद को गरहन लग जाएगा, (8) और सूरज और चाँद जमा कर दिए जाएंगे। (9) इन्सान कहेगा कि कहां है आज के दिन भागने की जगह? (10) हरगिज़ नहीं, कोई बचाओ की जगह नहीं। (11) आज के दिन तेरे रब की तरफ़ ठिकाना है। (12) जतला दिया जाएगा इन्सान आज के दिन जो उस ने आगे भेजा और जो उस ने पीछे छोड़ा। (13) बल्कि इन्सान अपनी जान पर बाख़बर है। (14)

अगरचे अपने उज़्र (हीले) ला डाले (पेश करे)। (15)
आप (स) क़ुरआन के साथ अपनी ज़बान को हरकत न दें कि उस को जल्द याद कर लें। (16)
बेशक उस का जमा करना और उस का पढ़ाना हमारे ज़िम्मे है। (17)
पस जब हम उसे (फ़रिश्ते की ज़बानी) पढ़ें तो आप (स) ध्यान से सुनें उस के पढ़ने को। (18)
फिर बेशक उस का बयान करना हमारे ज़िम्मे है। (19)
हरगिज़ नहीं, बल्कि (ऐ काफ़िरो!) तुम दुनिया से मुहब्बत रखते हो, (20)
और आख़िरत को छोड़ देते हो। (21)
उस दिन बहुत से चेहरे बारौनक़ होंगे, (22)
अपने रब की तरफ़ देखते होंगे। (23)
और बहुत से चेहरे उस दिन बिगड़े हुए होंगे, (24)
वह ख़याल करते होंगे कि उन से कमर तोड़ने वाला (मामला) किया जाएगा। (25)
हाँ हाँ, जब (जान) हंसुली तक पहुँच जाए। (26)
और कहा जाए कि कौन है झाड़ फूंक करने वाला? (27)
और वह गुमान करे कि यह जुदाई की घड़ी है। (28)
और एक पिंडली दूसरी पिंडली से लिपट जाए (पाऊँ में हरकत न रहे)। (29)
उस दिन (तुझे) अपने रब की तरफ़ चलना है। (30)
न उस ने (अल्लाह-रसूल की) तस्दीक़ की और न उस ने नमाज़ पढ़ी। (31)
बल्कि उस ने झुटलाया और मुँह मोड़ा। (32)
फिर वह अपने घर वालों की तरफ़ अकड़ता हुआ चला गया। (33)
अफ़्सोस है तुझ पर अफ़्सोस। (34)
फिर अफ़्सोस है तुझ पर फिर अफ़्सोस। (35)
क्या इन्सान गुमान करता है कि वह यूंही छोड़ दिया जाएगा। (36)
क्या वह मनी का एक नुत्फ़ा (क़तरा) न था जो (रहमे मादर में) टपकाया गया, (37)
फिर वह जमा हुआ खून हुआ, फिर उस ने उसे पैदा किया, फिर उसे दुरुस्त (अनदाम) किया, (38)
फिर उस से मर्द और औरत की दो क़िस्में बनाईं। (39)
क्या वह इस पर क़ादिर नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा करे? (40)

وَلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ﴿١٥﴾ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ﴿١٦﴾

16	कि जल्द (याद कर लें) उस को	अपनी ज़बान को	आप (स) हरकत न दें इस (क़ुरआन) के साथ	15	अपने उज़्र	अगरचे ला डाले

اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ﴿١٧﴾ فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ

तो आप (स) पैरवी करें	पस जब हम उसे पढ़ें	17	और उस का पढ़ाना	उस का जमा करना	बेशक हम पर (हमारे ज़िम्मे)

قُرْاٰنَهٗ ﴿١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿١٩﴾ كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ

तुम मुहब्बत रखते हो	हरगिज़ नहीं बल्कि	19	उस का बयान	फिर बेशक हम पर (हमारे ज़िम्मे)	18	उस के पढ़ने को

الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾ وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ﴿٢١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾

22	ताज़ा (बारौनक़)	उस दिन	बहुत से चेहरे	21	आख़िरत	और तुम छोड़ देते हो	20	जल्दी हासिल होने वाली चीज़

اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾ وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾ تَظُنُّ

ख़याल करते होंगे	24	बिगड़े हुए	उस दिन	और बहुत से चेहरे	23	देखते	अपने रब की तरफ़

اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾ كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾

26	हंसुली तक	पहुँच जाए	हाँ हाँ जब	25	कमर तोड़ने वाला	उन से किया जाएगा	कि

وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾ وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾ وَالْتَفَّتِ

और लिपट जाए	28	जुदाई	और वह गुमान करे कि यह	27	कौन झाड़ फूंक करने वाला	और कहा जाए

السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾ اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ِالْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾ ع ١ ٣٠ ١٧

30	चलना	उस दिन	अपने रब की तरफ़	29	दूसरी पिंडली से	एक पिंडली

فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿٣١﴾ وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾

32	और मुँह मोड़ा	झुटलाया	और लेकिन (बल्कि)	31	और न उस ने नमाज़ पढ़ी	न उस ने तस्दीक़ की

ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾

34	पस अफ़्सोस	अफ़्सोस तुझ पर	33	अकड़ता	अपने घर वालों की तरफ़	फिर चला गया वह

ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾ اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ

कि वह छोड़ दिया जाएगा	इन्सान	क्या वह गुमान करता है?	35	फिर अफ़्सोस	अफ़्सोस तुझ पर	फिर

سُدًى ﴿٣٦﴾ اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾

37	टपकाया गया	मनी	से-का	नुत्फ़ा	क्या न था?	36	मुहमिल (यूं ही)

ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾ فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ

दो जोड़े (क़िस्में)	उस से	फिर बनाए	38	फिर उसे दुरुस्त कर दिया	फिर उस ने पैदा किया	जमा हुआ खून	फिर वह हुआ

الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾ اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى

पर	क़ादिर	वह	क्या नहीं	39	मर्द और औरत

اَنْ يُّحْيِ َ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾ ع ٢ ٤٠ ١٨

40	मुर्दे (जमा)	कि वह ज़िन्दा करे

آيَاتُهَا ٣١ ❀ (٧٦) سُوْرَةُ الدَّهْرِ ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

(76) सूरतुद दहर — ज़माना

आयात 31 — रुकूआत 2

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْـًٔا مَّذْكُوْرًا ﴿١﴾

1	काबिले ज़िक्र	न था कुछ	ज़माना से (में)	एक वक़्त	इन्सान पर	यक़ीनन आया (गुज़रा)

اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ۖ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ

तो हम ने उसे बनाया	हम उसे आज़माएं	मख़लूत	नुत्फ़े से	इन्सान	बेशक हम ने पैदा किया

سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا ﴿٢﴾ اِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا

और ख़ाह	ख़ाह शुक्र करने वाला	राह	बेशक हम ने उसे दिखाई	2	सुनता देखता

كَفُوْرًا ﴿٣﴾ اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَا۟ وَاَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا ﴿٤﴾

4	और दहकती आग	और तौक़	ज़न्जीरें	काफ़िरों के लिए	बेशक हम ने तैयार किया	3	नाशुक्रा

اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا ﴿٥﴾

5	काफ़ूर की	उस में मिलावट होगी	प्याले से	पिएंगे	नेक बन्दे	बेशक

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا ﴿٦﴾ يُوْفُوْنَ

वह पूरी करते हैं	6	नालियां	उस से जारी करते हैं	अल्लाह के बन्दे	उस से पीते हैं	एक चश्मा

بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا ﴿٧﴾ وَيُطْعِمُوْنَ

और वह खिलाते हैं	7	फैली हुई	उस की बुराई	होगी	उस दिन से	और वह डरते हैं	अपनी (नज़्रें)

الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ﴿٨﴾ اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ

हम तुम्हें खिलाते हैं	इस के सिवा नहीं	8	और क़ैदी	और यतीम	मिस्कीन	उस की मुहब्बत पर	खाना

لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا ﴿٩﴾ اِنَّا نَخَافُ

बेशक हम डरते हैं	9	और न शुक्रिया	कोई जज़ा	तुम से	हम नहीं चाहते	रज़ाए इलाही के लिए

مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا ﴿١٠﴾ فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ

उस दिन	बुराई	पस उन्हें बचा लिया अल्लाह ने	10	निहायत सख़्त	मुँह बिगाड़ने वाला	दिन	अपने रब से

وَلَقّٰىهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ﴿١١﴾ وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا ﴿١٢﴾

12	और रेशमी लिबास	जन्नत	उन के सबर पर	और उन्हें बदला दिया	11	और ख़ुश दिली	ताज़गी	और उन्हें अ़ता की

مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ﴿١٣﴾

13	और न सर्दी	धूप	उस में	वह न देखेंगे	तख़्तों पर	उस में	तकिया लगाए होंगे

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا ﴿١٤﴾

14	झुका कर	उस के गुच्छे	और नज़्दीक कर दिए गए होंगे	उन के साए	उन पर	और नज़्दीक हो रहे होंगे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

यक़ीनन इन्सान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त गुज़रा है कि वह कुछ (भी) क़ाबिले ज़िक्र न था। (1)

बेशक हम ने इन्सान को पैदा किया मख़लूत नुत्फ़े से (कि) हम उसे आज़माएं तो हम ने उसे सुनता देखता बनाया। (2)

बेशक हम ने उसे राह दिखाई (अब वह) ख़ाह शुक्र करने वाला बने ख़ाह नाशुक्रा। (3)

बेशक हम ने काफ़िरों (नाशुक्रों) के लिए ज़न्जीरें और तौक़ और दहकती आग तैयार कर रखी है। (4)

बेशक पिएंगे नेक बन्दे प्याले से (वह मशरूब) जिस में काफ़ूर की मिलावट होगी। (5)

एक चश्मा जिस से अल्लाह के बन्दे पीते हैं, उस से नालियां जारी करते हैं। (6)

वह पूरी करते हैं अपनी नज़्रें और वह उस दिन से डरते हैं जिस की बुराई फैली (आ़म) होगी। (7)

और वह उस की मुहब्बत पर खाना खिलाते हैं मोहताज को, और यतीम और क़ैदी को। (8)

(और कहते हैं) इस के सिवा नहीं कि हम तुम्हें रज़ाए इलाही के लिए खिलाते हैं। हम तुम से न जज़ा चाहते हैं और न शुक्रिया। (9)

बेशक हम डरते हैं अपने रब की तरफ़ से एक दिन जो मुँह बिगाड़ने वाला निहायत सख़्त है। (10)

पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की बुराई से बचा लिया और उन्हें ताज़गी अ़ता की और ख़ुश दिली। (11)

और उन्हें बदला दिया उन के सबर पर जन्नत और रेशमी लिबास। (12)

उस में तख़्तों पर तकिया लगाए हुए होंगे, वह न देखेंगे उस में धूप (की तेज़ी) न सर्दी (की शिद्दत)। (13)

उन पर उस के साए नज़्दीक हो रहे होंगे और उस के गुच्छे झुका कर नज़्दीक कर दिए गए होंगे। (14)

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ ﴿١٥﴾

15	शीशे के	होंगे	और प्याले	चाँदी के	बरतनों का	उन पर	और दौर होगा

قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا ﴿١٦﴾ وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا

ऐसा जाम	उस में	और उन्हें पिलाया जाएगा	16	मुनासिब अन्दाज़ा	उन्हों ने उन का अन्दाज़ा किया होगा	चाँदी के	शीशे

كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ﴿١٧﴾ عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿١٨﴾ وَيَطُوْفُ

और गर्दिश करेंगे	18	सल्सबील	नाम होगा जिस का	एक चश्मा उस में	17	अदरक	उस की मिलावट	होगी

عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ۚ اِذَا رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا

मोती	तू उन्हें समझे	जब तू उन्हें देखे	हमेशा (नौ उम्र) रहने वाले	लड़के	उन पर

مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾ وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا ﴿٢٠﴾

20	और बड़ी सल्तनत	बड़ी नेमत	तू देखेगा	वहां	और जब तू देखेगा	19	बिखरे हुए

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ ۫ وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ

कंगन	और उन्हें पहनाए जाएंगे	और दबीज़ रेशम (अतलस)	सब्ज़	बारीक रेशम	उन के ऊपर की पोशाक

مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾ اِنَّ هٰذَا كَانَ

है	बेशक यह	21	नियाहत पाक	एक शराब (मशरूब)	उन का रब	और उन्हें पिलाएगा	चाँदी के

لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾ اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ ع ٢٢ / ١٩

आप (स) पर	हम ने नाज़िल किया	बेशक हम	22	मशकूर (मक़्बूल)	तुम्हारी कोशिश	और हुई	जज़ा	तुम्हारे लिए

الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿٢٣﴾ فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا

किसी गुनाहगार	उन में से	और आप (स) कहा न मानें	अपने रब के हुक्म के लिए	पस सब्र करें	23	बतदरीज	कुरआन

اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾ وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾ وَمِنَ الَّيْلِ

और रात के (किसी हिस्से में)	25	और शाम	सुबह	अपने रब का नाम	और आप (स) ज़िक्र करें	24	या नाशुक्रे का

فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ

मुहब्बत रखते हैं	बेशक यह (मुन्किर) लोग	26	और उस की पाकीज़गी बयान करें रात का बड़ा हिस्सा	उस को	पस आप (स) सिज्दा करें

الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾ نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ

हम ने उन्हें पैदा किया	27	भारी	एक दिन	अपने पीछे	और छोड़ देते हैं	दुनिया

وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾

28	बदल कर	उन जैसे लोग	हम बदल दें	और जब हम चाहें	उन के जोड़	और हम ने मज़बूत किए

اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾

29	राह	अपने रब की तरफ़	इख़्तियार करे	पस जो चाहे	नसीहत	बेशक यह

وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾

30	हिक्मत वाला	जानने वाला	है	बेशक अल्लाह	अल्लाह चाहे	जो	सिवाए	और तुम नहीं चाहोगे

قرأ حفص بغير الالف في الوصل فيهما - ووقف على الاول بالالف وعلى الثاني بغير الالف ١٢

और उन पर दौर होगा चाँदी के बरतनों का और शीशे के प्याले होंगे, (15) शीशे चाँदी के। (साक़ियों ने) उन का मुनासिब अन्दाज़ा किया होगा। (16) और उन्हें उस में ऐसा जाम पिलाया जाएगा जिस में अदरक की मिलावट होगी। (17) उस में एक चश्मा है जिस का नाम सल्सबील है। (18) और गर्दिश करेंगे उन पर हमेशा नौउम्र रहने वाले लड़के, जब तू उन्हें देखे तो उन्हें बिखरे हुए मोती समझे। (19) और जब तू देखेगा तो वहां (जन्नत में) बड़ी नेमत और बड़ी सल्तनत देखेगा। (20) उन के ऊपर की पोशाक सब्ज़ बारीक रेशम और अतलस की होगी और उन्हें कंगन पहनाए जाएंगे चाँदी के और उन का रब उन्हें निहायत पाक एक मशरूब पिलाएगा। (21) बेशक यह तुम्हारी जज़ा है, और तुम्हारी कोशिश मक़्बूल हुई। (22) बेशक हम ने आप (स) पर कुरआन थोड़ा थोड़ा करके नाज़िल किया। (23) पस आप (स) अपने रब के हुक्म के लिए सब्र करें, और आप (स) कहा ना मानें उन में से किसी गुनाहगार नाशुक्रे का। (24) और आप (स) अपने रब का नाम सुब्ह ओ शाम याद करते रहें। (25) और रात के किसी हिस्से में आप (स) उस को सिज्दा करें और उस की पाकीज़गी बयान करें रात के बड़े हिस्से में। (26) बेशक यह मुन्किर दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और एक भारी दिन (रोज़े क़ियामत को) अपने पीछे (पसे पुश्त) छोड़ देते हैं। (27) हम ने उन्हें पैदा किया और हम ने उन के जोड़ मज़बूत किए, और हम जब चाहें (उन की जगह) उन जैसे और लोग बदल कर ले आएं। (28) बेशक यह नसीहत है, पस जो चाहे अपने रब की तरफ़ राह इख़्तियार कर ले। (29) और तुम नहीं चाहोगे सिवाए जो अल्लाह चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है। (30)

ع ٢٩ ٢٠

يُدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۭ وَالظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ

उस ने तैयार किया है उन के लिए	और (रहे) ज़ालिम	अपनी रहमत में	वह जिसे चाहे	वह दाख़िल करता है

عَذَابًا اَلِيْمًا ٣١ ع

	31	दर्दनाक अज़ाब	

آيَاتُهَا ٥٠ ❀ سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ (٧٧) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकुआत 2	(77) सूरतुल मुर्सलात भेजी जाने वालियाँ	आयात 50

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ١ فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ٢ وَّالنّٰشِرٰتِ

बादल उठा कर लाने वाली हवाओं की क़सम	2	शिद्दत से	फिर तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की क़सम	1	दिल ख़ुश करने वाली	हवाओं की क़सम

نَشْرًا ٣ فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ٤ فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ٥ عُذْرًا

हुज्जत तमाम करने को	5	ज़िक्र (दिलों में अल्लाह की याद)	फिर डालने वाली हवाओं की क़सम	4	बांट कर	फिर फाड़ने वाली हवाओं की क़सम	3	फैलाने वाली

اَوْ نُذْرًا ٦ اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ٧ فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ٨

8	सितारे मिटाए जाएं (बेनूर हो जाएं)	पस जब	7	ज़रूर होने वाला	तुम्हें वादा दिया जाता है	बेशक जो	6	या डराने को

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ٩ وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ١٠ وَاِذَا الرُّسُلُ

और जब रसूल (जमा)	10	उड़ते फिरें	और जब पहाड़	9	फट जाए	और जब आस्मान

اُقِّتَتْ ١١ لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ١٢ لِيَوْمِ الْفَصْلِ ١٣ وَمَآ اَدْرٰىكَ

और तुम क्या समझे?	13	फ़ैसले का दिन	12	मुल्तवी रखा गया है	किस दिन के लिए	11	वक़्त पर जमा किए जाएंगे

مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ١٤ وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ١٥ اَلَمْ نُهْلِكِ

क्या हम ने हलाक नहीं किया?	15	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	14	क्या है फ़ैसले का दिन?

الْاَوَّلِيْنَ ١٦ ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ١٧ كَذٰلِكَ

इसी तरह	17	पिछलों को	हम उन के पीछे चलाते हैं	फिर	16	पहले लोगों को?

نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ١٨ وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ١٩

19	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	18	मुजरिमों के साथ	हम करते हैं

اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ٢٠ فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ٢١

21	एक महफ़ूज़ जगह	में	फिर हम ने उसे रखा	20	हक़ीर	पानी से	क्या हम ने नहीं पैदा किया तुम्हें

اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ٢٢ فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ٢٣ وَيْلٌ

ख़राबी	23	अन्दाज़ा करने वाले	तो कैसा अच्छा	फिर हम ने अन्दाज़ा किया	22	उस क़द्र जो मालूम है	तक

يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ٢٤ اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ كِفَاتًا ٢٥

25	समेटने वाली	ज़मीन	क्या हम ने नहीं बनाया	24	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन

वह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल करता है, और रहे ज़ालिम तो उन के लिए उस ने दर्दनाक अज़ाब तैयार किया है। (31)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

दिल ख़ुश करने वाली हवाओं की क़सम, (1) फिर शिद्दत से तुन्द ओ तेज़ चलने वाली हवाओं की क़सम, (2) बादलों को उठा कर लाने वाली फैलाने वाली हवाओं की क़सम, (3) फिर बांट कर फाड़ने वाली हवाओं की क़सम, (4) फिर (दिलों में अल्लाह की) याद डालने वाली हवाओं की क़सम। (5) हुज्जत तमाम करने को या डराने को। (6) बेशक जो तुम्हें वादा दिया जाता है वह ज़रूर वाक़े होने वाला है। (7) फिर जब सितारे बेनूर हो जाएं। (8) और जब आस्मान फट जाए। (9) और जब पहाड़ उड़ते फिरें (पारा पारा हो कर)। (10) और जब सारे रसूल वक़्ते (मुअय्यन) पर जमा किए जाएं। (11) (उन का मामला) किस दिन के लिए मुल्तवी रखा गया है? (12) फ़ैसले के दिन के लिए। (13) और तुम क्या समझे कि फ़ैसले का दिन क्या है? (14) उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (15) क्या हम ने हलाक नहीं किया पहले लोगों को? (16) फिर पिछलों को उन के पीछे चलाते हैं। (17) इसी तरह हम मुजरिमों के साथ करते हैं। (18) उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (19) क्या हम ने तुम्हें हक़ीर पानी से नहीं पैदा किया? (20) फिर हम ने उसे एक महफ़ूज़ जगह में रखा, (21) एक वक़्ते मुअय्यन तक। (22) फिर हम ने अन्दाज़ा किया तो (हम) कैसा अच्छा अन्दाज़ा करने वाले हैं। (23) उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए। (24) क्या हम ने ज़मीन को समेटने वाली नहीं बनाया? (25)

ज़िन्दों को और मुर्दों को। (26)
और हम ने उस में ऊँचे ऊँचे पहाड़ रखे और हम ने तुम्हें मीठा पानी पिलाया। (27)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (28)
(हुक्म होगा) तुम चलो उस की तरफ़ जिस को तुम झुटलाते थे। (29)
तुम चलो तीन शाख़ों वाले साए की तरफ़। (30)
न गहरा साया और न वह तपिश से बचाए। (31)
बेशक वह महल जैसे (ऊँचे) शोले फेंकती है, (32)
गोया कि वह ऊँट हैं ज़र्द। (33)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (34)
उस दिन न वह बोल सकेंगे, (35)
और न उन्हें इजाज़त दी जाएगी कि वह उज़्र ख़ाही करें। (36)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (37)
यह फ़ैसले का दिन है, हम ने तुम्हें जमा किया और पहले लोगों को। (38)
फिर अगर तुम्हारे पास कोई दाओ है तो मुझ पर दाओ करो। (39)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (40)
बेशक परहेज़गार सायों और चश्मों में होंगे। (41)
और मेवों में जो वह चाहेंगे। (42)
(हम फ़रमाएंगे) तुम खाओ और पियो मज़े से (बाफ़राग़त) उस के बदले जो तुम करते थे। (43)
बेशक हम इसी तरह नेकोकारों को जज़ा देते हैं। (44)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (45)
तुम खाओ और फ़ाइदा उठा लो थोड़ा (किसी क़द्र) बेशक तुम मुज्रिम हो। (46)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (47)
और जब उन से कहा जाता है कि तुम रुकूअ करो तो वह रुकूअ नहीं करते। (48)
ख़राबी है उस दिन झुटलाने वालों के लिए। (49)
तो इस के बाद वह कौन सी बात पर ईमान लाएंगे? (50)

اَحۡيَآءً وَّاَمۡوَاتًا ﴿٢٦﴾ وَّجَعَلۡنَا فِيۡهَا رَوَاسِىَ شٰمِخٰتٍ

ऊँचे ऊँचे	पहाड़ (जमा)	उस में	और हम ने रखे	26	और मुर्दों को	ज़िन्दों को

وَّاَسۡقَيۡنٰكُمۡ مَّآءً فُرَاتًا ﴿٢٧﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٢٨﴾

28	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	27	पानी मीठा	और हम ने पिलाया तुम्हें

اِنۡطَلِقُوۡۤا اِلٰى مَا كُنۡتُمۡ بِهٖ تُكَذِّبُوۡنَ ﴿٢٩﴾ اِنۡطَلِقُوۡۤا اِلٰى ظِلٍّ

साए की तरफ़	तुम चलो	29	तुम झुटलाते	जिस को तुम थे	तरफ़	तो तुम चलो

ذِىۡ ثَلٰثِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾ لَّا ظَلِيۡلٍ وَّلَا يُغۡنِىۡ مِنَ اللَّهَبِ ﴿٣١﴾

31	शोला (तपिश)	से	और न वह बचाए	न गहरा साया	30	शाख़ें	तीन	वाला

اِنَّهَا تَرۡمِىۡ بِشَرَرٍ كَالۡقَصۡرِ ﴿٣٢﴾ كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفۡرٌ ﴿٣٣﴾ وَيۡلٌ

ख़राबी	33	ज़र्द	ऊँट (जमा)	गोया कि	32	महल जैसे	शोले	फेंकती	बेशक वह

يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٣٤﴾ هٰذَا يَوۡمُ لَا يَنۡطِقُوۡنَ ﴿٣٥﴾ وَلَا يُؤۡذَنُ

और न इजाज़त दी जाएगी	35	वह न बोल सकेंगे	उस दिन	34	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन

لَهُمۡ فَيَعۡتَذِرُوۡنَ ﴿٣٦﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٣٧﴾

37	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	36	कि वह उज़्र ख़ाही करें	उन्हें

هٰذَا يَوۡمُ الۡفَصۡلِ ۚ جَمَعۡنٰكُمۡ وَالۡاَوَّلِيۡنَ ﴿٣٨﴾ فَاِنۡ كَانَ لَكُمۡ

है तुम्हारे पास	फिर अगर	38	और पहले लोगों को	हम ने जमा किया तुम्हें	फ़ैसले का दिन	यह

كَيۡدٌ فَكِيۡدُوۡنِ ﴿٣٩﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٤٠﴾ ع ١ ٢١

40	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	39	तो तुम मुझ पर दाओ कर लो	कोई दाओ

اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ ظِلٰلٍ وَّعُيُوۡنٍ ﴿٤١﴾ وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشۡتَهُوۡنَ ﴿٤٢﴾

42	वह चाहेंगे	जो	और मेवे	41	और चश्मों	सायों	में	बेशक परहेज़गार (जमा)

كُلُوۡا وَاشۡرَبُوۡا هَنِيۡٓـئًا ۢ بِمَا كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ﴿٤٣﴾ اِنَّا كَذٰلِكَ

बेशक हम इसी तरह	43	करते थे	उस के बदले जो तुम	मज़े से	औत तुम पियो	तुम खाओ

نَجۡزِى الۡمُحۡسِنِيۡنَ ﴿٤٤﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٤٥﴾ كُلُوۡا

तुम खाओ	45	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	44	नेकोकारों को	जज़ा देते हैं

وَتَمَتَّعُوۡا قَلِيۡلًا اِنَّكُمۡ مُّجۡرِمُوۡنَ ﴿٤٦﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ

उस दिन	ख़राबी	46	मुज्रिम (जमा)	बेशक तुम	थोड़ा	और तुम फ़ाइदा उठाओ

لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٤٧﴾ وَاِذَا قِيۡلَ لَهُمُ ارۡكَعُوۡا لَا يَرۡكَعُوۡنَ ﴿٤٨﴾ وَيۡلٌ

ख़राबी	48	वह रुकूअ नहीं करते	तुम रुकूअ करो	उन से	कहा जाए	और जब	47	झुटलाने वालों के लिए

يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ﴿٤٩﴾ فَبِاَىِّ حَدِيۡثٍۢ بَعۡدَهٗ يُؤۡمِنُوۡنَ ﴿٥٠﴾ ع ٢ ٢٢

50	वह ईमान लाएंगे	इस के बाद	बात	तो कौन सी	49	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन

آيَاتُهَا ٤٠ ❀ سُوْرَةُ النَّبَاِ (٧٨) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2	(78) सूरतुन नबा ख़बर	आयात 40

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝١ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۝٢ الَّذِىْ هُمْ

वह	जो-जिस	2	बड़ी ख़बर (क़ियामत)	से (बाबत)	1	आपस में पूछते हैं	क्या-किस

فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ۝٣ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝٤ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝٥ اَلَمْ

क्या नहीं	5	अनक़रीब जान लेंगे	फिर हरगिज़ नहीं	4	अनक़रीब जान लेंगे	हरगिज़ नहीं	3	इख़्तिलाफ़ करते हैं	उस में

نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ۝٦ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۝٧ وَّخَلَقْنٰكُمْ

और हम ने तुम्हें पैदा किया	7	कीलें	और पहाड़	6	बिछोना	ज़मीन	हम ने बनाया

اَزْوَاجًا ۝٨ وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝٩ وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۝١٠

10	ओढ़ना (पर्दा)	रात	और हम ने बनाया	9	आराम (राहत)	तुम्हारी नींद	और हम ने बनाया	8	जोड़े जोड़े

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝١١ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝١٢

12	मज़बूत (आस्मान)	सात	तुम्हारे ऊपर	और हम ने बनाए	11	कमाने का वक़्त	दिन	और हम ने बनाया

وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۝١٣ وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ

पानी भरी बदलियां	से	और हम ने उतारी	13	चमकता हुआ	चिराग़	और हम ने बनाया

مَآءً ثَجَّاجًا ۝١٤ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۝١٥ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ۝١٦ اِنَّ

बेशक	16	और बाग़ पत्तों में लिपटे हुए	15	और सब्ज़ी	दाना (अनाज)	उस से	ताकि हम निकाले	14	बारिश मूसलाधार

يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۝١٧ يَّوْمَ يُنْفَخُ فِى الصُّوْرِ

सूर में	फूंका जाएगा	दिन	17	मुक़र्रर वक़्त	है	फ़ैसले का दिन

فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۝١٨ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۝١٩

19	दरवाज़े	तो हो जाएंगे	आस्मान	और खोला जाएगा	18	गिरोह दर गिरोह	फिर तुम चले आओगे

وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝٢٠ اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ

है	दोज़ख़	बेशक	20	सराब	तो हो जाएंगे	पहाड़	और चलाए जाएंगे

مِرْصَادًا ۝٢١ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ۝٢٢ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ۝٢٣

23	मुद्दतों	उस में	वह रहेंगे	22	ठिकाना	सरकशों के लिए	21	घात

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۝٢٤ اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ۝٢٥

25	और बहती पीप	गर्म पानी	मगर	24	पीने की चीज़	और न	ठन्डक	उस में	न चखेंगे

جَزَآءً وِّفَاقًا ۝٢٦ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ۝٢٧

27	हिसाब	तवक़्क़ो नहीं रखते थे	बेशक वह	26	पूरा	बदला

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
लोग आपस में किस के बारे में पूछते हैं? (1)
बड़ी ख़बर (क़ियामत) के बारे में, (2)
जिस में वह इख़्तिलाफ़ कर रहें हैं। (3)
हरगिज़ नहीं, अ़नक़रीब वह जान लेंगे, (4)
फिर हरगिज़ नहीं, अ़नक़रीब वह जान लेंगे। (5)
क्या हम ने ज़मीन को नहीं बनाया बिछोना (फ़र्श)? (6)
और पहाड़ों को कीलें, (7)
और हम ने तुम्हें जोड़े जोड़े पैदा किया, (8)
और तुम्हारे लिए नींद को बनाया आराम (राहत), (9)
और हम ने रात को ओढ़ना (पर्दा) बनाया, (10)
और हम ने दिन को कमाने का वक़्त बनाया। (11)
और हम ने बनाए तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत (आस्मान), (12)
और हम ने चमकता हुआ चिराग़ (आफ़्ताब) बनाया, (13)
और हम ने पानी भरी बदलियों से उतारी मूसलाधार बारिश, (14)
ताकि हम उस से अनाज और सब्ज़ी निकालें, (15)
और पत्तों में लिपटे हुए (घने) बाग़। (16)
बेशक फ़ैसले का दिन एक मुक़र्रर वक़्त है, (17)
जिस दिन सूर फूंका जाएगा, फिर तुम गिरोह दर गिरोह चले आओगे, (18)
और आस्मान खोला जाएगा तो (उस में) दरवाज़े हो जाएंगे, (19)
और पहाड़ चलाए जाएंगे तो सराब हो जाएंगे। (20)
बेशक दोज़ख़ घात है। (21)
सरकशों का ठिकाना, (22)
और उस में रहेंगे मुद्दतों, (23)
न उस में ठन्डक (का मज़ा) चखेंगे न पीने की चीज़, (24)
मगर गर्म पानी और बहती पीप, (25)
(यह) पूरा पूरा बदला होगा। (26)
बेशक वह हिसाब की तवक़्क़ो न रखते थे, (27)

और हमारी आयतों को झुटलाते थे झूट जान कर। **(28)**
और हम ने हर चीज़ गिन कर लिख रखी है, **(29)**
अब मज़ा चखो, पस हम तुम पर हरगिज़ न बढ़ाते जाएंगे मगर अज़ाब। **(30)**
बेशक परहेज़गारों के लिए कामयाबी है, **(31)**
बाग़ात और अंगूर, **(32)**
और नौजवान औरतें हम उम्र, **(33)**
और छलकते हुए प्याले। **(34)**
वह उस में न सुनेंगे कोई बेहूदा बात और न झूट (ख़ुराफ़ात)। **(35)**
यह बदला है तुम्हारे रब का इन्आम हिसाब से (काफ़ी), **(36)**
रब आस्मानों का और ज़मीन का और जो कुछ उन के दरमियान है, बहुत मेहरबान, वह उस से बात करने की क़ुदरत नहीं रखते। **(37)**
जिस दिन रूह (जिब्रील (अ) और फ़रिश्ते सफ़ बान्धे खड़े होंगे, न बोल सकेंगे मगर जिस को रहमान ने इजाज़त दी और बोलेगा ठीक बात। **(38)**
यह दिन बरहक़ है, पस जो कोई चाहे अपने रब के पास ठिकाना बनाए। **(39)**
बेशक हम ने तुम्हें क़रीब आने वाले अज़ाब से डरा दिया है, जिस दिन आदमी देख लेगा जो उस के हाथों ने आगे भेजा, और काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी होता। **(40)**
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़सम है डूब कर खींचने वाले (फ़रिश्तों) की, **(1)**
और खोल कर छुड़ाने वालों की, **(2)**
और तेज़ी से तैरने वालों की, **(3)**
फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की, **(4)**
फिर हुक्म के मुताबिक़ तदबीर करने वालों की। **(5)**
जिस दिन कांपने वाली कांपे, **(6)**
और उस के पीछे आए पीछे आने वाली। **(7)**
कितने दिल उस दिन धड़कते होंगे, **(8)**

وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾

29	लिख कर	हम ने गिन रखी है	और हर चीज़	28	झूट जान कर	हमारी आयतें	और झुटलाते थे

ع ١
فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾ اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

31	कामयाबी	परहेज़गारों के लिए	बेशक	30	अज़ाब	मगर	बढ़ाते जाएंगे	हरगिज़ नहीं	अब मज़ा चखो

حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَّكَاْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾

34	छलकते हुए	और प्याले	33	हम उम्र	और नौजवान औरतें	32	और अंगूर	बाग़ात

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً

इन्आम	तुम्हारा रब	से	यह बदला	35	और न झूट (ख़ुराफ़ात)	बेहूदा	उस में	न सुनेंगे

حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ

बहुत मेहरबान	और जो उन के दरमियान	और ज़मीन	आस्मानों	रब	36	हिसाब से (काफ़ी)

لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

और फ़रिश्ते	खड़े होंगे रूह	दिन	37	बात करना	उस से	वह क़ुदरत नहीं रखते

صَفًّا ۚ لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

38	ठीक बात	और बोलेगा	रहमान	उस को	इजाज़त दी	जो-जिस	मगर	न बोल सकेंगे	सफ़ बान्धे

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

39	ठिकाना	अपने रब के पास	बनाए	चाहे	पस जो	बरहक़	दिन	यह

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚ يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا

जो	आदमी	देख लेगा	जिस दिन	क़रीब के	अज़ाब	बेशक हम ने डरा दिया तुम्हें

ع ٢
قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

40	मिट्टी	होता	काश मैं	काफ़िर	और कहेगा	आगे भेजा उस के हाथ

آيَاتُهَا ٤٦ ❀ سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ (٧٩) ❀ رُكُوْعَاتُهَا ٢

रुकूआत 2 — (79) सूरतुन नाज़िआत — खींचने वाले — आयात 46

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ﴿١﴾ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ﴿٢﴾ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ﴿٣﴾

3	तेज़ी से	और तैरने वाले	2	खोल कर	और छुड़ाने वाले	1	डूब कर	क़सम है खींचने वाले

وقف لازم
فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ﴿٤﴾ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ﴿٥﴾ يَوْمَ تَرْجُفُ

कांपे	दिन	5	हुक्म के मुताबिक़	फिर तदबीर करने वाले	4	दौड़ कर	फिर आगे बढ़ने वाले

الرَّاجِفَةُ ﴿٦﴾ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ﴿٧﴾ قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ﴿٨﴾

8	धड़कने वाले	उस दिन	कितने दिल	7	पीछे आने वाली	उस के पीछे आए	6	कांपने वाली

وقف لازم اَبۡصَارُهَا خَاشِعَةٌ ﴿٩﴾ يَقُوۡلُوۡنَ ءَاِنَّا لَمَرۡدُوۡدُوۡنَ فِى الۡحَافِرَةِ ﴿١٠﴾

10	पहली हालत	में	लौटाए जाएंगे	क्या हम	वह कहते हैं	9	झुकी हुई	उन की निगाहें

وقف لازم ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ﴿١١﴾ قَالُوۡا تِلۡكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ﴿١٢﴾

12	ख़सारे वाली	वापसी	फिर	यह	वह बोले	11	खोखली	हड्डियां	हम होंगे	क्या जब

فَاِنَّمَا هِىَ زَجۡرَةٌ وَّاحِدَةٌ ﴿١٣﴾ فَاِذَا هُمۡ بِالسَّاهِرَةِ ﴿١٤﴾ هَلۡ اَتٰىكَ

पहुँची तेरे पास	क्या	14	मैदान में	वह	फिर उस वक़्त	13	एक	डांट	वह	फिर तो सिर्फ़

وقف لازم حَدِيۡثُ مُوۡسٰى ﴿١٥﴾ اِذۡ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالۡوَادِ الۡمُقَدَّسِ طُوًى ﴿١٦﴾

16	तुवा	मुक़द्दस	वादी	उस का रब	जब पुकारा उसे	15	मूसा (अ)	बात

اِذۡهَبۡ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ اِنَّهٗ طَغٰى ﴿١٧﴾ فَقُلۡ هَلۡ لَّكَ اِلٰٓى اَنۡ

कि	तरफ़	तुझ को	क्या	पस कहो	17	बेशक उस ने सरकशी की	फ़िरऔन	तरफ़, पास	जाओ

تَزَكّٰى ﴿١٨﴾ وَاَهۡدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخۡشٰى ﴿١٩﴾ فَاَرٰىهُ الۡاٰيَةَ الۡكُبۡرٰى ﴿٢٠﴾

20	बड़ी निशानी	उस को दिखाई	19	कि तू डरे	तेरा रब	तरफ़	और तुझे राह दिखाऊँ	18	तू संवर जाए

فَكَذَّبَ وَعَصٰى ﴿٢١﴾ ثُمَّ اَدۡبَرَ يَسۡعٰى ﴿٢٢﴾ فَحَشَرَ

फिर जमा किया	22	जी तोड़ कोशिश किया	फिर पीठ फेर लिया	21	और नाफ़रमानी की	उस ने झुटलाया

فَنَادٰى ﴿٢٣﴾ فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الۡاَعۡلٰى ﴿٢٤﴾ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ

सज़ा	तो उस को पकड़ा अल्लाह ने	24	तुम्हारा रब सब से बड़ा	मैं	फिर उस ने कहा	23	फिर पुकारा

ع ٢٦ ٣ الۡاٰخِرَةِ وَالۡاُوۡلٰى ﴿٢٥﴾ اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَعِبۡرَةً لِّمَنۡ يَّخۡشٰى ﴿٢٦﴾ ءَاَنۡتُمۡ

क्या तुम	26	डरे	उस के लिए जो	इब्रत	इस	में	बेशक	25	और दुनिया	आख़िरत

اَشَدُّ خَلۡقًا اَمِ السَّمَآءُ ؕ بَنٰهَا ﴿٢٧﴾ رَفَعَ سَمۡكَهَا فَسَوّٰىهَا ﴿٢٨﴾

28	फिर उस को दुरुस्त किया	उस की छत	बुलन्द किया	27	उस ने बनाया	आसमान	या	बनाना	ज़ियादा मुश्किल

وَاَغۡطَشَ لَيۡلَهَا وَاَخۡرَجَ ضُحٰىهَا ﴿٢٩﴾ وَالۡاَرۡضَ بَعۡدَ ذٰلِكَ

उस	बाद	और ज़मीन	29	दिन की रोशनी	और निकाली	उस की रात	तारीक कर दिया

دَحٰىهَا ﴿٣٠﴾ اَخۡرَجَ مِنۡهَا مَآءَهَا وَمَرۡعٰىهَا ﴿٣١﴾ وَالۡجِبَالَ اَرۡسٰىهَا ﴿٣٢﴾

32	क़ाइम किया उस को	और पहाड़	31	और उस का चारा	उस का पानी	उस से	निकाला	30	उस को बिछाया

مَتَاعًا لَّكُمۡ وَلِاَنۡعَامِكُمۡ ﴿٣٣﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الۡكُبۡرٰى ﴿٣٤﴾

34	बड़ा	हंगामा	वह आए	फिर जब	33	और तुम्हारे चौपायों के लिए	तुम्हारे लिए	फ़ाइदा

يَوۡمَ يَتَذَكَّرُ الۡاِنۡسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾ وَبُرِّزَتِ الۡجَحِيۡمُ

जहन्नम	ज़ाहिर कर दी जाएगी	35	उस ने कमाया	जो	इन्सान	याद करेगा	दिन

لِمَنۡ يَّرٰى ﴿٣٦﴾ فَاَمَّا مَنۡ طَغٰى ﴿٣٧﴾ وَاٰثَرَ الۡحَيٰوةَ الدُّنۡيَا ﴿٣٨﴾

38	दुनिया	ज़िन्दगी	तरजीह दी	37	सरकशी की	जो-जिस	पस	36	देखे	उस के लिए जो

उन की निगाहें झुकी हुई। (9)
वह कहते हैं: क्या हम पहली हालत में लौटाए जाएंगे? (10)
क्या जब हम खोखली हड्डियां हो चुके होंगे? (11)
वह बोले कि यह फिर ख़सारे वाली वापसी है। (12)
फिर वह तो सिर्फ़ एक डांट है। (13)
फिर वह उस वक़्त मैदान में (मौजूद होंगे)। (14)
क्या तुम्हारे पास मूसा (अ) की बात पहुँची? (15)
जब उस को उस के रब ने पुकारा तुवा के मुक़द्दस वादी में। (16)
के फ़िरऔन के पास जाओ, बेशक उस ने सरकशी की है, (17)
पस कहो: क्या तुझ को (ख़्वाहिश है) कि तू संवर जाए, (18)
और मैं तुझे तेरे रब की तरफ़ राह दिखाऊँ कि तू डरे। (19)
(मूसा अ ने) उस को दिखाई बड़ी निशानी। (20)
उस ने झुटलाया और नाफ़रमानी की, (21)
फिर पीठ फेर कर (हक़ के ख़िलाफ़) जी तोड़ कोशिश किया। (22)
फिर (लोगों को) जमा किया, फिर पुकारा। (23)
फिर कहा कि मैं तुम्हारा सब से बड़ा रब हूँ। (24)
तो अल्लाह ने उस को दुनिया और आख़िरत की सज़ा में पकड़ा। (25)
बेशक इस में उस के लिए इब्रत है जो डरे। (26)
क्या तुम्हारा बनाना ज़ियादा मुश्किल है या आस्मान का, उस ने उस को बनाया। (27)
उस की छत को बुलन्द किया फिर उस को दुरुस्त किया, (28)
और उस की रात को तारीक कर दिया और निकाली दिन की रोशनी, (29)
और उस के बाद ज़मीन को बिछाया। (30)
उस से उस का पानी निकाला और उस का चारा। (31)
और पहाड़ों को क़ाइम किया। (32)
तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के फ़ाइदे के लिए। (33)
फिर जब बड़ा हंगामा आएगा (क़ियामत), (34)
उस दिन इन्सान याद करेगा जो उस ने कमाया (अपने आमाल)। (35)
और जहन्नम हर उस के लिए ज़ाहिर कर दी जाएगी जो देखे। (36)
पस जिस ने सरकशी की। (37)
और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह दी। (38)

فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾ وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ

अपने रब	खड़ा होना	डरा	जो	और जो	39	ठिकाना	वह	जहन्नम	तो यक़ीनन

وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٤١﴾

41	ठिकाना	वह	जन्नत	यक़ीनन	40	ख़्वाहिश	से	जी, दिल	और रोका

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰهَا ﴿٤٢﴾ فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾

43	उस का ज़िक्र	से	तू	क्या	42	उस का ठहरना (क़ियाम)	कब	क़ियामत	से (बाबत)	वह आप (स) से पूछते हैं

اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿٤٤﴾ اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿٤٥﴾

45	उस से डरे	जो	डराने वाले	आप (स)	सिर्फ़	44	उस की इन्तिहा	तुम्हारा रब	तरफ़

كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿٤٦﴾ ع

46	उस की सुबह	या	एक शाम	मगर	ठहरे वह	नहीं	देखेंगे उस को	दिन	गोया वह

آيَاتُهَا ٤٢ ❀ سُوْرَةُ عَبَسَ (٨٠) ❀ رُكُوْعُهَا ١

आयात 42 — (80) सूरह अ़बासा / तेवरी चढ़ाई — रुकूअ़ 1

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ﴿١﴾ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿٢﴾ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ

शायद वह	ख़बर आप (स) को	और क्या	2	एक अंधा	आया उस के पास	कि	1	और मुँह मोड़ लिया	तेवरी चढ़ाई

يَزَّكّٰىٓ ﴿٣﴾ اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ﴿٤﴾ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ﴿٥﴾

5	बेपरवाई की	जिस	जो	4	नसीहत करना	उसे नफ़ा पहुँचाता	नसीहत मानता	या	3	संवर जाता

فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ﴿٦﴾ وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْ

जो	और जो	7	वह संवरे	अगर न	आप (स) पर	और नहीं	6	फ़िक्र करते हैं	उस के लिए	तो आप (स)

جَآءَكَ يَسْعٰى ﴿٨﴾ وَهُوَ يَخْشٰى ﴿٩﴾ فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ﴿١٠﴾ كَلَّآ

हरगिज़ नहीं	10	तग़ाफ़ुल करते हैं	उस से	तो आप	9	डरता है	और वह	8	दौड़ता	आया आप के पास

اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿١٢﴾ فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ﴿١٣﴾ وقف لازم

13	बाइज़्ज़त	सहीफ़े (औराक़)	में	12	इस से नसीहत क़ुबूल करे	चाहे	सो जो	11	नसीहत	यह तो

مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍۭ ﴿١٤﴾ بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ﴿١٥﴾ كِرَامٍۭ بَرَرَةٍ ﴿١٦﴾

16	नेकोकार	बुज़ुर्ग	15	लिखने वाले	हाथों में	14	इन्तिहाई पाकीज़ा	बुलन्द मरतबा

قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ﴿١٧﴾ مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ﴿١٨﴾

18	उसे पैदा किया	चीज़	किस	से	17	कैसा नाशुक्रा	इन्सान	मारा जाए

مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ﴿١٩﴾ ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ﴿٢٠﴾

20	उस को आसान कर दिया	राह	फिर	19	फिर उसकी तक़दीर मुक़र्रर की	उसको पैदा किया	नुत्फ़ा	से

तो यक़ीनन उस का ठिकाना जहन्नम है। (39)
और जो अपने रब (के सामने) खड़ा होने से डरा और उस ने रोका अपने दिल को ख़्वाहिश से, (40)
तो यक़ीनन उस का ठिकाना जन्नत है। (41)
वह आप (स) से पूछते हैं क़ियामत के बाबत कि कब (होगा) उस का क़ियाम? (42)
तुम्हें क्या काम उस के ज़िक्र से? (43)
तुम्हारे रब की तरफ़ है उस की इन्तिहा। (44)
आप (स) सिर्फ़ डराने वाले हैं उस को जो उस से डरे। (45)
गोया वह जिस दिन उस को देखेंगे (ऐसा लगेगा कि) वह नहीं ठहरे मगर एक शाम या उस की एक सुबह। (46)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रह्म करने वाला है

तेवरी चढ़ाई और मुँह मोड़ लिया, (1)
कि उस के पास एक अंधा आया। (2)
और आप (स) को क्या ख़बर कि शायद वह संवर जाता, (3)
या नसीहत मान जाता कि नसीहत करना उसे नफ़ा पहुँचाता। (4)
और जिस ने बेपरवाई की। (5)
आप (स) उस के लिए फ़िक्र करते हैं। (6)
और आप (स) पर (कोई इल्ज़ाम) नहीं अगर वह न संवरे। (7)
और जो आप (स) के पास दौड़ता हुआ आया, (8)
और वह डरता है, (9)
तो आप (स) उस से तग़ाफ़ुल करते हैं। (10)
हरगिज़ नहीं, यह तो (किताबे) नसीहत है। (11)
सो जो चाहे इस से नसीहत क़ुबूल करे। (12)
बाइज़्ज़त औराक़ में, (13)
बुलन्द मरतबा, इन्तिहाई पाकीज़ा, (14)
लिखने वाले हाथों में, (15)
बुज़ुर्ग नेकोकार। (16)
इन्सान मारा जाए कि कैसा नाशुक्रा है। (17)
उस (अल्लाह) ने उसे किस चीज़ से पैदा किया? (18)
एक नुत्फ़े से उस को पैदा किया, फिर उस की तक़दीर मुक़र्रर की, (19)
फिर उस की राह आसान कर दी, (20)

ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ﴿٢١﴾ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ﴿٢٢﴾ كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ

जो	पूरा किया	अभी तक	हरगिज़ नहीं	22	उसे निकाला	चाहा	जब	फिर	21	फिर उसे क़ब्र में पहुंचाया	उसे मुर्दा किया	फिर

اَمَرَهٗ ﴿٢٣﴾ فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖ ﴿٢٤﴾ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ

पानी	ऊपर से डाला	कि हम	24	अपना खाना	तरफ़ (को)	इन्सान	पस चाहिए कि देखे	23	उस को हुक्म दिया

صَبًّا ﴿٢٥﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ﴿٢٦﴾ فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ﴿٢٧﴾

27	ग़ल्ला	उस में	फिर हम ने उगाया	26	फाड़ कर	ज़मीन	फाड़ा (चीरा)	फिर	25	गिरता हुआ

وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ﴿٢٨﴾ وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ﴿٢٩﴾ وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿٣٠﴾ وَّفَاكِهَةً

मेवा	30	घने	और बाग़ात	29	और खजूर	और ज़ैतून	28	और तरकारी	और अंगूर

وَّاَبًّا ﴿٣١﴾ مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٢﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ﴿٣٣﴾

33	कान फोड़ने वाली	आए	फिर जब	32	और तुम्हारे चौपायों के लिए	तुम्हारे लिए	सामान (खाना)	31	और चारा

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ﴿٣٤﴾ وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ﴿٣٥﴾ وَصَاحِبَتِهٖ

और अपनी बीवी	35	और अपना बाप	और अपनी माँ	34	अपना भाई	से	आदमी	भागेगा	जिस दिन

وَبَنِيْهِ ﴿٣٦﴾ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ﴿٣٧﴾

37	उसे काफ़ी होगी	हालत (फ़िक्र)	उस दिन	उन से	आदमी	वास्ते हर एक	36	और अपने बेटे

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ﴿٣٨﴾ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾ وَوُجُوْهٌ

और बहुत चेहरे	39	खुशियां मनाते	हँसते	38	चमकते	उस दिन	बहुत चेहरे

يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾ تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ﴿٤١﴾ اُولٰٓئِكَ هُمُ

वह	यही लोग	41	सियाही	छाई हुई	40	गुबार	उन पर	उस दिन

ع ١ ٤٢ ٥

الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ﴿٤٢﴾

	42	गुनाहगार	काफ़िर	

آيَاتُهَا ٢٩ ❀ سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ (٨١) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (81) सूरतुत तक्वीर — लपेटना — आयात 29

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْجِبَالُ

पहाड़	और जब	2	मांद पड़ जाएंगे	सितारे	और जब	1	लपेट दिया जाएगा	सूरज	जब

سُيِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ﴿٤﴾ وَاِذَا الْوُحُوْشُ

वहशी जानवर	और जब	4	छुटी फिरेंगी	दस माह की गाभन ऊँटनियां	और जब	3	चलाए जाएंगे

حُشِرَتْ ﴿٥﴾ وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ﴿٦﴾ وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ﴿٧﴾

7	जोड़दी जाएंगी	जानें	और जब	6	भड़काए जाएंगे	दर्या	और जब	5	इकट्ठे किए जाएंगे

फिर उस को मुर्दा किया, फिर उसे क़ब्र में पहुंचाया। (21)
फिर जब चाहा उसे दोबारा उठा खड़ा करे, (22)
उस ने हरगिज़ पूरा न किया जो (अल्लाह ने) उस को हुक्म दिया। (23)
पस चाहिए कि इन्सान देख ले अपने खाने को, (24)
हम ने ऊपर से गिरता हुआ पानी डाला, (25)
फिर ज़मीन को फाड़ कर चीरा, (26)
फिर हम ने उस में उगाया ग़ल्ला, (27)
और अंगूर और तरकारी। (28)
और ज़ैतून और खजूर। (29)
और बाग़ात घने, (30)
और मेवा और चारा, (31)
खोराक तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के लिए। (32)
फिर जब आए कान फोड़ने वाली। (33)
उस दिन भागेगा आदमी अपने भाई से, (34)
और अपनी माँ और अपने बाप, (35)
और अपनी बीवी और अपने बेटे से। (36)
उस दिन उन में से हर एक आदमी को (अपनी) फ़िक्र दूसरो से बेपरवा कर देगी। (37)
उस दिन बहुत से चेहरे चमकते होंगे, (38)
हँसते और खुशियां मनाते। (39)
और उस दिन बहुत से चेहरों पर गुबार होगा। (40)
सियाही छाई हुई (होगी)। (41)
यही लोग हैं काफ़िर गुनाहगार। (42)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
जब सूरज लपेट दिया जाएगा, (1)
और जब सितारे मांद पड़ जाएंगे, (2)
और जब पहाड़ चलाए जाएंगे, (3)
और जब दस माह की गाभन ऊँटनियां छुटी फिरेंगी, (4)
और जब वहशी जानवर इकट्ठे किए जाएंगे, (5)
और जब दर्या भड़काए जाएंगे, (6)
और जब जानें (जिस्मों से) जोड़दी जाएंगी, (7)

وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ﴿٨﴾ بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ﴿٩﴾ وَاِذَا الصُّحُفُ

आमाल नामे	और जब	9	मारी गई	गुनाह	किस	8	पूछा जाएगा	ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की	और जब

نُشِرَتْ ﴿١٠﴾ وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ﴿١١﴾ وَاِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ﴿١٢﴾

12	भड़काई जाएगी	जहन्नम	और जब	11	खाल खींच ली जाएगी	आस्मान	और जब	10	खोले जाएंगे

وَاِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

14	वह लाया	जो कुछ	हर शख़्स	जान लेगा	13	क़रीब लाई जाएगी	जन्नत	और जब

فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ﴿١٥﴾ الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ ﴿١٧﴾

17	फैल जाए	जब	और रात	16	छुप जाने वाले	सीधे चलने वाले	15	पीछे हट जाने वाले	सो मैं क़सम खाता हूँ

وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿١٩﴾ ذِيْ قُوَّةٍ

क़ुव्वत वाला	19	इज़्ज़त वाला	क़ासिद	कलाम	बेशक यह	18	दम भरे	जब	और सुबह

عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ﴿٢٠﴾ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ﴿٢١﴾

21	वहां का अमानतदार	सब का माना हुआ	20	बुलन्द मरतबा	अ़र्श के मालिक	नज़्दीक

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢٢﴾ وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿٢٣﴾

23	खुला	उफ़ुक़ (किनारे) पर	और उस ने उस को देखा है	22	दीवाना	तुम्हारा रफ़ीक़	और नहीं

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿٢٤﴾ وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ

शैतान	कहा हुआ	और नहीं	24	बुख़्ल करने वाला	ग़ैब पर	और नहीं वह

رَّجِيْمٍ ﴿٢٥﴾ فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾

27	तमाम जहानों के लिए	नसीहत	मगर	नहीं यह	26	तुम जा रहे हो	फिर किधर	25	मर्दूद

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾ وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ

मगर	और तुम न चाहोगे	28	सीधा चले	कि	तुम से	चाहे	लिए-जो

اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾ ع ٢٩ ٦

29	तमाम जहान	रब	अल्लाह	चाहे	यह कि

آيَاتُهَا ١٩ ❀ سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ (٨٢) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 | (82) सूरतुल इंफ़ितार — फट जाना | आयात 19

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾ وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا الْبِحَارُ

दर्या	और जब	2	झड़ पड़ेंगे	सितारे	और जब	1	फट जाएगा	आस्मान	जब

فُجِّرَتْ ﴿٣﴾ وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ﴿٤﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ﴿٥﴾

5	और पीछे छोड़ा	उस ने आगे भेजा	क्या	हर शख़्स	जान लेगा	4	कुरेदी जाएंगी	क़ब्रें	और जब	3	उबल पड़ेंगे (बह निकलेंगे)

और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई (ज़िन्दा दरगोर) लड़की से पूछा जाएगा। (8) वह किस गुनाह में मारी गई? (9) और जब आमाल नामे खोले जाएंगे, (10) और जब आस्मान की खाल खींच ली जाएगी, (11) और जब जहन्नम भड़काई जाएगी, (12) और जब जन्नत क़रीब लाई जाएगी, (13) हर शख़्स जान लेगा जो कुछ वह लाया है। (14) सो मैं क़सम खाता हूँ (सितारे की) पीछे हट जाने वाले, (15) सीधे चलने वाले, छुप जाने वाले, (16) और रात की जब वह फैल जाए, (17) और सुबह की जब वह दम भरे (नमूदार हो), (18) बेशक यह (क़ुरआन) कलाम है इज़्ज़त वाले क़ासिद (फ़रिश्ते) का, (19) क़ुव्वत वाला, अ़र्श के मालिक के नज़्दीक बुलन्द मरतबा। (20) सब उस की इताअ़त करते हैं, फिर अमानतदार है। (21) और तुम्हारे रफ़ीक़ (मुहम्मद स) कुछ दीवाने नहीं, (22) और उस (मुहम्मद स) ने उस (फ़रिश्ते) को खुले (आस्मान) के किनारे पर देखा। (23) और वह (स) ग़ैब पर बुख़्ल करने वाले नहीं। (24) और यह (क़ुरआन) शैतान मर्दूद का कहा हुआ नहीं, (25) फिर तुम किधर जा रहे हो? (26) यह नहीं है मगर (किताबे) नसीहत तमाम जहानों के लिए, (27) तुम में से जो भी चाहे कि सीधा रास्ता चले। (28) और तुम न चाहोगे मगर यह कि अल्लाह चाहे तमाम जहानों का रब। (29)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

जब आस्मान फट जाएगा, (1) और जब सितारे झड़ पड़ेंगे, (2) और जब दर्या उबल पड़ेंगे, (3) और जब क़ब्रें कुरेदी जाएंगी, (4) हर शख़्स जान लेगा कि उस ने आगे क्या भेजा और पीछे (क्या) छोड़ा? (5)

يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ﴿٦﴾ الَّذِيْ خَلَقَكَ

तुझे पैदा किया	जिस ने	6	करीम	अपने रब से	किस चीज़ ने तुझे धोखा दिया	इन्सान	ऐ

فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾ فِيْٓ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾ كَلَّا بَلْ

हरगिज़ नहीं बल्कि	8	तुझे जोड़ दिया	चाहा	जिस सूरत	में	7	फिर बराबर किया	फिर तुझे ठीक किया

تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ﴿٩﴾ وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ﴿١٠﴾ كِرَامًا كٰتِبِيْنَ ﴿١١﴾

11	लिखने वाले	इज़्ज़त वाले	10	निगहबान	तुम पर	और बेशक	9	जज़ा ओ सज़ा का दिन	तुम झुटलाते हो

يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿١٢﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿١٣﴾ وَّاِنَّ

और बेशक	13	जन्नत	में	नेक लोग	बेशक	12	जो तुम करते हो	वह जानते हैं

الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ﴿١٤﴾ يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿١٥﴾ وَمَا هُمْ

और वह नहीं	15	रोज़े जज़ा ओ सज़ा (क़ियामत)	डाले जाएंगे उस में	14	जहन्नम	में	गुनाहगार

عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ﴿١٦﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَآ

क्या	फिर	17	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	क्या	और तुम्हें क्या ख़बर	16	ग़ाइब होने वाले	उस से

اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ﴿١٨﴾ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ

किसी शख़्स के लिए	कोई शख़्स	मालिक न होगा	जिस दिन	18	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	क्या	तुम्हें ख़बर

ع ١٩ الربع

شَيْـًٔا ۭ وَالْاَمْرُ يَوْمَىِٕذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾

	19	अल्लाह के लिए	उस दिन	और हुक्म	कुछ	

اٰيَاتُهَا ٣٦ ❀ سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ (٨٣) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ 1 — (83) सूरतुल मुतफ़्फ़िफ़ीन / नाप तौल में कमी करने वाले — आयात 36

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ﴿١﴾ الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ ﴿٢﴾

2	पूरा भरलें	लोग	पर (से)	जब माप कर लें	वह जो कि	1	कमी करने वालों के लिए	ख़राबी

وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ﴿٣﴾ اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمْ

कि वह	यह लोग	ख़याल करते	क्या नहीं	3	घटा कर दें	तोल कर दें	या	माप कर दें वह	और जब

مَّبْعُوْثُوْنَ ﴿٤﴾ لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿٥﴾ يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ

रब के सामने	लोग	खड़े होंगे	दिन	5	बड़ा	एक दिन	4	उठाए जाने वाले हैं

الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦﴾ كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ﴿٧﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ

ख़बर है तुझे	और क्या	7	सिज्जीन	अलबत्ता में	बदकार	आमाल नामा	हरगिज़ नहीं, बेशक	6	तमाम जहान

مَا سِجِّيْنٌ ﴿٨﴾ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٩﴾ وَيْلٌ يَّوْمَىِٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٠﴾

10	झुटलाने वालों के लिए	उस दिन	ख़राबी	9	लिखी हुई	एक किताब	8	क्या है सिज्जीन

ऐ इन्सान तुझे अपने रब्बे करीम के बारे में किस चीज़ ने धोखा दिया। (6)
जिस ने तुझे पैदा किया, फिर ठीक किया, फिर बराबर किया, (7)
जिस सूरत में चाहा तुझे जोड़ दिया। (8)
हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम जज़ा ओ सज़ा के दिन (क़ियामत) को झुटलाते हो, (9)
और बेशक तुम पर निगहबान (मुक़र्रर) हैं, (10)
इज़्ज़त वाले, (आमाल) लिखने वाले। (11)
जो तुम करते हो वह जानते हैं। (12)
बेशक नेक लोग जन्नत में होंगे। (13)
और बेशक गुनाहगार जहन्नम में होंगे। (14)
उस में जज़ा ओ सज़ा (क़ियामत) के दिन डाले जाएंगे। (15)
और वह उस से ग़ाइब न हो सकेंगे। (16)
और तुम्हें क्या ख़बर कि रोज़े जज़ा ओ सज़ा क्या है? (17)
फिर तुम्हें क्या ख़बर कि रोज़े जज़ा ओ सज़ा क्या है? (18)
जिस दिन कुछ नहीं कर सकेगा कोई शख़्स किसी शख़्स के लिए, उस दिन हुक्म अल्लाह ही का होगा। (19)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
ख़राबी है कमी करने वालों के लिए, (1)
जो (लोगों से) माप कर लें तो पूरा भर कर लें, (2)
और जब (दूसरों को) माप कर या तोल कर दें तो घटा कर दें। (3)
क्या यह लोग ख़याल नहीं करते कि वह उठाए जाने वाले हैं। (4)
एक बड़े दिन, (5)
जिस दिन लोग खड़े होंगे तमाम जहानों के रब के सामने। (6)
हरगिज़ नहीं, बेशक बदकारों का आमाल नामा सिज्जीन में है। (7)
और तुझे क्या ख़बर कि सिज्जीन क्या है? (8)
एक लिखी हुई किताब। (9)
उस दिन ख़राबी है झुटलाने वालों के लिए, (10)

जो लोग झुटलाते हैं
रोज़े जज़ा ओ सज़ा को। (11)
और उसे नहीं झुटलाता मगर हद
से बढ़ जाने वाला गुनाहगार, (12)
जब पढ़ी जाती हैं उस पर हमारी
आयतें तो कहेः यह पहलों की
कहानियां हैं। (13)
हरगिज़ नहीं, बल्कि ज़ंग पकड़ गया
है उन के दिलों पर (उस के सबब)
जो वह कमाते थे। (14)
हरगिज़ नहीं, वह उस दिन
अपने रब की दीद से रोक दिए
जाएंगे। (15)
फिर बेशक वह जहन्नम में दाख़िल
होने वाले हैं। (16)
फिर कहा जाएगा कि यह वही है
जिस को तुम झुटलाते थे। (17)
हरगिज़ नहीं, बेशक नेक लोगों
का आमाल नामा "इल्लियीन" में
है। (18)
और तुझे क्या ख़बर कि इल्लियोन
क्या है? (19)
एक किताब है लिखी हुई। (20)
(उसे) देखते हैं (अल्लाह के) मुक़र्रब
(नज़्दीक वाले)। (21)
बेशक नेक बन्दे नेमतों में होंगे। (22)
तख़्तों (मुसन्दों) पर (बैठे) देखते
होंगे, (23)
तू उन के चेहरों पर नेमत की
तरोताज़गी पाएगा। (24)
उन्हें पिलाई जाती है ख़ालिस शराब
मुहर बन्द, (25)
उस की मुहर मुश्क पर जमी हुई
(से लगी हुई), और चाहिए कि
बाज़ी ले जाने की तमन्ना रखने
वाले इस में बाज़ी ले जाने की
कोशिश करें। (26)
और उस में मिलावट है तस्नीम
की, (27)
यह एक चश्मा है जिस से मुक़र्रब
पीते हैं। (28)
बेशक जिन लोगों ने जुर्म किया
(गुनाहगार) वह मोमिनों पर हँसते
थे। (29)
और जब उन से हो कर गुज़रते तो
आँख मारते। (30)
और जब अपने घर वालों की
तरफ़ लौटते तो हँसते (बातें बनाते)
लौटते। (31)
और जब उन्हें देखते तो कहतेः
बेशक यह लोग गुमराह हैं, (32)
और वह उन पर निगहबान
बना कर नहीं भेजे गए। (33)

الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿١١﴾ وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖۤ اِلَّا كُلُّ

हर	मगर	उस को	और नहीं झुटलाता	11	रोज़े जज़ा ओ सज़ा को	झुटलाते हैं	जो लोग

مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ﴿١٢﴾ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ

कहानियां	कहे	हमारी आयतें	उस पर	पढ़ी जाती	जब	12	गुनाहगार	हद से बढ़ जाने वाला

الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٣﴾ كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾

14	वह कमाते थे	जो	ज़ंग पकड़ गया है उन के दिल पर	बल्कि	हरगिज़ नहीं	13	पहलों

كَلَّاۤ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَىِٕذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ﴿١٥﴾ ثُمَّ اِنَّهُمْ

बेशक वह	फिर	15	देखने से महरूम रखे जाएंगे	उस दिन	अपना रब	से	बेशक वह	हरगिज़ नहीं

لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ﴿١٦﴾ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِىْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾

17	झुटलाते	उस को	तुम थे	वह जो कि	यह	कहा जाएगा	फिर	16	जहन्नम	दाख़िल होने वाले

كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِىْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾

19	क्या इल्लियोन	तुझे ख़बर	और क्या	18	इल्लियीन	अलबत्ता में	नेक लोग	आमाल नामा	हरगिज़ नहीं बेशक

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾ يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِىْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾

22	अल्बत्ता नेमत (आराम) में	नेक बन्दे	बेशक	21	नज़्दीक वाले	देखते हैं	20	लिखी हुई	एक किताब

عَلَى الْاَرَآىِٕكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾ تَعْرِفُ فِىْ وُجُوْهِهِمْ

उन के चेहरे	में	तू पहचान लेगा	23	देखते होंगे	तख़्त (जमा)	पर

نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾ يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾ خِتٰمُهٗ

उस की मुहर	25	मुहर लगी हुई	ख़ालिस शराब	से	उन्हें पिलाई जाती है	24	तर ओ ताज़गी नेमत की

مِسْكٌ ۜ وَفِىْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾

26	रग़बत करने वाले	चाहिए कि रग़बत (कोशिश) करें	उस	और में	मुश्क

وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾ عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾

28	मुक़र्रब	उस से	पीते हैं	एक चश्मा	27	तस्नीम	से	उस की आमेज़िश

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾

29	हँसते	जो ईमान लाए (मोमिन)	से (पर)	थे	जुर्म किया उन्हों ने	वह लोग जो	बेशक

وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾ وَاِذَا انْقَلَبُوْۤا اِلٰٓى

तरफ़	वह लौटते	और जब	30	आँख मारते	उन से	गुज़रते	और जब

اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾ وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْۤا اِنَّ

बेशक	कहते	उन्हें देखते	और जब	31	हँसते (बातें बनाते)	लौटते	अपने घर वाले

هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾ وَمَاۤ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾

33	निगहबान	उन पर	और नहीं भेजे गए	32	गुमराह (जमा)	यह लोग

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾ عَلَى

पर	34	हँसते हैं	काफ़िर (जमा)	से (पर)	ईमान वाले	पस आज

ع ٣٦ / ٨

الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

36	जो वह करते थे	काफ़िर (जमा)	सवाब मिल गया	क्या	35	देखते हैं	तख़्त

آيَاتُهَا ٢٥ ❀ سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ (٨٤) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (84) सूरतुल इंशिक़ाक़ फट जाना — आयात 25

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾ وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾ وَاِذَا

और जब	2	और इसी लाइक़ है	अपने रब का	और सुन लेगा	1	फट जाएगा	आस्मान	जब

الْاَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾ وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾ وَاَذِنَتْ

और सुन लेगा	4	और ख़ाली हो जाएगी	जो उस में	और निकाल डालेगी	3	फैलादी जाएगी	ज़मीन

لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٥﴾ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ

अपने रब की तरफ़	आगे बढ़ने वाला	बेशक तू	इन्सान	ऐ	5	और इसी लाइक़ है	अपने रब का

كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ﴿٦﴾ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ﴿٧﴾

7	उस के दाएं हाथ में	उस का आमाल नामा	दिया गया	जो	पस	6	फिर उस को मिलना है	मशक़्क़त

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ﴿٨﴾ وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ

अपने लोग	तरफ़	और लौटेगा	8	आसान	हिसाब	हिसाब लिया जाएगा	पस अ़नक़रीब

مَسْرُوْرًا ﴿٩﴾ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ﴿١٠﴾ فَسَوْفَ

पस अ़नक़रीब	10	उस की पुश्त	पीछे	उस का आमाल नामा	दिया गया	जो	और वह	9	खुश खुश

يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ﴿١١﴾ وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ كَانَ فِيْۤ اَهْلِهٖ

अपने लोग	में	था	बेशक वह	12	आग	और दाख़िल होगा	11	मौत	मांगेगा

معانقة ١٢ عند المتأخرين ١٢

مَسْرُوْرًا ﴿١٣﴾ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ﴿١٤﴾ بَلٰۤى اِنَّ رَبَّهٗ

बेशक उस का रब	क्यों नहीं	14	हरगिज़ न लौटेगा	कि	गुमान किया	बेशक वह	13	खुश ओ खुर्रम

كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ﴿١٥﴾ فَلَاۤ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ﴿١٦﴾ وَالَّيْلِ وَمَا

और जो	और रात	16	शाम की सुर्ख़ी	सो मैं क़सम खाता हूँ	15	देखने वाला	उस को	था

وَسَقَ ﴿١٧﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ﴿١٨﴾ لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ﴿١٩﴾ فَمَا

सो क्या	19	दर्जा	से	एक दर्जा	तुम को ज़रूर चढ़ना है	18	वह मुकम्मल हो जाए	जब	और चाँद	17	सिमट आती है

السجدة ١٣

لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾ وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ﴿٢١﴾

21	वह सिजदा नहीं करते	कुरआन	उन पर	पढ़ा जाता है	और जब	20	वह ईमान नहीं लाते	उन्हें

पस आज ईमान वाले काफ़िरों पर हँसते हैं। (34) तख़्तों (मसहरियों) पर बैठे देखते हैं। (35) क्या मिल गया काफ़िरों को बदला उस का जो वह करते थे। (36)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रहम करने वाला है

जब आस्मान फट जाएगा, (1) और अपने रब का (हुक्म) सुन लेगा और वह इसी लाइक़ है, (2) और जब ज़मीन फैला दी जाएगी, (3) और जो कुछ उस में है उसे निकाल डालेगी और ख़ाली हो जाएगी, (4) और अपने रब का (हुक्म) सुन लेगी और वह इसी लाइक़ है। (5) ऐ इन्सान, बेशक तू चले जा रहा है अपने रब की तरफ़ मशक़्क़त उठाते, फिर उस को मिलना है। (6) पस जिस को उस का आमाल नामा दाएं हाथ में दिया गया, (7) पस उस से अ़नक़रीब आसान हिसाब लिया जाएगा, (8) और वह अपने लोगों की तरफ़ खुश खुश लौटेगा। (9) और वह जिस को उस का आमाल नामा उस की पीठ पीछे दिया गया, (10) वह अ़नक़रीब मौत मांगेगा, (11) और जहन्नम में जा पड़ेगा। (12) बेशक वह अपने लोगों में खुश ओ खुर्रम था। (13) उस ने गुमान किया था कि वह हरगिज़ न लौटेगा। (14) क्यों नहीं? उस का रब बेशक उसे देखता था। (15) सो मैं क़सम खाता हूँ शाम की सुर्ख़ी की, (16) और रात की और जो सिमट आती है। (17) और चाँद की जब मुकम्मल हो जाए, (18) तुम को दर्जा ब दर्जा ज़रूर चढ़ना है। (19) सो उन्हें क्या हो गया है कि वह ईमान नहीं लाते? (20) और जब उन पर कुरआन पढ़ा जाता है तो वह सिजदा नहीं करते। (21)

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ﴿٢٢﴾ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ﴿٢٣﴾

23	भर रखते हैं	जो	ख़ूब जानता है	और अल्लाह	22	झुटलाते हैं	जिन लोगों ने कुफ़्र किया (मुन्किर)	बल्कि

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٢٤﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

उन्हों ने काम किए	जो लोग ईमान लाए	सिवाए	24	दर्दनाक	अ़ज़ाब की	सो उन्हें ख़ुशख़बरी सुनाओ

الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ﴿٢٥﴾ ع ١ ٢٥ ٩

25	न ख़तम होने वाला	अजर	उन के लिए	अच्छे

آيَاتُهَا ٢٢ ❀ سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ (٨٥) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 | (85) सूरतुल बुरूज — तारे और सय्यारे | आयात 22

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ﴿١﴾ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ﴿٢﴾ وَشَاهِدٍ

और देखने वाले	2	वादा किए हुए	और दिन की	1	बुर्जों वाला	क़सम आस्मान की

وَّمَشْهُوْدٍ ﴿٣﴾ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ﴿٤﴾ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ﴿٥﴾

5	ईंधन वाली	आग	4	गढ़े वाले	हलाक कर दिए गए	3	और देखी जाने वाली

اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ﴿٦﴾ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ

वह करते थे	जो	पर	और वह	6	बैठे थे	उस पर	जब वह

بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ﴿٧﴾ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ

अल्लाह पर	वह ईमान लाए	कि	मगर	उन से	और नहीं बदला लिया	7	देखते	मोमिनों के साथ

الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ﴿٨﴾ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

और ज़मीन	आस्मान (जमा)	बादशाहत	उस के लिए	वह जो कि	8	तारीफ़ों वाला	ग़ालिब

وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ﴿٩﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ

मोमिन मर्द (जमा)	तक्लीफ़ें दीं	वह जो	बेशक	9	सामने (बाख़बर)	चीज़	हर	पर	और अल्लाह

وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ

अ़ज़ाब	और उन के लिए	जहन्नम	अ़ज़ाब	तो उन के लिए	उन्हों ने तौबा न की	फिर	और मोमिन औरतें

الْحَرِيْقِ ﴿١٠﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ

बाग़ात	उन के लिए	अच्छे	और उन्हों ने अ़मल किए	जो लोग ईमान लाए	बेशक	10	जलना

تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ﴿١١﴾ اِنَّ

बेशक	11	बड़ी	कामयाबी	यह	नहरें	उन के नीचे	से	जारी हैं

بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ﴿١٣﴾

13	और लौटाता है	पहली बार पैदा करता है	वही	बेशक वह	12	बड़ी सख़्त	तुम्हारा रब	पकड़

बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया (मुन्किर) वह झुटलाते हैं, (22)
और अल्लाह ख़ूब जानता है जो वह (दिलों में) भर रखते हैं, (23)
सो उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना। (24)
सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे काम किए, उन के लिए ख़तम न होने वाला अजर है। (25)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बुर्जों वाले आस्मान की क़सम, (1)
और वादा किए हुए दिन की, (2)
और देखने वाले की और देखी जाने वाली चीज़ की। (3)
हलाक कर दिए गए ख़न्दक़ों वाले, (4)
(उन ख़न्दक़ों वाले) जिन में ईंधन की आग थी, (5)
जब वह उस पर बैठे थे, (6)
और जो मोमिनों के साथ करते थे (अपनी आँखों से) देखते थे। (7)
और उन्हों ने (मोमिनों से) बदला नहीं लिया मगर इस बात का कि वह ईमान लाए अल्लाह पर जो ग़ालिब है तारीफ़ों वाला, (8)
जिस की बादशाहत है आस्मानों और ज़मीन में, और अल्लाह हर चीज़ पर बाख़बर है। (9)
बेशक जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औ़रतों को तक्लीफ़ें दीं, फिर उन्हों ने तौबा न की तो उन के लिए जहन्नम का अ़ज़ाब है और उन के लिए जलने का अ़ज़ाब है, (10)
बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अच्छे अ़मल किए, उन के लिए बाग़ात हैं जिन के नीचे जारी हैं नहरें, यह बड़ी कामयाबी है। (11)
बेशक तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी सख़्त है। (12)
बेशक वही पहली बार पैदा करता है और (वही) लौटाता है। (13)

وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ﴿١٤﴾ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ﴿١٥﴾ فَعَّالٌ لِّمَا

जो	कर डालने वाला	15	बड़ी बुज़ुर्गी वाला	अ़र्श वाला (मालिक)	14	मुहब्बत वाला	बख़्शने वाला	और वह

يُرِيْدُ ﴿١٦﴾ هَلْ اَتٰكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ﴿١٧﴾ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ﴿١٨﴾

18	और समूद	फ़िरऔ़न	17	लशकर (जमा)	बात	तुझ को आई (पहुँची)	क्या	16	वह चाहे

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ﴿١٩﴾ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ﴿٢٠﴾

20	घेरे हुए	उन को हर तरफ़	से	और अल्लाह	19	झुटलाना	में	उन्हो ने कुफ़्र किया	वह जो कि	बल्कि

ع ١٠ ١ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ﴿٢١﴾ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ﴿٢٢﴾ ع

22	महफ़ूज़	लौहे	में	21	बड़ी बुज़ुर्गी वाला	क़ुरआन	यह	बल्कि

آيَاتُهَا ١٧ ❀ سُوْرَةُ الطَّارِقِ (٨٦) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (86) सूरतुत तारिक़ चमकता हुआ सितारा — आयात 17

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ﴿٢﴾

2	क्या है तारिक़	और तुम ने क्या समझा	1	और रात को आने वाली की	क़सम है आस्मान की

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ﴿٣﴾ اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ﴿٤﴾

4	निगहबान	उस पर	मगर	जान	कोई	नहीं	3	चमकता हुआ	सितारा

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾ خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾

6	उछलता हुआ	पानी	से	पैदा किया गया	5	पैदा किया गया है	किस चीज़ से	इन्सान	चाहिए कि देखे

يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ﴿٧﴾ اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ

उस को दोबारा लौटाना	पर	बेशक वह	7	और सीना	पीठ	दरमियान	से	निकलता है

لَقَادِرٌ ﴿٨﴾ يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ﴿٩﴾ فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ

क़ुव्वत	से	तो न उस के लिए	9	राज़	जांचे जाएंगे	दिन	8	क़ादिर

وَّلَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾ وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾ وَالْاَرْضِ

और ज़मीन की	11	बारिश वाला	क़सम आस्मान की	10	मददगार	और न

ذَاتِ الصَّدْعِ ﴿١٢﴾ اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ﴿١٤﴾

14	बेहूदा बात	यह	और नहीं	13	फ़ैसला कर देने वाला	कलाम	बेशक यह	12	फट जाने वाली

اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ﴿١٥﴾ وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ﴿١٦﴾ فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ

काफ़िर (जमा)	पस ढील दो	16	एक तदबीर	और मैं तदबीर करता हूँ	15	तदबीर	तदबीर करते है	बेशक वह

ع ١١ ١ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ﴿١٧﴾ ع

	17	थोड़ी	ढील दो उन्हें

और वही बख़्शने वाला मुहब्बत करने वाला है, (14)
अ़र्श का मालिक बड़ी बुज़ुर्गी वाला, (15)
जो चाहे कर डालने वाला। (16)
क्या तुम्हारे पास लशकरों की बात (ख़बर) पहुँची, (17)
फ़िरऔ़न और समूद की। (18)
बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र किया (काफ़िर) झुटलाने में (लगे हुए हैं), (19)
और अल्लाह उन्हें हर तरफ़ से घेरे हुए है। (20)
बल्कि यह क़ुरआन बड़ी बुज़ुर्गी वाला है, (21)
लौहे महफ़ूज़ में (लिखा हुआ)। (22)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़सम है आस्मान की और "तारिक़" (रात को आने वाले) की। (1)
और तुम ने क्या समझा कि "तारिक़" क्या है? (2)
चमकता हुआ सितारा। (3)
कोई जान नहीं जिस पर (कोई) निगहबान न हो। (4)
और इन्सान को चाहिए कि देखे वह किस चीज़ से पैदा किया गया है? (5)
वह पैदा किया गया उछलते हुए पानी से, (6)
जो निकलता है पीठ और सीने के दरमियान से। (7)
बेशक वह (अल्लाह) उस को दोबारा लौटाने पर क़ादिर है। (8)
जिस दिन (लोगों के) राज़ जांचे जाएंगे। (9)
तो न उसे (इन्सान को) कोई क़ुव्वत होगी और न मददगार। (10)
क़सम आस्मान की, बारिश वाला। (11)
और ज़मीन की, फट जाने वाली। (12)
बेशक यह कलाम है फ़ैसला कर देने वाला, (13)
और यह हंसी मज़ाक़ नहीं। (14)
बेशक वह (उल्टी उल्टी) तदबीरें करते हैं, (15)
और मैं (भी) एक तदबीर करता हूँ। (16)
पस ढील दो काफ़िरों को थोड़ी ढील। (17)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
पाकीज़गी बयान कर अपने सब से बुलन्द रब के नाम की, (1)
जिस ने पैदा किया फिर ठीक किया, (2)
और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया फिर राह दिखाई, (3)
और जिस ने चारा उगाया, (4)
फिर उसे ख़ुश्क सियाह कर दिया। (5)
हम जल्द आप (स) को पढ़ाएंगे, फिर आप (स) न भूलेंगे, (6)
मगर जो अल्लाह चाहे, बेशक वह जानता है ज़ाहिर भी और पोशीदा भी। (7)
और हम आप (स) को आसान तरीक़े की सहूलत देंगे। (8)
पस आप (स) समझा दें अगर समझाना नफ़ा दे। (9)
जो डरता है वह जल्द समझ जाएगा, (10)
और उस से बदबख़्त पहलू तही करेगा, (11)
जो बहुत बड़ी आग में दाख़िल होगा। (12)
फिर न मरेगा वह उस में और न जिएगा। (13)
यक़ीनन उस ने फ़लाह पाई जो पाक हुआ, (14)
और उस ने अपने रब का नाम याद किया, फिर नमाज़ पढ़ी। (15)
बल्कि तुम दुन्यवी ज़िन्दगी को तरजीह देते हो। (16)
और (जबकि) आख़िरत बेहतर और बाक़ी रहने वाली है। (17)
बेशक यह पहले सहीफ़ों में (भी कही गई थी), (18)
इब्राहीम (अ) और मूसा (अ) के सहीफ़ों में। (19)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क्या तुम्हारे पास ढांपने वाली (क़ियामत) की बात पहुँची। (1)
कितने ही मुँह उस दिन ज़लील ओ आजिज़ होंगे, (2)
अ़मल करने वाले, मुशक़्क़त उठाने वाले। (3)
दहकती हुई आग में दाख़िल होंगे, (4)
खौलते हुए चश्मे से (पानी) पिलाए जाएंगे, (5)
न उन के लिए खाना होगा मगर ख़ार दार घास से, (6)
जो न मोटा करेगी और न भूक से बेनियाज़ करेगी। (7)

آيَاتُهَا ١٩ ❀ سُوْرَةُ الْاَعْلٰى (٨٧) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (87) सूरतुल आला — सब से बुलन्द — आयात 19

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ﴿١﴾ الَّذِىْ خَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٢﴾ وَالَّذِىْ قَدَّرَ

और जिस ने अन्दाज़ा ठहराया	2	फिर ठीक किया	पैदा किया	जिस ने	1	सब से बुलन्द	अपना रब	नाम	पाकीज़गी बयान कर

فَهَدٰى ﴿٣﴾ وَالَّذِىْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى ﴿٤﴾ فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى ﴿٥﴾

5	सियाह	ख़ुश्क	फिर उसे कर दिया	4	चारा	निकाला (उगाया)	और जिस ने	3	फिर राह दिखाई

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى ﴿٦﴾ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا

और जो	ज़ाहिर	जानता है	बेशक वह	अल्लाह चाहे	जो	मगर	6	फिर न भूलेंगे आप	हम जल्द पढ़ाएंगे आप (स) को

يَخْفٰى ﴿٧﴾ وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ﴿٨﴾ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ﴿٩﴾ سَيَذَّكَّرُ

जल्द समझ जाएगा	9	समझाना	नफ़ा दे	अगर	पस समझा दें	8	आसान तरीक़ा	और हम आप (स) को सहूलत देंगे	7	पोशीदा

مَنْ يَّخْشٰى ﴿١٠﴾ وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى ﴿١١﴾ الَّذِىْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ﴿١٢﴾

12	बहुत बड़ी	आग	दाख़िल होगा	जो	11	बद बख़्त	और पहलू तही करेगा उस से	10	डरता है	जो

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ﴿١٣﴾ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ﴿١٤﴾ وَذَكَرَ اسْمَ

नाम	और याद किया	14	पाक हुआ	जो	यक़ीनन उस ने फ़लाह पाई	13	और न जिएगा	उस में	न मरेगा वह	फिर

رَبِّهٖ فَصَلّٰى ﴿١٥﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿١٦﴾ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ

बेहतर	और आख़िरत	16	दुनिया	ज़िन्दगी	बढ़ाते हो (तरजीह)	बल्कि	15	फिर नमाज़ पढ़ी	अपना रब

وَّاَبْقٰى ﴿١٧﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِى الصُّحُفِ الْاُوْلٰى ﴿١٨﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ﴿١٩﴾ ع ١ ١٩ ١٢

19	और मूसा (अ)	इब्राहीम (अ)	सहीफ़े	18	पहले सहीफ़े	में	बेशक यह	17	और बाक़ी रहने वाली

آيَاتُهَا ٢٦ ❀ سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ (٨٨) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (88) सूरतुल ग़ाशिया — छा जाने वाली — आयात 26

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ﴿١﴾ وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ﴿٢﴾ عَامِلَةٌ

अ़मल करने वाले	2	ज़लील ओ आजिज़	उस दिन	कितने मुँह	1	ढांपने वाली	बात	क्या तुम्हारे पास आई

نَّاصِبَةٌ ﴿٣﴾ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ﴿٤﴾ تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ﴿٥﴾ لَيْسَ

नहीं	5	खौलता हुआ	चश्मा	से	पिलाए जाएंगे	4	दहकती हुई	आग	दाख़िल होंगे	3	मुशक़्क़त उठाने वाले

لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ﴿٦﴾ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِىْ مِنْ جُوْعٍ ﴿٧﴾

7	भूक	से	न बेनियाज़ करेगी	न मोटा करेगी	6	ख़ारदार घास	से	मगर	खाना	उन के लिए

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ﴿٨﴾ لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ﴿٩﴾ فِيْ جَنَّةٍ

बाग़	में	9	खुश खुश	अपनी कोशिश से	8	तर ओ ताज़ा	उस दिन	कितने मुँह

وقف لازم

عَالِيَةٍ ﴿١٠﴾ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ﴿١١﴾ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ﴿١٢﴾ فِيْهَا

उस में	12	बहता हुआ	चश्मा	उस में	11	बेहूदा बकवास	उस में	वह न सुनेंगे	10	बुलन्द

سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ﴿١٣﴾ وَّاَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ﴿١٤﴾ وَّنَمَارِقُ

और गद्दे	14	चुने हुए	और कटोरे	13	ऊँचे ऊँचे	तख़्त

مَصْفُوْفَةٌ ﴿١٥﴾ وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ﴿١٦﴾ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى الْاِبِلِ

ऊँट	तरफ़	क्या वह नहीं देखते?	16	बिखरे हुए	और क़ालीन	15	तरतीब से लगे हुए

كَيْفَ خُلِقَتْ ﴿١٧﴾ وَاِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ﴿١٨﴾ وَاِلَى الْجِبَالِ

पहाड़ (जमा)	और तरफ़	18	बुलन्द किया गया	कैसे	आस्मान	और तरफ़	17	वह पैदा किया गया	कैसे

كَيْفَ نُصِبَتْ ﴿١٩﴾ وَاِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ﴿٢٠﴾

20	बिछाई गई	कैसे	ज़मीन	और तरफ़	19	खड़े किए गए	कैसे

فَذَكِّرْ اِنَّمَآ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ﴿٢١﴾ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ﴿٢٢﴾

22	दारोग़ा	उन पर	नहीं आप	21	समझाने वाले	आप	सिर्फ़	पस समझाते रहें

اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ﴿٢٣﴾ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ﴿٢٤﴾

24	बड़ा	अ़ज़ाब	पस उसे अ़ज़ाब देगा अल्लाह	23	और कुफ़्र किया	मुँह मोड़ा	जो-जिस	मगर

ع ٢٦ / ١٣ النصف

اِنَّ اِلَيْنَآ اِيَابَهُمْ ﴿٢٥﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ﴿٢٦﴾

26	उन का हिसाब	हम पर	बेशक	फिर	25	उन का लौटना	हमारी तरफ़	बेशक

آيَاتُهَا ٣٠ ❀ سُوْرَةُ الْفَجْرِ (٨٩) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (89) सूरतुल फ़ज्र — सुबह सवेरा — आयात 30

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْفَجْرِ ﴿١﴾ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ﴿٢﴾ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا

जब	और रात की	3	और ताक़ की	और जुफ़्त की	2	दस	और रातों की	1	क़सम फ़ज्र की

يَسْرِ ﴿٤﴾ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ﴿٥﴾ اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ

मामला किया	कैसा	क्या तुम ने नहीं देखा	5	हर अ़क़्लमन्द के नज़्दीक	क़सम	इस	में	क्या	4	चले

رَبُّكَ بِعَادٍ ﴿٦﴾ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ﴿٧﴾ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا

उस जैसा	नहीं पैदा किया गया	वह जो	7	सुतूनों वाले	इरम	6	आ़द के साथ	तुम्हारा रब

فِي الْبِلَادِ ﴿٨﴾ وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ﴿٩﴾

9	वादी में	काटे (तराशे) सख़्त पत्थर	जिन्हों ने	और समूद	8	शहरों में

कितने ही मुँह उस दिन तर ओ ताज़ा होंगे। (8) अपनी कोशिश (कमाई) से खुश खुश, (9) बुलन्द बाग़ में, (10) उस में वह न सुनेंगे बेहूदा बकवास, (11) उस में एक बहता हुआ चश्मा है। (12) उस में ऊँचे ऊँचे तख़्त हैं, (13) और आबख़ोरे चुने हुए, (14) और गद्दे तरतीब से लगे हुए, (15) और क़ालीन बिखरे हुए (फैले हुए)। (16) क्या वह नहीं देखते? ऊँट की तरफ़ कि वह कैसे पैदा किए गए। (17) और आस्मान की तरफ़ कि कैसे बुलन्द किया गया? (18) और पहाड़ों की तरफ़ कि कैसे खड़े किए गए? (19) और ज़मीन की तरफ़ कि कैसे बिछाई गई? (20) पस आप समझाते रहें, आप (स) सिर्फ़ समझाने वाले हैं। (21) आप (स) उन पर दारोग़ा नहीं, (22) मगर जिस ने मुँह मोड़ा और कुफ़्र किया (मुन्किर हो गया), (23) पस अल्लाह उसे अ़ज़ाब देगा बहुत बड़ा अ़ज़ाब। (24) बेशक उन्हें हमारी तरफ़ लौटना है, (25) फिर बेशक हम पर (हमारा काम) है उन का हिसाब लेना। (26)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम फ़ज्र की, (1) और दस रातों की, (2) और जुफ़्त और ताक़ की, (3) और रात की जब वह चले। (4) क्या इस में (इन चीज़ों की) क़सम हर अ़क़्लमन्द के नज़्दीक मोतबर है? (5) क्या तुम ने नहीं देखा कि तुम्हारे रब ने क्या मामला किया आ़द के साथ, (6) इरम के सुतूनों वाले, (7) उस जैसी क़ौम दुनिया के मुल्कों में पैदा नहीं की गई। (8) और समूद के साथ जिन्हों ने वादी में सख़्त पत्थर तराशे, (9)

وَفِرْعَوْنَ ذِى الْاَوْتَادِ ﴿١٠﴾ الَّذِيْنَ طَغَوْا فِى الْبِلَادِ ﴿١١﴾

11	शहरों में	सरकशी की	वह जिन्हों ने	10	कीलों वाला	और फ़िरऔन

فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ﴿١٢﴾ فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ

कोड़ा	तुम्हारा रब	उन पर	पस बरसा दिया	12	फ़साद	उस में	बहुत किया

عَذَابٍ ﴿١٣﴾ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ﴿١٤﴾ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا

जब	इन्सान	पस जो	14	घात में	तुम्हारा रब	बेशक	13	अ़ज़ाब

مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ اَكْرَمَنِ ﴿١٥﴾

15	मुझे इ़ज़्ज़त दी	मेरा रब	तो वह कहे	और उसे नेमत दे	उस को इ़ज़्ज़त दे	उस का रब	उस को आज़माए

وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّىْٓ

मेरा रब	तो वह कहे	उस का रिज़्क़	उस पर	अन्दाज़े से देता है	उसे आज़माए	और जब

اَهَانَنِ ﴿١٦﴾ كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ﴿١٧﴾ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ

और रग़बत नहीं देते	17	यतीम	इ़ज़्ज़त नहीं करते	हरगिज़ नहीं, बल्कि	16	मुझे ज़लील किया

عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ﴿١٨﴾ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ﴿١٩﴾

19	खाना समेट कर	माले मीरास	और तुम खाते हो	18	मिस्कीन	खाना	पर

وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ﴿٢٠﴾ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ

ज़मीन	पस्त कर दी जाएगी	हरगिज़ नहीं जब	20	बहुत	मुहब्बत	माल	और मुहब्बत करते हो

دَكًّا دَكًّا ﴿٢١﴾ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ﴿٢٢﴾ وَجِايْٓءَ

और लाई जाए	22	क़तार दर क़तार	और (आएं) फ़रिश्ते	तुम्हारा रब	और आएगा	21	कूट कूट कर

يَوْمَئِذٍ ۢ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ

उस के लिए	और कहां	इन्सान	सोचेगा	उस दिन	जहन्नम में	उस दिन

الذِّكْرٰى ﴿٢٣﴾ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِىْ ﴿٢٤﴾ فَيَوْمَئِذٍ

पस उस दिन	24	अपनी ज़िन्दगी के लिए	मैं ने पहले भेजा होता	ऐ काश	वह कहेगा	23	सोचना

لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ﴿٢٥﴾ وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ

उस का बान्धना	और न बान्ध कर रखे	25	कोई	उस का अ़ज़ाब	अ़ज़ाब न देगा

اَحَدٌ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٧﴾ ارْجِعِىْٓ اِلٰى

तरफ़	लौट चल	27	मुत्मइन	नफ़्स	ऐ	26	कोई

رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٨﴾ فَادْخُلِىْ فِىْ عِبٰدِىْ ﴿٢٩﴾

29	मेरे बन्दे	में	पस दाख़िल हो	28	वह तुझ से राज़ी	राज़ी	अपने रब

وَادْخُلِىْ جَنَّتِىْ ﴿٣٠﴾

	30	मेरी जन्नत	और दाख़िल हो

ع ١ ١٤

और कीलों वाले फ़िरऔन के साथ, (10)
जिन्हों ने शहरों में सरकशी की, (11)
फिर उन शहरों में बहुत फ़साद किया। (12)
पस उन पर तुम्हारे रब ने अ़ज़ाब का कोड़ा बरसा दिया। (13)
बेशक तुम्हारा रब घात में है। (14)
पस इन्सान को जब उस का रब आज़माए, फिर उस को इ़ज़्ज़त दे और नेमत दे, तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे इ़ज़्ज़त दी। (15)
और जब उसे आज़माए और उसे रोज़ी अन्दाज़े से (तंग कर के) दे तो वह कहे कि मेरे रब ने मुझे ज़लील किया। (16)
हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम यतीम की इ़ज़्ज़त नहीं करते, (17)
और रग़बत नहीं देते मिस्कीन को खाना खिलाने की, (18)
और तुम माले मीरास समेट समेट कर खाते हो, (19)
और माल से मुहब्बत करते हो बहुत ज़ियादा मुहब्बत। (20)
हरगिज़ नहीं, जब ज़मीन कूट कूट कर पस्त कर दी जाए, (21)
और आए तुम्हारा रब और (आएं) फ़रिश्ते क़तार दर क़तार। (22)
और उस दिन जहन्नम लाई जाए, उस दिन इन्सान सोचेगा और उसे कहां सोचना (नफ़ा) देगा? (23)
कहेगा ऐ काश! मैं ने अपनी इस ज़िन्दगी के लिए पहले (नेक अ़मल) भेजा होता। (24)
पस उस दिन उस जैसा अ़ज़ाब कोई न देगा, (25)
न उस जैसा बान्धना कोई बान्ध कर रखेगा। (26)
ऐ रुहे मुत्मइन (इत्मीनान वाली)। (27)
लौट चल अपने रब की तरफ़, वह तुझ से राज़ी, तू उस से राज़ी, (28)
पस दाख़िल हो जा मेरे बन्दों में। (29)
और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में। (30)

آيَاتُهَا ٢٠ ❀ سُوْرَةُ الْبَلَدِ (٩٠) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 | (90) सूरतुल बलद / शहर | आयात 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿١﴾ وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ﴿٢﴾ وَوَالِدٍ

और वालिद की	2	शह्र	इस	हलाल कर लिया गया	और आप (स)	1	शह्र	इस	नहीं-मैं क़सम खाता हूँ

وَّمَا وَلَدَ ﴿٣﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ﴿٤﴾ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ

हरगिज़ बस नहीं चलेगा	कि	क्या वह गुमान करता है	4	मुशक़्क़त में	इन्सान	तहक़ीक़ हम ने पैदा किया	3	और औलाद

وقف لازم

عَلَيْهِ اَحَدٌ ﴿٥﴾ يَّقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ﴿٦﴾ اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ

उस को नहीं देखा	कि	क्या वह गुमान करता है	6	ढेरों	माल	उड़ा दिया	वह कहता है	5	किसी	उस पर

اَحَدٌ ﴿٧﴾ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ﴿٨﴾ وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ﴿٩﴾ وَهَدَيْنٰهُ

और हम ने उसे दिखाए	9	और दो होंट	और ज़बान	8	दो आँखें	उस के लिए	हम ने बनाया	क्या नहीं	7	किसी

النَّجْدَيْنِ ﴿١٠﴾ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ﴿١١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ﴿١٢﴾ فَكُّ

छुड़ाना	12	अक़्बा	क्या	तुम समझे	और क्या	11	घाटी	पस न दाख़िल हुआ वह	10	दो रास्ते

رَقَبَةٍ ﴿١٣﴾ اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ﴿١٤﴾ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ﴿١٥﴾

15	क़राबतदार	यतीम	14	भूक वाले	दिन	में	खाना खिलाना	या	13	गर्दन (असीर)

اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ﴿١٦﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا

और बाहम वसीयत की	जो ईमान लाए	से	हो	फिर	16	ख़ाक नशीन	मिस्कीन	या

بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ﴿١٧﴾ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ﴿١٨﴾

18	सीधे हाथ वाले (ख़ुश नसीब)	वह (यही) लोग	17	रहम खाने की	और बाहम नसीहत की	सब्र की

ع ١ ٢٠ ١٥

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ﴿١٩﴾ عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿٢٠﴾

20	मूंदी (बन्द) की हुई	आग	उन पर	19	बाएं हाथ वाले (बद बख़्त)	वह	हमारी आयात	और जिन लोगों ने इन्कार किया

آيَاتُهَا ١٥ ❀ سُوْرَةُ الشَّمْسِ (٩١) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 | (91) सूरतुश शम्स / सूरज | आयात 15

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالشَّمْسِ وَضُحٰىهَا ﴿١﴾ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ﴿٢﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا

जब	और दिन की	2	उस के पीछे निकले	जब	और चाँद की	1	और उस की रोशनी	सूरज की क़सम

جَلّٰىهَا ﴿٣﴾ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ﴿٤﴾ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ﴿٥﴾

5	उसे बनाया	और जिस	और आस्मान की	4	उसे ढांप दे	जब	और रात की	3	वह रोशन करदे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
नहीं, मैं इस शह्र की क़सम खाता हूँ, (1)
और आप (स) को इस शह्र में हलाल कर लिया गया है, (2)
और (क़सम खाता हूँ) वालिद की और औलाद की, (3)
तहक़ीक़ हम ने इन्सान को मुशक़्क़त में (गिरफ़्तार) पैदा किया। (4)
क्या वह गुमान करता है कि उस पर हरगिज़ किसी का बस नहीं चलेगा? (5)
वह कहता है कि मैं ने ढेरों माल उड़ा दिया। (6)
क्या वह गुमान करता है कि उस को किसी ने नहीं देखा? (7)
क्या हम ने नहीं बनाईं? उस की दो आँखें, (8)
और ज़बान और दो होंट, (9)
और हम ने उसे दो रास्ते दिखाए। (10)
पस वह दाख़िल न हुआ "अक़्बा" (घाटी) में। (11)
और तुम क्या मझे कि "अक़्बा" क्या है? (12)
गर्दन छुड़ाना (असीर का आज़ाद कराना)। (13)
या खाना खिलाना भूक वाले दिन में, (14)
क़राबतदार (रिश्तेदार) यतीम को, (15)
या ख़ाक नशीन मिस्कीन को। (16)
फिर हो उन लोगों में से जो ईमान लाए और उन्हों ने बाहम वसीयत की सब्र की और बाहम रहम खाने की। (17)
यही लोग हैं ख़ुश नसीब। (18)
और जिन लोगों ने हमारी आयतों का इन्कार किया वह बदबख़्त लोग हैं। (19)
उन पर आग मूंदी हुई है (उन्हें आग में बन्द कर दिया गया है)। (20)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़सम है सूरज की और उस की रोशनी की, (1)
और चाँद की जब उस के पीछे से निकले। (2)
और दिन की जब वह उसे रोशन कर दे, (3)
और रात की जब वह उसे ढांप ले, (4)
और क़सम है आस्मान की और जिस ने उसे बनाया, (5)

وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ۝٦ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝٧ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا

उस का गुनाह	उस के दिल में डाली	7	उसे दुरुस्त किया	और जिस	और नफ़्स (इन्सान) की	6	उसे फैलाया	और जिस	और ज़मीन की

وَتَقْوٰىهَا ۝٨ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝٩ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝١٠

10	उसे ख़ाक में मिलाया	जो	और तहक़ीक़ नामुराद हुआ	9	उस को पाक किया	जो	कामयाब हुआ	8	और उस की परहेज़गारी

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ۝١١ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۝١٢ فَقَالَ لَهُمْ

उन से	तो कहा	12	उस का बद बख़्त	उठ खड़ा हुआ	जब	11	अपनी सरकशी	समूद	झुटलाया

رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝١٣ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۟ فَدَمْدَمَ

फिर हलाकत डाली	फिर उस की कूंचे काट डालीं	फिर उस को झुटलाया	13	और उस की पानी की बारी	अल्लाह की ऊँटनी	अल्लाह का रसूल

عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝١٤ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝١٥ ع ١٥ ١٦

15	उस का अन्जाम	और वह नहीं डरता	14	फिर उन्हें बराबर कर दिया	उन के गुनाह के सबब	उन का रब	उन पर

آيَاتُهَا ٢١ ❀ (٩٢) سُوْرَةُ الَّيْلِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ 1 — (92) सूरतुल लैल रात — आयात 21

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۝١ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝٢ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ

नर	और जो उस ने पैदा किया	2	जब वह रोशन हो	और दिन की	1	वह ढांप ले	जब	रात की क़सम

وَالْاُنْثٰٓى ۝٣ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝٤ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝٥

5	और परहेज़गारी इख़्तियार की	दिया	जिस	सो जो	4	मुख़्तलिफ़	तुम्हारी कोशिश	बेशक	3	और मादा

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝٦ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ۝٧ وَاَمَّا

और जो	7	आसानी	पस अ़नक़रीब उसे आसान कर देंगे	6	अच्छी बात को	और सच जाना

مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۝٨ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۝٩ فَسَنُيَسِّرُهٗ

पस अ़नक़रीब उसे आसान कर देंगे	9	अच्छी बात को	और झुटलाया	8	और बेपरवाह रहा	जिस ने बुख़्ल किया

لِلْعُسْرٰى ۝١٠ وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ اِذَا تَرَدّٰى ۝١١ اِنَّ عَلَيْنَا

बेशक हम पर (हमारा ज़िम्मा)	11	जब नीचे गिरेगा वह	उस का माल	उस को	और न फ़ाइदा देगा	10	दुश्वारी-सख़्ती

لَلْهُدٰى ۝١٢ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۝١٣ فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا

आग	पस मैं तुम्हें डराता हूँ	13	और दुनिया	आख़िरत	हमारे लिए	और बेशक	12	अलबत्ता राह दिखाना

تَلَظّٰى ۝١٤ لَا يَصْلٰىهَآ اِلَّا الْاَشْقَى ۝١٥ الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٦

16	और मुँह मोड़ा	जिस ने झुटलाया	15	इन्तिहाई बद बख़्त	मगर	न दाख़िल होगा उस में	14	भड़कती हुई

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۝١٧ الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۝١٨

18	पाक करने को	अपना माल	देता है	जो	17	बड़ा परहेज़गार	और अ़नक़रीब उस से बचा लिया जाएगा

और ज़मीन की और जिस ने उसे फैलाया, (6) और इन्सान की और जिस ने उसे दुरुस्त किया, (7) फिर डाली उस के दिल में उस के गुनाह और परहेज़गारी (की समझ)। (8) तहक़ीक़ कामयाब हुआ जिस ने उस को पाक किया, (9) और तहक़ीक़ नामुराद हुआ जिस ने उसे ख़ाक में मिलाया। (10) समूद ने अपनी सरकशी (कि वजह) से झुटलाया, (11) जब उन का बदबख़्त उठ खड़ा हुआ। (12) तो उन से अल्लाह के रसूल ने कहा: (ख़बरदार हो) अल्लाह की ऊँटनी और उस के पानी पीने की बारी से। (13) फिर उन्हों ने उस को झुटलाया और उस की कूंचे काट डालीं, फिर उन के रब ने उन पर उन के गुनाह के सबब हलाकत डाली, फिर उन्हें बराबर कर दिया, (14) और वह उस के अन्जाम से नहीं डरता। (15)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

रात की क़सम जब वह ढांप ले, (1) और दिन की जब वह रोशन हो, (2) और उस की जो उस ने नर ओ मादा पैदा किए। (3) बेशक तुम्हारी कोशिशें मुख़्तलिफ़ हैं। (4) सो जिस ने दिया और परहेज़गारी इख़्तियार की, (5) और अच्छी बात को सच जाना, (6) पस हम अ़नक़रीब उस के लिए आसानी (की तौफ़ीक़) कर देंगे। (7) और जिस ने बुख़्ल किया और बेपरवाह रहा। (8) और झुटलाया अच्छी बात को, (9) पस हम अ़नक़रीब उस के लिए दुश्वारी (ग़लत रास्ता) आसान कर देंगे। (10) और उस का माल उस को फ़ाइदा न देगा जब वह नीचे गिरेगा। (11) बेशक हमारा ज़िम्मा है राह दिखाना। (12) और बेशक दुनिया ओ आख़िरत हमारे हाथ में है। (13) पस मैं तुम्हें डराता हूँ भड़कती हुई आग से। (14) उस में सिर्फ़ बदबख़्त दाख़िल होगा, (15) जिस ने झुटलाया और मुँह मोड़ा। (16) और अ़नक़रीब उस से परहेज़गार बचा लिया जाएगा। (17) जो अपना माल देता है (अपना दिल) पाक साफ़ करने को। (18)

وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ١٩ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ

रज़ा	चाहता है	सिर्फ़	19	बदला दी जाए	नेमत	से	उस पर	और नहीं किसी के लिए

ع ٢١ ١ ١٧

رَبِّهِ الْاَعْلٰى ٢٠ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ٢١

	21	राज़ी होगा	और अ़नक़रीब	20	बुलन्द ओ बरतर	अपना रब	

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الضُّحٰى (٩٣) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1	(93) सूरतुध धुहा रोज़े रोशन	आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالضُّحٰى ١ وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ٢ مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ٣

3	बेज़ार हुआ	और न	आप का रब	आप (स) को नहीं छोड़ा	2	छाजाए	जब	और रात की	1	क़सम है धूप चढ़ने की (आफ़ताब)

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ٤ وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ

आप का रब	आप (स) को अ़ता करेगा	और अ़नक़रीब	4	पहली	से	आप (स) के लिए	बेहतर	और आख़िरत

فَتَرْضٰى ٥ اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ٦ وَوَجَدَكَ ضَآلًّا

बेख़बर	और आप (स) को पाया	6	पस ठिकाना दिया	यतीम	आप (स) को पाया	क्या नहीं	5	आप राज़ी हो जाएंगे

فَهَدٰى ٧ وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ٨ فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ٩

9	तो क़हर न करें	यतीम	पस जो	8	तो ग़नी कर दिया	मुफ़लिस	और आप (स) को पाया	7	तो हिदायत दी

ع ١١ ١ ١٨

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ١٠ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ١١

11	सो इज़हार करें	अपना रब	नेमत	और जो	10	तो न झिड़कें	सवाल करने वाला	और जो

آيَاتُهَا ٨ ❀ سُوْرَةُ الشَّرْحِ (٩٤) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1	(94) सूरतुश शर्ह खोलना	आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ١ وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ٢

2	आप (स) का बोझ	आप (स) से	और हम ने उतार दिया	1	आप (स) का सीना	आप (स) के लिए	खोल दिया	क्या नहीं

الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ٣ وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ٤ فَاِنَّ مَعَ

साथ	पस बेशक	4	आप (स) का ज़िक्र	आप (स) के लिए	और हम ने बुलन्द किया	3	आप (स) की पुश्त	तोड़ दी	जो-जिस

الْعُسْرِ يُسْرًا ٥ اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ٦ فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ٧

7	मेहनत करें	आप (स) फ़ारिग़ हों	पस जब	6	आसानी	साथ दुश्वारी	बेशक	5	आसानी	दुश्वारी

ع ٨ ١ ١٩

وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ٨

	8	रग़बत करें	अपना रब	और तरफ़		

और किसी का उस पर एहसान नहीं कि जिस का बदला दे, (19) सिर्फ़ अपने बुज़ुर्ग ओ बरतर रब की रज़ा चाहता है। (20) और अ़नक़रीब राज़ी होगा। (21)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़सम है आफ़ताब की रोशनी की, (1) और रात की जब वह छाजाए, (2) आप (स) के रब ने आप (स) को नहीं छोड़ा और न बेज़ार हुआ। (3) और आख़िरत आप (स) के लिए पहली (हालत) से बेहतर है। (4) और अ़नक़रीब आप (स) को आप का रब अ़ता करेगा, पस आप (स) राज़ी हो जाएंगे। (5) क्या आप (स) को यतीम नहीं पाया? पस ठिकाना दिया, (6) और आप (स) को बेख़बर पाया तो हिदायत दी, (7) और आप (स) को मुफ़लिस पाया तो ग़नी कर दिया। (8) पस जो यतीम हो उस पर क़हर न करें, (9) और जो सवाल करने वाला हो उसे न झिड़कें। (10) और जो आप (स) के रब की नेमत है उसे इज़हार करें। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क्या हम ने आप (स) का सीना नहीं खोल दिया? (1) और आप (स) से आप का बोझ उतार दिया। (2) जिस ने तोड़ दी (झुका दी) आप (स) की पुश्त, (3) और हम ने आप (स) का ज़िक्र बुलन्द किया। (4) पस बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (5) बेशक दुश्वारी के साथ आसानी है। (6) पस जब आप (स) फ़ारिग़ हों तो (इबादत में) मेहनत करें। (7) और अपने रब की तरफ़ रग़बत करें (दिल लगाएं)। (8)

آيَاتُهَا ٨ ❀ (٩٥) سُوْرَةُ التِّيْنِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 | (95) सूरतुत तीन / अंजीर | आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۝١ وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ۝٢ وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ۝٣

3	अम्न वाला	शहर	और इस	2	और तूरे सीना की	1	और ज़ैतून की	क़सम है अंजीर की

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ۝٤ ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ

सब से नीचा	हम ने उसे लौटा दिया	फिर	4	सांचा (साख़्त)	बेहतरीन	में	इन्सान	अलबत्ता हम ने पैदा किया

سٰفِلِيْنَ ۝٥ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٦

6	ख़तम होने वाला	न	अजर	तो उन के लिए	नेक	और अ़मल किए	ईमान लाए	सिवाए जो लोग	5	नीचों वाला

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ۝٧ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨ ع ١ ٨ ٢٠

8	तमाम हाकिम	सब से बड़ा हाकिम	क्या नहीं अल्लाह	7	दीन के मामले में	इस के बाद	पस कौन आप (स) को झुटलाएगा

آيَاتُهَا ١٩ ❀ (٩٦) سُوْرَةُ الْعَلَقِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकुअ़ 1 | (96) सूरतुल अ़लक़ / जमा हुआ खून | आयात 19

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۝١ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝٢

2	जमा हुआ खून	से	इन्सान	पैदा किया	1	पैदा किया	जिस ने	अपना रब	नाम से	पढ़िए

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۝٣ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝٤ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ

इन्सान	सिखाया	4	क़लम से	सिखाया	वह जिस ने	3	बड़ा करीम	और आप का रब	पढ़िए

مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝٥ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۝٦ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۝٧ اِنَّ

बेशक	7	बे नियाज़	कि अपने तईं देखे	6	सरकशी करता है	इन्सान	हरगिज़ नहीं बेशक	5	वह जानता था	जो न

اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۝٨ اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى ۝٩ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ۝١٠

10	वह नमाज़ पढ़े	जब	एक बन्दा	9	रोकता है	वह जो	क्या आप ने देखा	8	लौटना है	अपना रब	तरफ़

اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۝١١ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ۝١٢ اَرَءَيْتَ اِنْ

अगर	भला देखो	12	परहेज़गारी का	या हुक्म देता	11	हिदायत	पर	हो	अगर	भला देखो

كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝١٣ اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ۝١٤ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ

न बाज़ आया	अगर	हरगिज़ नहीं	14	देख रहा है	कि अल्लाह	क्या न जाना	13	और मुँह मोड़ता	झुटलाता

لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝١٥ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝١٦ فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۝١٧

17	अपनी मज्लिस	तो वह बुला ले	16	गुनाहगार	झूटी	पेशानी	15	पेशानी के बालों से	हम ज़रूर घसीटेंगे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
क़सम है अंजीर की और ज़ैतून की, (1)
और तूरे सीना की, (2)
और इस अम्न वाले शहर की, (3)
अलबत्ता हम ने इन्सान को बेहतरीन साख़्त में पैदा किया। (4)
फिर उसे सब से नीची (पस्त तरीन) हालत में लौटा दिया, (5)
सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए तो उन के लिए ख़तम न होने वाला अजर है। (6)
पस कौन झुटलाएगा आप (स) को इस के बाद रोज़े जज़ा ओ सज़ा के मामले में? (7)
क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं है? (8)
अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है
पढ़िए अपने रब के नाम से जिस ने (सब को) पैदा किया, (1)
इन्सान को जमे हुए खून से पैदा किया, (2)
पढ़िए और आप (स) का रब सब से बड़ा करीम है, (3)
जिस ने क़लम से सिखाया, (4)
इन्सान को सिखाया जो वह न जानता था। (5)
हरगिज़ नहीं, इन्सान सरकशी करता है। (6)
इस वजह से कि वह अपने आप को बे नियाज़ देखता है। (7)
बेशक अपने रब की तरफ़ लौटना है। (8)
क्या तुम ने उसे देखा जो रोकता है। (9)
एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़े। (10)
भला देखो, अगर (वह बन्दा) हिदायत पर हो, (11)
या परहेज़गारी का हुक्म देता हो। (12)
भला देखो, अगर (यह रोकने वाला) झुटलाता और मुँह मोड़ता हो। (13)
क्या उस ने न जाना कि अल्लाह देख रहा है? (14)
हरगिज़ नहीं, अगर बाज़ न आया तो पेशानी के बालों से (पकड़ कर) हम ज़रूर घसीटेंगे। (15)
झूटी गुनाहगार पेशानी। (16)
तो बुला ले अपनी मज्लिस (जत्थे) को, (17)

ع ١٩ / ٢١ السجدة ١٤

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ﴿١٨﴾ كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ﴿١٩﴾

19	और नज़दीक हो	और सिजदा कर तू	उस की बात न मान	नहीं नहीं	18	प्यादे	हम बुलाते हैं

آيَاتُهَا ٥ ❀ (٩٧) سُوْرَةُ الْقَدْرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(97) सूरतुल क़द्र ताक़त, बा इज़्ज़त	आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾

2	लैलतुलक़द्र	क्या	आप ने समझा	और क्या	1	लैलतुलक़द्र (इज़्ज़त वाली रात)	में	हम ने यह उतारा	बेशक

لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۙ خَيْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا

وقف النبي ﷺ

उस में	और रूह	फ़रिश्ते	उतरते हैं	3	हज़ार महीने	से	बेहतर	लैलतुलक़द्र

ع ٥ / ٢٢ الثالثة — معانقة ١٨ عند المتأخرين ١٢

بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ۚ مِّنْ كُلِّ اَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلٰمٌ ۛ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

5	फ़ज्र (सुबह)	तुलूअ़ होना	जब तक	वह	सलामती	4	काम	हर	से	उन का रब	हुक्म से

آيَاتُهَا ٨ ❀ (٩٨) سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(98) सूरतुल बैय्यिना खुली दलील	आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ

बाज़ आने वाले	और मुश्रिकीन	अहले किताब	से	कुफ़्र किया	वह जो	न थे

حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿١﴾ رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ﴿٢﴾

2	पाक	सहीफ़े	पढ़ता हुआ	अल्लाह (की तरफ़) से	रसूल	1	खुली दलील	आए उन के पास	यहां तक कि

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ﴿٣﴾ وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا

मगर	वह जो कि किताब दिए गए (अहले किताब)	फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा हुए	और न	3	लिखे हुए मज़बूत (तहरीर)	उस में

مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ﴿٤﴾ وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ

यह कि इबादत करें अल्लाह की	मगर	हुक्म दिया गया	और न	4	खुली दलील	जब उन के पास आगई	उस के बाद

مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ

ज़कात	और अदा करें	नमाज़	और क़ाइम करें	यक रुख़	दीन	उस के लिए	ख़ालिस करते हुए

وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ﴿٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

अहले किताब	से	जिन लोगों ने कुफ़्र किया	बेशक	5	निहायत मज़बूत	दीन	और यह

وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ﴿٦﴾

6	मख़्लूक़	बदतरीन	वह	यही लोग	उस में	हमेशा रहेंगे	जहन्नम	आग	में	और मुश्रिकीन

हम बुलाते हैं प्यादों को। (18) नहीं नहीं, उस की बात न मानें और आप (स) सिज्दा करें और (अपने रब की) नज़्दीकी हासिल करें। (19)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

बेशक हम ने यह (क़ुरआन) उतारा लैलतुलक़द्र में। (1) और आप क्या जानें कि "लैलतुलक़द्र" क्या है? (2) लैलतुलक़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है, (3) इस में उतरते हैं फ़रिश्ते और रूह (रूहुल अमीन) अपने रब के हुक्म से हर काम (के इन्तिज़ाम के लिए)। (4) तुलूअ़ फ़ज्र तक, यह रात सलामती (ही सलामती) है। (5)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

जिन लोगों ने कुफ़्र किया अहले किताब और मुश्रिकों में से, बाज़ आने वाले न थे यहां तक कि उन के पास खुली दलील आए, (1) अल्लाह का रसूल पाक सहीफ़े पढ़ता हुआ, (2) जिस में रास्त और दुरुस्त तहरीरें लिखी हुई हों। (3) और अहले किताब फ़िर्क़ा फ़िर्क़ा न हुए मगर उस के बाद कि उन के पास आगई खुली दलील। (4) और उन्हें सिर्फ़ यह हुक्म दिया गया था कि वह अल्लाह की इबादत करें उस के लिए ख़ालिस करते हुए दीन (बन्दगी) यक रुख़ हो कर, और नमाज़ क़ाइम करें और ज़कात अदा करें, और यही मज़बूत दीन है। (5) बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया अहले किताब और मुश्रिकों में से, वह जहन्नम की आग में हमेशा रहेंगे, यही लोग बदतरीन मख़्लूक़ हैं। (6)

बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने अ़मल किए नेक, यही लोग बेहतरीन मख़्लूक़ हैं। (7)
उन की जज़ा उन के रब के पास हमेशा रहने वाले बाग़ात हैं, उन के नीचे नहरें बहती हैं, वह उन में हमेशा हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से राज़ी हुआ, और वह अल्लाह से राज़ी हुए, यह उस के लिए है जो अपने रब से डरे। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
जब ज़मीन ज़ल्ज़ले से हिला दी जाएगी, (1)
और अपने बोझ बाहर निकाल डालेगी, (2)
और कहेगा इन्सान कि इस को क्या हो गया? (3)
उस दिन वह अपने हालात बयान करेगी, (4)
क्योंकि तेरे रब ने उसे हुक्म भेजा होगा। (5)
उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ गिरोहों में बाहर निकलेंगे ताकि उन के आ़माल उन्हें दिखाए जाएं। (6)
पस जिस ने की होगी एक ज़र्रा बराबर नेकी वह उसे देख लेगा। (7)
और जिस ने की होगी एक ज़र्रा बराबर बुराई वह उसे देख लेगा। (8)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
क़सम है दौड़ने वाले, हांपते हुए घोड़ों की, (1)
(सुम) झाड़ कर चिंगारियां उड़ाने वालों की, (2)
सुबह के वक़्त (शब ख़ून मार कर) ग़ारतगिरी करने वालों की, (3)
फिर उस (दौड़ने) से गर्द उड़ाने वालों की, (4)
फिर उस (गर्द की आड़) से मज्मा में घुस जाने वालों की, (5)
बेशक इन्सान अपने रब का नाशुक्रा है। (6)
और बेशक वह उस पर गवाह है। (7)
और बेशक वह माल की मुहब्बत में सख़्त है। (8)

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۗ ﴿٧﴾

7	मख़्लूक़	बेहतरीन	वह	यही लोग	और उन्हों ने अ़मल किए नेक	जो लोग ईमान लाए	बेशक

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ

हमेशा रहेंगे	नहरें	उन के नीचे से	बहती हैं	हमेशा रहने वाले	बाग़ात	उन का रब	पास	उन की जज़ा

فِيْهَآ اَبَدًا ۗ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۗ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ﴿٨﴾ ع ع ٨ ١ ٢٣

8	अपना रब	डरे	उस के लिए जो	यह	उस से	और वह राज़ी	उन से	राज़ी हुआ अल्लाह	हमेशा हमेशा	उस में

آيَاتُهَا ٨ ❀ سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ (٩٩) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(99) सूरतुज़ ज़िलज़ाल भौंचाल, ज़ल्ज़ला	आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ﴿٢﴾

2	अपने बोझ	ज़मीन	और बाहर निकाल डाले	1	उस का ज़ल्ज़ला	ज़मीन	हिला डाली जाए	जब

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ﴿٤﴾ بِاَنَّ

क्यों कि	4	अपनी ख़बरें (हालात)	बयान करेगी	उस दिन	3	इसे क्या हो गया?	इन्सान	और कहेगा

رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ﴿٥﴾ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا

ताकि दिखाए	मुख़्तलिफ़ गिरोहों	लोग	बाहर निकलेंगे	उस दिन	5	उस को	हुक्म भेजा	तेरा रब

اَعْمَالَهُمْ ﴿٦﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ﴿٧﴾

7	उस को देखेगा	नेकी	एक ज़र्रा	बराबर	की होगी	पस जिस ने	6	उन के आ़माल

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿٨﴾ ع ع ٨ ١ ٢٤

8	उस को देखेगा	बुराई	एक ज़र्रा	बराबर	की होगी	और जिस ने

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ (١٠٠) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(100) सूरतुल आ़दियात दौड़ने वाले घोड़े	आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ﴿١﴾ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ﴿٢﴾ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ﴿٣﴾

3	सुबह को	ग़ारतगिरी करने वाले	2	(सुम) झाड़ कर	चिंगारियां उड़ाने वाले	1	हांपने वाले	क़सम है दौड़ने वाले घोड़ों की

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ﴿٤﴾ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ﴿٥﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ

अपने रब का	इन्सान	बेशक	5	मज्मा	उस से	फिर जा घुसें	4	गर्द	उस से	फिर उड़ाएं

لَكَنُوْدٌ ﴿٦﴾ وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ﴿٧﴾ وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ﴿٨﴾

8	अलबत्ता सख़्त	माल ओ दौलत	मुहब्बत में	और बेशक वह	7	गवाह	और बेशक वह उस पर	6	नाशुक्रा

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى الْقُبُوْرِ ۝٩ وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۝١٠

10	सीने (दिल)	में	जो	और सामने आजाएगा	9	क़ब्रों	में	जो	उठाए जाएंगे	जब	वह जानता	पस क्या नहीं

ع ١ ١١ ٢٥

اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۝١١

	11	खूब बाख़बर	उस दिन	उन से	उन का रब	बेशक	

آيَاتُهَا ١١ ❀ سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ (١٠١) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (101) सूरतुल क़ारिआ़ / खड़खड़ाने वाली — आयात 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْقَارِعَةُ ۝١ مَا الْقَارِعَةُ ۝٢ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝٣

3	क्या है खड़खड़ाने वाली	तुम समझे	और क्या	2	क्या है खड़खड़ाने वाली	1	खड़खड़ाने वाली

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝٤ وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ

पहाड़	और होंगे	4	बिखरे हुए	परवानों की तरह	लोग	होंगे	जिस दिन

كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝٥ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٦

6	उस के वज़न	भारी हुए	जो	पस जो	5	धुन्की हुई	रंगीन ऊन की मानिंद

فَهُوَ فِىْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٧ وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٨

8	उस के वज़न	हल्के हुए	जो	और जो	7	पसंदीदा	ऐश ओ आराम	में	सो वह

ع ١ ١١ ٢٦

فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝٩ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ۝١٠ نَارٌ حَامِيَةٌ ۝١١

11	दहकती हुई	आग	10	क्या है वह?	और तुम क्या समझे	9	हाविया	तो उस का ठिकाना

آيَاتُهَا ٨ ❀ سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ (١٠٢) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (102) सूरतुत तकासुर / कस्रत की ख़ाहिश — आयात 8

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝١ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝٢ كَلَّا سَوْفَ

अनक़रीब	हरगिज़ नहीं	2	क़ब्रें	तुम ने ज़ियारत की	यहां तक कि	1	कस्रत की ख़ाहिश	तुम्हें ग़फ़्लत में रखा

تَعْلَمُوْنَ ۝٣ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٤ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ

काश तुम जानते	हरगिज़ नहीं	4	तुम जान लोगे	जल्द	हरगिज़ नहीं	फिर	3	तुम जान लोगे

عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝٥ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝٦ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝٧

7	यक़ीन की आँख	ज़रूर उसे देखोगे	फिर	6	जहन्नम	तुम ज़रूर देखोगे	5	इल्मे यक़ीन

ع ١ ٨ ٢٧

ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝٨

	8	नेमतें	से (बाबत)	उस दिन	तुम ज़रूर पूछे जाओगे	फिर	

क्या वह नहीं जानता कि जब उठाए जाएंगे मुर्दे जो क़ब्रों में हैं? (9)
और हासिल कर लिया जाएगा जो सीनों में है। (10)
बेशक उन का रब उस दिन उन से खूब बाख़बर होगा। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

खड़खड़ाने वाली, (1)
क्या है खड़खड़ाने वाली? (2)
और तुम क्या समझे कि क्या है खड़खड़ाने वाली? (3)
जिस दिन होंगे लोग परवानों की तरह बिखरे हुए, (4)
और पहाड़ होंगे धुन्की हुई रंगीन ऊन की तरह। (5)
पस जिस के (नेक) वज़न भारी हुए, (6)
सो वह पसंदीदा आराम में होगा। (7)
और जिस के वज़न हल्के हुए, (8)
तो उस का ठिकाना "हाविया" होगा। (9)
और तुम क्या समझे कि वह क्या है? (10)
वह आग है दहकती हुई। (11)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

तुम्हें हुसूले कस्रत की ख़ाहिश ने ग़फ़्लत में रखा, (1)
यहां तक कि तुम क़ब्रों तक पहुंच जाते हो। (2)
हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे, (3)
फिर हरगिज़ नहीं, तुम जल्द जान लोगे। (4)
हरगिज़ नहीं, काश तुम इल्मे यक़ीन से जानते होते। (5)
तुम ज़रूर देखोगे जहन्नम को। (6)
फिर तुम उसे ज़रूर यक़ीन की आँख से देखोगे। (7)
फिर तुम उस दिन ज़रूर पूछे जाओगे (सवाल जवाब होगा) नेमतों की बाबत। (8)

آيَاتُهَا ٣ ❀ سُوْرَةُ الْعَصْرِ (١٠٣) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (103) सूरतुल अ़स्र — ज़माना — आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَالْعَصْرِ ۙ﴿١﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ﴿٢﴾ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا

जो लोग ईमान लाए	सिवाए	2	ख़सारा	में	इन्सान	बेशक	1	ज़माने की क़सम

وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ۬ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿٣﴾ ع ٣ ٢٨

3	सब्र की	और वसीयत की	हक़ की	और एक दूसरे को वसीयत की	और उन्हों ने अ़मल किए नेक

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ज़माने की क़सम, (1)
बेशक इन्सान ख़सारे में है, (2)
सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्हों ने नेक अ़मल किए और एक दूसरे को हक़ की वसीयत की और सब्र की वसीयत (तलक़ीन) की। (3)

آيَاتُهَا ٩ ❀ سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ (١٠٤) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (104) सूरतुल हुमाज़ा — ताना ज़न — आयात 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ﴿١﴾ الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ﴿٢﴾

2	उसे गिन गिन कर रखा	माल	जमा किया	जिस	1	ऐब जू	ताना ज़न	वास्ते - हर	ख़राबी

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۚ﴿٣﴾ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۡ﴿٤﴾ وَمَآ

और क्या	4	"हुत्मा"	में	ज़रूर डाला जाएगा	हरगिज़ नहीं	3	उसे हमेशा रखेगा	उस का माल	कि	वह गुमान करता है

اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ؕ﴿٥﴾ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ﴿٦﴾ الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى

पर	जा पहुँचे वह	जो कि	6	भड़काई हुई	अल्लाह की आग	5	"हुत्मा" क्या है?	तुम समझे

الْاَفْـِٕدَةِ ؕ﴿٧﴾ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ﴿٨﴾ فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿٩﴾ ع ٩ ٢٩

9	लम्बे लम्बे	सुतून	में	8	बन्द की हुई	उन पर	बेशक वह	7	दिल (जमा)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

ख़राबी है हर ताना ज़न ऐब लगाने वाले के लिए, (1)
जिस ने माल जमा किया और उसे गिन गिन कर रखा, (2)
वह गुमान करता है कि उस का माल उसे हमेशा रखेगा, (3)
हरगिज़ नहीं, वह ज़रूर "हुत्मा" में डाला जाएगा। (4)
और तुम क्या समझे कि "हुत्मा" क्या है? (5)
अल्लाह की आग भड़काई हुई, (6)
जो दिलों तक जा पहुँचेगी। (7)
बेशक वह उन पर ढांक कर बन्द करदी जाएगी। (8)
लम्बे लम्बे सुतूनों में। (9)

آيَاتُهَا ٥ ❀ سُوْرَةُ الْفِيْلِ (١٠٥) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (105) सूरतुल फ़ील — हाथी — आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ؕ﴿١﴾ اَلَمْ يَجْعَلْ

कर दिया उस ने	क्या नहीं	1	हाथी वालों के साथ	तुम्हारा रब	किया	कैसा	क्या तुम ने नहीं देखा

كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ ۙ﴿٢﴾ وَّاَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۙ﴿٣﴾

3	झुंड के झुंड	परिन्दे	उन पर	और भेजे	2	गुमराही में (बेकार)	उन का दाओ

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۙ﴿٤﴾ فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ﴿٥﴾ ع ٥ ٣٠

5	खाए हुए	भूसे की तरह	पस उन को कर दिया	4	संगे गिल	से	कंकरियां	फेंकते थे

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क्या आप (स) ने नहीं देखा कि आप के रब ने क्या सुलूक किया हाथी वालों से? (1)
क्या उन का दाओ नहीं कर दिया बेकार? (2)
और उन पर झुंड के झुंड परिन्दे भेजे (3)
वह उन पर कंकरियां फेंकते थे पकी हुई मिट्टी की। (4)
पस उन को खाए हुए भूसे के मानिंद कर दिया। (5)

سُوْرَةُ قُرَيْشٍ (١٠٦)

آيَاتُهَا ٤ ❀ سُوْرَةُ قُرَيْشٍ (١٠٦) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 | (106) सूरह क़ुरैश — क़ुरैश का क़बीला | आयात 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١ اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢

2	और गर्मी	सर्दी	सफ़र	उन का मानूस करना	1	क़ुरैश	मानूस करने के सबब

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣ الَّذِيْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ

भूक	से-में	उन्हें खाना दिया	जो-जिस	3	घर	इस	रब	पस चाहिए कि वह इबादत करें

ع ١ ٣١ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

4	ख़ौफ़	से-में	और उन्हें अम्न दिया

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ (١٠٧)

آيَاتُهَا ٧ ❀ سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ (١٠٧) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 | (107) सूरतुल माऊन — रोज़ाना इस्तेमाल की छोटी चीज़ें | आयात 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اَرَءَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١ فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝٢

2	यतीम	धक्के देता है	जो कि	यही है वह	1	रोज़े जज़ा ओ सज़ा	झुटलाता है	वह जो कि	क्या तुम ने देखा

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤

4	नमाज़ियों के लिए	पस ख़राबी	3	मिस्कीन	खाना	पर	रग़बत दिलाता	और नहीं

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥ الَّذِيْنَ هُمْ

वह	जो कि	5	ग़ाफ़िल (जमा)	अपनी नमाज़	से	वह	जो कि

ع ٢ ٣٢ يُرَآءُوْنَ ۝٦ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ۝٧

7	आम ज़रूरत की चीज़	रोकते हैं (नहीं देते)	6	दिखावा करते हैं

سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ (١٠٨)

آيَاتُهَا ٣ ❀ سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ (١٠٨) ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 | (108) सूरतुल कौसर — बे शुमार भलाइयाँ | आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

اِنَّآ اَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ۝١ فَصَلِّ لِرَبِّكَ

अपने रब के लिए	पस नमाज़ पढ़ें	1	कौसर	हम ने आप (स) को अ़ता किया	बेशक हम

ع ٣ ٣٣ وَانْحَرْ ۝٢ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْاَبْتَرُ ۝٣

3	दुम कटा-नामुराद-बे नस्ल	वह	आप (स) का दुश्मन	बेशक	2	और क़ुरबानी दें

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क़ुरैश को मानूस करने के सबब, (1) उन्हें सर्दी गर्मी के सफ़र से मानूस करने के सबब। (2) पस चाहिए कि वह इबादत करें इस घर के रब की, (3) जिस ने उन्हें खाना दिया भूक में, और अम्न दिया ख़ौफ़ में। (4)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

क्या तुम ने उस शख़्स को देखा जो रोज़े जज़ा ओ सज़ा को झुटलाता है? (1) वही है जो यतीम को धक्के देता है, (2) और नहीं उकसाता मिस्कीन को खाना खिलाने पर। (3) पस ख़राबी है उन नमाज़ियों के लिए, (4) जो अपनी नमाज़ों से लापरवाह हैं, (5) जो दिखावा करते हैं, (6) और आम ज़रूरत की चीज़ (भी मांगी) नहीं देते। (7)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

बेशक हम ने आप (स) को "कौसर" अ़ता किया। (1) पस अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ें और क़ुरबानी दें। (2) बेशक आप (स) का दुश्मन ही नामुराद है। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
कह दीजिए: ऐ काफ़िरो! (1) मैं इबादत नहीं करता जिन की तुम इबादत करते हो, (2) और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। (3) और न मैं इबादत करने वाला हूँ जिन की तुम ने इबादत की, (4) और न तुम इबादत करने वाले हो उस की जिस की मैं इबादत करता हूँ। (5) तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन। (6)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
जब अल्लाह की मदद आजाए और फ़तह (हो जाए)। (1) और आप (स) देखें कि लोग दाख़िल हो रहे हैं अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज। (2) पस अपने रब की तारीफ़ के साथ पाकी बयान करें और उस से बख़्शिश तलब करें, बेशक वह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला है। (3)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है
अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए और वह हलाक हुआ। (1) उस के काम न आया उस का माल और जो उस ने कमाया। (2) अ़नक़रीब दाख़िल होगा शोले मारती हुई आग में। (3) और उस की बीवी लादने वाली ईंधन, (4) उस की गर्दन में खजूर की छाल की रस्सी होगी। (5)

آيَاتُهَا ٦ ❀ (١٠٩) سُوْرَةُ الْكٰفِرُوْنَ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (109) सूरतुल काफ़िरून — कुफ़्र करने वाले — आयात 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿١﴾ لَآ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿٢﴾

2	जिस की तुम इबादत करते हो	मैं इबादत नहीं करता	1	काफ़िरो	ऐ	कह दीजिए

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ﴿٣﴾ وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿٤﴾

4	जिस की तुम ने इबादत की	मैं इबादत करने वाला	और न	3	जिस की मैं इबादत करता हूँ	इबादत करने वाले	तुम	और न

وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ؕ﴿٥﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ۧ﴿٦﴾ ع ٦ ٣٤

6	मेरा दीन	और मेरे लिए	तुम्हारा दीन	तुम्हारे लिए	5	जिस की मैं इबादत करता हूँ	इबादत करने वाले	और न तुम

آيَاتُهَا ٣ ❀ (١١٠) سُوْرَةُ النَّصْرِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (110) सूरतुन नस्र — मदद — आयात 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ وَالْفَتْحُ ۙ﴿١﴾ وَرَاَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ

में	दाख़िल हो रहे हैं	लोग	और आप (स) देखें	1	और फ़तह	अल्लाह की मदद	आजाए	जब

دِيْنِ اللّٰهِ اَفْوَاجًا ۙ﴿٢﴾ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ؕ وقف النبی ﷺ ١

और बख़्शिश तलब कीजिए उस से	अपना रब	तारीफ़ के साथ	पस पाकी बयान करें	2	फ़ौज दर फ़ौज	अल्लाह का दीन

اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ۧ﴿٣﴾ ع ١ ٣٥

3	बड़ा तौबा कुबूल करने वाला	है	बेशक वह	

آيَاتُهَا ٥ ❀ (١١١) سُوْرَةُ تَبَّتْ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1 — (111) सूरह तब्बत — आग की लपट, शोला — आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेह्रबान, रह्म करने वाला है

تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ﴿١﴾ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا

और जो	उस का माल	उस के	काम आया	न	1	और वह हलाक हुआ	अबू लहब	दोनों हाथ	टूट गए

كَسَبَ ؕ﴿٢﴾ سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۙ﴿٣﴾ وَّامْرَاَتُهٗ ؕ حَمَّالَةَ

लादने वाली	और उस की बीवी	3	शोले मारती	आग	अ़नक़रीब दाख़िल होगा	2	उस ने कमाया

الْحَطَبِ ۚ﴿٤﴾ فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۧ﴿٥﴾ ع ٥ ٣٦

5	खजूर	से	रस्सी	उस की गर्दन	में	4	लकड़ी (ईंधन)

آيَاتُهَا ٤ ❀ (١١٢) سُوْرَةُ الْإِخْلَاصِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(112) सूरतुल इख़्लास ख़ालिस	आयात 4

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ﴿١﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ﴿٢﴾ لَمْ يَلِدْ

न उस ने जना	2	बेनियाज़	अल्लाह	1	एक	अल्लाह	वह	कह दीजिए

ع ١ ٣٧ وَلَمْ يُوْلَدْ ﴿٣﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿٤﴾

4	कोई	हमसर	उस का	है	और नहीं	3	और न वह जना गया

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

कह दीजिए: वह अल्लाह एक है, (1)

अल्लाह बेनियाज़ है, (2)

न उस ने (किसी को) जना और न (किसी ने) उस को जना, (3)

और उस का कोई हमसर नहीं। (4)

آيَاتُهَا ٥ ❀ (١١٣) سُوْرَةُ الْفَلَقِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(113) सूरतुल फ़लक़ सुबह	आयात 5

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ﴿١﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ﴿٢﴾

2	जो उस ने पैदा किया	शर	से	1	सुबह	रब की	मैं पनाह में आता हूँ	कह दीजिए

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ﴿٣﴾ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ

फूंके मारने वालियां	शर	और से	3	छा जाए	जब	अन्धेरा	शर	और से

ع ١ ٣٨ فِي الْعُقَدِ ﴿٤﴾ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿٥﴾

5	वह हसद करे	जब	हसद करने वाले	और शर से	4	गिरहें	में

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

कह दीजिए: मैं पनाह में आता हूँ सुबह के रब की, (1)

उस के शर से जो उस ने पैदा किया, (2)

और अन्धेरे के शर से जब कि वह छा जाए, (3)

और गिरोहों में फूंके मारने वालियों के शर से, (4)

और शर से हसद करने वाले के जब वह हसद करे। (5)

آيَاتُهَا ٦ ❀ (١١٤) سُوْرَةُ النَّاسِ ❀ رُكُوْعُهَا ١

रुकूअ़ 1	(114) सूरतुन नास लोग	आयात 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ○

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ﴿١﴾ مَلِكِ النَّاسِ ﴿٢﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ﴿٣﴾

3	लोग	माबूद	2	लोग	बादशाह	1	लोग	रब की	मैं पनाह में आता हूँ	कह दीजिए

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ﴿٤﴾ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ

में	वस्वसा डालता है	जो	4	छुप कर हमला करने वाले	वस्वसा डालने वाले	शर	से

ع ١ ٣٩ صُدُوْرِ النَّاسِ ﴿٥﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿٦﴾

6	और इन्सान	जिन्न (जमा)	से	5	लोग	सीने (दिल)

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

कह दीजिए: मैं पनाह में आता हूँ लोगों के रब की, (1)

लोगों के बादशाह की, (2)

लोगों के माबूद की, (3)

वस्वसा डालने वाले, पलट पलट कर हमला करने वाले के शर से, (4)

जो वस्वसा डालता है लोगों के दिलों में, (5)

जिन्नों में से और इन्सानों में से। (6)